03.

भक्ति काल

1. **'सुदामा चरित' किसके द्वारा रचित काव्य-ग्रन्थ है?**
(a) मतिराम (b) पद्माकर
(c) देव (d) नरोत्तमदास
DSSSB PGT 4.7.2021 Shift-I

Ans. (d) : 'सुदामा चरित' नाम से काव्य ग्रन्थ 'नरोत्तमदास', 'नंददास' और रीतिमुक्त काव्य धारा के कवि आलम तीनों ने रचा अतः दिए गए विकल्पों में विकल्प (d) 'नरोत्तमदास' संगत उत्तर है। नरोत्तमदास रचित 'सुदामा चरित' अवधी भाषा का काव्य ग्रन्थ है। ललित ललाम, रसराज, अलंकार पंचाशिका मतिराम के ग्रन्थ हैं। पद्माकर के प्रमुख ग्रंथ हैं- पद्माभरण, जगत् विनोद, प्रबोध पचासा आदि।

2. **'गंग' किस राजा के दरबारी कवि थे?**
(a) राजा मानसिंह (b) महाराणा प्रताप
(c) अकबर (d) पृथ्वीराज चौहान
UKPSC Lecturer 2020

Ans. (c) : 'गंग' मुगलकालीन राजा अकबर के दरबारी कवि थे।
- कवि गंग का पूरा नाम 'गंगाप्रसाद' था।
- कवि गंग बीरबल के बालसखा तथा रहीमदास के विशेष कृपापात्र थे।
- कवि गंग ने शहजादा-खुर्रम की प्रशंसा में एक छंद लिखा जिस कारण नूरजहाँ ने ईर्ष्यावश उन्हें हाथी से कुचलवा दिया था।
- कवि गंग के प्रमुख ग्रंथ निम्नलिखित हैं- गंगपदावली, गंगपच्चीसी, गंगरत्नावली।
- कवि गंग का अंतिम छंद निम्न है-
कबहुं न भडुंआ रन चढ़ै, कबहु न बाजी बंग।
सरस सभाहि प्रनाम करि, विदा होत कवि गंग।।
- भिखारीदास ने गंग के सन्दर्भ में लिखा था-
तुलसी गंग दुवौ भए सुकविन के सरदार।

3. **'धर्म का प्रवाह कर्म, ज्ञान और भक्ति, इन तीनों धाराओं में चलता है।'- यह इनमें से किसका कथन है?**
(a) रामचंद्र शुक्ल (b) हजारीप्रसाद द्विवेदी
(c) रामकुमार वर्मा (d) नगेन्द्र
UKPSC Lecturer 2020

Ans. (a) : 'धर्म का प्रवाह कर्म, ज्ञान और भक्ति, इन तीनों धाराओं में चलता है।' यह रामचन्द्र शुक्ल का कथन है।
- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने भक्तिकाल के सन्दर्भ में कहा है कि "धर्म का प्रवाह कर्म, ज्ञान और भक्ति, इन तीनों धाराओं में चलता है। इन तीनों के सामंजस्य से ही धर्म अपनी सजीव दशा में रहता है। किसी एक के भी अभाव से वह विकलांग रहता है। कर्म के बिना वह लूला-लंगड़ा, ज्ञान के बिना अंधा और भक्ति के बिना हृदय-विहीन क्या निष्प्राण रहता है।"
- आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने भक्ति आन्दोलन को 'लोकजागरण' की संज्ञा दी।
- रामविलास शर्मा ने कहा है "भक्ति आन्दोलन एक जातीय और जनवादी आंदोलन है।"
- डॉ. रामकुमार वर्मा ने भक्तिकाल की निर्गुण ज्ञानाश्रयी काव्यधारा को 'संतकाव्य' एवं 'प्रेमाश्रयी' काव्यधारा को 'सूफीकाव्य' कहकर पुकारा है।
- डॉ. नगेन्द्र ने भक्तिकाल की समय सीमा 1350 ई. से 1650 ई. तक मानी है।
- जार्ज ग्रियर्सन ने भक्तिकाल को हिन्दी साहित्य का 'स्वर्णयुग' कहा था।

4. **रामचंद्र शुक्ल के अनुसार रहीम के बारे में कौन-सी बातें सही है?**
(A) संस्कृत, अरबी और फारसी के पूर्ण विद्वान थे।
(B) हिन्दी काव्य के उतने मर्मज्ञ कवि नहीं थे जितने फारसी के।
(C) उनकी दानशीलता हृदय की सच्ची प्रेरणा के रूप में थी।
(D) उनकी सभा विद्वानों और कवियों से सदा भरी रहती थी।
(E) जब इनसे कोई कुछ माँगने आता तब भी उन्हें अपनी दरिद्रता का अनुभव नहीं होता था।
निम्नलिखित में से सही विकल्प चुनिएः
(a) (A), (B), (C) और (E)
(b) (A), (C), (D) और (E)
(c) (A), (B) और (D)
(d) (A), (C) और (D)
UGC NET June. 2019

Ans. (d) : रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार रहीम के बारे में निम्न बातें सही हैं-
(1) रहीम संस्कृत, अरबी और फारसी के पूर्ण विद्वान थे।
(2) उनकी दानशीलता हृदय की सच्ची प्रेरणा के रूप में थी।
(3) उनकी सभा विद्वानों और कवियों से सदा भरी रहती थी।
रहीम की रचनाएँ- बरवै नायिका भेद (अवधी भाषा), रास पंचाध्यायी, शृंगार सोरठा, मदनाष्टक (आठ छंद की एक स्वतंत्र रचना), खेट कौतुकम (ज्योतिष ग्रंथ है)

5. **रहीम की कविता 'नगर शोभा' की मुख्य विशेषताएँ हैः**
(i) इसमें नगर का संकुचित वर्णन किया गया है।
(ii) इसमें वर्ण व्यवस्था के अनुसार उनके जाति की स्त्रियों का वर्णन किया गया है।
(iii) इसमें स्त्रियों को उत्कृष्ट कोटि का बताया गया है।
(iv) ये स्त्रियाँ अपना उत्पाद बेचने काम करती हैं।
नीचे दिए गए कूट में से सही उत्तर को चुनिए :
कूट :
(a) (i), (ii) और (iv) सही (b) (i), (ii) और (iii) सही
(c) (ii) (iii), और (iv) सही (d) (i) और (iv) सही
UGC NET Dec. 2018

Ans : (a) रहीमदास की कविता 'नगर शोभा' की मुख्य विशेषताएँ निम्नलिखित हैं-

(i) इस कविता में नगर का संकुचित वर्णन किया गया है।

(ii) इसमें वर्ण व्यवस्था के अनुसार उनके जाति की स्त्रियों का वर्णन किया गया है।

(iii) ये स्त्रियाँ अपना उत्पाद बेचने का काम करती हैं।

अतः दिये गये कूटों में कूट (i) (ii) और (iv) सही है।

6. जन्मकाल के अनुसार निम्नलिखित भक्त कवियों का सही अनुक्रम हैः

(a) सूर, तुलसीदास, दादू, मीरा
(b) सूर, तुलसीदास, मीरा दादू
(c) तुलसीदास, सूर, दादू, मीरा
(d) तुलसीदास, सूर, मीरा, दादू

Himanchal Pradesh PGT-2016

Ans. (*) : जन्मकाल के अनुसार भक्त कवियों का सही अनुक्रम है- सूरदास (1478 ई.), मीरा (1516 ई.), तुलसीदास (1532 ई.), दादू (1544 ई.)।
नोट– आयोग ने इसका उत्तर (b) माना है।

7. कृपाराम द्वारा रचित नायिका-भेद की सबसे पुरानी पुस्तक है

(a) हित-तरंगिणी (b) श्रुति-भूषण
(c) उज्ज्वल नीलमणि (d) कर्णाभरण

UGC NET III[rd] Paper June. 2014

Ans. (a) कृपाराम कृति- हिततरंगिणी (1541 ई0) रीति निरूपण की सबसे पुरानी पुस्तक मानी जाती है, इसमें नायक नायिका के भेदोंपभेद का उल्लेख है। यह पाँच तरंगों में विभक्त है। यह काव्य भाषा में रचित सतसई काव्य परम्परा का प्रथम ग्रन्थ है। उज्ज्वल नीलमणि-रूप गोस्वामी तथा श्रुति भूषण, कर्णाभरण करणेस कवि की रचना है, जो कि अलंकार सम्बन्धी ग्रंथ है।

8. 'रुद्र संप्रदाय' की स्थापना किसने की?

(a) रुद्र स्वामी (b) श्रीस्वामी
(c) विष्णुस्वामी (d) निम्बार्काचार्य

UP TGT 2013

Ans. (c) 'रुद्र संप्रदाय' की स्थापना विष्णुस्वामी ने किया था। इनका दर्शन शुद्धाद्वैतवाद है। जबकि सनकादि संप्रदाय की स्थापना निम्बार्काचार्य ने किया था। इनके गुरु का नाम नारदमुनि था तथा इनका दर्शन 'द्वैताद्वैतवाद' है।

9. रामानुजाचार्य ने किस दर्शन का प्रतिपादन किया?

(a) अद्वैतवाद (b) शुद्धाद्वैतवाद
(c) विशिष्टाद्वैतवाद (d) द्वैतवाद

UP TGT 2013
UGC NET III[rd] Paper, June 2016
DSSB PGT 25 July 2018, Shift-I

Ans. (c) वैष्णव भक्ति के आदि आचार्य रामानुजाचार्य माने जाते हैं। रामानुजाचार्य को शेष या लक्ष्मण का अवतार माना जाता है। भक्ति कालीन प्रमुख दर्शन व उनके प्रवर्तक हैं –

दर्शन	सम्प्रदाय	प्रवर्तक
विशिष्टाद्वैतवाद	श्री	रामानुजाचार्य
अद्वैतवाद	स्मार्त	शंकराचार्य
शुद्धाद्वैतवाद	रुद्र	विष्णु स्वामी
द्वैतवाद	ब्रह्म	मध्वाचार्य

10. निम्बार्काचार्य का सम्बन्ध किस दर्शन से है?

(a) विशिष्टाद्वैत (b) द्वैतवाद
(c) द्वैताद्वैत (d) शुद्धाद्वैत

Himanchal Pradesh PGT-2016
UPPSC Degree College Exam. 2013
UPHESC Assistant Professor 2016

Ans. (c) : निम्बार्काचार्य का सम्बन्ध 'द्वैताद्वैतवाद' दर्शन से है। निम्बार्काचार्य ने 'निम्बार्क (सनकादि) सम्प्रदाय' की स्थापना की। विशिष्टाद्वैत दर्शन रामानुजाचार्य के श्री संप्रदाय से संबंधित, द्वैतवाद मध्वाचार्य के ब्रह्म सम्प्रदाय से और शुद्धाद्वैतवाद दर्शन वल्लभाचार्य के रुद्र सम्प्रदाय से संबंधित है।

11. आकाशधर्मा गुरु कहा जाता है?

(a) शंकराचार्य को (b) रामानंद को
(c) रामानुजाचार्य को (d) वल्लभाचार्य को

Himanchal Pradesh PGT-2016

Ans. (b) : रामानंद को हजारीप्रसाद द्विवेदी ने 'आकाशधर्मा गुरु' कहा है। हिन्दी में रामानंद राम काव्य के पुरस्कर्ता कवि माने जाते हैं। हजारी प्रसाद ने कहा है– "मध्य युग की समग्र स्वाधीन चिन्ता के गुरु रामानन्द ही थे।" इनके प्रमुख ग्रंथ हैं- वैष्णवमताब्ज भास्कर, श्री रामार्चन पद्धति, योग चिंतामणि, रामरक्षा स्तोत्र और आनन्दभाष्य आदि। रामानंद ने 'रामावत संप्रदाय' की स्थापना की।

12. रहीम किसके दरबार में कवि थे–

(a) पृथ्वीराज (b) अकबर
(c) रतनसेन (d) भोजराज

UP PGT 2016

Ans : (b) 'रहीम' अकबर के दरबार में कवि थे। रहीमदास का वास्तविक नाम अब्दुर्रहीम खान खाना था। इनके पिता बैरम खाँ अकबर के संरक्षक तथा मुगल सेना के सेनापति थे। रहीम मुगल दरबार के नौ रत्नों (नवरत्नों) में शामिल रत्न थे।

13. "इनकी उक्तियाँ ऐसी लुभावनी हुई कि बिहारी आदि परवर्ती कवि भी उनमें से बहुतों का अपहरण करने का लोभ न रोक सके" आचार्य शुक्ल की यह उक्ति किस कवि के विषय में है?

(a) तुलसी (b) रहीम
(c) कबीर (d) वृन्द

राजस्थान कॉलेज लेक्चरर भर्ती परीक्षा (पेपर-II) 2014

Ans. (b) : "इनकी उक्तियाँ ऐसी लुभावनी हुई कि बिहारी आदि परवर्ती कवि भी उनमें से बहुतों का अपहरण करने का लोभ न रोक सके।" आचार्य शुक्ल की यह उक्ति रहीमदास के विषय में है।

14. 'भक्तिरसामृतसिंधु' के रचयिता कौन हैं?

(a) रामानन्द (b) रामानुजाचार्य
(c) विट्ठलनाथ (d) रूपगोस्वामी

DSSSB PGT-25.07.2018 (9:00 am-12:00 pm)

Ans. (d) : 'भक्तिरसामृतसिंधु' के रचयिता रूपगोस्वामी हैं। रूपगोस्वामी वृन्दावन में चैतन्य महाप्रभु द्वारा भेजे गये छः गोस्वामी में से एक थे। ये कवि, गुरू और दार्शनिक थे। ये सनातन गोस्वामी के भाई थे। इन्होंने सनातन गोस्वामी से दीक्षा ली थी। इन्हें भक्ति रसाचार्य कहा जाता था। ये गौरांग के अति प्रेमी थे।

15. जिस प्रकार मीराबाई ने 'जाके सिर मोर मुकुट मेरो पति सोई' कहकर कृष्ण की भक्ति पतिरूप में की, उसी प्रकार किस दक्षिण भारतीय भक्त कवयित्री ने कहा कि - स्वामी कृष्ण के अतिरिक्त किसी और को अपना पति नहीं बना सकती।'

(a) अक्का महादेवी (b) वेणाबाई
(c) अंदाल (d) सहजोबाई

DSSSB PGT-24.07.2018 (2:00 pm-5:00 pm)

Ans. (c) : जिस प्रकार मीराबाई ने 'जाके सिर मोर मुकुट मेरो पति सोई' कहकर कृष्ण की भक्ति पतिरूप में की, उसी प्रकार दक्षिण भारतीय भक्त कवयित्री अंदाल ने कहा कि -'स्वामी कृष्ण के अतिरिक्त किसी और को अपना पति नहीं बना सकती।' यही कारण है कि अंदाल को 'दक्षिण भारत की मीरा' कहा जाता है।

16. निम्न में विष्णु सम्प्रदाय को किस संज्ञा से भी अभिहित किया जाता है?

(a) रुद्र सम्प्रदाय (b) चैतन्य सम्प्रदाय
(c) सखी सम्प्रदाय (d) पुष्टि सम्प्रदाय

हरियाणा असिस्टेन्ट प्रोफेसर भर्ती परीक्षा-2017

Ans. (a) : विष्णु सम्प्रदाय को 'रुद्र सम्प्रदाय' की संज्ञा से भी अभिहित किया जाता है।

सम्प्रदाय		प्रवर्तक
रुद्र सम्प्रदाय	–	विष्णु स्वामी
चैतन्य सम्प्रदाय	–	चैतन्य महाप्रभु
सखी सम्प्रदाय	–	स्वामी हरिदास

17. मान सहित विष खाय के, संभु भये जगदीस,
बिना मान अमृत पिये, राहु कटायो सीस।
'सृजन' में संकलित ये पंक्तियाँ इनमें से किस कवि की हैं?

(a) रहीम (b) कबीर
(c) कृपाराम (d) बिहारी

राजस्थान स्कूल शिक्षा प्राध्यापक परीक्षा–2018

Ans. (a) : मान सहित विष खाय के, संभु भये जगदीस,
बिना मान अमृत पिये, राहु कटायो सीस। 'सृजन' में संकलित ये पंक्तियाँ रहीम कवि की हैं।

दसरथ सुत तिहुँ लोक बखाना,
रामनाम का मरम है आना। – **कबीर**

नहिं पराग नहिं मधुर मधु, नहिं विकास एहिं काल।
अली कली हीं सो बध्यो, आगे कौन हवाल।। – **बिहारी**

18. 'तुलसी के वचनों के समान रहीम के वचन भी हिन्दी भाषी भूभाग में सर्वसाधारण के मुँह पर रहते हैं।' यह किसका कथन है?

(a) नगेन्द्र (b) नंददुलारे वाजपेयी
(c) रामचन्द्र शुक्ल (d) बच्चन सिंह

UPPCS GIC 2017

Ans. (c) : 'तुलसी के वचनों के समान रहीम के वचन भी हिन्दी भाषी भूभाग में सर्वसाधारण के मुँह पर रहते हैं।' यह कथन 'रामचन्द्र शुक्ल' का है।

19. 'मदनाष्टक' के रचयिता का नाम क्या है?

(a) केशवदास (b) रसखान
(c) रहीम (d) नरोत्तमदास

UP TGT 2016

Ans. (c) : दिये गये रचनाकारों में 'मदनाष्टक' के रचयिता रहीमदास जी है। इनकी अन्य प्रसिद्ध रचनाएँ हैं- रहीम दोहावली, बरवै नायिका भेद, रास पंचाध्यायी, नगर शोभा। **नरोत्तमदास की रचनाएँ हैं-** सुदामा चरित, ध्रुवचरित, नाम कीर्तन, विचारमाला। इनकी 'सुदामा चरित' ही सर्वप्रसिद्ध है। **केशवदास** प्रमुख रीतिकालीन आचार्य है परन्तु इन्होंने रामाश्रयी काव्यग्रंथों की भी रचना की है, इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं- रसिकप्रिया, रामचन्द्रिका, कविप्रिया, रतन बावनी, वीरसिंह देव चरित, विज्ञानगीता, जहाँगीर जस चन्द्रिका, नखशिख, छन्दमाल। रसखान का मूलनाम सैयद इब्राहीम था। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने इनके सम्बन्ध में कहा है "इन मुसलमान हरिजनन पर कोटिक हिन्दुन वारिए।" इनकी प्रसिद्ध रचनाएँ हैं- सुजान रसखान, प्रेमवाटिका, दान लीला, अष्टयाम आदि।

20. 'कवित्त कह्यो दोहा कह्यो, तुलौ न छप्पय छंद।
बिरच्यो यहै बिचारि कै, यह बखै रस कंद॥' यह काव्यपंक्तियाँ किसकी हैं:

(a) तुलसीदास (b) रहीम
(c) त्रिलोचन शास्त्री (d) भारतेंदु हरिश्चंद्र

GIC प्रवक्ता भर्ती परीक्षा-2017

Ans : (b) दी गयी काव्य पंक्ति -
'कवित कह्यो दोहा कह्यो, तुलौ न छप्पय छन्द।
बिरच्यो यहै बिचारि कै, यह बखै रस कंद।।'
यह पंक्ति रहीमदास कृति 'बरवै नायिका भेद' से ली गई है। शेष विकल्प असंगत हैं।

21. रहीमकृत 'मदनाष्टक' की भाषा है –

(a) खड़ी बोली (b) अवधी
(c) ब्रज (d) राजस्थानी

UP TGT 2004

Ans. (a) मुगल शासक अकबर के दरबारी नवरत्नों में से एक कवि अब्दुर्रहीम खानखाना ने अवधी, ब्रज एवं खड़ी बोली तीनों में रचनाएं की। 'मदनाष्टक' रहीम की खड़ी बोली में रचित काव्य ग्रंथ है। इसके अतिरिक्त रहीम ने अवधी भाषा में बरवै नायिका भेद तथा ब्रज भाषा में रहीम दोहावली या रहीम सतसई की रचना की।

22. 'खेट कौतुकम' किसकी रचना है?

(a) रहीम (b) रसखान
(c) कवि गंग (d) दादूदयाल

UP TGT 2013

Ans. (a) 'खेट कौतुकम' रहीम की रचना है। इनकी अन्य रचनाएं हैं – नगर शोभा, बरवैनायिका भेद, रहीम दोहावली या सतसई, शृंगार सोरठा, मदनाष्टक, रास पंचाध्यायी आदि हैं। रहीम का ब्रज एवं अवधी भाषा पर समान अधिकार था। इन्होंने मुख्यतया मुक्तक शैली अपनायी है, ये हिन्दी साहित्य में नीतिकार के रूप में प्रसिद्ध हैं। बरवैनायिका भेद, नगर शोभा, रहीम के नीति सम्बन्धी ग्रंथ हैं। बरवैनायिका भेद अवधी भाषा में लिखा गया प्रथम रीति निरूपण सम्बन्धी ग्रंथ है। रहीम ने अपने काव्य में ब्रज, अवधी, खड़ी बोली तीनों का प्रयोग किया है, उनके ग्रंथ मदनाष्टक की भाषा खड़ी बोली हिन्दी है एवं दोहे ब्रजभाषा में हैं।

23. उत्तर भारत में भक्ति का प्रसार करने का श्रेय किसे प्राप्त है?

(a) शंकराचार्य (b) रामानुजाचार्य
(c) रामानन्द (d) मध्वाचार्य

UGC NET II[nd] Paper Dec. 2004

Ans. (c) उत्तर भारत में रामानन्द ने भक्ति आन्दोलन का प्रचार प्रसार किया। राघवानन्द ने उत्तर भारत में रामभक्ति का प्रवर्तन किया परन्तु इसे प्रतिष्ठित और प्रसारित रामानन्द ने किया। रामानन्द को आकाश धर्मा गुरू आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने कहा है।

रचना और रचनाकार की दृष्टि से इनमें से कौन सा विकल्प गलत है?
(a) वेलि क्रिसन रुक्मिणी री – चतुर्भुज दास
(b) ध्यान मंजरी – अग्रदास
(c) बरवै नायिका भेद – रहीम
(d) भक्तमाल – नाभादास

राजस्थान स्कूल शिक्षा प्राध्यापक परीक्षा–2018

ns. (a) : 'वेलि क्रिसन रुक्मिणी – चतुर्भुज दास' रचना और ाकार विकल्प गलत है। सही विवरण हैं-

रचना	रचनाकार
वेलि क्रिसन रुक्मिणी री	– पृथ्वीराज
ध्यान मंजरी	– अग्रदास
बरवै नायिका भेद	– रहीम
भक्तमाल	– नाभादास

भक्ति आंदोलन को ईसाइयत की देन कहने वाले इतिहासकार हैं:
(a) जॉर्ज ग्रियर्सन (b) मिश्रबन्धु
(c) गार्सा द तासी (d) राहुल सांकृत्यायन

Himanchal Pradesh PGT-2016

ns. (a) : जॉर्ज ग्रियर्सन भक्ति आन्दोलन को ईसाइयत की देन नते हैं। ग्रियर्सन ने लिखा- "ईसा की दूसरी-तीसरी शताब्दी में छ ईसाई मद्रास में आकर बस गये थे जिसके प्रभाव से भक्ति का कास हुआ। गियर्सन ने भक्तिकाल को हिन्दी का 'स्वर्ण युग' माना है।

. हिंदी साहित्य के किस युग को स्वर्णयुग कहा जाता है?
(a) रीतिकाल को (b) आदिकाल को
(c) आधुनिक काल को (d) भक्ति काल को

DSSSB TGT (MALE)-28.08.2018
DSSSB PGT 24.07.2018 (2:00 PM 5:00 PM)
राजस्थान कॉलेज लेक्चरर भर्ती परीक्षा (पेपर-II) 2014
UP TGT 2002
UP PGT 2010, 2011
DSSSB PGT 24.7.2018, Shift-II

ns. (d) : हिन्दी साहित्य के 'भक्तिकाल' को 'स्वर्णयुग' कहा जाता । जार्ज ग्रियर्सन ने भक्तिकाल को 'स्वर्णयुग' कहा था। रामविलास र्मा ने भक्तिकाल को 'लोकजागरण काल' नाम से पुकारा। हजारी प्रसाद द्विवेदी ने भक्तिकाल आन्दोलन को 'लोक जागरण' की संज्ञा दी।

7. भक्ति आंदोलन को 'लोक जागरण' किसने कहा?
(a) नगेन्द्र (b) राहुल संकृत्यायन
(c) रामविलास शर्मा (d) हजारी प्रसाद द्विवेदी

DSSSB PGT-25.07.2018 (9:00 am-12:00 pm)

ns. (d) : हजारी प्रसाद द्विवेदी ने भक्ति आन्दोलन को 'लोक जागरण' कहा है। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने भक्ति आन्दोलन के उदय के संदर्भ में कहा है– "लेकिन जोर देकर कहना चाहता हूँ के अगर इस्लाम नही आया होता तो भी इस साहित्य का बारह आना वैसा ही होता जैसा आज है।"

8. भक्तिकाल को 'बौद्ध धर्म' की देन किसने कहा?
(a) हजारी प्रसाद द्विवेदी (b) जार्ज ग्रियर्सन
(c) धीरेन्द्र वर्मा (d) रामचन्द्र शुक्ल

DSSSB PGT-25.07.2018 (9:00 am-12:00 pm)

Ans. (a) : भक्तिकाल को 'बौद्ध धर्म' की देन हजारी प्रसाद द्विवेदी ने कहा। ग्रियर्सन ने भक्ति के उदय को 'ईसाई धर्म की देन' माना है और आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने भक्तिकाल का उदय 'पराजित मनोवृत्ति या इस्लामिक आक्रमण की देन' मानते हैं।

29. "अपने पौरुष से हताश जाति के लिए भगवान की शक्ति और करुणा की ओर ध्यान ले जाने के अतिरिक्त दूसरा मार्ग ही क्या था?"
यह किसका कथन है?
(a) रामचंद्र शुक्ल (b) विद्यानिवास मिश्र
(c) हजारी प्रसाद द्विवेदी (d) नामवर सिंह

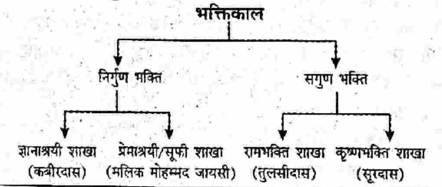
DSSSB PGT-24.07.2018 (2:00 pm-5:00 pm)
DSSSB PGT 23.7.2018
KVS PGT Hindi, 2017

Ans. (a) : "अपने पौरुष से हताश जाति के लिए भगवान की शक्ति और करुणा की ओर ध्यान ले जाने के अतिरिक्त दूसरा मार्ग ही क्या था?" भक्तिकाल के संबंध में यह कथन आचार्य रामचंद्र शुक्ल का है। हजारी प्रसाद द्विवेदी ने इस संबंध में कहा है - "लेकिन जोर देकर कहना चाहता हूँ कि अगर इस्लाम नहीं आया होता तो भी इस साहित्य का बारह आना वैसा ही होता जैसा आज हैं।"

30. निम्नलिखित में से कौन-सा काव्य भक्तिकाल का नहीं है?
(a) संत काव्य (b) रामभक्ति काव्य
(c) छायावादी काव्य (d) सूफी काव्य

DSSSB PGT-23.07.2018

Ans. (c) : छायावादी काव्य भक्तिकाल का नहीं है। भक्तिकाल को आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने इस प्रकार विभाजित किया है-



31. भक्ति का प्रारंभ कहाँ से हुआ?
(a) पूर्वी भारत (b) दक्षिण भारत
(c) पश्चिमी भारत (d) उत्तरी भारत

UP TGT 2016

Ans. (b) : भक्ति का प्रारम्भ दक्षिण भारत से माना जाता है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने दक्षिण में भक्ति का उद्भव स्वीकार किया है। इस सम्बन्ध में मत इस प्रकार है-
'भक्ति द्राविड़ उपजी, लाये रामानन्द।
परगट किया कबीर ने, सात दीप नौ खण्ड।'

32. अलवार वैष्णवों की संख्या है
(a) 9 (b) 10
(c) 11 (d) 12

MP Asst. Prof. 2017
Delhi K.V. PGT. 2015
UP PGT. 2010

Ans. (d) अलवार वैष्णवों की संख्या 12 है। अलवार तमिल कवि एवं संत थे। इनेका काल छठी से 9वीं शताब्दी के बीच रहा। इनके पदों का संग्रह 'दिव्य प्रबंधम' कहलाता है। जो वेदों के तुल्य माना जाता है। अलवार संत भक्ति आन्दोलन के जन्मदाता माने जाते हैं।

33. समग्र भक्तिकालीन काव्य पर कौन-सी विशेषता लागू होती है?
(a) अवतार में विश्वास (b) जाति-प्रथा का निषेध
(c) अहंकार का त्याग (d) ईश्वरीय लाला गायन

Delhi K.V. PGT. 2015

Ans. (c) समग्र भक्तिकालीन काव्य पर **अहंकार का त्याग** नामक विशेषता लागू होती है।

34. रामानन्द .... की शिष्य परम्परा में आते हैं।

(a) रंगाचार्य (b) नाथमुनि
(c) रामानुजाचार्य (d) पुंडरीकाक्ष

Delhi K.V. PGT. 2015

Ans. (c) रामानंद 'रामानुजाचार्य' की शिष्य परंपरा में आते हैं। रामानंद को भक्ति आन्दोलन का महान संत माना जाता है। इन्होंने रामभक्ति धारा को समाज के निचले तबके तक पहुंचाया। ये पहले ऐसे आचार्य हुए जिन्होंने उत्तर भारत में भक्ति का प्रचार किया। इनके बारे में प्रचलित कहावत है– 'भक्ति द्राविड़ उपजी लाये रामानंद।' इनके द्वारा रचित पुस्तकें हैं– वैष्णवमताब्ज भास्कर, श्री रामार्चन पद्धति, रामरक्षास्तोत्र, योगचिन्तामणि, ज्ञानतिलक आदि।

35. निम्नलिखित में से एक सही युग्म है–

(a) रामानुजाचार्य-द्वैताद्वैतवाद
(b) निम्बार्काचार्य विशिष्टद्वैतवाद
(c) माध्वाचार्य-अद्वैतवाद
(d) वल्लभाचार्य-शुद्धाद्वैतवाद

UPPSC Degree College Exam. 2013

Ans. (d) वल्लभाचार्य-शुद्धाद्वैतवाद युग्म सही है। वल्लभाचार्य का दार्शनिक मत शुद्धाद्वैतवाद है। वल्लभाचार्य द्वारा रचित ग्रन्थ हैं- पूर्वमीमांसा भाष्य, उत्तर मीमांसा या ब्रह्मसूत्र भाष्य, जो अणुभाष्य के नाम से प्रसिद्ध है। श्रीमद्भागवत की सूक्ष्मटीका तथा सुबोधिनी टीका, तत्वदीप निबन्ध।

36. अद्वैतवाद के अनुसार

(a) जीव और ब्रह्म एक है
(b) संसार सत्य है
(c) जीव और ब्रह्म अलग-अलग हैं
(d) ब्रह्म विशेषणयुक्त है

Delhi K.V. PGT. 2015

Ans. (a) अद्वैतवाद के अनुसार जीव और ब्रह्म एक हैं। अद्वैतवाद दर्शन की वह धारा है जिसमें एक तत्व को ही मूल माना जाता है। वेद तथा उपनिषदों में एक पुरुष या एक ब्रह्म का सर्वप्रथम प्रतिपादन मिलता है। अद्वैतवाद के संस्थापक शंकराचार्य हैं।

37. कृष्ण के साथ राधा की महानता .... सम्प्रदाय की विशेषता है।

(a) श्री (b) रुद्र
(c) ब्रह्म (d) सनकादि

Delhi K.V. PGT. 2015

Ans. (d) कृष्ण के साथ राधा की महानता **सनकादि** संप्रदाय की विशेषता है। निम्बार्काचार्य 'निम्बार्क सम्प्रदाय' के प्रवर्तक आचार्य के रूप में प्रख्यात है। इसको सनकादिक सम्प्रदाय भी कहा जाता है।

38. ''कमल दल नैनन की उनमानि।
बिसरत नाहि सखी मो मन तें मंद-मंद मुसकानि।-
यह पद चरण किसकी रचना है?

(a) मीराबाई (b) रहीम
(c) सूरदास (d) नन्ददास

UPPSC Degree College Exam. 2008

Ans. (b) कमल दल नैनन की उनमानि।
बिसरत नाहि सखी मो मन ते मंद-मंद मुसकानि।
यह पद चरण रहीम की रचना है। रहीमदास द्वारा रचित प्र रचनाएँ है– रहीम दोहावली, बरवैनायिका भेद, मदनाष्ट रासपंचाध्यायी, नगरशोभा आदि।

39. निम्नलिखित को सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिये कूट द्वारा सही उत्तर चुनिए–

सूची-I	सूची-II
A. विशिष्टाद्वैत	1. निम्बार्काचार्य
B. द्वैत	2. विष्णुस्वामी
C. शद्धाद्वैत	3. रामानुजाचार्य
D. द्वैताद्वैत	4. मध्वाचार्य

कूट :

	A	B	C	D
(a)	2	1	4	3
(b)	4	3	1	2
(c)	1	2	3	4
(d)	3	4	2	1

Delhi K.V. PGT. 20
UGC NET III[rd] June 20
UGC NET III[rd] Paper Dec. 20
Higer Edu. Exam 20

Ans. (d) दिए गये कूट का सही सुमेलन होगा–

सूची-I	सूची-II
विशिष्टाद्वैतवाद	रामानुजाचार्य
द्वैतवाद	मध्वाचार्य
शुद्धाद्वैतवाद	विष्णुस्वामी
द्वैताद्वैतवाद	निम्बार्काचार्य

40. संवत् 1375-1700 तक के साहित्य में कौन भावधारा परिलक्षित होती है?

(a) शृंगारिकता (b) वीरता
(c) रीति (d) भक्ति

KVS. PGT. 20
Jharkhand TGT 20

Ans. (d) संवत् 1375 – 1700 तक के साहित्य में भक्ति भावधारा परिलक्षित होती है। इस काल में भक्ति अपने चरमोत् पर थी। तुलसी और सूर जैसे कवियों ने भक्ति का पूर्ण प्रस किया। डॉ. ग्रियर्सन ने भक्तिकाल को हिन्दी का स्वर्णयुग कहा है।

41. 'ओम जय जगदीश हरे' की आरती की रचना किसने की

(a) श्रद्धाराम फिल्लौरी (b) राजाशिवप्रसाद
(c) शिवानन्द (d) हरिहर स्वामी

NVS. PGT. 20

Ans. (a) 'ओम जय जगदीश हरे' आरती की रचना 'श्रद्धा फिल्लौरी' ने की है। इनके द्वारा रचित उपन्यास 'भाग्यवती' (187 है। आत्म चिकित्सा, तत्त्वदीपक, धर्मसंवाद, उपदेश संग्रह आ इनके काव्य ग्रंथ हैं।

42. द्वैतवाद के प्रणेता हैं :

(a) मध्वाचार्य (b) वल्लभाचार्य
(c) रामानुजाचार्य (d) रामानंद

UGC NET II[nd] Paper June. 20
GIC PGT 20
UGC NET IInd Paper June. 20
MP Assi. Pro. 20

Ans. (a)

दर्शन	प्रणेता	सम्प्रदाय
द्वैतवाद	मध्वाचार्य	ब्रह्म सम्प्रदाय
विशिष्टाद्वैतवाद	रामानुजाचार्य	श्रीसम्प्रदाय
शुद्धाद्वैतवाद	वल्लभाचार्य	रुद्रसम्प्रदाय
द्वैताद्वैतवाद	निम्बार्काचार्य	सनकादि सम्प्रदाय

नोट-हिन्दी में रामकाव्य के पुरस्कर्ता रामानंद माने जाते हैं। रामानंद ने उत्तर भारत में रामभक्ति को प्रतिष्ठित और प्रसारित किया।

43. 'शुद्धाद्वैतवाद दर्शन' के प्रवर्तक हैं
(a) शंकराचार्य (b) मध्वाचार्य
(c) वल्लभाचार्य (d) विष्णु स्वामी।

UP PGT 2010

Ans. (c) 'शुद्धाद्वैतवाद दर्शन' के प्रवर्तक 'वल्लभाचार्य' हैं। वल्लभाचार्य विष्णु स्वामी के ही शिष्य थे। शंकराचार्य 'अद्वैतवाद' के प्रवर्तक हैं। मध्वाचार्य 'द्वैतवाद' के प्रवर्तक थे।

44. **'हिन्दी का भक्ति काल बाहरी आक्रमण की प्रतिक्रिया है'- यह कथन निम्नलिखित में से किस विद्वान का है?**
(a) ग्रियर्सन (b) हजारी प्रसाद द्विवेदी
(c) रामचन्द्र शुक्ल (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

GIC. PGT 2012

Ans. (c) उपर्युक्त कथन आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का है। डॉ. ग्रियर्सन ने भक्तिकाल का उदय 'ईसाइयत की देन' माना है तथा हजारी प्रसाद द्विवेदी ने भारतीय चिंतन धारा का स्वाभाविक विकास माना है।

45. **रामानुज के श्री संप्रदाय में किसकी उपासना होती थी?**
(a) शंकर (b) ब्रह्मा
(c) विष्णु (d) लक्ष्मी

UP PGT 2013

Ans. (c) रामानुज के श्री सम्प्रदाय में विष्णु की उपासना होती थी। ये राम को विष्णु का अवतार मानते थे। इनका दार्शनिक सिद्धान्त विशिष्टाद्वैत सिद्धान्त कहलाता है। कहा जाता है कि लक्ष्मी ने इन्हें जिस मत का उपदेश दिया उसी के आधार पर इन्होंने अपने मत का प्रवर्तन किया। इसलिए इनके सम्प्रदाय को श्री सम्प्रदाय कहते हैं।

46. **इनमें से कौन 'आलवार' महिला संत है?**
(a) आंडाल (b) अज्कामाशी
(c) सहजोबाई (d) मीराबाई

UGC NET II[nd] Paper Dec. 2006

Ans. (a) अलवार संत दक्षिण के वैष्णव संत हैं इनकी संख्या 12 है। आण्डाल दक्षिण की अलवार महिला संत हैं। जबकि सहजोबाई तथा मीराबाई उत्तर भारत की महिला संत कवि है।

47. **इनमें से कौन वैष्णव भक्ति का आचार्य नहीं है**
(a) वल्लभाचार्य (b) मध्वाचार्य
(c) शंकराचार्य (d) रामानुजाचार्य

UGC NET II[nd] Paper Dec. 2007

Ans. (c) वल्लभाचार्य (शुद्धाद्वैतवाद), मध्वाचार्य (द्वैतवाद), और रामानुजाचार्य (विशिष्टाद्वैतवाद) से सम्बन्धित आचार्य हैं। ये सभी वैष्णव भक्त आचार्य हैं, वैष्णव भक्ति में सगुण की प्रधानता रहती है। जबकि शंकराचार्य (अद्वैतवाद) से सम्बन्धित आचार्य हैं। इसका मुख्य धर्म या भक्ति स्मृति है : जिसमें निर्गुण की प्रधानता होती है।

48. **भक्तिकाल की समय-सीमा क्या है?**
(a) संवत् 1275 से संवत् 1700 तक
(b) संवत् 1275 से संवत् 1800 तक
(c) संवत् 1375 से संवत् 1850 तक
(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

UP PGT 2005

Ans. (d) भक्तिकाल की समय सीमा विक्रम संवत् - 1375 से सं. 1700 तक अर्थात् सन् 1318ई. से 1643 ई. तक मानी जाती है।

49. **निम्नलिखित में से कौन 'ब्रह्म संप्रदाय' का प्रवर्तक है?**
(a) विष्णुस्वामी (b) निम्बार्काचार्य
(c) हित हरिवंश (d) मध्वाचार्य

UGC NET III[rd] Paper Dec. 2015

Ans. (d) सिद्धान्त व सिद्धान्तकारों का परिचय इस प्रकार है-

सम्प्रदाय	प्रवर्तक	जन्म मृत्यु	दर्शन
ब्रह्म सम्प्रदाय	मध्वाचार्य	1199 ई. (बेलिग्राम)	द्वैतवाद
श्री सम्प्रदाय	रामानुजाचार्य	1016-1127 ई. (कांचीपुरम्)	विशिष्टाद्वैतवाद
रूद्र सम्प्रदाय	विष्णुस्वामी	1300 ई.	शुद्धाद्वैतवाद
सनकादि सम्प्रदाय	निम्बार्काचार्य	1114-1162 ई. (निम्बापुर)	द्वैताद्वैतवाद
रूद्र सम्प्रदाय	वल्लभाचार्य	1478-1530ई. (चम्पारन)	शुद्धाद्वैतवाद
राधावल्लभ सम्प्रदाय	हितहरिवंश	1502-1552 ई.) (बाँदगाव मथुरा)	

50. **'भ्रमर गुफा' के लिए दूसरा उपयुक्त नाम है-**
(a) ब्रह्मरंध्र (b) ह्रदेश
(c) नाभिचक्र (d) मूलाधार

UP PGT 2000

Ans. (a) 'भ्रमर गुफा' के लिए दूसरा उपयुक्त नाम ब्रह्मरन्ध्र है। शेष सभी असंगत हैं।

51. **निम्नलिखित में से कौन श्रीकृष्णभक्ति का सम्प्रदाय नहीं है :**
(a) श्रीवल्लभ सम्प्रदाय (b) हरिदासी सम्प्रदाय
(c) तत्सुखी सम्प्रदाय (d) गौड़ी सम्प्रदाय

UP PGT 2000

Ans. (c) तत्सुखी सम्प्रदाय कृष्ण भक्ति से सम्बन्धित नहीं है। 'तत्सुखी सम्प्रदाय' के प्रवर्तक जीवाराम हैं। श्री वल्लभ सम्प्रदाय 'वल्लभाचार्य' द्वारा प्रवर्तित, हरिदासी सम्प्रदाय स्वामी हरिदास द्वारा तथा गौड़ी सम्प्रदाय 'चैतन्य महाप्रभु' द्वारा प्रवर्तित सम्प्रदाय है।

52. **निम्नलिखित सम्प्रदायों को उनके अनुयायियों के साथ सुमेलित कीजिए-**

सूची-I	सूची-II
(a) वल्लभ सम्प्रदाय	(i) हरिव्यास देव
(b) निम्बार्क सम्प्रदाय	(ii) दामोदर दास
(c) राधावल्लभ सम्प्रदाय	(iii) गदाधर भट्ट
(d) चैतन्य सम्प्रदाय	(iv) जगन्नाथ गोस्वामी
	(v) गोविन्द स्वामी

कोड-

	A	B	C	D
(a)	v	i	ii	iii
(b)	iv	i	iii	v
(c)	ii	i	v	iv
(d)	v	iv	ii	iii

UGC NET II[nd] Paper June. 2014

Ans. (a) सम्प्रदाय व अनुयायियों का इस प्रकार सुमेलन हैं–

सम्प्रदाय	अनुयायी	सम्प्रदाय पुरस्कर्ता
वल्लभ सम्प्रदाय	गोविन्द स्वामी	वल्लभाचार्य
निम्बार्क सम्प्रदाय	हरि व्यास देव	निम्बार्काचार्य
राधावल्लभ सम्प्रदाय	दामोदर दास	हितहरिवंश
चैतन्य सम्प्रदाय	गदाधर भट्ट	चैतन्य महाप्रभु
हरिदासी/सखी/टट्टी सम्प्रदाय	जगन्नाथ गोस्वामी	स्वामी हरिदास

53. 'बरवै नायिका भेद' का रचनाकार कौन है?
(a) रहीम (b) रसलीन
(c) बिहारी (d) मतिराम

UGC NET II[nd] Paper Dec. 2007

Ans. (a) रचना एवं रचनाकारों का विवरण निम्न है–

रचना	रचनाकार
बरवै नायिका भेद	रहीमदास
अंगदर्पण	रसलीन
बिहारी सतसई	बिहारी
रसराज	मतिराम

54. रामचरितमानस, पद्मावत, सूरसागर, कबीर दोहावली जैसे ग्रंथ किस काल की देन है?
(a) भक्तिकाल (b) छायावाद काल
(c) भारतेंदु काल (d) द्विवेदी काल

Jharkhand TGT 2017

Ans. (a) रामचरितमानस, पद्मावत, सूरसागर तथा कबीर दोहावली जैसे ग्रन्थ भक्तिकाल की है। **भक्तिकाल** रामाश्रयी, कृष्णाश्रयी, प्रेमाश्रयी एवं ज्ञानाश्रयी चार शाखा में विभक्त है। जिसमें 'रामचरितमानस' रामाश्रयी शाखा का, 'सूरसागर' कृष्णाश्रयी शाखा का 'पद्मावत' प्रेमाश्रयी शाखा का तथा 'कबीर दोहावली' ज्ञानाश्रयी शाखा का प्रतिनिधि काव्य ग्रन्थ है।

55. विभिन्न मतों के आधार पर हिंदी में भक्ति काव्य की कितनी शाखाएँ मानी जाती हैं?
(a) तीन (b) चार
(c) दो (d) पाँच

Jharkhand TGT 2017

Ans. (b) विभिन्न मतों के आधार पर हिन्दी में भक्तिकाव्य को दो धारायें- 'निगुर्णधारा एवं सगुण धारा' मानी जाती हैं। इनमें से प्रत्येक की दो-दो शाखाएँ निर्गुण धारा की- 'ज्ञानाश्रयी एवं प्रेमाश्रयी' तथा सगुणधारा की- 'रामाश्रयी एवं कृष्णाश्रयी' मानी जाती है। इस तरह भक्ति काव्य की चार शाखाएँ हो जाती हैं।

56. सूची-I का मिलान सूची-II से कीजिए और दिये गये कूट से सही उत्तर का चयन कीजिए –

सूची-I	सूची-II
(अ) शुद्धाद्वैतवाद	(i) वल्लभाचार्य
(ब) अद्वैतवाद	(ii) शंकराचार्य
(स) विशिष्टाद्वैतवाद	(iii) रामानुजाचार्य
(द) द्वैतवाद	(iv) मध्वाचार्य

कूट :

	अ	ब	स	द
(a)	(ii)	(iii)	(i)	(iv)
(b)	(iii)	(ii)	(iv)	(i)
(c)	(i)	(ii)	(iii)	(iv)
(d)	(iv)	(i)	(ii)	(iii)

UP TGT 2005

Ans. (c) 'शुद्धाद्वैतवाद के प्रतिपादक आचार्य वल्लभाचार्य, अद्वैतवाद के प्रतिपादक आचार्य शंकराचार्य, विशिष्टाद्वैत के प्रतिपादक आचार्य रामानुजाचार्य तथा द्वैतवाद के प्रतिपादक मध्वाचार्य हैं।

57. आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी के अनुसार निम्नलिखित संप्रदायों का सही अनुक्रम है :
(a) ब्रह्म संप्रदाय, सनकादि संप्रदाय, श्री संप्रदाय, रुद्र संप्रदाय
(b) सनकादि संप्रदाय, ब्रह्म संप्रदाय, श्री संप्रदाय, रुद्र संप्रदाय
(c) श्री संप्रदाय, ब्रह्म संप्रदाय, रुद्र संप्रदाय, सनकादि संप्रदाय
(d) रुद्र संप्रदाय, श्री संप्रदाय, ब्रह्म संप्रदाय, सनकादि संप्रदाय

UGC NET III[rd] Paper Jan. 2017

Ans. (c) आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार सम्प्रदायों का सही अनुक्रम :

सम्प्रदाय	प्रवर्तक	दर्शन
श्री सम्प्रदाय	रामानुजाचार्य	विशिष्टाद्वैतवाद
ब्रह्म सम्प्रदाय	मध्वाचार्य	द्वैतवाद
रुद्र सम्प्रदाय	विष्णु स्वामी	शुद्धाद्वैतवाद
सनकादि सम्प्रदाय	निम्बार्काचार्य	द्वैताद्वैतवाद
वल्लभ सम्प्रदाय	वल्लभाचार्य	शुद्धाद्वैतवाद

58. भक्तिकाव्य को भारतीय चिंतनधारा का स्वाभाविक विकास किसने माना है?
(a) श्यामसुन्दर दास (b) रामकुमार वर्मा
(c) हजारीप्रसाद द्विवेदी (d) रामचन्द्र शुक्ल

Uttarakhand Assi. Pro. 2017
Chhatt. Asst. Prof. 2014

Ans. (c) भक्तिकाव्य को भारतीय चिंतनधारा का स्वाभाविक विकास डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी जी ने माना है। रामचन्द्र शुक्ल ने 'इस्लामी आक्रमण की प्रतिक्रिया, ग्रियर्सन ने ईसाइयत की देन' माना है।

59. निम्नलिखित काव्य-पंक्तियों को उनके रचनाकारों से सुमेलित कीजिए:

सूची-I	सूची-II
(a) ओनई घटा, परी जग छाहाँ	(i) सूरदास
(b) आवत जात पनहियाँ टूटी	(ii) कुंभनदास
(c) अति मलीन वृषभानु कुमारी	(iii) तुलसीदास
(d) कीरति भनिति भूतिभल सोई	(iv) जायसी
	(v) कबीरदास

कोड:

	(a)	(b)	(c)	(d)
(a)	(i)	(iii)	(iv)	(v)
(b)	(i)	(v)	(iii)	(iv)
(c)	(ii)	(v)	(iv)	(iii)
(d)	(iv)	(ii)	(i)	(iii)

UGC NET II[nd] Paper June 2014

Ans : (d)

पंक्ति	पंक्तिकार
ओनई घटा, परी जग छाहाँ -	जायसी
आवत जात पनहियाँ टूटी -	कुंभनदास
अति मलीन वृषभानु कुमारी -	सूरदास
कीरति भनिति भूतिभलि सोइ -	तुलसीदास

60. निम्नलिखित दार्शनिक सिद्धान्तों को उनसे सम्बद्ध कवियों के साथ सुमेलित कीजिए:

सूची-I	सूची-II
(a) अद्वैतवाद	(i) जायसी
(b) विशिष्टाद्वैतवाद	(ii) हरिदास
(c) शुद्धाद्वैतवाद	(iii) रैदास
(d) सखी संप्रदाय	(iv) कुंभनदास
	(v) तुलसीदास

कोड:

	(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	(iii)	(v)	(iv)	(ii)
(b)	(i)	(ii)	(iii)	(iv)
(c)	(ii)	(iii)	(v)	(i)
(d)	(iv)	(i)	(ii)	(v)

DSSSB PGT 24.07.2018, Shift-III

Ans : (a)

दार्शनिक सिद्धांत	कवि	प्रवर्तक
अद्वैतवाद	रैदास	शंकराचार्य
विशिष्टाद्वैतवाद	तुलसीदास	रामानुजाचार्य
शुद्धाद्वैतवाद	कुंभनदास	वल्लभाचार्य
सखी संप्रदाय	हरिदास	स्वामी हरिदास

61. **अद्वैतवाद के प्रवर्तक कौन थे?**
(a) शंकराचार्य (b) वल्लभाचार्य
(c) मध्वाचार्य (d) रामानुजाचार्य

MP Asst. Prof. Hindi, 2017

Ans. (a) : अद्वैतवाद के प्रवर्तक शंकराचार्य हैं।

प्रवर्तक		वाद
शुद्धाद्वैतवाद	-	वल्लभाचार्य
द्वैतवाद	-	मध्वाचार्य
विशिष्टाद्वैतवाद	-	रामानुजाचार्य

1. संत काव्य

62. **"कबीरदास में जो रहस्यवाद पाया जाता है, वह अधिकतर सूफियों के प्रभाव के कारण है।" यह किसका कथन है?**
(a) डॉ. पुखराज मारू (b) सोमप्रभ सूरि
(c) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल (d) डॉ. नगेन्द्र

UPPSC GDC 2021 SEC-C

Ans. (c) : "कबीरदास में जो रहस्यवाद पाया जाता है वह अधिकतर सूफियों के प्रभाव के कारण है।" यह कथन आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का है। शुक्ल जी कबीरदास को सन्तकाव्य धारा का प्रथम कवि मानते हैं एवं इनकी भाषा को 'सधुक्कड़ी' भाषा कहा है।

63. **ज्यों तिरिया पीहर बसे, सुरत रहे पिव माहिं।**
ऐसे जन जग में रहें, गुरु को भूले नाहिं॥
उपर्युक्त पंक्तियाँ किसकी हैं?
(a) सुन्दरदास (b) कबीरदास
(c) सहजोबाई (d) रैदास

UPPSC GDC 2021 SEC-C

Ans. (c) : ज्यों तिरिया पीहर बसे, सुरत रहे पिव माहिं।
ऐसे जन जग में रहें, गुरु को भूले नाहिं।।
उपर्युक्त पंक्तियाँ 'सहजोबाई' की है। सहजोबाई निर्गुण काव्यधारा की संत कवयित्री थी। यह महात्मा चारणदास की शिष्या थी। इनके द्वारा रचित कृति 'सहजप्रकाश' है।

64. **'प्रभुजी तुम चंदन हम पानी**
जाकी अंग अंग बास समानी'
ये काव्य-पंक्तियाँ किस संत कवि की हैं?
(a) कबीरदास (b) रैदास
(c) पीपा (d) नानकदेव

UKPSC Lecturer 2020
DSSSB PGT 24.07.2018, Shift-III[rd]

Ans. (b) : 'प्रभु जी तुम .... अंग बास समानी' काव्यपंक्तियों के रचनाकार संत रैदास हैं।
- संत रैदास (रविदास) मीराबाई और उदय के गुरु मानें जाते हैं।
- रैदास के 40 पद '। ग्रन्थ साहब' में संकलित है।
- प्रमुख कवि और उनकी काव्य पंक्तियाँ-

(1) जाके कुटुम्ब सब ढोर ढोवत।
फिरहि अजहुँ बनारसी आस पासा।।
- रैदास

(2) हरि रस पीया जानिए, जे कबहूँ न जाय खुमार।
- कबीरदास

(3) जो नर दुख में दुख नहिं मानै
- गुरुनानक देव

(4) सुख सनेह अरु भय नहि जाके, कंचन माटी जानै।।
जो ब्रहमंडे सोई पिंडे जो खोजै सो पावै।
- संत पीपा

65. **'द निर्गुण स्कूल ऑफ हिंदी पोएट्री' इनमें से किसका शोध-ग्रंथ है?**
(a) डॉ. लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय (b) डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी
(c) बाबू श्यामसुन्दर दास (d) डॉ. पीतांबरदत्त बड़थ्वाल

UKPSC Lecturer 2020

Ans. (d) : 'द निर्गुण स्कूल ऑफ हिंदी पोएट्री' डॉ. पीताम्बरदत्त बड़थ्वाल का शोधप्रबन्ध है।
- डॉ. श्यामसुन्दर दास के मार्गदर्शन में पीताम्बरदत्त बड़थ्वाल ने हिन्दी का प्रथम शोध 'हिन्दी काव्य में निर्गुण सम्प्रदाय' शीर्षक से लिखा।
- ये हिन्दी के प्रसिद्ध साहित्यकार, आलोचक एवं निबन्धकार थे।
- पीताम्बरदत्त बड़थ्वाल स्वतन्त्र भारत के हिन्दी में 'डि. लिट' की उपाधि प्राप्त करने वाले पहले शोधार्थी थे।
- पीताम्बरदत्त 'गोस्वामी तुलसीदास' तथा 'रूपक रहस्य' के सहलेखक और 'कबीर ग्रंथावली' एवं रामचन्द्रिका के संपादक भी रहे थे।
- इन्होंने गोरखनाथ की रचनाओं का संपादन गोरखबानी नाम से किया है।

66. **महाराष्ट्र के भक्तों में सबसे पहले किसका नाम आता है?**
(a) नामदेव (b) ज्ञानदेव
(c) गोरखनाथ (d) एकनाथ

UKPSC Lecturer 2020

Ans. (a) : महाराष्ट्र के भक्तों में सबसे पहले सन्त नामदेव का नाम आता है।

● नामदेव के समय में 'नाथ' और 'महानुभाव पंथों' का महाराष्ट्र में प्रचार था। महाराष्ट्र में 'महानुभाव' और 'बारकरी' नामक दो सम्प्रदाय प्रचलित थे। महानुभाव सम्प्रदाय के प्रवर्तक चक्रधन और 'बारकरी' सम्प्रदाय के मूल-प्रवर्तक सन्त पुण्डलीक माने जाते हैं।

सन्त नामदेव का संक्षिप्त परिचय-

सम्प्रदाय - बारकरी

जन्म-मृत्यु - 1135-1215 ई.

जाति - दरजी

गुरु का नाम - विसोबा खेचर

रचना - (1) अभंग (मराठी), (2) गुरु ग्रन्थ साहिब में (हिन्दी)

67. किस संत ने विदेशी आक्रमणकारियों के विरुद्ध आवाज उठाई?

(a) कबीर (b) गुरुनानक देव

(c) सुंदरदास (d) मलूकदास

UKPSC Lecturer 2020

Ans. (b) : संत गुरुनानकदेव ने विदेशी आक्रमणकारियों के विरुद्ध आवाज उठाई।

गुरुनानकदेव

जन्म - सन् 1469 ई. तलवण्डी, लाहौर

माता - तृप्ता

पिता - कालू चन्द खत्री

पत्नी - सुलक्षणी

पुत्र- (1) श्रीचन्द, जिसने उदासी सम्प्रदाय की स्थापना की है।

(2) लक्ष्मी चन्द

नानक के विचार निम्न ग्रन्थों में है-

(1) जपुजी साहब (2) आसदीबार (3) रहिरास (4) सोहिला (5) नसीहत-नामा (खड़ी बोली)

● गुरुनानक का रागी नाम का मुसलमान शिष्य था जो नानक के गेय पदों को गाता था।

68. 'माया महाठगनी हम जानी' किस भक्त कवि का कथन है?

(a) सूरदास (b) कबीरदास

(c) नाभादास (d) कुंभनदास

UKSSSC LT 2020

Ans. (b) : 'माया महाठगनी हम जानी' कबीरदास का कथन है। इस कथन के माध्यम से कबीरदास ने माया का सूक्ष्म विश्लेषण प्रस्तुत करके उसे 'महाठगनी' के रूप में व्यक्त किया है। इसके जाल से केवल गुरु के ज्ञान के द्वारा ही निकला जा सकता है। कबीरदास का जन्म 1398 ई. में लहरतारा (वाराणसी) तथा निधन 1518 ई. मगहर (बस्ती) में माना जाता है। 'रामानंद' इनके गुरु थे। कबीरदास साक्षर नहीं थे, अतः उनकी वाणियों का संग्रह उनके शिष्य धर्मदास ने 'बीजक' नामक ग्रन्थ में किया। इसके तीन भाग हैं- साखी, सबद, रमैनी।

साखी– कबीर की शिक्षाओं और सिद्धांतों का निरुपण अधिकतर साखी में हुआ है। साखियों में दोहे के साथ-साथ सोरठा छंद का प्रयोग देखने को मिलता है।

सबद– 'सबद' गेय पद है जिनमें कबीर के प्रेम और अंतरण साधना की अभिव्यक्ति हुई है अतः इनमें भावावेश की प्रधानता है।

रमैनी– इनमें कबीर के रहस्यमयी और दार्शनिक विचारों को अभिव्यक्त किया गया है। यह चौपाई छंद में लिखी गयी हैं।

69. ''हम अपने को ऐसे धार्मिक आंदोलन के सामने पाते हैं, जो उन सब आंदोलनों से कहीं अधिक विशाल है, जिन्हें भारतवर्ष ने कभी देखा है।'' भक्ति-आंदोलन विषयक यह उक्ति किसकी है?

(a) हजारीप्रसाद द्विवेदी (b) रामचंद्र शुक्ल

(c) मिश्रबंधु (d) जॉर्ज ग्रियर्सन

RPSC Assit. Prof. 2020 Paper-II

Ans. (d) : ''हम अपने को ऐसे धार्मिक आंदोलन के सामने पाते हैं, जो उन सब आंदोलनों से कहीं अधिक विशाल है, जिन्हें भारतवर्ष ने कभी देखा है।'' भक्ति आंदोलन विषयक यह उक्ति जॉर्ज ग्रियर्सन की है।

भक्ति आंदोलन से संबंधित विभिन्न विद्वानों के विचार-

हजारीप्रसाद द्विवेदीः- ''यह बात अत्यन्त उपहासास्पद है कि जब मुसलमान लोग उत्तर भारत में मंदिर तोड़ रहे थे तो उसी समय अपेक्षाकृत निरापद दक्षिण भारत में भक्त लोगों ने भगवान की शरणागति की प्रार्थना की। मुसलमानों के अत्याचार के कारण यदि भक्ति की भावधारा को उमड़ना था तो पहले उसे सिंध में या उत्तर भारत में प्रकट होना चाहिये था, पर प्रकट हुई वह दक्षिण भारत में।''

आचार्य रामचंद्र शुक्लः- ''मुसलमान शासक अपना राज्य प्रतिष्ठित करके देव मंदिरों को गिराने लगे जिससे पूज्य पुरुषों का अपमान होने लगा। अपने पौरुष से हताश जाति के लिये भगवान की शक्ति और करूणा की ओर ध्यान ले जाने के अतिरिक्त दूसरा मार्ग ही क्या था।''

मध्यकालीन भारत में भक्ति आंदोलन का आरम्भ दक्षिण भारत में आलवारों एवं नायनारों (क्रमशः विष्णु एवं शिव भक्त) से हुआ। इस हिंदू क्रांतिकारी अभियान के नेता शंकराचार्य थे। इस अभियान को चैतन्य महाप्रभु, नामदेव, तुकाराम, जयदेव ने और अधिक मुखरता प्रदान की। उत्तर भारत में रामानन्द ने इसे गति प्रदान की।

70. कौन सा विकल्प सुसंगत नहीं है?

(a) कबीर परचई – अनंतदास

(b) ज्ञान समुद्र – सुंदरदास

(c) ज्ञानदीपक – दरिया साहब

(d) ज्ञानबोध – रामानंद

RPSC Assit. Prof. 2020 Paper-II

Ans. (d) : 'ज्ञानबोध' भक्तिकालीन संत कवि मलूकदास की रचना है। जबकि ज्ञानलीला, ज्ञानतिलक, योगचिन्तामणि, रामरक्षा स्तोत्र आदि रामानंद की कृतियाँ हैं।

⇒ अनंतदास ने अपनी रचना ''पीपा परचई'' में अपनी गुरूपंरपरा को रामानंद से आरंभ माना है। यथा – रामानंद → अनंतानंद → कृष्णदास → अग्रदास → विनोदी → अनंतदास।

71. संत दादूदयाल की शिष्य परंपरा से असंबद्ध संत है

(a) पीपा (b) सुंदरदास

(c) रज्जब (d) गरीबदास

RPSC Assit. Prof. 2020 Paper-II

Ans. (a) : संत दादूदयाल की शिष्य परंपरा से असंबद्ध संत हैं- पीपा।

⇒ दादूदयाल जी का जन्म 1544ई. में हुआ था। इनकी शिष्य परंपरा में 52 शिष्य माने जाते हैं। दादूपंथ के उत्तराधिकारी दादू के पुत्र 'गरीबदास' तथा मिस्कीनदास थे।

दादूदयाल ने 1574ई. में राजस्थान में दादू संप्रदाय की स्थापना की जो उनकी मृत्यु के बाद 'दादू पंथ' नाम से प्रसिद्ध हुआ। इनका निधन 1603 ई. में हुआ।

⇒ पीपा, रामानंद जी को अपना गुरू मानते थे।

72. राजस्थान से संबंधित संत-भक्त संप्रदाय नहीं है

(a) निरंजनी संप्रदाय (b) जसनाथी संप्रदाय
(c) लालदासी संप्रदाय (d) बावरी संप्रदाय

RPSC Assit. Prof. 2020 Paper-II

Ans. (d) : बावरी संप्रदाय की स्थापना बावरी साहिबा ने की थी। यह संप्रदाय राजस्थान से संबंधित नहीं है। भक्तिकालीन प्रमुख संप्रदाय व उनके प्रवर्तक हैं-

सम्प्रदाय	प्रवर्तक	केन्द्र
कबीरपंथ	कबीर	काशी
सिख	गुरूनानक	पंजाब
विश्नुई	जंभनाथ	बीकानेर
निरंजनी	हरिदास निरंजनी	डीडवाणा
लालपंथ	लालदास	अलवर
दादू पंथ	दादूदयाल	राजस्थान
सत्यनामी	जगजीवनदास	नरलोन

73. निम्नलिखित के आधार पर सही विकल्प चुनिए:

(अ) निर्गुण भक्ति में गुरु को वही महत्त्व प्राप्त है, जो साधना के अन्य रूपों – ज्ञानमार्ग, सगुण भक्ति या रहस्यवाद - में प्राप्त है।

(ब) निर्गुण भक्ति का आलंबन निराकार और अगोचर है तथा सगुण भक्ति का आलंबन साकार एवं गोचर है।

(a) (अ) और (ब) दोनों गलत
(b) (अ) सही और (ब) गलत
(c) (अ) और (ब) दोनों सही
(d) (अ) गलत और (ब) सही

RPSC Assit. Prof. 2020 Paper-II

Ans. (c) : निर्गुण भक्ति के सम्बन्ध में उपर्युक्त दोनों कथन सही हैं। भक्तिकाल में भक्त कवियों का साधन तथा साध्य 'भक्ति' ही रही। भक्तिभावना का प्राधान्य तद्युगीन सभी काव्यधाराओं ज्ञानमार्गी धारा, प्रेममार्गी धारा, रामभक्ति धारा, कृष्णभक्ति धारा में मिलता है। ज्ञानमार्गी भक्तों ने दाम्पत्य भाव से ज्ञान के द्वारा, प्रेमाश्रयी कवियों ने प्रेम के द्वारा, रामभक्तों ने दास्य भाव से तथा कृष्णभक्तों ने सख्य एवं माधुर्य भाव से ईश्वर के प्रति अपने भक्ति भाव को प्रकट किया है।

भक्तिकाल के सभी कवियों ने गुरू की महिमा को स्वीकार किया है तथा उसका विविध रूपों में बखान भी किया है। गुरू की महत्ता के मूल में पूर्ववर्ती संस्कृत साहित्य का संस्कार तो था ही, साथ में ईश्वर प्राप्ति हेतु साधना भी रही। बिना गुरू ज्ञान अथवा मार्गदर्शन के साधना की सफलता संदिग्ध रहती है। अतः इन कवियों ने गुरू की महत्ता का गुणगान किया हैं।

74. निम्नलिखित के आधार पर सही विकल्प चुनिए:

(अ) कबीर जो कुछ कहते थे शास्त्रीय ज्ञान के आधार पर कहते थे।

(ब) उनकी उक्तियाँ बेधने वाली और व्यंग्य चोट करने वाले होते थे।

विकल्पः

(a) (अ) और (ब) दोनों सही
(b) (अ) गलत और (ब) सही
(c) (अ) और (ब) दोनों गलत
(d) (अ) सही और (ब) गलत

RPSC Assit. Prof. 2020 Paper-II

Ans. (b) : कबीर की उक्तियाँ बेधने वाली और व्यंग्य चोट करने वाले होते थे।

यह कथन सत्य है किंतु यह कथन तर्कसंगत नहीं कि वे जो कुछ कहते थे शास्त्रीय ज्ञान के आधार पर कहते थे। उनका खुद कहना था कि "मसि कागद छूयो नहिं, कलम गह्यो नहिं हाथ।" इस आधार पर उनका साक्षर न होना प्रमाणित होता है अर्थात् उनके वचनों एवं उपदेशों का आधार सूफी-संतों का सत्संग एवं प्रत्यक्ष लोक व्यवहार के अधिक निकट स्थापित प्रतीत होता है।

75. कौन सा कथन असंगत है?

(a) कृष्णगढ़ नरेश महाराज सावंतसिंह ही प्रसिद्ध भक्त कवि नागरीदास हैं।
(b) नागरौनगढ़ के राजा संत पीपा ने स्वामी रामानंद से दीक्षा ली थी।
(c) जंभनाथ ने अपने आदर्शों के प्रचारार्थ 'ब्रह्म संप्रदाय' की स्थापना की।
(d) सहजोबाई ने ब्रह्मतत्व का निर्गुण-सगुण निरपेक्ष अनिर्वचनीय स्थिति का अनुभूतिपरक वर्णन किया है।

RPSC Assit. Prof. 2020 Paper-II

Ans. (c) : असंगत कथन- जंभनाथ ने अपने आदर्शों के प्रचारार्थ 'ब्रह्म संप्रदाय' की स्थापना की।

'ब्रह्म संप्रदाय' की स्थापना का श्रेय मध्वाचार्य को है जबकि जंभनाथ ने 'विश्नोई संप्रदाय' की स्थापना की थी। जंभनाथ का 'विश्नोई संप्रदाय' नाथपंथ से प्रभावित है।

⇒ नागरीदास का मूल नाम सावंत सिंह है जो कृष्णगढ़ के राजा थे। इनका जन्म संवत् 1756 में हुआ था। इनकी 73 रचनाओं का संग्रह 'नागर समुच्चय' के नाम से 'ज्ञानसागर यंत्रालय' से प्रकाशित हुआ।

⇒ भक्तराज पीपाजी का जन्म विक्रम संवत् 1380 में राजस्थान में कोटा से 45 मील पूर्व दिशा में 'गागरोन गढ़' में हुआ जहाँ के राजा के रूप में संवत् 1400 में इनका राज्याभिषेक हुआ। इन्होने संवत् 1414 में संत रामानंद से दीक्षा प्राप्त की।

⇒ सहजोबाई का जन्म सन् 1725 ई. को हुआ था। ये चरणदास की शिष्या थीं। इनका एकमात्र ग्रंथ 'सहज प्रकाश' है। इन्होंने ब्रह्मतत्व का निर्गुण-सगुण निरपेक्ष, अनिर्वचनीय स्थिति का अनुभूतिपरक वर्णन किया है अर्थात् 'निर्गुण एवं सगुण भक्ति का सम्मिश्रण।'

76. "कबीरदास ऐसे ही मिलनबिंदु पर खड़े थे। जहाँ से एक ओर हिंदुत्व निकल जाता है और दूसरी ओर मुसलमानत्व,........." कबीर विषयक उक्त मान्यता किसकी है?
(a) रामचंद्र शुक्ल (b) श्यामसुंदर दास
(c) हजारीप्रसाद द्विवेदी (d) सरनामसिंह शर्मा
RPSC Assit. Prof. 2020 Paper-II

Ans. (c) : कबीर विषयक उपर्युक्त कथन हजारी प्रसाद द्विवेदी का है। "कबीर ने अपनी झाड़-फटकार के द्वारा हिन्दुओं और मुसलमानों के कट्टरपन को दूर करने का जो प्रयास किया वह अधिकतर चिढ़ाने वाला सिद्ध हुआ, हृदय को स्पर्श करने वाला नहीं।" रामचंद्र शुक्ल।
"कबीर की भाषा 'पंचमेल खिचड़ी' है"– श्यामसुंदर दास।
"कबीर का जीवनकाल उन्हें रामानंद, सिकंदर लोदी, पीपा, नानक आदि के समकालीन बना देता है।" – डॉ. सरनाम सिंह।

77. निम्न में से किसका जन्म 1469 ई. में कार्तिक पूर्णिमा के दिन पंजाब के तलवंडी गांव में हुआ था?
(a) गुरु गोविन्द सिंह (b) अर्जुन देव
(c) गुरु तेगबहादुर (d) गुरु नानक देव
DSSSB TGT (Female) 04.09.2021 Shift-III

Ans. (d) : गुरु नानक देव का जन्म 1469 ई. में कार्तिक पूर्णिमा के दिन पंजाब के तलवंडी में हुआ था।
- गुरुनानक देव सिक्ख सम्प्रदाय के मूल प्रवर्तक एवं आदि गुरु थे।
- प्रमुख रचनाएँ - जपुजी, आसदीबार, रहिरास और सोहिला।
- 'जपुजी' नानक दर्शन का सार तत्व है।
- 'नसीहतनामा' नानकदेव की महत्वपूर्ण रचना है।

78. निर्गुण भक्तिकाव्य धारा में 'उदासी सम्प्रदाय' के प्रवर्तक कौन हैं?
(a) दादू दयाल (b) रज्जब
(c) श्रीचंद (d) मलूकदास
UP PGT 2021

Ans. (c) : निर्गुण भक्तिकाव्य धारा में उदासी सम्प्रदाय के प्रवर्तक 'श्रीचन्द' है। भक्ति कालीन प्रमुख सम्प्रदाय व उनके प्रवर्तक है-

सम्प्रदाय		प्रवर्तक
वल्लभ सम्प्रदाय	–	वल्लभाचार्य
निम्बार्क सम्प्रदाय	–	निम्बार्काचार्य
राधावल्लभ सम्प्रदाय	–	हितहरिवंश
हरिदासी सम्प्रदाय	–	स्वामी हरिदास
गौणीय सम्प्रदाय	–	चैतन्य महाप्रभु
तत्सुखी सम्प्रदाय	–	जीवाराम
रुद्र सम्प्रदाय	–	विष्णु स्वामी
दादू पंथ	–	दादू दयाल

79. 'संत साहित्य' के संबंध में कौन-सा कथन उचित नहीं प्रतीत होता है?
(a) संत साहित्य एक वैचारिक भूमि पर स्थित है।
(b) रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार यह इस्लामिक आक्रमण से पराजित हिन्दू जनता की असहाय मनःस्थिति का परिणाम है।
(c) संत साहित्य को मात्र भजन पूजन के स्तर पर देखा जा सकता है।
(d) हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार संत साहित्य या भक्ति आन्दोलन भारतीय चिंता धारा का स्वभाविक विकास है।
UP PGT 2021

Ans. (c) : 'संत साहित्य' के सम्बन्ध में 'संत साहित्य को मात्र भजन-पूजन के स्तर पर देखा जा सकता है।' यह कथन असत्य है। क्योंकि संत साहित्य में भजन-पूजन निषेध है। संत कवि ईश्वर के निराकार स्वरूप की उपासना करते हैं। संत साहित्य समाज सुधार तथा लोकाचार के लिए भी जाना जाता है।
- संत साहित्य का प्रवर्तक 'कबीरदास' को माना जाता है, जो निर्गुण पंथ के उपासक थे।

80. 'कबीर का भक्ति आन्दोलन विद्रोहमूलक है, तो गोस्वामी तुलसीदास का प्रतिरोधात्मक'– यह विचार व्यक्त करने वाले विद्वान हैं–
(a) रामचन्द्र शुक्ल (b) डॉ. नगेन्द्र
(c) डॉ. बच्चन सिंह (d) डॉ. रामविलास शर्मा
UP PGT 2021

Ans. (c) : 'कबीर का भक्ति आन्दोलन विद्रोहमूलक है, तो गोस्वामीजी का प्रतिरोधात्मक' यह विचार व्यक्त करने वाले विद्वान डॉ० बच्चन सिंह हैं।
आचार्य शुक्ल कहते हैं कि "निर्गुण धारा के संतो के बानी में किस प्रकार लोकधर्म की अवहेलना छिपी हुयी थी। सगुण धारा के भारतीय पद्धति के भक्तों में कबीर, दादू आदि के लोक धर्म विरोधी स्वरूप को यदि किसी ने पहचाना तो गोस्वामी तुलसीदास जी ने।"
- डॉ० नगेन्द्र लिखते हैं कि "तुलसीदास की भक्तिभावना कबीर आदि निर्गुण भक्तों की ज्ञानयोगमयी भावना की भांति रहस्यमयी नहीं है। वह सीधी, सरल एवं सहज साध्य है।"

81. गुरु नानकदेव की माता का नाम था
(a) लक्ष्मी (b) वितस्ता
(c) रूपना (d) तृप्ता
UP TGT- 2021

Ans. (d) : गुरु नानकदेव सिखों के प्रथम गुरु हैं। इनका जन्म तलवंडी वर्तमान ननकाना साहिब (पंजाब, पाकिस्तान) में 15 अप्रैल 1469 ई. में पूर्णिमा के दिन हुआ था तथा निधन सितंबर 1539 ई. में करतारपुर में हुआ। इनके पिता का नाम-मेहता कालू तथा माता का नाम-तृप्ता देवी था। इनकी बहन का नाम नानकी था।
नानक के विचार निम्न ग्रन्थों में है-
1. जपुजी (नानक दर्शन का सार)
2. आस दीबार
3. रहिरास
4. सोहिला
5. नसीहतनामा (खड़ी बोली)

82. 'हम तौ भगति मुकति मैं आया।
गुरु परसाद राम गुन गाया।'
पंक्तियाँ किस ग्रंथ से ली गई है?
(a) पद्मावत (b) रामचरित मानस
(c) कबीर की परिचई (d) बीजक
UP TGT- 2021

Ans. (c) : 'हम तो भगति मुकति मैं आया।
गुरु परसाद राम गुन गाया।'

उक्त काव्य पंक्तियाँ प्रसिद्ध ग्रंथ 'कबीर की परिचई' से ली गयी हैं जिसके रचनाकार श्री अनंतदास जी माने जाते हैं। कबीर की परिचई की 6 प्रतियाँ उपलब्ध हैं जिसमें कबीर के जीवन की प्रमुख घटनाओं का उल्लेख है। इस परिचई से स्पष्ट होता है कि-

1. कबीर काशी में निवास करने वाले मुसलमान जुलाहे थे।
2. उन्होंने रामानंद से दीक्षा प्राप्त की थी।
3. सिकन्दर शाह ने कबीर पर अनेक अत्याचार किये।

- यह समस्त ग्रंथ चौपाई और दोहों में लिखा गया है।

83. संत-काव्य परम्परा का कौन-सा कवि अपनी विद्वत्ता (सर्वाधिक शिक्षित होने) के कारण प्रसिद्ध है?

(a) धर्मदास (b) रविदास
(c) सुन्दरदास (d) रज्जब

UP TGT- 2021

Ans. (c) : 'सुन्दरदास' संत-काव्य परंपरा के सर्वाधिक काव्यकला निपुण, शास्त्रज्ञ एवं सुशिक्षित संत थे। इनका जन्म जयपुर के दौसा नामक स्थान पर 1596 ई. में और मृत्यु 1689 ई. में हुई थी। इनके पिता का नाम परमानंद खाण्डेवाल था। सुंदरदास के गुरु 'दादूदयाल' थे।

'ज्ञान समुद्र' और 'सुंदर विलास' इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं।

**84. कबीर कूता राम, मुतिया मेरा नाउँ।
गलै राम की जेवड़ी, जित खैंचै तित जाउँ॥
इस दोहे में किस तरह की मानसिकता व्यक्त हुई है?**

(a) आत्मसमर्पण (b) मान
(c) दीनता (d) कुंठा

UGC NET Dec. 2020/June 2021 Shift-II

Ans. (a) : उपर्युक्त दोहे में 'आत्मसमर्पण' की मानसिकता व्यक्त हुई है। प्रस्तुत दोहा भक्तिकाल के निर्गुण काव्यधारा के प्रतिनिधि कवि कबीरदास द्वारा रचित है। 'कबीर' अरबी भाषा का शब्द है, जिसका अर्थ 'महान' या 'श्रेष्ठ' होता है।

**85. 'कै बिरहिन कूँ मींच दे, कै आपा दिखलाइ।
आठ पहर का दाझणाँ, मोपै सहा न जाइ॥
इन पंक्तियों में प्रेम की किस स्थिति का वर्णन हुआ है?**

(a) विरह की अतिशयता (b) प्रेम की सामान्य स्थिति
(c) प्रिय की निष्ठुरता (d) उपालंभ

UGC NET Dec. 2020/June 2021 Shift-I

Ans. (a) : 'कै बिरहिन कूँ मींच दे, कै आपा दिखलाइ।
आठ पहर का दाक्षणाँ, मोपै सहा न जाइ।।

कबीरदास जी की उक्त पंक्तियों में प्रेम में 'विरह की अतिशयता' की स्थिति का वर्णन हुआ है। कबीरदास भक्तिकाल के संत काव्यधारा के प्रमुख कवि है। कबीरदास का जन्म 1398 ई. एवं मृत्यु 1518 ई. में हुई थी। कबीर की वाणी का संग्रह उनके शिष्य धर्मदास ने 'बीजक' नाम से किया है।

86. कबीरदास जी ने अपने रहस्यवादी और दार्शनिक विचारों की व्याख्या किसमें की है?

(a) रमैनी (b) सबद
(c) साखी (d) कबीरपंथ

DSSSB PGT 4.7.2021 Shift-I

Ans. (a) : कबीर की वाणियों का संग्रह उनके शिष्य धर्मदास ने 'बीजक' नाम से सन् 1464 ई. में किया। बीजक के तीन भाग हैं- साखी, सबद और रमैनी। रमैनी में कबीर के रहस्यवादी तथा दार्शनिक विचारों को संकलित किया गया है। रमैनी में चौपाई छंद प्रयुक्त हुआ है।

87. कबीरदास की भाषा कैसी थी?

(a) सधुक्कड़ी (b) खड़ी बोली
(c) अवधी (d) अपभ्रंश

DSSSB PGT 4.7.2021 Shift-I
DSSB TGT (Male) 28.8.2018
DSSSB PGT 23.07.2018
MP Asst Pro. Hindi 2017

Ans. (a) : कबीरदास की भाषा को 'सधुक्कड़ी', पंचमेल खिचड़ी आदि नामों से अभिहीत किया जाता है। कबीरदास ने पूरे देश का भ्रमण किया था और उन्होंने औपचारिक शिक्षा नहीं पाई थी। देश के अलग-अलग भागों की भाषा कबीरदास के यहाँ आकर मिश्रित हो गई। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी कबीरदास को 'भाषा का डिक्टेटर' कहते हैं।

88. 'पाहन पूजे हरि मिले, तो मै पूजूँ पहार' यह उक्ति किसकी है?

(a) रसखान (b) रहीम
(c) मलूकदास (d) कबीर

DSSSB PGT 4.7.2021 Shift-I

Ans. (d) : 'पाहन पूजे हरि मिले, तो मैं पूजूँ पहार' यह उक्ति भक्तिकाल के निर्गुण धारा के ज्ञानाश्रयी शाखा के कवि कबीरदास का है। डॉ. बच्चन सिंह ने लिखा है- "हिन्दी भक्ति काव्य का प्रथम क्रान्तिकारी पुरस्कर्ता कबीर है।" कबीर की वाणी का संग्रह सन् 1464 ई. में उनके शिष्य धर्मदास ने 'बीजक' नाम से किया है।

89. निम्नलिखित में से कौन निर्गुण भक्ति धारा का कवि नहीं था?

(a) नानक (b) जायसी
(c) मीरा (d) कबीर

DSSSB TGT (Female) 04.09.2021 Shift-II

Ans. (c) : मीराबाई निर्गुण भक्तिकाव्यधारा की कवयित्री नहीं थी। मीराबाई सगुण भक्ति काव्यधारा के कृष्णभक्ति शाखा की प्रमुख कवयित्री थी। मीराबाई ने श्रीकृष्ण की उपासना प्रियतम या पति के रुप में की है। मीराबाई की भाषा 'राजस्थानी मिश्रित ब्रजभाषा' है। जायसी भक्तिकाल के निर्गुण काव्यधारा की सूफी प्रेममार्गी शाखा के प्रमुख कवि हैं। इनकी प्रसिद्ध रचना 'पद्मावत' है। गुरुनानक देव और कबीर निर्गुण काव्यधारा (सन्तकाव्य) के प्रसिद्ध कवि हैं।

90. निम्न में से कौन सिख संप्रदाय के प्रवर्तक थे?

(a) गुरु अर्जुन देव (b) गुरु अंगद जी
(c) गुरुनानक देव जी (d) गुरु गोविन्द सिंह जी

DSSSB PGT 18.7.2021 Shift-II

Ans : (c) गुरुनानक देव सिख सम्प्रदाय के प्रवर्तक एवं आदि गुरु थे। इनकी प्रमुख रचनाएं- जपुजी, आसदीबार, सोहिला, गुरु ग्रन्थ साहिब मे संकलित है। 'जपुजी' में नानक जी के दर्शन का सारतत्व संकलित है।

91. निम्न में से मलूकदास की रचना के नाम बताएँ?

(a) मृगावती (b) सुंदर विलास
(c) बीजक (d) रतनखान

DSSSB PGT 18.7.2021 Shift-II

Ans : (d) निम्न रचनाओं के रचनाकार इस प्रकार है –

रचना	रचनाकार
रतनखान	मलूकदास
मृगावती	कुतुबन
सुंदर विलास	सुंदरदास
बीजक	कबीरदास

92. किस कवि की रचना से प्रभावित होकर अकबर ने गोवध बंद करवा दिया था?

(a) संत दादू दयाल (b) आलम
(c) सेनापति (d) गंग

DSSSB PGT 18.7.2021 Shift-II

Ans : (a) दादू पंथ में दादू दयाल के चमत्कारों की कई कथाएँ प्रचलित हैं। कहा जाता है दादू के चमत्कारों से प्रभावित होकर अकबर ने आमेर नरेश मानसिंह प्रथम से दादू दयाल को फतेहपुर सीकरी बुलवाया था। अकबर ने 40 दिनों तक दादू के प्रवचन सुने तथा उन्हीं से प्रभावित होकर गोहत्या पर रोक लगवा दी।

93. चलती चाकी देख के, दिया कबीरा रोय
दो पाटन के बीच में, साबुत बचा न कोय॥
काव्यपंक्तियों में कौन सी शब्द शक्ति है ?

(a) अभिधा (b) लक्षणा
(c) व्यंजना (d) विलक्षणा

UPHESC Assit. Prof. 2021

Ans. (c) : उपर्युक्त काव्य पंक्ति में 'व्यंजना' शब्द शक्ति है।
उक्त पंक्ति कबीरदास की है। यहाँ चलती चक्की को देखकर कबीरदास के दुःखी होने की बात कही गई है जिसके द्वारा यह अर्थ व्यंजित होता है कि संसार चक्की के समान है, जिसके जन्म और मृत्यु रूपी दो पाटों के बीच मनुष्य पिसता रहता है।
शब्दशक्ति- शब्दों के अर्थों का बोध कराने वाले अर्थ- व्यापार को शब्द शक्ति कहते हैं। शब्द शक्ति तीन प्रकार होती हैं-
1. अभिधा, 2. व्यंजना, 3. लक्षणा।
1. अभिधा–जिसका सीधा सरल अर्थ पाठक को समझ में आ जाता है, उसे अभिधा शब्द शक्ति कहते हैं।
2. व्यंजना– जब किसी शब्द के अभिप्रेत अर्थ का बोध न तो मुख्यार्थ से होता है और न ही लक्ष्यार्थ से, बल्कि कथन के सन्दर्भ के अनुसार अलग-अलग अर्थ या व्यंग्यार्थ से हो, वहाँ व्यंजना शब्द शक्ति होती है। यह दो प्रकार की होती है।
1. शाब्दी व्यंजना 2. आर्थी व्यंजना।
3. लक्षणा– मुख्यार्थ में बाधा होने पर रूढ़ि या प्रयोजन के कारण जिस शक्ति के द्वारा मुख्यार्थ से सम्बन्धित अन्य अर्थ लक्षित हो वह लक्षणा शब्द शक्ति कहलाती है।

94. 'मनुवाँ तो दहुँ दिसि फिरै,
यह तौ सुमिरन नाहिं।
उक्त काव्यांश किस कवि का है?

(a) सूरदास (b) रहीम
(c) रसखान (d) कबीरदास

Haryana TGT 2020

Ans. (d) : 'मनुवाँ तो दहुँ दिसि फिरै, यह तौ सुमिरन नाहिं।
उक्त काव्यांश 'कबीरदास' जी का है। कबीरदास जी भक्तिकाल की निर्गुण शाखा के प्रमुख कवि हैं।
कबीदास जी की बानियों का संकलन 'बीजक' नामक ग्रंथ में मिलता है। 'बीजक' के संकलनकर्ता धर्मदास हैं। इसके तीन भाग किये गये है- साखी, सबद, रमैनी।
वल्लभाचार्य द्वारा पुष्टिमार्ग में दीक्षित भक्तिकाल के सगुण काव्य धारा के कृष्ण भक्त कवि **सूरदास जी की प्रमुख रचनाएँ**- सूरसागर, सूरसरावली, साहित्य लहरी मानी जाती है।
'रसखान' भक्तिकालीन कृष्ण भक्त कवि हैं। इनका पूरा नाम 'सैयद इब्राहीम' था। 'सुजान रसखान' और 'प्रेमवाटिका' इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं।
रास पंचाध्यायी, मदनाष्टक, रहीम दोहावली आदि रहीम की प्रमुख रचनाएँ हैं।

95. "अंषड़ियाँ झाईं पड़ी, पंथ निहारि निहारि।
जीभड़ियाँ छाला पड्या, राम पुकारि पुकारि॥"
इस साखी में निम्नलिखित में से किस साधना- पद्धति का मुख्य प्रभाव है?

(a) नाथपंथी साधना (b) सूफी साधना
(c) सिद्ध साधना (d) अद्वैत वेदान्त

RPSC Assit. Prof. 2020 Paper-I

Ans. (b) : कबीर द्वारा रचित इस साखी में सूफी साधना पद्धति का मुख्य प्रभाव है। कबीर की साधना पद्धति पर सूफी प्रभाव भी माना जाता रहा है। सूफियों ने 'प्रेम की पीर' की बात की है। कबीर का जीवात्मा भी उस पीर के लिए तड़पता है। हर क्षण मिलन की व्याकुलता देखकर ऐसा लगता है कि कबीर की यह वियोग साधना सूफियों के प्रभाव के कारण ही है। कबीर की वाणी का संग्रह उनके शिष्य धर्मदास ने 'बीजक' नाम से सन् 1464 ई. में किया। बीजक के तीन भाग किये गये (1) साखी (2) सबद (3) रमैनी

96. 'दुलहिन गावहु मंगलचार', पद में प्रेम का कौन सा रूप है?

(a) साहचर्यजन्य प्रेम (b) सहज प्रेम
(c) विषम प्रेम (d) दाम्पत्य प्रेम

RPSC Assit. Prof. 2020 Paper-I

Ans. (d) : उपर्युक्त पद में दाम्पत्य प्रेम का चित्रण है।
इस पद में कबीर अपनी आत्मा को दुलहिन के रूप में व्यक्त करते हैं और 'राम यानि परमात्मा' को 'भरतार' या 'पति' के रूप में व्यक्त करते हैं। कबीर अपने आपको इस पद में प्रेम के उच्चतर अवस्था में स्त्री हृदय के समतुल्य पाते हैं। वे अपने-आपको दुलहिन के रूप में देखते हैं और भाव समाधि की अवस्था में पाते हैं कि परमात्मा के सुमिरन की प्रक्रिया में उसके राम अर्थात 'भरतार' के रूप में उनके अहोभाव में व्यक्त होते हैं। प्रसिद्ध रचना निर्गुण संत शिरोमणि कबीरदास द्वारा रचित यह उलटबांसी उनके ग्रन्थ 'बीजक' के 'रमैनी' से सम्बन्धित है। डॉ. बच्चन सिंह ने लिखा है- "हिन्दी भक्ति काव्य का प्रथम क्रान्तिकारी पुरस्कर्ता कबीर हैं।" कबीर के गुरू का नाम 'रामानन्द' था किन्तु मुसलमानों के अनुसार कबीर के गुरू का नाम सूफी फकीर 'शेखतकी' था। ये सिकन्दर लोदी के पीर गुरू थे।

97. "एक अचम्भा देखा रे भाई,
ठाढ़ा सिंघ चरावै गाई।"
पहलैं पूत पीछे भई माँई, चेला कै गुरु लागै पाई॥
जल की मछली तरवर ब्याई, पकरि बिलाई मुरगै खाई।
बैलहि डारि गूंनि घरि आई, कुत्ता कूँ लै गई बिलाई॥

तलि करि साषा ऊपरि करि मूल, बहुत भाँति जड़ लागे फूल।
कहै कबीर या पद को बूझै, ताँकू तीन्यूँ त्रिभुवन सूझै।।
पद के सन्दर्भ में असंगत है

(a) उलटबाँसी (b) भक्ति की चरम दशा
(c) योग की साधना पद्धति (d) गेयता

RPSC Assit. Prof. 2020 Paper-I

Ans. (b) : उपर्युक्त पद के सन्दर्भ में भक्ति की चरमदशा असंगत है। शेष कथन पद के सन्दर्भ में संगत है।

कबीरदास भक्ति की चरम सीमा ज्ञान को मानते हैं। जहाँ भक्त का भगवान से साक्षात्कार हो जाता है उनके लिए वही भक्ति की चरम सीमा है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने कहा है- "उन्होंने (कबीर) भारतीय ब्रह्मवाद के साथ सूफियों के भावात्मक रहस्यवाद, हठयोगियों के साधनात्मक रहस्यवाद और वैष्णवों के अहिंसावाद तथा प्रपत्तिवाद का मेल करके अपना पंथ खड़ा किया। कबीर का जन्म काशी में हुआ था। नीरू-नीमा नामक जुलाहा दंपत्ति ने इसका पालन-पोषण किया था। इनकी मृत्यु (1398 ई.-1518 ई.) मगहर में हुई थी। कबीर की पत्नी का नाम लोई था, तथा पुत्र-पुत्री का नाम कमाल और कमाली था। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने कहा है- " कबीरदास का भक्त रूप ही उनका वास्तविक रूप है, कबीरदास के पदों में जो महान प्रकाशपुंज है वे बौद्धिक आलोचना के विषय नहीं हैं।"

98. "ढाई आखर प्रेम का पढ़े सो पंडित होय" यह पंक्ति किस कवि की है?

(a) कुतुबन (b) ईश्वरदास
(c) कबीर (d) जायसी

DSSSB PGT Hindi (Male) 18.07.2021 Shift-I

Ans. (c) : "ढाई आखर प्रेम का पढ़े सो पंडित होय" पंक्ति **कबीर** की है।

कबीर कहते हैं कि पुस्तकें पढ़कर ज्ञान हासिल किया जा सकता है, परन्तु व्यक्ति सिर्फ पुस्तकें पढ़कर ईश्वर का साक्षात्कार नहीं कर सकता है। ढाई अक्षर का एक शब्द है 'प्रेम' जो उसको पढ़ लिया यानि परमात्मा से जिन्हें प्रेम हुआ और उसका दर्शन पा लिया वही वास्तव में पण्डित है।

अन्य कवियों की महत्त्वपूर्ण काव्य पंक्तियाँ–

(1)विधि कर चरित न जानै आनू। जो सिरजा सो जाहि नियानू।।
–कुतुबन

(2) जेहि के बोल बिरह के धाया। कहु केहि भूख कहाँ ते छाया।।
–जायसी

99. गुरुनानाक का जन्म कहाँ हुआ था?

(a) लुधियाना (b) पटना
(c) तलवंडी (d) अमृतसर

DSSSB PGT Hindi (Male) 18.07.2021 Shift-I
UP TGT 2016

Ans. (c) : गुरुनानक का जन्म रावी नदी के किनारे स्थित 'तलवंडी' नामक गाँव में कार्तिक पूर्णिमा को एक खत्री कुल में हुआ था। तलवंडी का नाम आगे चलकर नानक के नाम पर 'ननकाना' पड़ गया। गुरुनानक भक्तिकाल में निर्गुण धारा की ज्ञानाश्रयी शाखा से सम्बन्ध रखते हैं। आचार्य शुक्ल लिखते हैं– "भक्तिभाव से पूर्ण होकर वे जो भजन गाया करते थे उनका संग्रह गुरु ग्रंथ साहिब में किया गया है।"

100. 'विठोबा' का भक्त किसे माना जाता है?

(a) रहीम (b) सूरदास
(c) मीराबाई (d) नामदेव

DSSSB PGT Hindi (Male) 18.07.2021 Shift-I

Ans. (d) : 'विठोबा' का भक्त **नामदेव** को माना जाता है। संत नामदेव विठोबा खेचर को गुरु के रूप में स्वीकार किया। संत नामदेव का 'वारकरी पंथ' (वारकरी सम्प्रदाय) आज तक उत्तरोत्तर विकसित हो रहा है। **'मुखबानी'** नामक पुस्तक में इनकी रचनाएँ संकलित हैं।

मीराबाई ने 'रैदास' को अपना गुरु माना। सूरदास गऊघाट पर वल्लभाचार्य से दीक्षा ली, फिर गोवर्द्धन पर्वत गये और श्रीनाथ की सेवा में लग गये।

101. श्रृंगार रस के घोर विरोधी कौन-से संत कवि थे?

(a) मलूकदास (b) कबीरदास
(c) सुन्दरदास (d) रैदास

DSSSB PGT Hindi (Male) 18.07.2021 Shift-I

Ans. (c) : 'सुन्दरदास' श्रृंगार रस के घोर विरोधी संत थे। सुन्दरदास, दादू दयाल के शिष्य थे। ये निर्गुण मार्गियों में एक मात्र संत हैं, जो शिक्षित थे अर्थात् व्याकरण रीति आदि से परिचित इन्होंने लिखा है–

"रसिक प्रिया रस मंजरी और सिंगारहि है जानि।
चतुराई करि बहुत विधि विषैं बनायी आनि।।"

सुन्दरदास की दो रचनाएँ हैं–

(1) 'सुन्दर विलास' (में 34 अंग हैं)
(2) 'ज्ञान समुद्र' (में 35 उल्लास हैं)

इनके रचनाओं का संकलन पुरोहित हरिनारायण शर्मा ने **'सुन्दर ग्रन्थावली'** नाम से दो भागों में किया है।

102. कबीर की उलटबासियों में कौन-सा रस प्रमुख है?

(a) वियोग (b) करुण
(c) शांत (d) अद्भुत

DSSSB PGT Hindi (Male) 18.07.2021 Shift-I

Ans. (d) : कबीर की उलटबासियों में अद्भुत रस प्रमुख है।

सीधे-साधे न कहकर घुमा-फिराकर, उलटकर कविता के माध्यम से कही हुई बात अथवा व्यंजना 'उलटबासी' कहलाती है। संतों और विशेष रूप से कबीर ने अनेक उलटबासियों की रचना की है।

103. 'मगहर' और 'लोई' से किस कवि का सम्बन्ध है?

(a) रहीम (b) कबीर
(c) तुलसीदास (d) सूरदास

DSSSB PGT Hindi (Male) 18.07.2021 Shift-I

Ans. (b) : मगहर' और 'लोई' से कबीर का सम्बन्ध है। कबीर की मृत्यु मगहर में हुई थी। कबीर की पत्नी का नाम लोई था। पुत्र-पुत्री का नाम कमाल-कमाली था।

कबीर की वाणी का संग्रह उनके शिष्य धर्मदास ने 'बीजक' नाम से सन् 1464 ई. में किया। बीजक के तीन भाग किये गये– (1) रमैनी, (2) सबद (3) साखी।

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने कबीर को **'भाषा का डिक्टेटर'** कहा है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल– "इसमें कोई सन्देह नहीं कि कबीर ने ठीक मौके पर जनता के इस बड़े भाग को संभाला, जो नाथ पंथियों के प्रभाव से प्रेमभाव और भक्ति रस से शून्य शुष्क पड़ता जा रहा था।"

104. कबीर की पत्नी का नाम क्या था?
(a) रेवली (b) लोई
(c) पाई (d) कमाली
DSSSB PGT Hindi (Male) 18.07.2021 Shift-I

Ans. (b) : कबीर की पत्नी का नाम लोई था। कबीर का लालन-पालन नीरू-नीमा नामक जुलाहा दम्पत्ति ने किया। इनकी दो संतानें (कमाल और कमाली) थीं।

कबीर की वाणी का संग्रह उनके शिष्य धर्मदास ने 'बीजक' नाम से 1464 ई. में किया। बीजक के तीन भाग- (1) साखी, (2) सबद, (3) रमैनी।

डा. बच्चन सिंह- "हिन्दी भक्ति काव्य का प्रथम क्रांतिकारी पुरस्कर्ता कबीर हैं।"

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने कबीर को 'भाषा का डिक्टेटर' कहा है।

105. निम्न में से कौन-सी प्रवृत्ति संत काव्य की नहीं है?
(a) गुरु की महत्ता (b) रहस्यवादी भावना
(c) वर्ण व्यवस्था को प्रोत्साहन (d) बह्याडम्बरों का खंडन
DSSSB PGT Hindi (Male) 18.07.2021 Shift-I
हरियाणा असिस्टेंट भर्ती परीक्षा 2017
GDC प्रवक्ता भर्ती परीक्षा 2017

Ans. (c) : 'वर्ण व्यवस्था को प्रोत्साहन' संत काव्य की प्रवृत्ति नहीं है, जबकि संत-काव्य की प्रवृत्तियाँ हैं-
गुरु की महत्ता, रहस्यवादी भावना, बाह्यडम्बरों का खण्डन जाति पाति का विरोध, प्रेम की महत्ता आदि।

106. "अजगर करे न चाकरी पंछी करे न काम" यह पंक्ति किस कवि की है?
(a) मलूकदास (b) सूरदास
(c) गुरुनानक देव (d) निराला
DSSSB PGT Hindi (Male) 18.07.2021 Shift-I
DSSB PGT 18.07.2021 Shift-II

Ans. (a) : "अजगर करे न चाकरी पंछी करे न काम" पंक्ति **मलूकदास** की है।
• मलूकदास के शिष्य **'मथुरादास'** थे। इन्होंने **'मलूक परचई'** लिखा। इनके ग्रंथ अवधी और ब्रज में लिखे गये। इनके निम्न ग्रंथ हैं–ज्ञानबोध, रतनखान, भक्त वच्छावली, रामावतार लीला आदि।
गुरुनानक देव द्वारा रचित निम्न ग्रंथ हैं– जपुजी, आसदिबार, नसीहतनामा (खड़ी बोली), सोहिला आदि।

107. निर्गुण भक्ति के कवि नहीं हैं
(a) रैदास (b) कबीरदास
(c) दादू (d) श्री रामानुजाचार्य
NVS TGT Hindi, 2016

Ans. (d) : 'श्री रामानुजाचार्य' निर्गुण भक्ति के कवि नहीं है बल्कि रामभक्तिशाखा के आचार्य हैं। इन्होंने 'श्री सम्प्रदाय' तथा 'विशिष्टाद्वैतवाद' की स्थापना की। जबकि रैदास, कबीरदास तथा दादू तीनों ही निर्गुण भक्ति धारा के ज्ञानाश्रयी शाखा के कवि हैं।

108. निम्नलिखित में से कौन संत कवि नहीं है?
(a) दादू (b) सुन्दर दास
(c) कबीरदास (d) श्रीधर पाठक
MP Asst. Prof. Hindi, 2017

Ans. (d) : 'श्रीधर पाठक' संत कवि नहीं हैं, बल्कि आधुनिक युग के खड़ी बोली के प्रथम स्वच्छंतावादी कवि है। जबकि दादू, सुन्दरदास तथा कबीरदास संत काव्य धारा के कवि हैं।

109. निम्नलिखित में से कौन ज्ञानमार्गी शाखा के कवि नहीं हैं?
(a) कबीर (b) कुतुबन
(c) रैदास (d) दादू
DSSSB PGT-23.07.2018

Ans. (b) : 'कुतुबन' ज्ञानमार्गी शाखा के कवि नहीं है बल्कि ये प्रेममार्गी (सूफी) शाखा के प्रमुख कवि हैं। अवधी भाषा में रचित 'मृगावती' इनकी प्रसिद्ध रचना है। असाइत, मुल्लादाउद, दामोदर कवि, जायसी, उसमान, शेखनबी, कासिम शाह, नूरमुहम्मद आदि प्रमुख प्रेममार्गी या सूफी कवि हैं। प्रमुख ज्ञानमार्गी कवि हैं- कबीरदास, नामदेव, रैदास, गुरुनानक, दादू दयाल, मलूकदास, सुन्दरदास इत्यादि।

110. 'कबीर परिचई' के रचनाकार कौन हैं?
(a) नाभा दास (b) अनन्तदास
(c) धर्मदास (d) सुन्दरदास
राजस्थान कॉलेज लेक्चरर भर्ती परीक्षा (पेपर-II) 2014

Ans. (b) : 'कबीर परिचई' के रचनाकार अनन्तदास है। 'नाभादास' की रचना भक्तमाल, अष्टयाम है। 'भक्तमाल' में 200 कवियों का जीवनवृत्त और उनकी भक्ति की महिमासूचक बातों को 316 छप्पयों में लिखा गया है। 'अष्टयाम' अवधी और ब्रजभाषा में दोहा चौपाई शैली में राम-सीता का वर्णन है। सुन्दरदास की रचना ज्ञानसमुद्र और सुन्दरविलास है।

111. निरंजनी सम्प्रदाय के प्रवर्तक कवि कौन हैं-
(a) दादूदयाल (b) हरिदास
(c) गरीबदास (d) सुन्दरदास
UPPSC Degree College Exam. 2008

Ans. (b) निरंजनी सम्प्रदाय के प्रवर्तक कवि हरिदास हैं। स्वामी हरिदास ने वृन्दावन में निम्बार्क मतांतर्गत सखी सम्प्रदाय या टट्टी सम्प्रदाय की स्थापना की। अकबर के दरबारी कवि तानसेन स्वामी हरिदास के शिष्य थे। इनके द्वारा रचित ग्रन्थ है- सिद्धान्त के पद, केलिमाल।

112. 'दोहा-चौपाई' में लिखित पदों को क्या कहते है?
(a) रमैनी (b) पद
(c) बावनी (d) साखी
DSSSB PGT-24.07.2018 (9:00 am-12:00 pm)

Ans. (a) : 'दोहा-चौपाई' में लिखित पदों को 'रमैनी' कहते है। ध्यातव्य है कि कबीर दास के 'बीजक' में साखी' सबद एवं रमैनी नामक तीन कोटि की रचनाएँ संग्रहीत हैं।
इनका विवरण इस प्रकार है-
साखी- दोहा छन्द में।
सबद- गेय पदों में।
रमैनी- दोहा + चौपाई में।

113. 'दशरथ सुत तिहुँ लोक बखाना।
राम नाम का मरम है आना।'
इन पंक्तियों के माध्यम से कबीर क्या कहना चाहते हैं?
(a) मैं राम-नाम का मर्म जानता हूँ।
(b) मेरे राम-नाम का मर्म कुछ और है।
(c) दशरथ के पुत्र का वर्णन तीनों लोकों में होता है।
(d) दशरथ-पुत्र राम की महिमा अपरम्पार है।
DSSSB PGT-24.07.2018 (2:00 pm-5:00 pm)
KVS PGT Hindi 2016

Ans. (b) : 'दशरथ सुत तिहुँ लोक बखाना।
राम नाम का मरम है आना।'
इन पंक्तियों के माध्यम से कबीर दास कहना चाहते हैं कि मेरे राम-नाम का मर्म (भेद) कुछ और है। दशरथ पुत्र राम सगुण भक्ति के केन्द्र में है वे शरीर धारी हैं तथा गुणों के माध्यम से उनकी प्राप्ति संभव है, परन्तु कबीर के राम गुणातीत एवं घट-घट वासी हैं, ज्ञान के अभाव में उनकी प्राप्ति संभव नहीं है।

114. 'कबीर के 'निर्गुण पंथ' का आधार भारतीय वेदांत और 'सूफियों का प्रेम तत्व है।' यह विचार किसका है?

(a) रामचंद्र शुक्ल (b) राहुल सांकृत्यायन
(c) हजारीप्रसाद द्विवेदी (d) गोविन्द त्रिगुणायत

Ans : (a) 'कबीर के निर्गुण पंथ का आधार भारतीय वेदांत और सूफियों का प्रेमतत्व है।' यह विचार **आचार्य रामचन्द्र शुक्ल** का है। अपने इतिहास ग्रंथ 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' में आचार्य शुक्ल ने लिखा है- "ज्ञानमार्ग की बातें कबीर ने हिन्दू साधु, संन्यासियों से ग्रहण की जिसमें सूफियों के सत्संग से उन्होंने 'प्रेमतत्व का मिश्रण किया और अपना एक अलग पंथ चलाया।"

115. इनमें से कौन संत कवि नहीं है?

(a) कबीरदास (b) तुलसीदास
(c) सुन्दरदास (d) मलूकदास

UP TGT 2011
UP TGT 2016

Ans. (b) : दिए गए कवियों में से 'तुलसीदास' संत कवि नहीं है। तुलसीदास रामाश्रयी शाखा के प्रतिनिधि कवि हैं। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने भक्तिकाल को चार शाखाओं में विभाजित किया है। जिसके ज्ञानाश्रयी शाखा को सन्तकाव्य धारा भी कहा जाता है। चार शाखाएँ एवं उनसे सम्बन्धित कवि इस प्रकार हैं-

(i) ज्ञानाश्रयी शाखा– कबीरदास, रैदास, सुन्दरदास, मलूकदास, दादू दयाल, गुरु नानक, सींगा, हरिदास निरंजनी, बाबा लाल इत्यादि।

(ii) प्रेमाश्रयी शाखा– मलिक मुहम्मद जायसी, कुतुबन, मंझन, नूर मुहम्मद, उसमान, असाइत, मुल्ला दाउद, शेख नबी, कासिम शाह इत्यादि।

(iii) रामाश्रयी शाखा– रंगनाथ मुनि, रामानुजाचार्य, रामानन्द, राघवानन्द, कील्हदास, अग्रदास, नाभादास, विष्णुदास, गोस्वामी तुलसीदास, केशवदास, सेनापति, प्राणचन्द चौहान इत्यादि।

(iv) कृष्णाश्रयी शाखा– निम्बार्काचार्य, श्री भट्ट, वल्लभाचार्य, विट्ठलनाथ, कुंभनदास, सूरदास, परमानन्द दास, कृष्णदास, गोविन्द स्वामी, छीत स्वामी, चतुर्भुजदास, नंददास, हरिदास, चैतन्य महाप्रभु, हितहरिवंश, मीराबाई, रसखान आदि।

116. सही कालक्रम वाले वर्ग को चिह्नित कीजिए–

(a) कबीर–सूर–तुलसी–जायसी
(b) कबीर–सूर–जायसी–तुलसी
(c) सूर–कबीर–तुलसी–जायसी
(d) कबीर–तुलसी–जायसी–सूर

UPHSC असिस्टेन्ट प्रोफेसर 2016

Ans : (*) कवियों का कालक्रम निम्नलिखित है–

कवि	जन्म
कबीर	1398 ई.
सूरदास	1478 ई.
जायसी	1492 ई. हिजरी 900 (आचार्य शुक्ल)
तुलसी	1532 ई.

117. इनमें से किस मध्यकालीन संत/भक्त कवि का राजस्थान से सम्बन्ध नहीं था?

(a) दादू दयाल (b) नागरीदास
(c) संत पीपा (d) मलूकदास

राजस्थान कॉलेज लेक्चरर भर्ती परीक्षा-2015

Ans. (a & d) मध्यकालीन संत/भक्त कवियों का जन्मस्थल या कार्यस्थल-

कवि	सम्बन्धित स्थल
दादूदयाल	अहमदाबाद (जन्मस्थल)
मलूकदास	इलाहाबाद (जन्मस्थल)
संत पीपा	राजस्थान (जन्मस्थल)
नागरीदास	राजस्थान (जन्मस्थल)

118. इनमें से किस कवि का सम्बन्ध 'संतकाव्य' से नहीं है?

(a) अग्रदास (b) रैदास
(c) कबीरदास (d) धन्ना

राजस्थान कॉलेज लेक्चरर भर्ती परीक्षा-2015

Ans. (a) कबीरदास, रैदास, तथा धन्ना आदि भक्तिकाल निर्गुणधारा के ज्ञानाश्रयी शाखा के कवि हैं जबकि अग्रदास भक्तिकाल के सगुण धारा के राम भक्ति शाखा के कवि हैं।

119. "भाषा पर कबीर का जबरदस्त अधिकार था, वे वाणी के डिक्टेटर थे।" उक्त कथन किस आलोचक का है?

(a) रामचंद शुक्ल (b) रामकुमार वर्मा
(c) परशुराम चतुर्वेदी (d) हजारी प्रसाद द्विवेदी

GDC प्रवक्ता भर्ती परीक्षा-2017
DSSSB GT 24.07.2018 (9:00 am - 12:00 pm)
राजस्थान कॉलेज लेक्चरर भर्ती परीक्षा (पेपर-I) 2014
DIET PGT 2014
UPPGT 2010

Ans. (d) : "भाषा पर कबीर का जबरदस्त अधिकार था, वे वाणी के डिक्टेटर थे।" उक्त कथन आलोचक हजारीप्रसाद द्विवेदी का है। रामचन्द्र शुक्ल ने कबीर की भाषा को 'सधुक्कड़ी' कहा है।

120. किस पंक्ति का संबंध उलटबाँसी से है?

(a) हम घर जाल्या आपणां, लिया मुराडा हाथ
(b) भगति दुआरा संकड़ा, राई दसवें भाई।
(c) यह तन जालौं मति करूँ, ज्यूँ धूंवा जाड़ जाड़ सरगि।
(d) आकासे मुख औंधा कुआँ, पाताले पनिहारि।
(e) सतगुरु मारय बाण भरि, धरि करि सूधी मूठी।

Chattisgarh Asst. Prof. 2014

Ans. (d) : आकासे मुख औंधा कुआँ, पाताले पनिहारि। पंक्ति का संबंध उलटबांसी से है।
उलटबांसी-सीधे-सीधे न कहकर, घुमा-फिराकर उलट कर कविता के माध्यम से कही हुई बात अथवा व्यंजना उलटबांसी कहलाती है। संतों में विशेष रूप से कबीर ने अनेक उलटबाँसियों की रचना की है। कबीर की वाणी का संग्रह उनके शिष्य धर्मदास ने बीजक नाम से सन 1464 ई. में किया। इसके तीन भाग है - (1) साखी, (2) सबद, (3) रमैनी। कबीर को 'भाषा का डिक्टेटर' आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने कहा है। कबीर की भाषा को श्यामसुंदर दास ने 'पंचमेल खिचड़ी' कहा तथा रामचंद्र शुक्ल ने कबीर की भाषा को 'सधुक्कड़ी' माना है।

121. संत - काव्य में 'सबद' .... से अभिप्राय है।
(a) दोहा छंद की रचना (b) संबोधनपरक रचना
(c) उपदेशप्रधान रचना (d) खंडनप्रधान रचना
(e) गेयपदोंवाली रचना

Chattisgarh Asst. Prof. 2014

Ans. (e) : संत - काव्य में 'सबद' का अभिप्राय गेयपदोंवाली रचना से है। सबद का अर्थ 'शब्द' होता है। धर्मदास ने कबीर की वाणी का संग्रह 'बीजक' (1464 ई.) नाम से किया। बीजक के तीन भाग किए गए हैं - रमैनी, सबद, साखी।
रमैनी का अर्थ रामायण है, यह चौपाई-दोहा छन्द में ब्रजभाषा और पूर्वी बोली मे है। सबद (शब्द) गेयपदों में ब्रजभाषा और पूर्वी बोली में है। साखी (साक्षी) दोहा छंद में राजस्थानी, पंजाबी मिली खड़ी बोली में है। कबीर की भाषा को आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने 'वाणी का डिक्टेटर' रामचंद्र शुक्ल ने 'सधुक्कड़ी' और श्यामसुंदर दास ने 'पंचमेल खिचड़ी' कहा है।

122. कबीर के काव्य की प्रमुख प्रवृत्ति .... नहीं है।
(a) संबोधनपरकता (b) खंडनात्मकता
(c) बहुश्रुतता (d) तीव्र विरहानुभूति
(e) शास्त्रानुमोदन

Chattisgarh Asst. Prof. 2014

Ans. (e) : कबीर के काव्य की प्रमुख प्रवृत्ति शास्त्रानुमोदन नहीं है। कबीर के काव्य में संबोधनपरकता, खंडनात्मकता, बहुश्रुतता, तीव्र विरहानभुति, सद्‌गुरू महत्त्व, अवतारवाद विरोध, निर्गुण भक्ति आदि प्रवृत्तियाँ लक्षित होती हैं।

123. निम्नलिखित में से कौन सा कथन असत्य है?
(a) निर्गुण भक्ति में विश्वात्मा प्रभु के विश्वव्यापी अस्तित्व में आस्था प्रकट की गई है।
(b) निर्गुण भक्त वर्ण व्यवस्था के पक्षधर नहीं थे।
(c) निर्गुण भक्ति में लीला का माहात्म्य है।
(d) निर्गुण भक्त सत्य के शोधक हैं।

राजस्थान स्कूल शिक्षा प्राध्यापक परीक्षा–2018

Ans. (c) : निर्गुण भक्ति में लीला का माहात्म्य है। यह कथन असत्य है। निर्गुण भक्ति में विश्वात्मा प्रभु के विश्वव्यापी अस्तित्व में आस्था प्रकट की गयी है। निर्गुण भक्त वर्ण व्यवस्था के पक्षधर नहीं थे। निर्गुण भक्त सत्य के शोधक हैं। ये सभी कथन सत्य हैं।

124. मध्यकालीन 'संत काव्य' पर निम्नलिखित में से किसका प्रभाव नहीं है?
(a) नाथ साहित्य (b) उपनिषद्
(c) अद्वैत दर्शन (d) जैन साहित्य

राजस्थान स्कूल शिक्षा प्राध्यापक परीक्षा–2018

Ans. (d) : मध्यकालीन 'संत काव्य' पर जैन साहित्य का प्रभाव नहीं है। नाथ साहित्य, उपनिषद्, अद्वैतदर्शन इन सभी का प्रभाव मध्यकालीन संत काव्य पर है।

125. कबीर के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन असत्य है?
(a) कबीर के काव्य में दाम्पत्य के द्योतक प्रतीकों का सुन्दर प्रयोग हुआ है।
(b) काव्य-रचना कबीर का प्रथम लक्ष्य था।
(c) कबीर के काव्य में रहस्यवाद मिलता है।
(d) कबीर ने समाज में व्याप्त पाखण्ड का पुरजोर विरोध किया।

राजस्थान स्कूल शिक्षा प्राध्यापक परीक्षा–2018

Ans. (b) : कबीर के संदर्भ में 'काव्य-रचना कबीर का प्रथम लक्ष्य था।' यह कथन असत्य है। कबीर के काव्य में दाम्पत्य के द्योतक प्रतीकों का सुन्दर प्रयोग हुआ है। कबीर के काव्य में रहस्यवाद मिलता है। कबीर ने समाज में व्याप्त पाखण्ड का पुरजोर विरोध किया। ये सभी कथन कबीर के संदर्भ में सत्य हैं।

126. 'संत काव्य' के संदर्भ में कौन–सा कथन गलत है?
(a) संत काव्य आत्मानुभूति पर अधिक बल देता है।
(b) संत काव्य में धार्मिक रूढ़ियों और परम्पराओं के अंधानुकरण का विरोध है।
(c) संत काव्य में शास्त्रीय ज्ञान को परम आवश्यक माना गया है।
(d) संत काव्य की भाषा जन सामान्य की भाषा है।

राजस्थान स्कूल शिक्षा प्राध्यापक परीक्षा–2018

Ans. (c) : 'संत काव्य' के संदर्भ में 'संत काव्य में शास्त्रीय ज्ञान को परम आवश्यक माना गया है।' यह कथन गलत है। संत काव्य आत्मानुभूति पर अधिक बल देता है। संत काव्य में धार्मिक रूढ़ियों और परम्पराओं के अंधानुकरण का विरोध है। संत काव्य की भाषा जन सामान्य की भाषा है। यह कथन संत काव्य के संदर्भ में सही है।

127. 'पारब्रह्म के तेज का, कैसा है उनमान।
कहिबे कूँ सोभा नहीं देख्या ही परमान।।'
'सरयू' में संकलित उक्त काव्य-पंक्तियाँ किस कवि की हैं?
(a) तुलसीदास (b) रहीम
(c) कबीर (d) सेनापति

राजस्थान स्कूल शिक्षा प्राध्यापक परीक्षा–2018

Ans. (c) : 'पारब्रह्म के तेज का, कैसा है उनमान।
कहिबे कूँ सोभा नहीं देख्या ही परमान।।' 'सरयू' में संकलित उपर्युक्त काव्य-पंक्तियाँ कबीर की हैं। कबीर की रचनाएँ हैं– 1. साखी 2. सबद 3. रमैनी।

128. दादू दयाल का जन्म कहाँ हुआ था?
(a) अहमदाबाद (b) बीकानेर
(c) मारवाड़ (d) जयपुर

DSSSB PGT-24.07.2018 (2:00 pm-5:00 pm)

Ans. (a) : दादू दयाल का जन्म (1544 ई.) अहमदाबाद में हुआ था। दादू दयाल के सम्प्रदाय को 'ब्रह्म सम्प्रदाय' या 'परब्रह्म सम्प्रदाय' नाम से भी जाना जाता है। दादू दयाल की वाणियों का सर्वप्रथम सम्पादन उनके शिष्य संतदास और जगन्नदास ने 'हरड़े वाणी' शीर्षक से किया था। पुनः रज्जब ने 'अंगबधू' शीर्षक से इसका सम्पादन किया।

129. साधना के तीन अवयव बताए गए हैं - कर्म, ज्ञान और ....।
(a) तंत्र (b) मन
(c) भक्ति (d) वाणी

DSSSB PGT-24.07.2018 (2:00 pm-5:00 pm)

Ans. (c) : साधना के तीन अवयव बताए गए हैं - कर्म, ज्ञान और भक्ति।

130. निम्नलिखित में से कौन सी कबीर की वाणी की विशेषता नहीं है?
(a) संसार की अनित्यता
(b) मूर्तिपूजा, तीर्थाटन आदि का महत्व
(c) हृदय की शुद्धि
(d) हिन्दू-मुसलमानों को फटकार

DSSSB PGT-24.07.2018 (2:00 pm-5:00 pm)

Ans. (b) : मूर्तिपूजा, तीर्थाटन आदि का महत्त्व कबीर की वाणी की विशेषता नहीं है बल्कि कबीर ने इन सब धार्मिक आडम्बरों की घोर निन्दा की है। द्रष्टव्य है 'आतम मारि पखानहि पूजहिं ठगमें ठहै जो ग्याना।'

131. कबीर ने अपने निर्गुण पंथ में यह कौन सा तत्व शामिल किया जिसका नाथपंथ में अभाव था?
(a) भारतीय वेदांत और सूफियों का प्रेमतत्व
(b) रागात्मक तत्व से रहित साधना
(c) हृदयपक्ष शून्य सामान्य अंतसाधना का मार्ग
(d) तांत्रिक विधान

DSSSB PGT-24.07.2018 (2:00 pm-5:00 pm)
MP Asst. Prof. Hindi 2017
UGC Net 2007 (Paper II)

Ans. (a) : कबीर ने अपने निर्गुण पंथ में 'भारतीय वेदांत और सूफियों का प्रेमतत्व' शामिल किया जिसका नाथपंथ में अभाव था।

132. निम्नलिखित में से कौन सा कथन कबीर के संबंध में उचित नहीं है।
(a) राम-रहिम की एकता का उपदेश दिया
(b) उन्होंने कर्मकाण्ड को प्रधानता देने वालों को खरी-खरी सुनाई
(c) उन्होंने सूफियों से प्रेमतत्व लिया
(d) उनके राम वैष्णवों के राम ही थे।

DSSSB PGT-24.07.2018 (2:00 pm-5:00 pm)

Ans. (d) : 'उनके राम वैष्णवों के राम ही थे' यह कथन कबीर के संबंध में उचित नहीं है। कबीर ने अन्यत्र स्पष्ट कहा है - 'दशरथ सुत तिहुँ लोक बखाना राम नाम का मरम है आना।' जबकि अन्य सभी विकल्प कबीर के सम्बन्ध में उचित है।

133. निम्नलिखित में से कौन सी नानक की रचना नहीं है?
(a) ग्रंथ साहिब (b) आसदीवार
(c) रहिरास (d) सिद्धांत पंचमात्रा

DSSSB PGT-24.07.2018 (2:00 pm-5:00 pm)

Ans. (d) : दी गई रचनाओं में 'सिद्धांत पंचमात्रा' गुरु नानक देव की रचना नहीं है। गुरु नानक देव सिख सम्प्रदाय के मूल प्रवर्तक एवं आदि गुरु थे। इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं - जपुजी, आसदीबार, रहिरास, सोहिला है।

134. रैदास के पद किस धार्मिक ग्रंथ में संकलित हैं?
(a) बाइबिल (b) आदि गुरु ग्रंथ साहिब
(c) श्रीमद् भागवत गीता (d) कुरान

DSSSB PGT-23.07.2018

Ans. (b) : 'रैदास' के चालीस पद आदि गुरु ग्रंथ साहिब में संकलित हैं। रैदास जाति के चमार तथा रामानन्द के प्रमुख शिष्य थे। ये आयु में कबीर से बड़े थे। इन्हें मीराबाई का गुरु माना जाता है। ये ज्ञानाश्रयी शाखा के संत कवियों की श्रेणी में आते है।

135. 'बीजक' किसकी रचनाओं का संग्रह है?
(a) सूरदास (b) जायसी
(c) कबीरदास (d) तुलसीदास

DSSSB PGT-23.07.2018

Ans. (c) : 'बीजक' कबीरदास की रचनाओं का संग्रह है। इसमें साखी, सबद एवं रमैनी का संकलन किया गया है। 'बीजक' का सम्पादन कबीरदास के शिष्य धर्मदास ने किया था। कबीरदास संतकाव्य धारा के प्रतिनिधि कवि हैं।

136. ईश्वर के अस्तित्व को स्वीकार न करने वाला दर्शन कौन-सा है?
(a) द्वैताद्वैत (b) चार्वाक दर्शन
(c) बौद्ध दर्शन (d) विशिष्टाद्वैत

DSSSB PGT-25.07.2018 (9:00 am-12:00 pm)

Ans. (b) : ईश्वर के अस्तित्व को स्वीकार न करने वाला दर्शन चार्वाक दर्शन है। द्वैताद्वैतवाद दर्शन के प्रणेता निम्बार्काचार्य है। इसको भेदाभेदवाद भी कहते हैं।

137. 'दादूपंथ' का प्रधान पीठ (दादू द्वारा) कहाँ पर स्थित है?
(a) अहमदाबाद में (b) नरैना में
(c) आमेर में (d) गांगानेर में

राजस्थान कॉलेज लेक्चरर भर्ती परीक्षा (पेपर-II) 2014

Ans. (b) : 'दादूपंथ' का प्रधान पीठ (दादू द्वारा) नरैना, (नराना में) राजस्थान में स्थित है। दादू दयाल के सम्प्रदाय को 'ब्रह्म सम्प्रदाय' या 'परब्रह्म सम्प्रदाय' के नाम से भी जाना जाता है। इनकी वाणियों का संग्रह इनके शिष्य संतदास और जगन्नाथदास ने 'हरड़े वानी' शीर्षक से किया था। पुनः रज्जब ने 'अंगबधू' शीर्षक से इसका सम्पादन किया।

138. कबीर के परलोकवास होने पर उनकी गद्दी किन्हे मिली?
(a) रविदास को (b) धर्मदास को
(c) गरीबदास को (d) मलूकदास को

DSSSB PGT 24-07-2018 (9 : 00 am - 12 : 00 pm)
राजस्थान कॉलेज लेक्चरर भर्ती परीक्षा (पेपर-II) 2014

Ans. (b) : कबीर के परलोकवास होने पर उनकी गद्दी 'धर्मदास' को मिली क्योंकि धर्मदास इनके प्रमुख शिष्य थे। धर्मदास ने 'बीजक' नाम से इनकी बानियों का संकलन किया। बीजक के तीन खण्ड हैं–

	रचना	अर्थ	छंद	भाषा
1.	साखी	साक्षी	दोहा	राजस्थानी, पंजाबी मिली खड़ी बोली
2.	सबद	शब्द	गेय पद	ब्रजभाषा और पूर्वी बोली
3.	रमैनी	रामायण	चौपाई + दोहा	ब्रजभाषा और, पूर्वी बोली।

139. संत रज्जब द्वारा दादूदयाल की समग्र रचनाओं का संकलन किस नाम से जाना गया है।
(a) सब्बंगी (b) ज्ञान समुद्र
(c) ज्ञान बोध (d) अंगबधू

राजस्थान कॉलेज लेक्चरर भर्ती परीक्षा (पेपर-II) 2014
UGC NET III[rd] paper June 2013

Ans. (d) : संत रज्जब द्वारा दादूदयाल की समग्र रचनाओं का संकलन 'अंगबधू' नाम से जाना गया है। 'सब्बंगी' पुस्तक रज्जब का तथा 'ज्ञानसमुद्र' सुन्दरदास एवं 'ज्ञानबोध' मलूकदास की रचना है।

140. निम्नलिखित में से किस संत का साधना-क्षेत्र कभी भी राजस्थान नहीं रहा?
(a) जंभनाथ (b) सुन्दरदास
(c) मलूकदास (d) पीपा

राजस्थान कॉलेज लेक्चरर भर्ती परीक्षा (पेपर-II) 2014

Ans. (c) : दिये गये विकल्पों में मलूकदास का साधना क्षेत्र कभी भी राजस्थान नहीं रहा, जबकि जंभनाथ, सुन्दरदास, पीपा का साधना क्षेत्र राजस्थान रहा है।

141. दार्शनिक विचारधारा की दृष्टि से 'भेदाभेदवादी' विचारधारा से सम्बन्धित संत का नाम है-
(a) गुरूनानक (b) मलूकदास
(c) कबीर (d) दादूदयाल
राजस्थान कॉलेज लेक्चरर भर्ती परीक्षा (पेपर-II) 2014

Ans. (a) : दार्शनिक विचारधारा की दृष्टि से 'भेदाभेदवादी' विचारधारा से सम्बन्धित संत का नाम 'गुरूनानक' है। गुरूनानक देव सिख सम्प्रदाय के मूल प्रवर्तक एवं आदि गुरु थे। इनकी पत्नी का नाम सुलक्षणी था तथा इनके दो पुत्र थे। 1. श्रीचन्द 2. लक्ष्मीचन्द। गुरुनानक देव की प्रमुख रचनाएँ- 'जपुजी', आसदीबार, रहिरास और सोहिला 'गुरु ग्रंथ साहिब' में संकलित हैं। जपुजी नानक दर्शन का सार तत्त्व है। 'नसीहतनामा' नानकदेव की महत्त्वपूर्ण रचना है।

142. निम्नलिखित में से कौन-सा संत रामानंद का शिष्य नहीं है?
(a) कबीर (b) धर्मदास
(c) सेन (d) पीपा
राजस्थान कॉलेज़ लेक्चरर भर्ती परीक्षा (पेपर-II) 2014

Ans. (b) : दिये गये संतों में धर्मदास रामानन्द के शिष्य नहीं थे बल्कि ये कबीरदास के शिष्य थे। इन्होंने ही कबीर की वाणियों का संग्रह 'बीजक' नाम से किया था। आकाशधर्मा गुरु रामानन्द के कुल बारह शिष्य हुए जो इस प्रकार हैं- अनंतानन्द, भावानन्द, पीपा, सेन, धन्ना, रैदास, कबीर, सुखानंद, सुरसुरानन्द, नरहर्यानन्द, पद्मावती, सुरसुरी।

143. कबीरदास के काव्य में विद्यमान भावात्मक रहस्यवाद की झलक का कारण है-
(a) वेदान्त का प्रभाव
(b) सूफी सत्संग का प्रभाव
(c) अन्याक्ति का प्रभाव
(d) ज्ञानमार्गी चिंतन का प्रभाव
राजस्थान कॉलेज लेक्चरर भर्ती परीक्षा (पेपर-II) 2014

Ans. (b) : कबीरदास के काव्य में विद्यमान भावात्मक रहस्यवाद की झलक का कारण सूफी सत्संग का प्रभाव है। कहा जाता है कि कबीरदास पर हिन्दुओं के वेदान्त एवं सूफी के प्रेम तत्व दोनों का प्रभाव था, परन्तु कबीर ने इन दोनों से ही अलग ज्ञानमार्ग को अपनाया कबीर स्थान-स्थान पर ज्ञानमार्ग की प्रतिष्ठा करते पाये जाते हैं; यथा-
- संतों आयी ग्यान की आँधी रे।
- हस्ती चढ़िये ज्ञान को, सहज दुलीचा डारि।
  स्थान रूप संसार है भूँकन दे झख मारि।।

144. इनमें संत कबीर से सम्बन्धित कौन-सा कथन सही नहीं है?
(a) वे निर्गुण ब्रह्म के उपासक थे।
(b) सत्संग और नाम- स्मरण पर वे बहुत बल देते थे।
(c) वे माया को ईश्वर भक्ति में बाधक मानते थे।
(d) विभिन्न तीर्थों के प्रति उनके मन में श्रद्धा थी।
राजस्थान कॉलेज लेक्चरर भर्ती परीक्षा (पेपर-I) 2014

Ans. (d) : 'विभिन्न तीर्थों के प्रति उनके मन में श्रद्धा थी।' कथन संत कबीर से सम्बन्धित सही नहीं है। क्योंकि वे बाह्य आडम्बरों का विरोध करते थे। कबीर के संबंध में सही कथन इस प्रकार हैं- 1. वे निर्गुण ब्रह्म के उपासक थे।, 2. सत्संग और नाम-स्मरण पर वे बहुत बल देते थे।, 3. वे माया को ईश्वर भक्ति में बाधक मानते थे।

145. जो पै चेराई राम की करतो न लजातो।'' पंक्ति में ''चेराई'' शब्द का अर्थ है-
(a) सेवा (b) चापलूसी
(c) मोह (d) प्रेम
राजस्थान कॉलेज लेक्चरर भर्ती परीक्षा (पेपर-I) 2014

Ans. (a) : जो पै चेराई राम की करतो न लजातो।'' पंक्ति में 'चेराई' शब्द का अर्थ सेवा है। अन्य विकल्प असंगत है।

146. ''हंस जो रहा सरीर महँ, पाँख जरा, गा भागि।'' इस पंक्ति में ''हंस'' का अर्थ है-
(a) बुद्धि (b) हंस
(c) पक्षी (d) जीव
राजस्थान कॉलेज लेक्चरर भर्ती परीक्षा (पेपर-I) 2014

Ans. (d) : ''हंस जो रहा सरीर महँ, पाँख जरा, गा भागि।'' इस पंक्ति में ''हंस'' का अर्थ 'जीव' है।

147. ''कस्तूरी कुंडलि बसै, मृग ढूँढै बन माँहि। ऐसै घटि-घटि राम हैं, दुनियाँ देखैं नाहि।।'' प्रस्तुत पद में है-
(a) भावात्मक रहस्यवाद (b) शुद्धाद्वैतवाद
(c) अद्वैतवाद (d) इनमें से कोई नहीं
राजस्थान कॉलेज लेक्चरर भर्ती परीक्षा (पेपर-I) 2014

Ans. (c) : ''कस्तूरी कुंडलि बसै, मृग ढूँढै बन माँहि। ऐसै घटि-घटि राम हैं, दुनियाँ देखैं नाहि।।'' प्रस्तुत पद में अद्वैतवाद है। 'अद्वैतवाद' के प्रवर्तकं शंकराचार्य हैं। 'अद्वैतवाद' सनातन दर्शन वेदांत के सबसे प्रभावशाली मतों में से एक है। अद्वैतमत के अनुसार जीव और ब्रह्म की भिन्नता का कारण माया है, जिसे अविद्या भी कहते हैं। इसके अनुयायी मानते हैं कि उपनिषदों में इसके सिद्धांतों की पूरी अभिव्यक्ति है और यह वेदांत सूत्रों के द्वारा व्यवस्थित हैं।

148. कबीर का हठयोग किस साहित्य से प्रभावित है?
(a) सिद्ध एवं नाथ साहित्य (b) जैन साहित्य
(c) सूफी काव्य (d) अपभ्रंश साहित्य
राजस्थान कॉलेज लेक्चरर भर्ती परीक्षा (पेपर-I) 2014

Ans. (a) : कबीर का हठयोग 'सिद्ध एवं नाथ साहित्य' से प्रभावित है। कबीर 15वीं सदी के भारतीय रहस्यवादी कवि और संत थे। वे हिन्दी साहित्य के भक्तिकालीन युग में ज्ञानाश्रयी-निर्गुण शाखा के प्रवर्तक थे। इनकी रचनाओं ने हिन्दी प्रदेश के भक्ति आंदोलन को गहरे स्तर तक प्रभावित किया। उनके कुछ पद सिखों के आदि ग्रंथ में भी देखने को मिलता है।

149. ''दुर्गा सप्तशती'' का 'चण्डी चरित्र' के नाम से हिंदी में अनुवाद किसने किया है?
(a) गोविन्द सिंह (b) अंगद देव
(c) अमरदास (d) गुरू नानक
DSSSB PGT-24.07.2018 (9:00 am-12:00 pm)

Ans. (a) : 'दुर्गा सप्तशती' का 'चण्डी चरित्र' के नाम से हिन्दी में अनुवाद 'गोविन्द सिंह' ने किया। गुरू नानक सिख सम्प्रदाय के मूल प्रवर्तक एवं आदि गुरू माने जाते हैं। इनकी प्रमुख रचनाएँ है- जपुजी, आसदीबार, रहिरास, सोहिला। 'जपुजी' नानक दर्शन का सार तत्व है।

150. निम्नलिखित में से किसे संत कवि नहीं माना जाता है?
(a) कबीरदास (b) रैदास
(c) मलूकदास (d) ईश्वरदास
DSSSB PGT-24.07.2018 (9:00 am-12:00 pm)

Ans. (d) : दिये गये कवियों में 'ईश्वरदास' को संत कवि नहीं माना जाता है। ईश्वरदास ज्ञानाश्रयी शाखा के सूफी काव्यधारा के कवि हैं। संत कवि मात्र उन्हें कहा जाता है जो ज्ञानाश्रयी निर्गुण भक्ति शाखा से सम्बद्ध है। प्रमुख संत कवि हैं- रैदास, कबीरदास, जंभनाथ, हरिदास निरंजनी, गुरूनानक, सींगा, लालदास, दादू दयाल, मलूक दास, बाबा लाल, सुन्दर दास आदि।

151. निम्नलिखित में कौन सी प्रवृत्ति संतकाव्य की नहीं है?

(a) वर्णाश्रम व्यवस्था का समर्थन
(b) जन जीवन का चित्रण
(c) सदाचारादि गुणों का प्रतिष्ठान
(d) क्रोध, लोभ, मोह, हिंसा की निन्दा

DSSSB PGT-24.07.2018 (9:00 am-12:00 pm)

Ans. (a) : वर्णाश्रम व्यवस्था का समर्थन संतकाव्य की प्रवृत्ति नहीं है। जन जीवन का चित्रण, सदाचारादि गुणों का प्रतिष्ठान तथा लोभ, क्रोध, मोह, हिंसा की निन्दा इत्यादि संत काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ हैं।

152. 'पं. रामचन्द्र शुक्ल' के अनुसार कबीरदास का जन्म कब माना जाता है?

(a) विक्रम संवत 1454 (b) विक्रम संवत 1456
(c) विक्रम संवत 1455 (d) विक्रम संवत 1557

DSSSB PGT-24.07.2018 (9:00 am-12:00 pm)

Ans. (b) : 'पं. रामचन्द्र शुक्ल' के अनुसार कबीरदास का जन्म विक्रम संवत् 1456 में माना जाता है। कबीरदास का जन्म सन् 1398 ई. में काशी के लहरतारा नामक स्थान पर हुआ था। इनकी मृत्यु 1518 ई. में मगहर नामक स्थान पर हुई थी।

153. 'कबीरदास' की वाणी का संग्रह किसने किया था?

(a) सुन्दरदास (b) धर्मदास
(c) मलुकदास (d) रैदास

DSSSB PGT-24.07.2018 (9:00 am-12:00 pm)

Ans. (b) : 'कबीरदास' की वाणी का संग्रह उनके शिष्य 'धर्मदास' ने किया था। इस संग्रह का नाम 'बीजक' है। बीजक के तीन भाग किये गये है- (1) रमैनी (2) सबद (3) साखी। डॉ. बच्चन सिंह ने लिखा है- 'हिन्दी भक्तिकाव्य का प्रथम क्रान्तिकारी पुरस्कर्ता कबीर है।

154. निर्गुण संत थेः

(a) कबीर (b) तुलसीदास
(c) सूरदास (d) मीराबाई

KVS PGT 2018
DSSSB TGT-15.09.2018

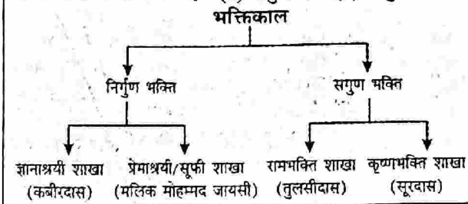
Ans. (a) : 'कबीर' निर्गुण संत थे। ये निर्गुण काव्यधारा के ज्ञानाश्रयी शाखा के कवि है। कबीर का जन्म 1398 ई. काशी के लहरतारा नामक स्थान पर हुआ था। इनके गुरू रामानन्द थे। तुलसीदास भक्तिकाल के अन्तर्गत रामभक्ति शाखा के कवि हैं। सूरदास भक्तिकाल के अन्तर्गत कृष्णभक्ति शाखा के कवि हैं। मीराबाई भक्तिकाल धर्म निरपेक्ष कवि है।

155. 'ज्ञानश्रयी' शाखा से संबंधित हैः

(a) मीराबाई (b) सूरदास
(c) तुलसीदास (d) कबीरदास

DSSSB TGT (MALE)-28.08.2018
KVS PGT 2014, UPPGT 2010

Ans. (d) : 'ज्ञानाश्रयी' शाखा से संबंधित 'कबीरदास' है। कबीर दास की रचनाएँ हैं- (1) साखी (2) सबद (3) रमैनी। भक्तिकाल को दो भागों में बाटा गया है- (1) सगुण धारा (2) निर्गुण धारा।



156. "मोको कहाँ ढूंढे बन्दे मैं तो तेरे पास में" पंक्ति किसकी है?

(a) कबीरदास (b) रैदास
(c) सूरदास (d) मलूकदास

NVS TGT 18.09.2019, UPPGT 2016

Ans. (a) : "मोको कहाँ ढूँढे बन्दे मैं तो तेरे पास में" पंक्ति कबीरदास की है। अन्य कवियों की पंक्तियाँ इस प्रकार हैं–

- ऐसी मेरी जाति विख्यात चमारा –रैदास
- गुरु परसाद होत यह दरसन सरसठ बरस प्रवीन –सूरदास
- दास मलूका कहि गए, सबके दाता राम –मलूकदास
- पीपर पात सरिस मन डोला –तुलसी
- पानी गये न ऊबरे मोती मानुष चून –रहीम
- मेरी भवबाधा हरौ राधा नागरि सोई। –बिहारी

157. नामदेव का संबंध किस प्रदेश से है?

(a) मध्य प्रदेश (b) राजस्थान
(c) महाराष्ट्र (d) गुजरात

NVS TGT 18.09.2019
DSSSB PGT 25.7.2018 (9:00am - 12:00 pm)

Ans. (c) : नामदेव का संबंध महाराष्ट्र राज्य से है। इन्हें हिन्दी में भक्ति साहित्य परम्परा का प्रवर्तक माना जाता है। ये पेशे से दरजी थे। इनके गुरु विसोवा खेचर थे,इस संबंध में इन्होंने लिखा है- 'मन मेरी सुई, तन मेरा धागा। खेचरजी के चरण पर नामा सिंपी लागा।'

158. महाराष्ट्र के भक्तों में किनका नाम सबसे पहले आता है–

(a) सूरदास (b) तुलसीदास
(c) मीराबाई (d) नामदेव

UP PGT 2016

Ans : (d) महाराष्ट्र के भक्तों में सबसे पहले नामदेव का नाम आता है। नामदेव ने निर्गुण एवं सगुण दोनों मार्गों को अपनाया और अभंगों (छन्दों) की रचना की। सूरदास तथा मीराबाई दोनों ही कृष्ण भक्ति परम्परा के सगुण भक्ति को अपनाया तथा तुलसीदास ने रामभक्ति परम्परा के सगुण भक्ति को स्वीकार किया।

159. पंचगंगा घाट में कबीर किसके पैरों के नीचे पड़े थे–

(a) शंकराचार्य (b) वल्लभाचार्य
(c) रामानंद (d) मध्वाचार्य

UP PGT 2016

Ans : (c) पंचगंगा घाट पर कबीर रामानन्द के पैरों के नीचे पड़े थे। कहा जाता है कि रामानन्द के पैर जब कबीर के ऊपर पड़े तो उनके मुख से 'राम-राम' शब्द निकला जिसको कबीर ने गुरुमंत्र मानकर रामानन्द के शिष्य हो गये।

160. **इनमें ज्ञानाश्रयी शाखा के संत कवि नहीं है–**
(a) मलूकदास (b) धर्मदास
(c) रैदास (d) परमानन्ददास
UP PGT 2016

Ans : (d) 'परमानन्ददास' संत कवि नहीं है बल्कि कृष्ण भक्ति काव्य धारा के अष्टछापी कवि हैं, जबकि मलूकदास, धर्मदास, रैदास ज्ञानाश्रयी शाखा के संत कवि हैं। ज्ञानाश्रयी शाखा के प्रतिनिधि कवि कबीरदास हैं।

161. **कबीर के बीजक पर रची गई 'तिर्ज्या' टीका किसकी है–**
(a) पूरनदास (b) जगजीवनदास
(c) भगवानदास (d) पल्टू साहब
LT Hindi 2018

Ans : (a) कबीर के बीजक पर रची गयी 'तिर्ज्या' टीका के रचनाकार 'पूरनदास' हैं। जबकि जगजीवनदास, भगवानदास तथा पल्टू साहब तीनों नाम असंगत हैं।

162. **निम्नलिखित काव्यपंक्ति किस रचनाकार की है–**
''प्रभु जी तुम दीपक हम बाती, जाकी जोति बरै दिन राती।''
(a) नानकदेव (b) कबीर
(c) रैदास (d) दादूदयाल
LT Hindi 2018

Ans : (c) प्रस्तुत पंक्ति–''प्रभु जी तुम दीपक हम बाती, जाकी जोति बरै दिन राती।'' के रचनाकार संत कवि रैदास हैं। अन्य संत कवियों की प्रमुख पंक्तियाँ हैं–
जो नर दुख में दुख नहि मानै – नानकदेव
मैं कहता हूँ आखिन देखी, तू कहता कागद के लेखी - कबीरदास
अपना मस्तक काटिकै वीर हुआ कबीर – दादू दयाल

163. **कबीर की भक्ति का अनिवार्य अंग क्या है?**
(a) मुक्ति (b) ज्ञान
(c) प्रेम (d) समाज-सुधार
Chattisgarh Asst. Prof. 2009

Ans. (b) : कबीर की भक्ति का अनिवार्य अंग 'ज्ञान' है। संत कवियों में एक भक्त युग चिन्तक और एक प्रखर व्यक्ति के रूप में कबीर का स्थान अन्यतम है। कबीर ने भक्ति को मुक्ति का एक मात्र साधन माना है। इनकी प्रमुख कृतियाँ हैं- साखी, सबद, रमैनी।

164. **कबीर ने आलोचक, सुधारक, पथ-प्रदर्शक व समन्वयकर्त्ता के रूप में किन विषयों का उल्लेख किया है?**
(a) चेतावनी, कुसंग, माया, कनक, कामिनी, कपट
(b) मंदिर-मस्जिद, रामरमैया
(c) ब्रह्मा, जीव, माया, स्त्री
(d) रूप, दाम्पत्य-प्रेम, ठगिनी
Chattisgarh Asst. Prof. 2009

Ans. (a) : कबीर ने आलोचक, सुधारक, पथ प्रदर्शक व समन्वयकर्ता के रूप में चेतावनी, कुसंग, माया, कनक, कामिनी, कपट आदि विषयों का उल्लेख किया है।

165. **किस समीक्षक ने कहा-**
''शब्दों के जोड़-तोड़ में चमत्कार लाने के फेर में पड़ना कबीर की प्रवृत्ति के प्रतिकूल था।''-
(a) आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी
(b) डॉ. नगेन्द्र
(c) आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी
(d) डॉ. श्यामसुंदर दास
Chattisgarh Asst. Prof. 2009

Ans. (d) : शब्दों के जोड़-तोड़ में चमत्कार लाने के फेर में पड़ना कबीर के प्रवृत्ति के प्रतिकूल था। यह कथन डॉ. श्याम सुन्दर दास ने कहा था।

166. **'मन मेरा सुई, तन मेरा धागा' काव्य-पंक्ति किस संत कवि की है?**
(a) कबीर (b) नानक
(c) नामदेव (d) दादू
Himanchal Pradesh PGT-2016

Ans. (c) : उपर्युक्त पंक्ति संत कवि नामदेव की है। प्रमुख भक्त कवि एवं उनकी काव्य पंक्तियाँ हैं–
मन मेरा सुई, तन मेरा धागा - नामदेव
माधों मैं ऐसा अपराधी तेरी भगति होत नहीं साधी - कबीरदास
जो नर दुख में दुख नही मानै - नानक
अपना मस्तक काटिकै वीर हुआ कबीर - दादू दयाल

167. **'गहना एक कनक ते गहना तामें भाव न दूजा।**
कहन सुनन को दुइ करि थापे, यक निमाज, यक पूजा॥'
उपर्युक्त काव्य-पंक्तियों के रचयिता हैं–
(a) कबीर (b) अमीर खुसरो
(c) रैदास (d) गुरु नानक
KVS PGT 2018

Ans : (a) उपर्युक्त पंक्ति के रचयिता ज्ञानाश्रयी शाखा के प्रतिनिधि एवं संत कवि 'कबीरदास' हैं।

168. **रामचंद्र शुक्ल के अनुसार 'आदि गुरु ग्रंथ साहब' में रैदास के कितने पद संग्रहीत हैं–**
(a) 35 (b) 30
(c) 45 (d) 40
KVS PGT 2018

Ans : (d) रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार 'आदि गुरु ग्रंथ साहब' में रैदास के 40 (चालीस) पद संकलित हैं। रैदास निर्गुण काव्यधारा के संत कवि हैं। ये जाति के चमार थे। मीराबाई इन्हें अपना गुरु मानती थी।

169. **'मैं कहता हूँ आँखिन देखी, तू कहता कागद की लेखी।'**
इस काव्य पंक्ति का आशय है:
(a) प्रत्यक्ष ज्ञान और पुस्तकीय ज्ञान एक ही है
(b) प्रत्यक्ष ज्ञान को ही पुस्तकों में लिखा जाता है
(c) प्रत्यक्ष ज्ञान पुस्तकीय ज्ञान से हीन है
(d) स्वानुभव शास्त्रीय ज्ञान से बड़ा है
UGC NET Dec. 2019

Ans. (d) : 'मैं कहता हूँ आँखिन देखी, तू कहता कागद की लेखी।' इस काव्य पंक्ति का आशय है: स्वानुभव शास्त्रीय ज्ञान से बड़ा है। यह 'कबीर दास' जी की पंक्ति है।

170. **'तात्विक दृष्टि से न तो हम इन्हें (कबीर को) पूरे अद्वैतवादी कह सकते हैं और न एकेश्वरवादी।'- कबीर से सम्बन्धित यह विचार किसका है?**
(a) हजारीप्रसाद द्विवेदी (b) रामचन्द्र शुक्ल
(c) राहुल सांकृत्यायन (d) माताप्रसाद गुप्त
UGC NET Dec. 2019

Ans. (b) : कबीर से सम्बन्धित रामचन्द्र शुक्ल का कथन है- 'तात्विक दृष्टि से न तो हम इन्हें (कबीर को) पूरे अद्वैतवादी कह सकते हैं और न एकेश्वरवादी। हजारी प्रसाद द्विवेदी ने कबीर को 'वाणी का डिक्टेटर' कहा है।

171. निम्नलिखित कवियों को उनके जन्म स्थान के साथ सुमेलित कीजिए। नीचे दिए गए कूट का प्रयोग करते हुए सही उत्तर को चुनिए।

सूची-I	सूची-II
(A) गुरु नानक	(i) अहमदाबाद
(B) दादू दयाल	(ii) दौसा
(C) धर्मदास	(iii) बांधवगढ़
(D) सुन्दरदास	(iv) तलवंडी
	(v) अमृतसर

कूट :

	(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	(iv)	(ii)	(iii)	(i)
(b)	(v)	(iii)	(i)	(iv)
(c)	(i)	(iii)	(ii)	(iv)
(d)	(iv)	(i)	(iii)	(ii)

UGC NET Dec. 2018

Ans : (d) कवियों का जन्मस्थान का विवरण इस प्रकार है–

कवि		स्थान
गुरु नानक	-	तलवंडी
दादू दयाल	-	अहमदाबाद
धर्मदास	-	बांधवगढ़
सुन्दरदास	-	दौसा

172. **तननां बुननां तज्यौ कबीर।**
राम नाम लिखि लियौ सरीर।।
मुसि मुसि रोवै कबीर की माई।
ए बारिक कैसे जीवहिं खुदाई।।
उक्त काव्य-पंक्तियों में प्रयुक्त 'मुसि मुसि' का भावार्थ है-

(i) मन ही मन रोना
(ii) सिसक सिसक कर रोना
(iii) दहाड मारकर रोना
(iv) किसी का गुण-कथन करते हुए रोना

नीचे दिए गए कूट में से सही उत्तर को चुनिए:

कूट :

(a) (i) (iii) और (iv) सही (b) (iii) और (ii) सही
(c) (i) और (ii) सही (d) (ii) और (iv) सही

UGC NET Dec. 2018

Ans : (c) दी गयी कबीर की उक्त काव्य पंक्तियों में 'मुसि-मुसि' का भावार्थ है-मन ही मन रोना तथा दूसरा भाव यह होगा कि 'सिसक-सिसक' कर रोना'। अतः (i) और (ii) सही भावार्थ दिये गये हैं तथा अन्य दोनों त्रुटिपूर्ण हैं।

173. **''माई न होती, बाप न होते, कर्म न होता काया।**
हम नहिं होते, तुम नहिं होते, कौन कहाँ ते आया।
चंद न होता, सूर न होता, पानी पवन मिलाया।
शास्त्र न होता, वेद न होता, करम कहाँ ते आया।।''
उपर्युक्त काव्य पंक्तियाँ किस कवि की हैं?

(a) कबीर (b) नामदेव
(c) रैदास (d) मलूकदास

UGC NET June. 2019

Ans. (b) : उपर्युक्त पंक्तियाँ नामदेव की है। नामदेव को बिठोवा संत भी कहा जाता है। इन्होंने भक्ति के सगुण एवं निर्गुण दोनों मार्ग को अपनाया है। शेष कवियों की प्रसिद्ध पंक्तियाँ इस प्रकार हैं-

कवि	पंक्तियाँ
कबीर-	माधो मैं ऐसा अपराधी, तेरी भगति होत नहिं साधी।
रैदास-	जब हम होते तब तू नाहीं, अब तू है, मैं नाहीं।
मूलकदास-	नाम हमारा खाक है, हम खाकी बन्दे। खाकहिं से पैदा किए अति गाफिल गंदे।।

174. **संत-साधना का साहित्यिक रूप प्रारम्भ हुआ**

(a) काशी (b) प्रयाग
(c) पंढरपुर (d) उज्जैन

Delhi K.V. PGT. 2015

Ans. (c) संत-साधना का साहित्यिक रूप पंढरपुर से प्रारम्भ हुआ।

175. **कबीर के गुरु का नाम क्या है?**

(a) रामानन्दसागर (b) रैदास
(c) रविदास (d) रामानन्द

NVS. PGT. 2014

Ans. (d) कबीर के गुरु का नाम **रामानन्द** था। मुस्लिम परम्परा में 'शेखतकी' को कबीर का गुरु माना जाता है। कबीर की वाणी का संग्रह 'बीजक' में संकलित करने का श्रेय उनके शिष्य धर्मदास को है। बीजक तीन भागों में विभक्त है। (a) साखी (b) सबद (c) रमैनी। रमैनी और सबद गेय पदो में है, साखी दोहा में है।

176. **सधुक्कड़ी भाषा से आशय है**

(a) जिसमें कटूक्तियों का प्रयोग हो
(b) जिसमें अक्खड़पन की झलक हो
(c) जिसमें अनेक प्रांतीय भाषाओं/बोलियों के शब्दों का मिश्रण हो
(d) जिसमें साधु-संतों की गुप्त बातों के संकेतांक हों

K.V.S. PGT. 2015

Ans. (c) सधुक्कड़ी भाषा से आशय है जिसमें अनके प्रांतीय भाषाओं/बोलियों के शब्दों का मिश्रण हो। रामचन्द्र शुक्ल जी ने कबीर की भाषा को 'सधुक्कड़ी' कहा है। जबकि श्यामसुन्दर दास ने कबीर की भाषा को 'पंचमेल खिचड़ी' कहा है, क्योंकि इनके भाषा में खड़ी बोली, राजस्थानी, पंजाबी, ब्रज और पूर्वी का मिश्रण है।

177. **''अंषड़ियाँ झाई पड़ी पंथ निहारि निहारि।**
जीभड़ियाँ छाला पड्या राम पुकारि पुकारि।। पंक्ति की सम्बन्ध निम्न में से किससे है?

(a) वैष्णव (b) सूफी
(c) बौद्ध (d) ईसाई

UPPSC Degree College Exam. 2013

Ans. (*) प्रश्नगत पंक्ति कबीरदास द्वारा रचित है। इसमें ईश्वर (ब्रह्म) के प्राप्ति की तीव्र उत्कण्ठा को व्यक्त किया गया है। कबीर के राम निर्गुण ब्रह्म के प्रतीक है, वे दशरथ सुत या वैष्णवों के आराध्य नहीं हैं। यह पंक्ति निर्गुण संत मत को व्यक्त करती है, इसका सम्बन्ध वैष्णव, सूफी, बौद्ध एवं ईसाई किसी भी मत से नही है।

178. **रैदास किसके गुरु थे?**

(a) मलूकदास (b) हरिदास
(c) लालदास (d) मीराबाई

Higher Edu. Exam. 2015

Ans. (d) 'रैदास' मीराबाई के गुरु थे। इनके 40 पद 'गुरुग्रंथ साहब' में संकलित हैं। रैदास का जन्म 1388 ई. में काशी में हुआ था। इनके गुरु का नाम रामानंद था। ये जाति के चमार थे। इनकी प्रसिद्ध पंक्ति है– ''प्रभु जी तुम चन्दन हम पानी, जाकी अंग–अंग बास समानी।'' निम्नलिखित संत कवियों के गुरुओं का नाम इस प्रकार है–

संत कवि	गुरु
मलूकदास	पुरूषोत्तम
हरिदास	प्रागदास
लालदास	गदन चिश्ती
मीराबाई	रैदास

179. 'अंगवधू' .... की रचना है।
(a) गरीबदास (b) मिस्कीनदास
(c) मूलकदास (d) दादूदयाल

Delhi K.V. PGT. 2015

Ans. (d) 'अंगवधू' दादूदयाल की रचना है। दादूदयाल के सम्प्रदाय को 'ब्रह्म सम्प्रदाय' या 'परब्रह्म सम्प्रदाय' नाम से जाना जाता है। दादूपंथ के उत्तराधिकारी दादू के पुत्र 'गरीबदास' तथा 'मिस्कीनदास' थे। दादू द्वारा रचित अन्य ग्रंथ हैं– हरडेबानी, कायाबोली आदि। दादूदयाल की वाणियों का सर्वप्रथम सम्पादन उनके दो शिष्य संतदास और जगन्नदास ने, 'हरड़ेबानी' शीर्षक से किया था पुनः रज्जब ने अंगवधू शीर्षक से इसका सम्पादन किया।

180. निर्गुनियाँ सन्तों की काव्य-सर्जना सर्वाधिक आधारित दिखती है-
(a) आदिकाल लोक-कथाओं पर
(b) नाथों की रचनाओं पर
(c) दक्षिण भारत के वीर शैवों की भाँति भावना पर
(d) सूफियों की यौगिक साधना पर

UPPSC Degree College Exam. 2008

Ans. (b) निर्गुनियाँ सन्तों की काव्य सर्जना सर्वाधिक नाथों की रचनाओं पर आधारित दिखती है। गोरखनाथ को नाथ सम्प्रदाय का आरम्भ कर्ता माना जाता है। गोरखनाथ के गुरु का नाम मछन्दरनाथ था।

181. सिकंदर लोदी ने किसके कहने पर कबीरदास को जंजीर से बाँधकर गंगा में डुबाया था?
(a) गुलाम हसनैन (b) मुहम्मद शाह
(c) शेख तकी (d) शेख फिदा हुसैन

UP PGT 2013

Ans. (c) प्रसिद्ध सूफी फकीर 'शेख तकी' के कहने पर सिकन्दर लोदी ने कबीरदास को जंजीर से बाँधकर गंगा में डुबोया था।

182. 'भाषा बहुत परिष्कृत और परिमार्जित न होने पर भी कबीर की उक्तियों में कहीं-कहीं विलक्षण प्रभाव और चमत्कार है। प्रतिभा उनमें प्रखर थी इसमें संदेह नहीं'- पंक्तियों के लेखक हैं
(a) डॉ. नगेन्द्र
(b) आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी
(c) डॉ. राममूर्ति त्रिपाठी
(d) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

RPSC Assit. Prof. 2020 Paper-I
LT Hindi 2018
GIC. PGT 2012

Ans. (d) उपर्युक्त पंक्ति के लेखक आचार्य रामचन्द्र शुक्ल हैं। यह कथन शुक्ल जी ने अपने ग्रंथ 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' में ज्ञानाश्रयी शाखा के निर्गुण भक्ति के प्रमुख कवि 'कबीरदास' के बारे में कही है। इन्होंने कबीर की भाषा को सधुक्कड़ी कहा है। शुक्ल जी अपने ग्रंथ 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' में कबीर को वह महत्वपूर्ण स्थान नहीं दिया है जो सूर, तुलसी और जायसी को दिया है।

183. ''तुम्ह जिनि जानौ गीत है, यहु निज ब्रह्म-विचार'- किसने कहा है?
(a) कबीर (b) रैदास
(c) सूरदास (d) तुलसीदास

NVS. PGT. 2014

Ans. (a) उपर्युक्त कथन ज्ञानाश्रयी शाखा के निर्गुण धारा के प्रमुख संत कवि कबीरदास का है। उनके द्वारा कहा गया कथन है- 'जाति न पूछो साधु की पूँछि लीजिए ज्ञान।'

184. निम्नलिखित विकल्पों में से जो संत-काव्य की विशेषता नहीं है, उसे छाँटिए :
(a) बाह्याडम्बरों का खंडन
(b) गुरु का महत्व-प्रतिपादन
(c) सगुण ईश्वर की उपासना
(d) जाति-पाँति का विरोध

KVS. PGT. 2014

Ans. (c) 'सगुण ईश्वर की उपासना' संत-काव्य की विशेषता नहीं है। संत कवि निर्गुण और निराकार ब्रह्म की उपासना करते थे। जबकि बाह्याडम्बरों का खंडन, गुरू के महत्व का प्रतिपादन जाति-पाति का विरोध आदि संत काव्य की विशेषता से है।

185. कबीर किस शासक के समकालीन थे?
(a) हुमायूँ (b) अकबर
(c) सिकन्दर लोदी (d) बहादुरशाह जफर

UP TGT 2013

Ans. (c)'कबीर दास' सिकन्दर लोदी के समकालीन थे। सिकन्दर लोदी द्वारा कबीर पर किये गये अत्याचारों का उल्लेख अनन्तदास कृत 'कबीर परिचई' में मिलता है। कबीर की वाणी का संग्रह 'बीजक' को संकलित करने का श्रेय उनके शिष्य धर्मदास को है। बीजक तीन भागों में विभक्त है – (a) साखी, (b) सबद, (c) रमैनी। 'रमैनी' दोहा चौपाई में और 'सबद' गेय पद में हैं। जबकि 'साखी' दोहों में। कबीर की वाणियों का सबसे पुराना नमूना 'गुरु ग्रंथ साहिब' में मिलता है।

186. निम्नलिखित में से कौन 'रामानन्द' की शिष्य परम्परा में नहीं है?
(a) कबीरदास (b) नरहरिदास
(c) मलूकदास (d) रैदास

GIC. PGT 2015

Ans. (c) 'मलूकदास' रामानन्द की शिष्य परंपरा में नहीं है। मलूकदास के गुरु का नाम 'पुरुषोत्तम था। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार रामानंद के 12 शिष्य थे, जो निम्नलिखित हैं-
(i) अनन्तानन्द
(ii) सुखानन्द
(iii) सुरसुरानन्द
(iv) नरहर्यानन्द
(v) भावानन्द
(vi) पीपा (राजपूत)
(vii) कबीरदास (जुलाहा)
(viii) सेना (नाई)
(ix) धन्ना (जाट)
(x) रैदास (चमार)
(xi) पद्मावती
(xii) सुरसरी।

187. कबीरदास की मृत्यु कहाँ हुई?
(a) काशी (b) मगहर
(c) बनारस (d) इलाहाबाद
UP PGT 2011

Ans. (b) कबीरदास की मृत्यु 1518 ई. में मगहर में हुई। कबीरदास जी भक्तिकाल के निर्गुण काव्यधारा के ज्ञानाश्रयी शाखा के संत कवि हैं। कबीरदास का जन्म 1398 ई. में काशी में हुआ।

188. सन्तकाव्य नाम किसने दिया है?
(a) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल (b) राहुल सांकृत्यायन
(c) रामकुमार वर्मा (d) हजारी प्रसाद द्विवेदी
UP PGT 2011
UP PGT 2002

Ans. (c) निर्गुण धारा के ज्ञानाश्रयी शाखा को विद्वानों द्वारा दिये गये नाम –

नामकरण		प्रस्तोता
संत काव्य	–	रामकुमार वर्मा
ज्ञानाश्रयी शाखा	–	रामचन्द्र शुक्ल
निर्गुण भक्ति	–	हजारी प्रसाद द्विवेदी
संत काव्य	–	परशुराम चतुर्वेदी
संत काव्य	–	गणपति चन्द्र गुप्त

189. 'मसि कागद छुओ नहीं कलम गह्यो नहीं हाथ' किसके विषय में कहा गया है?
a) नानक (b) रैदास
(c) कबीर (d) दादू
UP PGT 2011

Ans. (c) पंक्ति एवं रचनाकार निम्नलिखित हैं-

पंक्ति	कवि
मसि कागद छुयौ नहीं, कलम गह्यो नहिं हाथ	कबीरदास
प्रभुजी तुम चंदन हम पानी, जाकी अंग अंग बास समानी	रैदास (संत रविदास)
जो नर दुख में दुख नहि मानै	गुरु नानक देव
अपना मस्तक काटिकै वीर हुआ कबीर	दादू दयाल

190. 'अजगर करै न चाकरी पंक्षी करै न काम' किसने कहा है?
(a) तुलसीदास (b) सूरदास
(c) रैदास (d) मूलकदास
NVS TGT 2016
UP PGT 2011
NVS TGT 18.09.2019

Ans. (d)

पंक्ति	कवि
अजगर करै न चाकरी पंक्षी करै न काम। दास मलूका कह गये सबके दाता राम।।	मलूकदास
जब हम होते तब तू नाहीं, अब तू है मैं नाहीं। अतल अगम जैसे लहरि मइ उदधि, जल केवल जलमाही।।	रैदास
बिनु पद चलै सुनै बिनु काना। कर बिनु करम करै विधि नाना।।	तुलसीदास
लरिकाई कौ प्रेम कहौ अलि कैसे करि के छूटत।	सूरदास

191. रज्जब अली खाँ के गुरु थे
(a) नानक (b) दादूदयाल
(c) मूलकदास (d) धन्ना।
UP PGT 2010

Ans. (b) रज्जब अली खाँ के गुरु का नाम दादूदयाल था। दादूदयाल के प्रमुख शिष्य थे – रज्जब, सुंदरदास, जगन्नाथदास, संतदास।

192. इनमें कौन बावरी पंथ से सम्बन्धित नहीं है?
(a) बुल्ला साहेब (b) बुलाल साहेब
(c) पलटू साहेब (d) संत साहेब
UGC NET II[nd] Paper June, 2009

Ans. (c) 'बावरी पंथ की प्रवर्तक बावरी साहिबा थी। बुल्ला साहेब, बुलाल साहेब, संत साहेब, इसी सम्प्रदाय से सम्बन्धित थे। जबकि 'पलटू साहेब' जगजीवन दास के शिष्य थे तथा यह सत्यानामी (सतनामी) सम्प्रदाय के संत थे।

193. 'ज्ञानमार्गी' शाखा के कवियों को किस नाम से पुकारा जाता है?
(a) सिद्ध कवि . (b) नाथपंथी कवि
(c) भक्त कवि (d) संत कवि
UP PGT 2005

Ans. (d) ज्ञानमार्गी शाखा के कवियों को 'संत कवि' के नाम से पुकारा जाता है। संत कवियों में कबीर, दादू, सुन्दरदास, रैदास, नानक तथा मूलकदास प्रमुख हैं। निर्गुण भक्तिधारा की दूसरी काव्यधारा 'प्रेमाश्रयी' नाम से प्रसिद्ध है। इस धारा के प्रमुख कवि जायसी, कुतुबन, मंझन आदि हैं।

194. 'भक्ति विवेक' निम्नलिखित में से किसकी रचना है –
(a) मलूकदास (b) सुन्दरदास
(c) नाभादास (d) दादू दयाल
UP PGT 2000

Ans. (a) भक्ति विवेक 'मलूकदास' की रचना है। इनकी अन्य रचनाएँ हैं- ज्ञानबोध, रतनखान, सुखसागर, रामावतार लीला, ब्रजलीला, ध्रुवचरित आदि।

195. कबीर की वाणी का संग्रह 'बीजक' कहलाता है, इसके कितने भाग हैं–
(a) दो (b) तीन
(c) चार (d) पाँच
UP PGT 2000

Ans. (b) निर्गुण संत कवि कबीरदास की रचनाओं को उनके शिष्यों द्वारा 'बीजक' नामक ग्रंथ में संकलित किया गया। अतः कबीर की वाणी का संग्रह 'बीजक' कहलाता है। इसके तीन भाग हैं – साखी, सबद, रमैनी।

196. संत साहित्य में प्रयुक्त 'बंकनालि' का पर्याय निम्नांकित में से कौन नहीं है?
(a) त्रिकुटी (b) वक्रनालि
(c) राजदन्त (d) शंखिनी
UP PGT 2000

Ans. (b) हिन्दी साहित्य के भक्तिकाल की ज्ञानमार्गी शाखा के संत कवियों के साहित्य में उल्लिखित 'बंकनालि' शब्द 'वक्रनालि' का पर्याय नहीं है।

197. जन्मकाल के अनुसार निम्नलिखित कवियों का सही क्रम है-
(a) गुरुनानक, कबीरदास, दादूदयाल, मलूकदास
(b) कबीरदास, गुरुनानक, मलूकदास, दादूदयाल
(c) कबीरदास, गुरुनानक दादूदयाल, मलूकदास
(d) कबीरदास, दादूदयाल, गुरुनानक, मलूकदास
DSSSB PGT 18.07.2021 Shift II

UGC NET III[rd] Paper June. 2015
UGC NET III[rd] Paper Dec 2014
UGC NET II[nd] Paper Dec 2004

Ans. (c) जन्म काल के अनुसार कवियों का सही क्रम है-

संतकवि	जन्म स्थान	समय
कबीरदास	(लहरतारा) बनारस	1398 ई0
गुरूनानक	(तलवंडी) ननकाना साहब	1469 ई0
दादूदयाल	अहमदाबाद	1544 ई0
मलूकदास	कड़ा (इलाहबाद)	1574 ई0

198. 'सब्बंगी' रचना किसकी है?
(a) दादूदास (b) पीपा
(c) रैदास (d) रज्जब

UGC NET II[nd] Paper June. 2009

Ans. (d) 'सब्बंगी' रज्जब की रचना है। इसमें इन्होंने अपनी तथा अन्य निर्गुण संतों की रचनाओं का संकलन किया है। रज्जब ने 'अंगबधू' नाम से दादू दयाल की रचनाओं का संकलन किया है।

199. निम्नलिखित रचनाओं को उनके कवियों के साथ सुमेलित कीजिए

सूची-I	सूची-II
(a) बीजक	(i) जायसी
(b) अखरावट	(ii) कबीर
(c) भक्तमाल	(iii) नन्ददास
(d) श्याम सगाई	(iv) नाभादास
	(v) हितहरिवंश

कोड-

	A	B	C	D
(a)	i	iv	iii	ii
(b)	iii	i	iv	ii
(c)	ii	i	iv	iii
(d)	iv	iii	ii	i

UGC NET II[nd] Paper June. 2013

Ans. (c) रचनाओं का सही सुमेल इस प्रकार है-

रचना	रचनाकार
बीजक	कबीरदास
अखरावट	जायसी
भक्तमाल	नाभादास
श्याम सगाई	नन्ददास
हित चौरासी	हित हरिवंश

200. मुसलमान अनुयायी कबीरदास को किन का शिष्य मानते हैं?
(a) शेख़ तक़ी (b) रज्जब
(c) मुइनुद्दीन चिश्ती (d) नूर मुहम्मद

UGC NET III[rd] Paper Dec. 2014

Ans. (a) मुसलमान अनुयायी 'कबीर' को शेख तकी का शिष्य मानते हैं परन्तु सर्वविदित है कि ये रामानन्द के शिष्य परम्परा में अग्रणी थे।

201. सूर समाना चंद में दहूँ किया घर एक।
मन का चिंता तब भया कछू पुरबिला लेख।।
इन पंक्तियों के रचनाकार हैं :
(a) तुलसीदास (b) सुन्दरदास
(c) दादूदयाल (d) कबीरदास

UGC NET II[nd] Paper June. 2016

Ans. (d)

काव्य पंक्तियाँ	कवि
सूर समाना चंद में दहूँ किया घर एक। मन का चिंता तब भया कछू पुरबिला लेख।।	कबीरदास
निगम अगम साहब सुगम, राम साँचिली चाह। अंबु असन अवलोकियत, सुलभ सबहि जग माह।।	तुलसीदास
असत मिलइ अंतर पडइ, भाव भगति रस जाइ। साथ मिलइ सुख ऊपजई, आनन्द अंग नवाइ।।	दादूदयाल
बोलिए तौ तब जब बोलिबे की बुद्धि होय, ना तौ मुख मौन गहि चुप होय रहिए।।	सुन्दरदास

202. आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसार 'कबीर ने अपनी साखियों में 'सधुक्कड़ी' भाषा का प्रयोग किया है।' 'सधुक्कड़ी' से उनका अभिप्राय है :
(a) ब्रजभाषा मिश्रित पूरबी बोली
(b) ब्रजभाषा मिश्रित खड़ी बोली
(c) राजस्थानी पंजाबी मिली खड़ी बोली
(d) पाँच भाषाओं के मिश्रण वाली भाषा

UGC NET II[nd] Paper Jan. 2017

Ans. (c) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार- "कबीर ने अपनी साखियों में 'सधुक्कड़ी' भाषा का प्रयोग किया है।" सधुक्कड़ी से उनका अभिप्राय 'राजस्थानी, पंजाबी मिली खड़ी बोली' से हैं।
कबीरदास के भाषा के सम्बन्ध में विद्वानों के मत-

विद्वान	मत
श्याम सुन्दर दास	पंचमेल खिचड़ी
रामचन्द्र शुक्ल	सधुक्कड़ी
हजारी प्रसाद द्विवेदी	वाणी के डिक्टेटर
बच्चन सिंह	संतभाषा

203. इनमें से किसका समय सबसे पहले है?
(a) कबीरदास (b) रैदास
(c) धर्मदास (d) दादूदयाल

UGC NET III[rd] Paper Dec. 2012

Ans. (b) जन्मकाल के अनुसार कवियों का कालक्रमः-
रैदास (1388-1518 ई.)
कबीर (1398-1518 ई.)
धर्मदास (1400-1500 ई.)
दादूदयाल (1544-1603 ई.)

204. सहजोबाई किस शाखा की रचनाकार हैं?
(a) कृष्णभक्ति शाखा (b) रामभक्ति शाखा
(c) ज्ञानाश्रयी शाखा (d) प्रेमाश्रयी शाखा

UGC NET II[nd] Paper Dec. 2004

Ans. (c) 'सहजोबाई' ज्ञानाश्रयी शाखा की सन्तकवि हैं। सहजोबाई का एक ही प्रामाणिक ग्रंथ 'सहज प्रकाश' है। दयाबाई और सहजोबाई संत चरणदास की शिष्या थी। दोनों चचेरी बहने थीं।
नोट-सन् 1962 ई. में 'सहजोबाई' की रचनाओं को वेल वेडियर प्रेस द्वारा 'सहज-प्रकाश' नाम से प्रकाशित किया गया है।

205. निर्गुण काव्य धारा की प्रवृत्ति है?
(a) वात्सल्य रस की प्रधानता
(b) प्रकृति पर चेतन सत्ता का आरोप
(c) रूढ़ियों एवं बाह्याडम्बरों का विरोध
(d) आश्रयदाता की प्रशंसा

UP TGT 2011

Ans. (c) 'रूढ़ियों एवं बाह्याडम्बरों का विरोध' निर्गुण काव्यधारा की प्रमुख प्रवृत्ति है। जबकि 'वात्सल्य रस की प्रधानता' कृष्णभक्ति काव्य धारा की, 'आश्रयदाता की प्रशंसा' आदिकालीन एवं रीतिकालीन साहित्य की, 'प्रकृति पर चेतन सत्ता का आरोप' छायावाद की प्रमुख प्रवृत्ति है।

206. कबीरदास किस काव्यधारा का प्रतिनिधित्व करते हैं?

(a) संत काव्य (b) सूफी काव्य

(c) राम काव्य (d) कृष्ण काव्य

UP TGT 2011

Ans. (a) कबीरदास 'भक्तिकाल' के 'संत काव्य धारा' का प्रतिनिधित्व करते हैं। सूफी काव्यधारा का प्रतिनिधित्व मलिक मुहम्मद जायसी, राम भक्ति काव्यधारा का प्रतिनिधित्व तुलसीदास तथा कृष्ण भक्ति काव्यधारा का प्रतिनिधित्व सूरदास करते हैं।

207. निर्गुण संत कवियों में सर्वाधिक शास्त्रज्ञ एवं सुशिक्षित थे –

(a) रज्जब (b) सुन्दरदास

(c) धर्मदास (d) दादू दयाल

राजस्थान कॉलेज लेक्चरर भर्ती परीक्षा (पेपर-II) 2014

UP TGT 2003, 2001

Ans. (b) दादूदयाल के शिष्य 'सुन्दरदास' निर्गुण संत कवियों में सर्वाधिक शास्त्रज्ञ एवं सुशिक्षित थे। सुन्दरदास ने काशी में रहकर संस्कृत व्याकरण, साहित्य तथा दर्शन का गंभीर अध्ययन करने के पश्चात् 12 वर्ष तक योग साधना की। 'ज्ञानसमुद्र' तथा 'सुन्दरविलाप' सुन्दरदास की प्रमुख रचनाएँ हैं। शृंगारी रचनाओं के कट्टर विरोधी सुन्दरदास ने केशव के 'रसिकप्रिया', नन्ददास की 'रसमंजरी' तथा सुन्दर कविराय कृत 'सुन्दर शृंगार' की निन्दा की। परिष्कृत ब्रजभाषा का प्रयोग, अलंकारों का सुनियोजन, छन्दों का शुद्ध एवं विविधतापूर्ण प्रयोग सुन्दरदास को अन्य कवियों से पृथक् एवं विशिष्ट स्थान प्रदान करता है।

208. सगुण भक्ति के प्रतिनिधि सूरदास माने जाते हैं, तो निर्गुण भक्ति के प्रतिनिधि कौन माने जाते हैं?

(a) रहीम (b) बिहारी

(c) कबीर (d) जायसी

Jharkhand TGT 2017

Ans. (c) सगुण भक्ति के प्रतिनिधि सूरदास माने जाते हैं, तो निर्गुण भक्ति के प्रतिनिधि कवि कबीर माने जाते हैं। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने भक्तिकाल को दो धाराओं सगुण एवं निर्गुण तथा चार शाखाओं रामाश्रयी, कृष्णाश्रयी, ज्ञानाश्रयी एवं प्रेमाश्रयी में बाँटा है। तुलसीदास रामाश्रयी के, सूरदास कृष्णाश्रयी के, कबीरदास ज्ञानाश्रयी के तथा मलिक मोहम्मद जायसी प्रेमाश्रयी शाखा के प्रतिनिधि कवि स्वीकार किए जाते हैं।

209. निम्नलिखित ग्रन्थों को उनके लेखकों के साथ सुमेलित कीजिए-

सूची-I	सूची-II
(A) सर्वंगी	(i) मलूकदास
(B) ज्ञानबोध	(ii) धरणीदास
(C) प्रेमप्रगास	(iii) रज्जब
(D) शब्दसागर	(iv) दादूदयाल
	(v) बूला साहब

कोड-

	A	B	C	D
(a)	iv	ii	iii	i
(b)	iii	i	ii	v
(c)	ii	iii	iv	v
(d)	i	iv	v	ii

UGC NET IIIrd Paper June. 2015

Ans. (b)

ग्रंथ	लेखक
सर्वांगी	रज्जब
ज्ञानबोध	मूलकदास
प्रेमप्रगास	धरणीदास
शब्द सागर	बूला साहब
अंगवधू	दादूदयाल

210. 'हरडेवाणी' एवं 'अंगवधू' किसकी वाणी के संकलन है–

(a) सुन्दर दास (b) दादू दयाल

(c) मलूकदास (d) कबीर दास

DSSSB PGT 23.07.2018

UP TGT 2003

Ans. (b) हिन्दी साहित्य के भक्तिकाल के संत काव्यधारा के धर्म सुधारक, समाज सुधारक एवं रहस्यमयी कवि 'दादूदयाल' दादू-पंथ के प्रवर्तक थे। दादू प्रतिभाशाली कवि थे। उनके शिष्यों सन्तदास एवं जगन्नाथदास ने 'हरडे वाणी' एवं रज्जब ने 'अंगवधू' शीर्षक से उनकी रचनाओं का संग्रह प्रस्तुत किया। सुखसागर, ज्ञानबोध, रतनखान, भक्ति विवेक, बारहखड़ी, आदि मलूकदास के प्रामाणिक ग्रंथ हैं। ज्ञानसमुद्र, सुन्दरविलास सुन्दरदास की रचनाएँ हैं। कबीरदास की वाणी का 'बीजक' नाम से संकलन कबीर के शिष्य धर्मदास ने किया।

211. 'ज्ञानबोध' के रचनाकार हैं –

(a) सुन्दरदास (b) मलूकदास

(c) रज्जब (d) इनमें से कोई नहीं

UP PGT 2003, UP TGT 2002

Ans. (b) भक्तिकाल के निर्गुण संत कवि 'मलूकदास' ज्ञानबोध, रतनखान, भक्तवच्छावती, भक्ति विवेक, बारहखड़ी, ध्रुवचरित, रामावतार लीला, ब्रजलीला तथा सुखसागर नामक ग्रंथों के रचनाकार हैं। अन्य संत कवि सुन्दरदास ने 'ज्ञान समुद्र' तथा 'सुन्दरविलास' नामक ग्रंथों की रचना की। दादूदयाल के शिष्य रज्जब ने दादूदयाल की समग्र रचनाओं को 'अंगवधू' शीर्षक से संकलित किया।

212. 'चंडी चरित्र' किसकी विशिष्ट साहित्यिक रचना है –

(a) गुरु गोविन्द सिंह (b) अर्जुन सिंह

(c) रामदास (d) अंगद

DSSSB PGT 25.07.2018 (9 am-12 pm)

UP TGT 2002

Ans. (a) 'चंडी चरित्र' सिक्खों के दसवें और अंतिम गुरु 'गुरुगोविन्द सिंह' की विशिष्ट साहित्यिक कृति है। 'दशम ग्रंथ' गुरु गोविन्द सिंह की रचनाओं का संग्रह है। सिख गुरु अर्जुनदेव ने 'गुरु ग्रंथ साहिब' नामक पुस्तक का संकलन किया। यह पुस्तक सिखों का सबसे पवित्र धार्मिक ग्रंथ है।

213. निम्नलिखित में से 'संत काव्य परम्परा' के अंतर्गत न आने वाले कवि का नाम है –

(a) कबीर (b) दादू दयाल

(c) नानक (d) नन्द दास

UP TGT 2005

Ans. (d) 'नन्ददास' कृष्ण भक्ति शाखा के 'अष्टछाप' के प्रमुख कवि हैं। संतकाव्य परम्परा से इनका सम्बन्ध नहीं है। कबीर, दादूदयाल, नानक, रैदास, मलूकदास, सुन्दरदास आदि निर्गुण संत काव्य परम्परा के प्रमुख कवि हैं।

214. इनमें से कौन-सा कथन असत्य है?
(a) ज्ञानाश्रयी शाखा के कवि निराकार की उपासना करते हैं।
(b) कबीर संत कवि हैं।
(c) 'प्रभुजी तुम चंदन हम पानी' रैदास की पंक्ति है।
(d) संत तुलसीदास ज्ञानाश्रयी शाखा के कवि हैं।

UP TGT 2009

Ans. (d) भक्ति काल में भक्ति की दो धाराएँ प्रवाहित हुईं - निर्गुण धारा और सगुण धारा। निर्गुण धारा के अंतर्गत ज्ञानाश्रयी शाखा तथा प्रेमाश्रयी शाखा प्रमुख थी। सगुण काव्यधारा के अंतर्गत रामभक्ति शाखा एवं कृष्णभक्ति शाखा प्रमुख थी। जिसमें 'तुलसीदास' रामभक्ति शाखा के प्रमुख नायक थे। 'सूरदास' कृष्णभक्ति शाखा के अवलम्ब थे। अतः तुलसीदास ज्ञानाश्रयी शाखा के न होकर रामभक्ति शाखा के भक्त एवं साहित्यकार हैं।

215. 'नीमा' किस कवि की माता का नाम था?
(a) रहीमदास (b) सूरदास
(c) कबीरदास (d) मलूकदास

UP TGT 2009

Ans. (c) 'नीमा' निर्गुण काव्य धारा के प्रमुख संत कवि 'कबीर' की माता का नाम था। जिसने कबीर का पालन-पोषण किया था। जबकि जन्म देने वाली कोई विधवा ब्राह्मणी थी। जिसके विषय में निम्नलिखित दोहा प्रसिद्ध है –
जना विधवा ब्राह्मणी ने था। काशी सर में त्याग दिया।
तन्तु वाय नीरू नीमा ने पालन कबिरा दास किया।।
रामानन्द के परम शिष्य थे। जाति-पाँति का भेद मिटाया।
पंचमेल खिचड़ी भाषा लिख निराकार प्रभु रूप दिखाया।।

216. "इसमें कोई सन्देह नहीं कि कबीर को 'राम-नाम' रामानंद जी से ही प्राप्त हुआ। पर आगे चल कर कबीर के 'राम' रामानंद के 'राम' से भिन्न हो गए।" - यह कथन किसका है?
(a) राहुल सांकृत्यान (b) रामचंद्र शुक्ल
(c) हजारीप्रसाद द्विवेदी (d) माताप्रसाद गुप्त

UGC NET III[rd] Paper Nov. 2017

Ans. (b) "इसमें कोई सन्देह नहीं कि कबीर को 'राम-नाम' रामानंद जी से ही प्राप्त हुआ। पर आगे चल कर कबीर के 'राम' रामानंद के 'राम' से भिन्न हो गए।" - यह कथन **रामचंद्र शुक्ल** का है। 'रामानन्द' कबीरदास के गुरू थे। बच्चन सिंह के अनुसार– "हिन्दी भक्ति काव्य का प्रथम क्रांतिकारी पुरस्कर्ता कबीर है।" कबीर की वाणी का संग्रह उनके शिष्य धर्मदास ने 'बीजक' नाम से 1464 ई. में किया जो–रमैनी, सबद और साखी तीन भागों में विभक्त है। हजारी प्रसाद द्विवेदी ने इन्हें 'वाणी का डिक्टेटर' कहा है। रामचन्द्र शुक्ल ने इनकी भाषा को 'सधुक्कड़ी' तथा श्यामसुन्दर दास ने 'पंचमेल खिचड़ी' कहा है।

217. "बहुत दिनन थें मैं प्रीतम पाये, भाग बड़े घरि बैठे आये। मंगलाचार माँहि मन रखौं, राम रसाँइण रमना चाषौ"- किसकी पंक्तियाँ है?
(a) तुलसीदास (b) रैदास
(c) दादू (d) कबीर

Jharkhand PGT Hindi, 2018

Ans : (d) उपर्युक्त काव्य पंक्तियाँ में निर्गुण काव्यधारा के प्रतिनिधि कवि कबीरदास की है।

218. कबीर की भाषा के संदर्भ में कौन सा वाक्य गलत है?
(a) भाषा में खरापन है।
(b) कहीं कहीं भाषा गँवारू लगती है।
(c) साहित्यिक कोमलता है।
(d) भाषा में अक्खड़पन है।

Jharkhand PGT Hindi, 2018

Ans : (c) कबीर की भाषा के सन्दर्भ में साहित्यिक कोमलता कथन गलत है। जबकि कबीर की भाषा के लिए सत्य कथन है- भाषा में खरापन है। कहीं-कहीं भाषा गँवारू लगती है और भाषा में अक्खड़पन है। आ. शुक्ल के अनुसार कबीर की भाषा सधुक्कड़ी है। श्याम सुन्दर दास ने कबीर की भाषा को 'पंचमेल खिचड़ी' कहा है तथा आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी कबीर को 'वाणी का डिक्टेटर' कहा है।

219. कबीर की वाणी में स्थान, स्थान पर भावात्मक रहस्यवाद की झलक को आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने किसके सत्संग का प्रसाद कहा है?
(a) सगुण उपासकों का
(b) कृष्ण भक्तों के सत्संग का
(c) सूफियों के सत्संग का
(d) रामभक्तों के सत्संग का

Jharkhand PGT Hindi, 2018

Ans : (c) कबीर की वाणी में स्थान-स्थान पर भावात्मक रहस्यवाद की झलक को आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने 'सूफियों के सत्संग का' प्रसाद कहा है।

220. 'चौदह सौ पचपन साल गए, चंद्रवर एक ठाठ गए। जेठ सुदी बरसायत को पूरनमासी तिथि प्रगट भए।' ये पंक्तियाँ किसके जन्म के विषय में प्रसिद्ध है?
(a) जायसी (b) कबीर
(c) सूरदास (d) तुलसी

Jharkhand PGT Hindi, 2018

Ans : (b) कबीरदास के जन्म के विषय में प्रसिद्ध पंक्ति कही गयी है- चौदह सौ पचपन साल गए, चन्द्रवार एक ठाठ गए। 'जेठ सुदी बरसायत को पूरनमासी तिथि प्रकट भए।' अर्थात कबीरदास का जन्म सं. 1455 (1398 ई.) में हुआ है।

221. 'दुलहिन गावहु मंगलचार हम घरि आए हो राजा राम भरतार'- कबीर का यह पद किस राग में है?
(a) राग भैरवी (b) राग गौड़ी
(c) राग बसंत (d) राग मल्हार

Jharkhand PGT Hindi, 2018

Ans : (b) 'दुलहिन गावहु मंगलाचार हम घरि आए हो राजा राम भरतार।" कबीरदास का यह पद 'राग गौड़ी' में हैं। अन्य राग असंगत हैं।

222. कबीर की वाणी का संग्रह किस नाम से प्रसिद्ध है?
(a) बीजक (b) सबद
(c) रमैनी (d) साखी

Jharkhand PGT Hindi, 2018

Ans : (a) कबीर की वाणी का संग्रह उनके शिष्य धर्मदास ने 'बीजक' नाम से किया है जिसके तीन भाग है साखी, सबद और रमैनी।

223. "इसमें कोई संदेह नहीं कि कबीर ने ठीक मौके पर जनता के उस बड़े भाग को संभाला जो नाथ-पंथियों के प्रभाव से प्रेम भाव और भक्ति रस से शून्य और शुष्क पड़ता जा रहा था।"-ये पंक्तियाँ किस आलोचक की हैं?
(a) आचार्य रामचंद्र शुक्ल
(b) आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी
(c) रामस्वरूप चतुर्वेदी
(d) डॉ. नगेन्द्र

Jharkhand PGT Hindi, 2018

Ans : (a) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने कबीर के सन्दर्भ में अपने इतिहास ग्रंथ 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' में लिखा है कि - "इसमें कोई संदेह नहीं है कि कबीर ने ठीक मौके पर जनता के उस बड़े भाग को संभाला जो नाथ-पंथियों के प्रभाव से प्रेम भाव और भक्ति से शून्य और शुष्क पड़ता जा रहा था।"

224. किस काव्य धारा में मूर्ति-पूजा और अवतार-वाद का विरोध किया गया है?
(a) सगुण काव्य धारा
(b) संत काव्य धारा
(c) कृष्ण काव्य धारा
(d) राम काव्य धारा

Jharkhand PGT Hindi, 2018

Ans : (b) – संत काव्य धारा में मूर्तिपूजा और अवतारवाद का विरोध किया गया है। संत काव्य धारा के प्रतिनिधि कवि **कबीरदास** हैं। जबकि कृष्ण काव्यधारा के प्रतिनिधि कवि सूरदास हैं तथा राम काव्यधारा के प्रतिनिधि कवि तुलसीदास हैं।

225. अपने काव्य के आधार को स्पष्ट करते हुए किसने कहा- 'मैं कहता हूँ आखिन देखी तू कहता कागद की लेखी'?
(a) जायसी
(b) सूर
(c) कबीर
(d) तुलसी

Jharkhand PGT Hindi, 2018

Ans : (c) प्रस्तुत पंक्ति-'मैं कहता हूँ आँखिन देखी, तू कहता कागद की लेखी'। निर्गुण काव्यधारा के प्रतिनिधि कवि कबीरदास की है। जबकि अन्य नाम जायसी, सूर, तुलसी का इस पंक्ति से कोई संबंध नहीं है।

226. ज्ञानाश्रयी निर्गुण काव्य का दार्शनिक आधार क्या है?
(a) शुद्धाद्वैतवाद
(b) विशिष्टाद्वैतवाद
(c) द्वैतवाद
(d) अद्वैतवाद

KVS PGT Hindi, 2016

Ans. (d) : ज्ञानाश्रयी निर्गुण काव्य का दार्शनिक आधार अद्वैतवाद है। इस शाखा के प्रमुख कवि कबीरदास हैं। जबकि शुद्धाद्वैतवाद से प्रभावित कवि सूरदास हैं और विशिष्टाद्वैत से प्रभावित कवि तुलसीदास हैं।

227. रैदास किस धारा एवं शाखा के कवि थे?
(a) सगुणधारा कृष्णभक्ति शाखा
(b) निर्गुणधारा ज्ञानाश्रयी शाखा
(c) निर्गुणधारा प्रेमाश्रयी शाखा
(d) सगुणधारा रामभक्ति शाखा

KVS PGT Hindi, 2016

Ans. (b) : रैदास निर्गुण काव्यधारा के ज्ञानाश्रयी शाखा के कवि थे। इनके अतिरिक्त कबीर, दादू, सुन्दरदास, धर्मदास, पीपा, धन्ना, सेन आदि कवि इस शाखा में आते हैं। जबकि निर्गुणधारा के प्रेमाश्रयी शाखा के प्रमुख कवि जायसी हैं। 'रैदास' रामानन्द के शिष्य परम्परा में आते है। ये कृष्ण भक्ति की कवयित्री मीराबाई के गुरु भी माने जाते हैं।

228. जाके कुटुंब सब ढोर ढोवंत
फिरहिं अजहुँ बानारसी आसपासा।
आचार सहित बिप्र करहिं डंडउति
तिन तनै रविदास दासानुदासा॥
इन काव्य पंक्तियों में किन भावों की अभिव्यंजना हुई है?
(A) लोक-व्यवहार
(B) वर्ण-व्यवस्था
(C) विनय
(D) गर्वोक्ति
कोड:
(a) (A) और (D) सही
(b) (A), (B) और (C) सही
(c) (B), (C) और (D) सही
(d) (B) और (D) सही

Ans : (b) निर्गुण भक्ति धारा के संत कवि रैदास की प्रस्तुत पंक्ति 'जाके कुटुम्ब .... दासानुदासा' में लोक व्यवहार, वर्ण-व्यवस्था और विनय जैसे भावों की अभिव्यंजना हुई है। जबकि गर्वोक्ति की नहीं।

229. निम्नलिखित कृतियों को उन के रचनाकारों के साथ सुमेलित कीजिए :

सूची-I	सूची-II
(a) जपुजी	(i) तुलसीदास
(b) रसमंजरी	(ii) कबीर
(c) बरवै नायिका भेद	(iii) नंददास
(d) वैराग्य संदीपनी	(iv) रहीम
	(v) नानक

कोड:

	(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	(v)	(iv)	(iii)	(i)
(b)	(i)	(ii)	(iii)	(iv)
(c)	(v)	(iii)	(iv)	(i)
(d)	(iv)	(v)	(iii)	(i)

Ans : (c)

कृति	कृतिकार
जपुजी	नानक
रसमंजरी	नंददास
बरवै नायिका भेद	रहीम दास
वैराग्य संदीपनी	तुलसीदास

230. कबीरदास को मानवतावादी कवि क्यों कहा जाता है?
(a) वे मानव थे।
(b) वे मानव के बीच नहीं रहते थे।
(c) उन्होंने मानव-मानव में भेद न करते हुए सबके उत्थान की बातें की।
(d) मानव की पीड़ा की परवाह नहीं की।

NVS TGT Hindi, 2016

Ans. (c) : कबीरदास को मानवतावादी कवि इसलिए कहा जाता है क्योंकि "उन्होंने मानव-मानव में भेद न करते हुए उसके उत्थान की बातें की।" अन्य दिये गये कथन कबीर के सन्दर्भ में सही नहीं हैं।

231. रैदास का दूसरा नाम है-
(a) हरिदास
(b) रवीन्द्रदास
(c) रविदास
(d) दादू

MP Asst. Prof. Hindi, 2017

Ans. (c) : 'रैदास' का दूसरा नाम **रविदास** है। रैदास भक्तिकालीन कवि हैं। रैदास मीराबाई के गुरु एवं रामानन्द के शिष्य थे। ये बनारस के निवासी तथा जाति के चमार थे। 'मन चंगा तो कठौती में गंगा' तथा 'प्रभुजी तुम चंदन हम पानी' प्रसिद्ध पंक्तियाँ संत रैदास की ही है।

232. **कबीर को प्रवर्तक माना जाता है-**

(a) सगुण सम्प्रदाय (b) पुष्टिमार्गी सम्प्रदाय
(c) सखी सम्प्रदाय (d) निर्गुण सम्प्रदाय

MP Asst. Prof. Hindi, 2017

Ans. (d) : कबीरदास को निर्गुण सम्प्रदाय का 'प्रवर्तक माना गया है। कबीर निर्गुण भक्ति में ज्ञानाश्रयी शाखा के प्रतिनिधि कवि हैं। पुष्टिमार्गी सम्प्रदाय के प्रवर्तक 'वल्लभाचार्य' तथा सखी सम्प्रदाय के प्रवर्तक 'स्वामी हरिदास' हैं। सगुण सम्प्रदाय के प्रतिनिधि कवि गोस्वामी 'तुलसीदास' जी हैं।

233. **गुरुग्रंथ साहब में किस कवि की रचनाएँ संकलित हैं ?**

(a) विद्यापति (b) कबीर
(c) जायसी (d) जयदेव

MP Asst. Prof. Hindi, 2017

Ans. (b) : सिक्खों के आदि ग्रंथ 'गुरुग्रंथ साहब' में कबीर की भी रचनाएं संकलित हैं। जबकि अन्य नाम विद्यापति, जायसी और जयदेव असंगत हैं।

234. **उलट बाँसियाँ किसने लिखी हैं-**

(a) कबीर (b) तुलसीदास
(c) सूरदास (d) रहीम

MP Asst. Prof. Hindi, 2017

Ans. (a) : उलट बाँसियाँ लिखने वाले कवि कबीरदास है; उनकी प्रसिद्ध उलटबाँसी है-
एक अचम्भा देखा रे भाई।
ठाड़ा सिंह चरावै गाई।।
पहले पूत पीछे भइ माई।
चेला के गुरु लागै पाई।।

2. सूफी काव्य

235. **'फूल मरै पै मरै न बासू'– यह प्रसिद्ध उक्ति किस कवि की है?**

(a) दादू (b) कबीर
(c) रैदास (d) जायसी

UP PGT 2021

Ans. (d) : 'फूल मरै पै मरै न बासू' प्रसिद्ध पंक्ति मलिक मोहम्मद 'जायसी' की है। जो पद्मावत से ली गयी है।

- जायसी का पूरा नाम मलिक मोहम्मद जायसी है, जो सूफी काव्यधारा के कवि हैं, इनकी प्रसिद्ध रचना पद्मावत है, जो 1540 ई. में रची गयी।
- जायसी ने पद्मावत के विषय में कहा– "सन् नौ सै सत्ताइस अहा। कथा आरंभ बैन कवि कहा।।"
- **जायसी की अन्य रचना** – कन्हावत, अखरावट व आखिरी कलाम है।
- रैदास की प्रमुख पंक्ति है – प्रभु जी तुम चंदन हम पानी

236. **निम्न में से कौन-सा युग्म सुमेलित नहीं है?**

(a) इंद्रावती – नूर मुहम्मद
(b) हंस जवाहिर – कासिम शाह
(c) चित्रावली – उसमान
(d) मधुमालती – कुतुबन

UP PGT 2021

Ans. (d) : मधुमालती-कुतुबन की नहीं अपितु मंझन की रचना है। मधुमालती का रचनाकाल –1545 ई. है। इसमें कनेसरनगर के राजा सूरजभान के पुत्र मनोहर और महारस नगर नरेश विक्रमराय की कन्या मधुमालती के प्रेम कहानी का वर्णन है। शेष सभी रचनाएँ सूफी काव्यधारा की हैं। कुतुबन की रचना 'मृगावती' है। सूफी काव्य में मसनवी शैली का प्रयोग किया गया है।

237. **'पद्मावत' का 'बँगला' अनुवाद किसने किया था?**

(a) मगन ठाकुर (b) आलोउजाला
(c) नसरूद्दीन हुसैन (d) शुजाउद्दौला

UP TGT- 2021

Ans. (b) : 'पद्मावत' का 'बँगला' अनुवाद आलोउजाला ने किया था। यह अनुवाद अराकान राज्य के वजीर मगन ठाकुर ने सन् 1650 ई. के आसपास 'आलोउजाला' नामक एक कवि से कराया था।

238. **'उदधि आइ तेइ बन्धन कीन्हा।**
इति दसमाथ अमर पद लीन्हा।'
पंक्तियों के रचनाकार हैं

(a) कुतुबन (b) तुलसी
(c) जायसी (d) सूरदास

UP TGT- 2021

Ans. (c) : 'उदधि आइ तेइ बन्धन कीन्हा।
इति दसमाथ अमर पद लीन्हा।'

उक्त पंक्तियों के रचनाकार मलिक मुहम्मद जायसी हैं। ये पंक्तियाँ जायसी के प्रसिद्ध सूफी महाकाव्य 'पद्मावत' के 'लक्ष्मी-समुद्र-खंड' से ली गयी है। दोहा और चौपाई छंद में लिखे गये इस महाकाव्य की भाषा अवधी है। इसकी रचना सन् 947 हिजरी (1540 ई.) में हुई थी।
विजयदेव नारायण शाही ने पद्मावत को हिन्दी की अपने ढंग की अकेली 'ट्रेजिक' कृति कहा।
आचार्य शुक्ल ने पद्मावत को 'समासोक्ति काव्य' कहा है।

239. **'नागमती-वियोग खंड' से संबंधित सही तथ्य हैं–**

1. **यह बारहमासा शैली में लिखा गया है।**
2. **बारहमासा की शुरुआत जायसी ने की।**
3. **जायसी ने 'जेठ-असाढ़ी' नामक तेरहवें महीने का उल्लेख किया है।**
4. **नागमती के आँसुओं से सारी सृष्टि भीगी हुई जान पड़ती है।**

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए:

(a) 1 और 2 (b) 1 और 3
(c) 1 और 4 (d) 2 और 3

UGC NET Dec. 2020/June 2021 Shift-II

Ans. (c) : मलिक मुहम्मद जायसी कृत 'पद्मावत' महाकाव्य में नागमती के विरह-विदग्ध हृदय की संवेदनशीलता का उत्कर्ष देखने को मिलता है। नागमती विरह-वर्णन में जैसे व्यथा स्वयं ही मुखरित होने लगती है। 'नागमती-वियोग खण्ड' बारहमासा शैली में लिखा गया है। इस वियोग खण्ड में नागमती के आँसुओं से सारी सृष्टि भीगी जान पड़ती है।

240. तपै लागि अब जेठ असाढ़ी। मोहि पिउ बिं छाजनि भइ गाढ़ी॥

तन तिनउर भा, झूरौं खरी। भइ बरखा, दुख आगरि जरी॥

इस पूरे कड़वक में नागमती की विरह-दशा के बारे में यह विचार किसका है?

"यह आशिक माशूकों का निर्लज्ज प्रलाप नहीं है; यह हिन्दू गृहिणी की विरहवाणी है। इसका सात्विक मर्यादापूर्ण माधुर्य मनोहर है।"

(a) चन्द्रबली पांडेय (b) रामचंद्र शुक्ल
(c) माताप्रसाद गुप्त (d) श्याम मनोहर पांडेय

UGC NET Dec. 2020/June 2021 Shift-I

Ans. (b) : "यह आशिक माशूकों का निर्लज्ज प्रलाप नहीं है, यह हिन्दु गृहिणी की विरहवाणी है। इसका सात्विक मर्यादापूर्ण माधुर्य मनोहर है।"

नागमती की विरह-दशा के बारे में उपर्युक्त विचार आचार्य रामचंद्र शुक्ल का है।

प्रेमगाथा की परम्परा में आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने पद्मावत को सबसे प्रौढ़ और सरस माना है।

241. हिंदी साहित्य का सर्वश्रेष्ठ विरह-वर्णन नागमती का विरह वर्णन किस ग्रन्थ में संकलित है?

(a) पद्मावत (b) मृगावती
(c) अखरावट (d) मधुमालती

DSSSB TGT (Female) 05.09.2021 Shift-II

Ans. (a) : नागमती का विरह वर्णन हिन्दी साहित्य की अनुपम कृति 'पद्मावत' (1540 ई.) में संकलित है। पद्मावत सूफी कवि 'जायसी' की कृति है इसमें 57 खण्ड हैं, आचार्य शुक्ल के अनुसार पद्मावत की कथा का पूर्वार्द्ध 'कल्पित' और उत्तरार्द्ध 'ऐतिहासिक' है। अखरावट, आखिरी कलाम, चित्रेरेखा, कन्हावत जायसी की रचनाएं हैं। मृगावती (1501 ई.) कुतुबन की अवधी भाषा की कृति है तथा मधुमालती (1545 ई.) मंझन द्वारा कृत है।

242. निम्नलिखित विकल्पों में से किसे हिन्दी की शैली नहीं मानेंगे?

(a) मसनवी (b) संस्कृतनिष्ठ हिन्दी
(c) दक्खिनी (d) हिन्दुस्तानी

DSSSB TGT (Male) 18.09.2021 Shift-II
KVS PGT 2014

Ans. (a) : 'मसनवी' को हिन्दी की शैली नहीं मानेंगे। 'मसनवी' फारसी भाषा की शैली है। सूफीयों ने अपने काव्य में मसनवी शैली का प्रयोग किया है। मसनवी से तात्पर्य- 'काव्य लिखने का ढंग' से है, जिसमें चार चरण होते हैं-

- ईश की वन्दना
- पैगम्बर की स्तुति
- साहे वक्त (तत्कालीन बादशाह) की प्रशंसा
- आत्म परिचय

243. निम्नलिखित महाकाव्यों में से कौन-सा महाकाव्य मलिक मुहम्मद जायसी द्वारा लिखा गया है?

(a) उर्वशी (b) पद्मावत
(c) कामायनी (d) रामचरित मानस

DSSSB TGT (Male) 18.09.2021 Shift-II

Ans. (b) : 'पद्मावत' महाकाव्य मलिक मोहम्मद जायसी द्वारा लिखा गया है। जायसी के महत्वपूर्ण ग्रन्थ हैं-

- पद्मावत
- अखरावट
- आखिरी कलाम
- चित्ररेखा
- कहरानामा
- मसलानामा
- कन्हावत
- विजयदेव नारायण शाही ने 'पद्मावत' को हिन्दी में अपने ढंग की अकेली ट्रेजिक कृति कहा है।
- 'पद्मावत' का 'नागमती वियोग खण्ड' हिन्दी साहित्य की अनुपम निधि है।

244. कौन-सी रचना जायसी की नहीं है?

(a) चित्ररेखा (b) अखरावट
(c) छिताई वार्ता (d) कहरानामा

DSSSB PGT 4.7.2021 Shift-I

Ans. (c) : 'छिताई वार्ता' नारायण दास की रचना है, इसका रचनाकाल 1590ई. है। शेष रचनाएँ, चित्ररेखा, अखरावट, कहरानामा जायसी की हैं। आचार्य शुक्ल जायसी को प्रथम श्रेणी के कवियों में रखते हैं, शुक्ल जी के अनुसार, "जायसी का क्षेत्र तुलसी की अपेक्षा परिमित है पर प्रेमवेदना अत्यंत गूढ़ है।"

245. मुल्ला दाउद (1370 ई.)की अवधी भाषा की पहली कृति कौन सी है?

(a) चंदायन या लोरकहा (b) वीरांगना
(c) पथिक (d) यशोधरा

DSSSB TGT (Female) 04.09.2021 Shift-II
राजस्थान कॉलेज लेक्चरर भर्ती परीक्षा- 2015

Ans. (a) : मुल्ला दाउद की अवधी भाषा की पहली कृति 'चंदायन या लोरकहा' है। डॉ. रामकुमार वर्मा मुल्ला दाउद को सूफी या प्रेममार्गी शाखा का कवि मानते हैं। रामकुमार वर्मा ने मुल्ला दाउद को अपने इतिहास ग्रन्थ में संधिकाल के अन्तर्गत रखा है। डॉ. माताप्रसाद गुप्त ने 'चंदायन' को 'लोरकहा' या 'लोर कथा' नाम से सम्बोधित किया है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल कुतुबन (मृगावती) को सूफी या प्रेममार्गी शाखा का प्रथम कवि मानते हैं। मुल्ला दाउद कृत चंदायन के नायक तथा नायिका- लोर (लोरिक)-चन्दा है। 'चंदायन' में प्रयुक्त भाषा 'अवधी' तथा प्रयुक्त छंद-चौपाई-दोहा है। 'पथिक' (1920 ई.) के रचनाकार रामनरेश त्रिपाठी हैं। 'यशोधरा' (1932 ई.) के रचनाकार मैथिलीशरण गुप्त हैं। 'वीरांगना' उपन्यास के रचनाकार रामनरेश त्रिपाठी हैं। 'वीरांगना' कविता के रचनाकार केदारनाथ अग्रवाल हैं।

नोट– आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने मुल्ला दाउद कृत चन्दायन का समय 1379 ई. माना है।

246. 'तन चितउर, मन राजा कीन्हा। हिय सिंघल, बुद्धि पदमिनि चीन्हा।' पंक्तियाँ किस ग्रन्थ की है?

(a) सीतायन (b) बीजक
(c) पद्मावत (d) बिहारी सतसई

DSSSB TGT (Female) 04.09.2021 Shift-II

Ans. (c) : 'तन चितउर, मन राजा कीन्हा। हिय सिंघल, बुद्धि पदमिनि चीन्हा।' पंक्तियाँ मलिक मोहम्मद जायसी कृत 'पद्मावत' की है। जायसी हिन्दी साहित्य के भक्तिकाल की निर्गुण प्रेमाश्रयी धारा के कवि हैं। जायसी प्रसिद्ध सूफी फकीर शेख मोहिदी (मुहीउद्दीन) के शिष्य थे और शेरशाह के समकालीन कवि थे तथा उ.प्र. के अमेठी के निकट 'जायस' नामक स्थान पर रहते थे। जायसी कृत 'पद्मावत' में कुल 57 खण्ड है और इनका प्रिय अलंकार 'उत्प्रेक्षा' है। 'पद्मावत' की भाषा 'अवधी' और इसकी रचना शैली पर आदिकाल के जैन कवियों की 'दोहा-चौपाई' पद्धति का प्रभाव पड़ा है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने जायसी द्वारा रचित तीन ग्रन्थों-1- पद्मावत, 2- अखरावट, 3- आखिरी कलाम का ही उल्लेख किया है। 'बीजक' कबीरदास की वाणियों का संग्रह है। कविवर बिहारी की प्रसिद्ध कृति 'बिहारी सतसई' है। 'सीतायन' मैथिली भाषा के विख्यात साहित्यकार वैद्यनाथ मल्लिक 'विधु' द्वारा रचित एक महाकाव्य है।

247. मलिक मुहम्मद जायसी ने 'आखिरी कलाम' में किस बादशाह की प्रशंसा की है?

(a) बाबर (b) शहंशाह
(c) हुमायूँ (d) अकबर

DSSSB TGT (Female) 04.09.2021 Shift-II

Ans. (a) : मलिक मुहम्मद जायसी ने 'आखिरी कलाम' में बादशाह बाबर की प्रशंसा की है। मलिक मुहम्मद जायसी की अन्य रचनाएँ-

रचना	विषय-वस्तु
पद्मावत	- प्रणयगाथा
अखरावट	- वर्णमाला के एक-एक अक्षर को लेकर सिद्धांत सम्बन्धी तत्वों से भरी चौपाई है।
आखिरी कलाम	- प्रलय से सम्बद्ध कथा तथा बाबर की प्रशंसा है।
चित्ररेखा	- लघु प्रेमाख्यानक
कहरानामा	- आध्यात्मिक विवाह की चर्चा है। यह कहरवा शैली में लिखा गया है।

248. सूफी कवि किस शाखा से संबंधित थे?

(a) कृष्णभक्ति शाखा (b) रामभक्ति शाखा
(c) ज्ञानाश्रयी (d) प्रेमाश्रयी

DSSSB PGT 18.7.2021 Shift-II

Ans : (d) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने हिन्दी साहित्य के भक्तिकाल को सर्वप्रथम शुद्ध दार्शनिक एवं धार्मिक आधार पर चार भागों में बाँटा,निर्गुण धारा के अन्तर्गत ज्ञानाश्रयी एवं प्रेमाश्रयी तथा सगुण धारा के अन्तर्गत रामभक्ति शाखा तथा कृष्ण भक्ति। सूफी कवि/काव्य निर्गुण धारा की प्रेमाश्रयी शाखा के अन्तर्गत आते हैं।

249. निम्नलिखित में से कौन-सा कवि सगुण भक्ति धारा का कवि नहीं है–

(a) सूरदास (b) कुतुबन
(c) रसखान (d) नंददास

DSSSB PGT 18.7.2021 Shift-II

Ans : (b) 'कुतुबन' सूफी कवि थे, चे चिश्ती वंश के प्रवर्तक शेख बुरहान के शिष्य थे। इनका संबंध सगुण भक्ति धारा से नहीं है। 'मृगावती' की रचना 1501ई0 में कुतुबन ने अवधी भाषा तथा दोहा चौपाई छंद में की। सूरदास, रसखान तथा नंददास सगुण भक्ति धारा के कृष्ण काव्य परंपरा के कवि हैं।

250. जायसी के पद्मावत में 'पद्मावती' कहाँ की राजकुमारी थी

(a) सिंहलद्वीप (b) नागदेश
(c) अवंतिका (d) चितौड़

DSSSB PGT 18.7.2021 Shift-II

Ans : (a) जायसी कृत पद्मावत में 'पद्मावती' सिंहलद्वीप की राजकुमारी हैं पद्मावत के पात्रों और स्थानों के प्रतीकार्थ भी है जैसे-रत्नसेन-मन (आत्मा) का प्रतीक है, सिंहलद्वीप-हृदय का तथा पद्मावती-सात्विक बुद्धि या परमात्मा की प्रतीक है।

251. 'उन्होंने सामान्य हृदय तत्व की सृष्टि व्यापिनी भावना द्वारा मनुष्य और पशु पक्षी सबको एक जीवन सूत्र में बद्ध देखा है।'

(a) तुलसीदास (b) सूरदास
(c) जायसी (d) घनानन्द

UPHESC Assit. Prof. 2021

Ans. (c) : ''उन्होंने सामान्य हृदय तत्त्व की सृष्टि व्यापिनी भावना द्वारा मनुष्य और पशु पक्षी सबको एक जीवन सूत्र में बद्ध देखा है।'' यह कथन जायसी के बारे में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने कहा है। जायसी भक्तिकाल के प्रेमाश्रयी शाखा के प्रमुख कवि हैं। इनके द्वारा रचित ग्रंथ-पद्मावत, अखरावट, आखिरी कलाम आदि हैं।

252. तन चित उर मन राजा कीन्हा,
हिय सिंहल बुधि पदमिनि चीन्हा।
गुरु सुआ जेहि पंथ देखावा,
बिनु गुरु जगत को निरगुन पावा।
उक्त पंक्तियों में 'पद्मावत' की कौन-सी विशेषता परिलक्षित है?

(a) विरह का अतिरंजित वर्णन
(b) लौकिक प्रेम द्वारा अलौकिकता का संकेत
(c) नारी विषयक अनुदात्त अवधारणा
(d) धार्मिक असहिष्णुता

Haryana TGT 2020

Ans. (b) : 'पद्मावत' की उक्त पंक्तियों में लौकिक प्रेम द्वारा अलौकिकता का संकेत परिलक्षित है। 'पद्मावत' मलिक मोहम्मद जायसी द्वारा रचित सूफी काव्य परम्परा का प्रसिद्ध महाकाव्य है। इस महाकाव्य में कुल 57 खण्ड हैं।

मलिक मोहम्मद जायसी की रचनाएँ:- पद्मावत, अखरावट, आखिरी कलाम, चित्ररेखा, कहरानामा आदि।

253. इनमें से अवधी की प्रारम्भिक कृति मानी जाती है

(a) चन्दायन (b) मधुमालती
(c) मृगावती (d) चित्रावली

RPSC Assit. Prof. 2020 Paper-I

Ans. (a) : 'चन्दायन' अवधी की प्रारम्भिक कृति मानी जाती है। डॉ. रामकुमार वर्मा ने मुल्ला दाउद कृत 'चन्दायन' (1379ई.) को अवधी की प्रथम काव्यकृति तथा मुल्लादाउद को 'सूफी' या 'प्रेममार्गी शाखा' का प्रथम कवि माना है।

डॉ. माता प्रसाद गुप्त ने 'चंदायन' को 'लोरकहा' या 'लोककथा' नाम से संबोधित किया है।

'चंदायन' पूर्वी भारत में प्रचलित 'लोरिक', उसकी पत्नी 'मैना' व विवाहिता प्रेमिका 'चंदा' की प्रेमकथा पर आधारित है।

'मृगावती' (1503ई.), अवधी भाषा में रचित कुतुबन की कृति है।

'मधुमालती' (1545ई.) के रचनाकार मंझन हैं। यह अवधी भाषा, दोहा-चौपाई छंद में रचित है।

'चित्रावती' (1613ई.) सूफी प्रेमाख्यानक काव्यकृति के रचनाकार 'उसमान' हैं।

254. जायसी ने 'नागमती वियोग खण्ड' में बारहमासा का प्रारम्भ किस मास से किया है?

(a) चैत्र (b) वैशाख

(c) ज्येष्ठ (d) आषाढ़

RPSC Assit. Prof. 2020 Paper-I

Ans. (d) : जायसी ने 'नागमती वियोग खण्ड' में बारहमासा का प्रारम्भ 'आषाढ़ मास' से किया है। 'बारहमासा' मलिक मुहम्मद जायसी द्वारा रचित महाकाव्य 'पद्मावत' के नागमती वियोग खण्ड का एक अंश है। इस खण्ड में राजा रत्नसेन के वियोग में संतृप्त रानी नागमती की विरह व्यथा का वर्णन किया गया है। इस पूरे अंश में साल के विभिन्न महीनों में नागमती की स्थिति का वर्णन किया गया है। 'पद्मावत' का 'नागमती वियोग खण्ड' हिन्दी साहित्य की अनुपम निधि है। विरह वर्णन के कारण इसे 'प्रेम की पीर' का काव्य कहा गया। मलिक मुहम्मद जायसी सूफी फ़कीर शेख मोहिदी (मुहीउद्दीन) के शिष्य थे और शेरशाह के समकालीन कवि थे तथा अमेठी के निकट जायस में रहते थे।

255. ''टप टप बूँद परहिं जस ओला। <u>बिरह पवन होइ मारै झोला</u>।''- पंक्ति में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने रेखांकित अंश से आशय ग्रहण किया है

(a) वात के प्रकोप से अंग का सुन्न हो जाना।

(b) विरह रूपी पवन से राख बन उड़ जाना।

(c) कृशकाय होने के कारण असंतुलित होना।

(d) शरीर का अत्यधिक कम्पित होना।

RPSC Assit. Prof. 2020 Paper-I

Ans. (a) : पंक्ति में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने रेखांकित अंश से आशय वात के प्रकोप से अंग का सुन्न हो जाना ग्रहण किया है। उपर्युक्त पंक्तियाँ 'पद्मावत' के नागमती वियोग खण्ड से उद्धृत हैं। 'पद्मावत' में नागमती, पद्मावती और राजा रत्नसेन की प्रेम कहानी का वर्णन है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार 'पद्मावत' की कथा का पूर्वार्द्ध 'कल्पित' और उत्तरार्द्ध 'ऐतिहासिक' है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने लिखा है ''पद्मावत हिन्दी के सर्वोत्तम प्रबंध काव्यों में है। ठेठ अवधी भाषा के माधुर्य भावों की गंभीरता की दृष्टि से यह काव्य निराला है।'' आचार्य रामचन्द्र शुक्ल 'पद्मावत', 'अखरावट' व 'आखिरी कलाम' को ही जायसी की रचना मानते हैं। शुक्ल जी द्वारा संपादित मलिक मुहम्मद जायसी ग्रन्थावली में ये तीनों रचनाएँ ही संकलित हैं।

**256. ''जेहि पंखी के निअर होई कहै विरह कै बात।
सोई पंखी जाइ जरि तरिवर होई निपात॥''
आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने इन पंक्तियों में माना है**

(a) प्रकृति का सुरम्य चित्रण

(b) ऊहात्मक पद्धति

(c) विरह ताप की विशद व्यंजना

(d) अलंकार का उत्कृष्ट उदाहरण

RPSC Assit. Prof. 2020 Paper-I

Ans. (b) : आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने इन पंक्तियों में 'ऊहात्मक पद्धति' माना है।

- मलिक मुहम्मद जायसी कृत 'पद्मावत' महाकाव्य का 'नागमती वियोग खण्ड' 'हिन्दी साहित्य की अद्वितीय निधि' है। 'पद्मावत' में जायसी ने संयोग तथा वियोग दोनों प्रकार के शृंगार का वर्णन किया है, पर सम्पूर्ण काव्य में प्रधानता वियोग शृंगार की है।
- जायसी के विरह वर्णन की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उसमें हृदय की वेदना ही सामान्य रूप से अभिव्यक्त हुई है। विरह वर्णन में अगर वस्तु व्यंजना ही प्रधान हो उठे तो वह हृदय को स्पर्श नहीं कर पाता। उपर्युक्त पंक्तियों में यही वर्णित है।
- नागमती जिस पक्षी को अपने विरह का संदेश सुनाती है और उसे प्रियतम तक पहुँचाने को कहती है, वह जल जाता है। इतना ही नहीं वह पेड़ भी जलकर नष्ट हो जाता है।
- विरह वर्णन में यहाँ वस्तु-व्यंजना भी प्रधान हो उठा है।
- जायसी द्वारा रचित महत्वपूर्ण ग्रन्थ निम्नलिखित हैं- पद्मावत, अखरावट, आखिरी कलाम, चित्ररेखा, कहरानामा, मसलानामा, कन्हावत।
- 'आखिरी कलाम' बाबर के समय लिखी गयी थी। इसमें बाबर की प्रशंसा है।

**257. ''पिउ सौं कहेहु सँदेसड़ा, हे भौंरा! हे काग!
सो धनि बिरहै जरि मुई, तेहि क धुवाँ हम्ह लाग॥''
में भौंरे व काग को अलग-अलग सम्बोधित करने की व्याख्या के प्रसंग में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का कथन है-**

(a) यह अलंकार का प्रभाव है।

(b) रंग की समानता से यही सम्भव है।

(c) आवेग की दशा में यही उचित है।

(d) छन्द की पाद-पूर्ति हेतु किया गया है।

RPSC Assit. Prof. 2020 Paper-I

Ans. (c) : उपर्युक्त पंक्ति में भौंरे व काग को अलग-अलग सम्बोधित करने की व्याख्या के प्रसंग में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का कथन है कि आवेग की दशा में यही उचित है।

- मलिक मुहम्मद जायसी भक्तिकालीन काव्यधारा के निर्गुण प्रेममार्गी सूफी शाखा के प्रतिनिधि कवि हैं। जायसी को हम 'विप्रलम्भ शृंगार' का प्रधान कवि कह सकते हैं।
- उपर्युक्त पंक्तियों में रानी के हृदय में सहानुभूति की सम्भावना होती कैसे है? यह समझकर होती है कि भौंरा और कौआ दोनों उसी विरहाग्नि के धुएँ से काले हो गये है जिसमें मैं जल रही हूँ। सम दुःखभोगियों में परस्पर सहानुभूति का उदय अत्यन्त स्वाभाविक है।
- जायसी कृत पद्मावत में कुल 57 खण्ड हैं। इनका प्रिय अलंकार उत्प्रेक्षा है।
- 'पद्मावत' को अवधी का प्रथम महाकाव्य माना जाता है। इसकी भाषा ठेठ अवधी है।
- 'पद्मावत' को 'प्रतीकात्मक काव्य' कहा जाता है।
- विजयदेव नारायण साही ने 'पद्मावत' को हिन्दी में अपने ढंग की अकेली ट्रेजिक कृति कहा है।

258. "मन अति भयो हुलास, बिगसि जनु कोक किरन रवि। अरुन अधर, तिय सधर, बिंब फल जानि कीर छवि॥" उक्त काव्यांश में किसके उल्लास का उल्लेख है?

(a) पद्मावती की माता (b) पद्मावती के पिता
(c) पद्मावती (d) पद्मावती की सहेली

RPSC Assit. Prof. 2020 Paper-I

Ans. (c) : "मन अति भयो हुलास, बिगसि जनु कोक किरन रवि। अरुन अधर, तिय सधर, बिंब फल जानि कीर छवि।।"
उक्त काव्यांश में 'पद्मावती' के उल्लास का उल्लेख है। उपर्युक्त काव्य पंक्तियाँ चंदबरदाई कृत 'पृथ्वीराजरासो' से उद्धृत हैं। 12वीं शताब्दी में रचित इस महाकाव्य में 69 सर्ग तथा 68 प्रकार के छंदो का प्रयोग किया गया है। 'पद्मावती समय' पृथ्वीराजरासो का 20वां समय या सर्ग है। मिश्र बन्धुओं ने लिखा है "हिन्दी का वास्तविक प्रथम महाकवि चन्दबरदाई को ही कहा जा सकता है।" आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी ने 'पृथ्वीराजरासो' को शुक-शुकी संवाद के रूप में रचित माना है।

259. पद्मावत किस भाषा में लिखा गया है?

(a) खड़ी बोली हिन्दी (b) अवधी
(c) राजस्थानी (d) ब्रजभाषा

DSSSB PGT Hindi (Male) 18.07.2021 Shift-I
NVS PGT 2014
UP TGT 2011

Ans. (b) : 'पद्मावत' 'अवधी' भाषा में लिखा गया है।

रचना	वर्ष	कवि	भाषा	छंद
चन्दायन	1379 ई.	मुल्ला दाउद	अवधी	चौपाई-दोहा
रूपमंजरी	1568 ई.	नन्ददास	ब्रजभाषा	चौपाई-दोहा
अनुराग बाँसुरी	1764 ई.	नूर मोहम्मद	अवधी	बरवै-चौपाई
मधुमालती	1545 ई.	मंझन	अवधी	दोहा-चौपाई
छिताई वार्ता	1590 ई.	नारायण दास	राजस्थानी ब्रज	दोहा-चौपाई

260. 'ज्ञानदीप' नामक प्रेमाख्यान काव्य की नायिका कौन है?

(a) कामवती (b) उर्मिला
(c) देवयानी (d) मुग्धा

DSSSB PGT Hindi (Male) 18.07.2021 Shift-I

Ans. (c) : 'ज्ञानदीप' नामक प्रेमाख्यान काव्य की नायिका 'देवयानी' है। 'ज्ञानदीप' (1618 ई.) के रचनाकार शेख नबी हैं। इस प्रेमाख्यान में राजा ज्ञानदीप और रानी देवयानी की प्रेमकथा का वर्णन हैं।
आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार- "शेख नबी से प्रेमगाथा परम्परा समाप्त समझनी चाहिए।"

261. निम्नलिखित में से, जायसी कृत 'पद्मावत' में प्रयुक्त छन्द है:

(a) सोरठा-दोहा (b) चौपाई-दोहा
(c) चौपाई-सोरठा (d) दोहा-सोरठा

UKSSSC LT 2020

Ans. (b) : जायसी कृत 'पद्मावत' में चौपाई – दोहा छन्द का प्रयोग किया गया है। जायसी सूफी काव्यधारा के प्रतिनिधि कवि हैं। इनकी प्रसिद्धि का मूल आधार ग्रन्थ 'पद्मावत' है जो 'कड़वक शैली' में रचित है। चौपाई के साथ दोहे का प्रयोग 'कड़वक शैली' कहलाती है।

- जायसी कृत 'पद्मावत' में कुल 57 खण्ड हैं।
- जायसी का प्रिय अलंकार 'उत्प्रेक्षा' है।
- जायसी शेरशाह के समकालीन कवि थे तथा अमेठी के निकट 'जायस' नामक स्थान पर रहते थे।

262. हिन्दी प्रेमाख्यान काव्य-परंपरा से संबंधित असंगत कथन है

(a) निर्विवाद रूप से सभी प्रेमाख्यान तत्सम शब्दावली प्रधान अवधी भाषा में रचित हैं।
(b) ये काव्य प्रबंधात्मक शैली में रचित हैं।
(c) इनके पात्र मुख्यतः दो श्रेणियों- मानवीय और मानवेतर के हैं।
(d) इन काव्यों की मूलभावना प्रेम है।

RPSC Assit. Prof. 2020 Paper-II

Ans. (a) : प्रेमाख्यान काव्य परंपरा में सभी प्रेमाख्यान तत्सम शब्दावली प्रधान अवधी भाषा में रचित है। यह असंगत कथन है।
प्रेमाख्यान काव्य परंपरा की प्रमुख विशेषताएँ-

1. ये काव्य प्रबंधात्मक शैली में रचित हैं।
2. इनके पात्र मुख्यतः मानवीय और मानवेत्तर हैं- मानवीय पात्रों में राजा-रानी, राजकुमार-राजकुमारी, मंत्री आदि पात्र, तो मानवेत्तर पात्रों में पशु-पक्षी, देवता-दानव, परियाँ इत्यादि हैं।
3. सभी कथाओं में नायक पराक्रमी प्रेमी जबकि नायिका अद्वितीय सुंदरी, सुकुमारी व प्रेम रोग से ग्रस्त है।
4. प्रकृति का दोनो रूपों (आलम्बनगत तथा उद्दीपनगत) में वर्णन हुआ है।
5. अवधी भाषा का अधिकांश प्रयोग, किंतु उसमान की भाषा पर भोजपुरी प्रभाव, नूर मोहम्मद ने कुछ स्थानों पर ब्रजभाषा का भी प्रयोग किया है।
6. छंदों के दृष्टिकोण से दोहा-चौपाई छंदो की प्रधानता।

263. आचार्य रामचंद्र शुक्ल की दृष्टि से कौन सा कथन सही नहीं है?

(a) 'अखरावट' में वर्णमाला के एक-एक अक्षर को लेकर सिद्धांत संबंधी चौपाइयाँ कही गई हैं।
(b) 'आखिरी कलाम' में कमायत का वर्णन है।
(c) 'पद्मावत' में प्रेमगाथा की परंपरा पूर्ण प्रौढ़ता को प्राप्त मिलती है।
(d) 'पद्मावत' पूर्णतया ऐतिहासिक तथ्यों पर आधारित है।

RPSC Assit. Prof. 2020 Paper-II

Ans. (d) : 'पद्मावत' पूर्णतया ऐतिहासिक तथ्यों पर आधारित है। यह कथन पद्मावत के संबंध में रामचंद्र शुक्ल की दृष्टि से सही नहीं है। क्योंकि रामचंद्र शुक्ल के अनुसार पद्मावत ऐतिहासिक घटना पर आधारित होते हुये भी इसके कुछ अंश कल्पना पर आधारित प्रतीत होते हैं।

264. मंझन कृत 'मधुमालती' के विषय में कौन सा तथ्य सही नहीं है?

(a) इसकी कथा पूर्ण रूप से ऐतिहासिक है।
(b) इसमें भारतीय काव्य-रूढ़ियों का प्रयोग किया गया है।
(c) अन्य सूफी काव्यों के समान ही इसमें भी प्रेम को ही सब कुछ माना गया है।
(d) इसमें पाँच अर्धाली/चौपाइयों के बाद दोहे का प्रयोग है।

RPSC Assit. Prof. 2020 Paper-II

Ans. (a) : मंझन कृत 'मधुमालती' का रचनाकाल 1545 ई. है। 'मधुमालती' में भारतीय काव्य-रूढ़ियों का प्रयोग किया गया है। अन्य सूफी काव्यों के समान ही इसमें भी प्रेम को ही सब कुछ माना गया है किन्तु इसकी कथा पूर्ण रूप से ऐतिहासिक नहीं बल्कि इसके कुछ महत्वपूर्ण अंश पूर्णतः कल्पना आधारित है।

265. 'अंगदपैज' की रचना किसने की है?

(a) नाभादास (b) धरणीदास
(c) ईश्वरदास (d) मलूकदास

UP TGT 2013

Ans. (c) 'अंगदपैज' की रचना ईश्वरदास ने की है। इनकी अन्य रचना 'भरत मिलाप' है यह राम भक्तमूलक कवि हैं। ईश्वरदास ने प्रेमाख्यानक काव्य 'सत्यवती कथा' भी लिखा है।

266. मृगावती के रचनाकार हैं-

(a) मंझन (b) आलम
(c) कुतुबन (d) मुल्ला दाऊद

DSSSB TGT Hindi (Female) 04.09.2021 Shift-II
DSSSB PGT 24-07-2018
KVS PGT 2018
Hariyana Asst. Pro. Exam. 2017
UP TGT 2016, UP TGT 2016
NVS PGT 2014, UP PGT 2013
UGC Net June 2012 (Paper-II)

Ans. (c) : 'मृगावती' के रचनाकार 'कुतुबन' हैं। मंझन ने 'मधुमालती' की रचना की है। मुल्ला दाउद ने 'चंदायन' की रचना की है। उपर्युक्त तीनों ही रचनाकार प्रेमाश्रयी शाखा के सूफी कवि हैं। 'आलम' रीतिकाल के रीतिमुक्त रचनाकार हैं। इनकी प्रसिद्ध रचनाएँ हैं- आलमकेलि, माधवानलकामकंदला।

267. ''सन नौ सै सत्ताइस अहा। कथा अरंभ बैन कवि कहा'' में नौ सै सत्ताइस का ईसवी सन् क्या होगा?

(a) 1525 ई. (b) 1550 ई.
(c) 1540 ई. (d) 1520 ई.

UP PGT 2013

Ans. (d) जायसी का सबसे प्रसिद्ध ग्रंथ है, 'पदमावत' जिसका निर्माण काल कवि ने इस प्रकार दिया है–'सन नौ सै सत्ताइस अहा। कथा आरम्भ वैन कवि कहा।' इसका अर्थ होता है कि पदमावत् की कथा प्रारम्भिक वचन (आरम्भवैन) कवि ने 927 हिजरी (सन् 1520 के लगभग) में कहे थे। जायसी के अन्य ग्रंथ हैं–अखरावट, आखिरी कलाम।

268. 'पद्मावत' में उल्लिखित राजा रतनसेन कहाँ के राजा थे?

(a) चित्तौड़ गढ़ (b) बीकानेर
(c) कुंभलगढ़ (d) रणथंभौर

MP Asst. Prof. Hindi, 2017

Ans. (a) : 'पद्मावत' में उल्लिखित राजा रतनसेन चित्तौड़गढ के राजा थे। 'पद्मावत' जायसी की कृति एवं उनकी कीर्ति का आधार ग्रंथ है।

269. रचनाकाल के अनुसार निम्नलिखित कवियों का सही अनुक्रम है:

(a) कुतबन, उसमान, नूर मुहम्मद, कासिमशाह
(b) कुतबन, कासिमशाह, नूर मुहम्मद, उसमान
(c) कुतबन, उसमान, कासिमशाह, नूर मुहम्मद
(d) उसमान, कुतबन, कासिमशाह, नूर मुहम्मद

UGC NET II[nd] Paper Dec. 2015

Ans. (c) रचनाकाल के अनुसार कवियों के जीवनकाल का सही अनुक्रम- कुतबन उसमान, कासिमशाह तथा नूर मुहम्मद है।

270. मुल्ला दाऊद की भाषा है–

(a) पश्चिमी परम्परा से संपृक्त शैली
(b) साहित्यिक अवधी
(c) पहाड़ी मिश्रित अवधी
(d) ठेठ अवधी

Jharkhand PGT Hindi, 2018
Delhi K.V. PGT. 2015

Ans. (d) मुल्लादाऊद की भाषा ठेठ अवधी है। चन्दायन, मुल्लादाऊद कृत हिन्दी का ज्ञात प्रथम सूफी काव्य है। इसमें नायक लोरिक और नायिका चंदा की प्रेमकथा वर्णित है। 1379 ई. में रचित यह कथा दोहा-चौपाई शैली में वर्णित है।

271. रचनाकाल की दृष्टि से निम्नलिखित ग्रन्थों का सही अनुक्रम है:

(a) अनुराग बॉसुरी, मृगावती, ज्ञानदीप, इंद्रावती
(b) ज्ञानदीप, मृगावती, अनुराग बाँसुरी, इंद्रावती
(c) मृगावती, ज्ञानदीप, इंद्रावती, अनुराग बाँसुरी
(d) इंद्रावती, मृगावती, ज्ञानदीप, अनुराग बाँसुरी

UGC NET III[rd] Paper Dec. 2012

Ans. (c) ग्रन्थों का सही अनुक्रम इस प्रकार है-

ग्रंथ	प्रकाशन वर्ष	ग्रंथकार
मृगावती	1503ई.	कुतुबन
ज्ञानदीप	1619ई.	शेखनबी
इन्द्रावती	1744ई.	नूर मुहम्मद
अनुराग बाँसुरी	1764ई.	नूर मुहम्मद

272. सूफी साधना के चार पड़ावों में इनमें से कौन-सा नहीं है?

(a) शरीअत (b) तरीकत
(c) मलकत (d) मारिफत

UP TGT 2016

Ans. (c) : सूफी साधना के चार पड़ावों में 'मलकत' नहीं है। सूफी साधना के चार पड़ाव इस प्रकार हैं-

शरीअत – धर्म ग्रंथों का विधि-निषेध
तरीकत – ह्रदय की शुद्धता
हकीकत – भक्ति उपासना से सत्यबोध
मारफत – सिद्धावस्था या आत्मा-परमात्मा-मिलन

273. सूफी कवि नूर मुहम्मद की रचना का नाम है–

(a) मधुमालती (b) अनुराग बाँसुरी
(c) चन्द्रावती (d) इन्द्रावती

UP TGT 2016

Ans. (*) : दिये गये विकल्पों में इन्द्रावती (1744 ई.) तथा अनुराग बाँसुरी (1764 ई.) दोनों ही रचनाएँ नूर मोहम्मद की है। मधुमालती (1545 ई.) मंझन की रचना है।
नोट—इस प्रश्न को आयोग ने गलत (False) कामन मान लिया है।

274. 'राघव चेतन' इनमें से किस सूफी काव्य का पात्र है?
(a) मधुमालती (b) मृगावती
(c) पद्मावत (d) चंदायन

UP TGT 2016

Ans. (c) : 'राघव चेतन' दी गई रचनाओं में से जायसी की अमर कृति 'पद्मावत' का पात्र है। 'पद्मावत' में नागमती, पद्मावती और रत्नसेन की प्रेम कहानी के माध्यम परोक्ष सत्ता का प्रतीक बाँधा है। अवधी भाषा में रचित पद्मावत 57 खण्डों में विभक्त है। आचार्य शुक्ल के अनुसार पद्मावत का पूर्वाद्ध 'कल्पित' और 'उत्तरार्द्ध' ऐतिहासिक है। इसके अन्य प्रमुख पात्र हैं- रत्नसेन, पद्मावती, सुवा या हीरामन तोता, नागमती, अलाउद्दीन आदि। शेष रचनाओं के रचनाकार इस प्रकार हैं- मधुमालती- मंझन, मृगावती- कुतुबन, चंदायन- मुल्ला दाऊद।

275. सूफी काव्य परम्परा की सर्वश्रेष्ठ रचना है–
(a) मधुमालती (b) मृगावती
(c) माधवानल कामकन्दला (d) पद्मावत

UPHSC असिस्टेन्ट प्रोफेसर 2016

Ans : (d) सूफी काव्य परम्परा की सर्वश्रेष्ठ रचना पद्मावत है। पद्मावत (1540 ई.) मलिक मुहम्मद जायसी का श्रेष्ठ प्रेमाख्यानक महाकाव्य है। इस महाकाव्य में 57 खण्ड है। अन्य ग्रंथ व रचनाकार इस प्रकार हैं–

ग्रंथ	रचनाकार
मृगावती	कुतुबन
मधुमालती	मंझन
माधवानलकामकन्दला	आलम

276. जायसी कृत 'पद्मावत' के विषय में कौन सा कथन गलत है?
(a) तुलसी कृत 'मानस' के अनुकरण पर जायसी ने भी इसमें दोहा-चौपाई शैली को अपनाया है
(b) यह एक प्रेमाख्यानक काव्य है
(c) इसकी भाषा ठेठ अवधी है
(d) इसमें 'नागमती का वियोग वर्णन' 'प्रवासजन्य विरह वर्णन' के अंतर्गत आता है।

राजस्थान कॉलेज लेक्चरर भर्ती परीक्षा-2015

Ans. (a) जायसी ने तुलसीकृत मानस के अनुकरण पर दोहा-चौपाई शैली को नहीं अपनाया है। जायसीकृत पद्मावत के सम्बन्ध में कथन-
(i) यह एक प्रेमाख्यानक ग्रंथ है।
(ii) इसकी भाषा ठेठ अवधी है।
(iii) इसमें 'नागमती का वियोग वर्णन' 'प्रवासजन्य विरहवर्णन' के अन्तर्गत आता है।
(iv) पद्मावत में 57 खण्ड हैं तथा प्रिय अलंकार उत्प्रेक्षा है।
(v) पद्मावत में नागमती, पद्मावती तथा रत्नसेन की प्रेम कहानी हैं।
(vi) पद्मावत की कथा पूर्वार्द्ध कल्पित और उत्तरार्द्ध ऐतिहासिक है।
(vii) 'पद्मावत' का 'नागमती वियोग खण्ड' हिन्दी साहित्य की अनुपम निधि है।

277. निम्नलिखित सूफी कवियों को उनकी रचनाओं के साथ सुमेल कीजिए और दिये हुए कूट से सही उत्तर का चयन कीजिए:

A	उसमान	1.	अनुराग बाँसुरी
B	नूरमुहम्मद	2.	मृगावती
C	कुतुबन	3.	हंसजवाहिर
D	कासिम शाह	4.	चित्रावली

कूट:–

	A	B	C	D
(a)	4	1	2	3
(b)	4	2	3	1
(c)	1	3	2	4
(d)	2	4	1	3

GIC प्रवक्ता भर्ती परीक्षा-2017

Ans. (a) : दिये गये कूट का सही विवरण इस प्रकार है–

कविनाम	रचनाएँ
उसमान	चित्रावली
नूरमुहम्मद	अनुराग बाँसुरी
कुतुबन	मृगावती
कासिमशाह	हंस जवाहिर

278. शाह निजामुद्दीन चिश्ती की शिष्य परम्परा में हाजी-बाबा के शिष्य थे।
(a) मंझन (b) कुतुबन
(c) जायसी (d) उसमान

GIC प्रवक्ता भर्ती परीक्षा-2017

Ans. (d) : 'उसमान' शाह निजामुद्दीन चिश्ती की शिष्य परम्परा में हाजी-बाबा के शिष्य थे। ये गाजीपुर के निवासी थे। जहाँगीर के समकालीन थे। ये 5 भाई थे। इनके पिता शेख (हुसैन) थे। उसमान ने 'चित्रावली' नामक प्रबन्ध काव्य 1613 में लिखा। मंझन ने 'मधुमालती' लिखा तथा कुतुबन ने 'मृगावती' और जायसी ने 'पद्मावत' नामक महाकाव्य लिखा।

279. निम्नलिखित में से कौन सा कथन सूफी कवियों के संबंध में सत्य नहीं है?
(a) सूफी कवि अमर प्रेम के उपासक और गायक थे।
(b) ये सभी कवि राजाओं के दरबारी कवि थे।
(c) सभी सूफी कवियों ने मसनवी शैली को अपनाया।
(d) इन्होंने प्रबंध काव्यों की रचना की।

GIC प्रवक्ता भर्ती परीक्षा-2017

Ans. (b) : 'ये सभी कवि राजाओं के दरबारी कवि थे।' यह कथन सूफी कवियों के संबंध में सत्य नहीं है। सूफी कवि अमर प्रेम के उपासक और गायक थे। सभी सूफी कवियों ने मसनवी शैली को अपनाया। इन्होंने प्रबंध काव्यों की रचना की। ये सभी कथन सूफी कवियों के संबंध में सत्य हैं।

280. 'अनुराग बाँसुरी' के रचनाकार हैं
(a) मुल्ला दाऊद (b) कासिम शाह
(c) शेख रहीम (d) नूरमुहम्मद

UKPSC Lecturer 2020
GIC प्रवक्ता भर्ती परीक्षा-2017
UPPSC Degree College 2013
UGC Net December 2005 (Paper-II)

Ans. (d) : 'अनुराग बाँसुरी' के रचनाकार नूरमुहम्मद हैं। इस रचना में 5-5 अर्द्धलियों पर बरवै का क्रम है। इस ग्रन्थ से यह पता चलता है कि 18वीं सदी तक आते-आते मुसलमान हिन्दी से किनारा करने लगे और फारसी की तरफ झुक गये। जैसा की नूरमुहम्मद अनुराग बाँसुरी में लिखते हैं–

" जानत है वह सिरजन हारा, जो किछु है मन मरम हमारा।
हिन्दु मग पर पाँव न राखेउँ, का जौ बहुतै हिन्दी भाखेउ।।

281. 'पद्मावत' की काव्यगत विशेषताओं की दृष्टि से कौन सा विकल्प असंगत है?

(a) नख-शिख वर्णन, लोकसामान्य भावभूमि, प्रतीकात्मकता
(b) बारहमासा, इतिहास और कल्पना का योग, मार्मिकता
(c) नगर-वर्णन, लोकोत्तर भावना, सर्गों में विभाजन
(d) विरह-वर्णन मानवीय सहृदयता, नारी-विवशता
(e) मसनवी शैली, शृंगार रस, प्रेमगाथा-परंपरा की प्रौढ़ता

Chattisgarh Asst. Prof. 2014

Ans. (c) : 'पद्मावत' की काव्यगत विशेषताओं की दृष्टि में नगर-वर्णन, लोकोत्तर भावना, सर्गों में विभाजन असंगत है। जायसी कृत पद्मावत में है, इसमें कुल 57 खंड हैं और जायसी का प्रिय अलंकार उत्प्रेक्षा है। पद्मावत का 'नागमती वियोग खण्ड' हिन्दी साहित्य की अनुपम निधि है। पद्मावत के प्रमुख पात्र-रत्नसेन (मन/आत्मा), सिंघल (हृदय), पद्मावती (सात्विक बुद्धि) सुवा या हीरामन (गुरु), नागमती (दुनिया धंधा), राघव चेतन (शैतान), अलाउद्दीन (माया) हैं। जायसी के प्रमुख ग्रंथ - अखरावट, आखिरी कलाम, चित्ररेखा, कहरानामा, मसलानामा, कन्हावत हैं।

282. जायसी ने 'पद्मावत' में 'बारहमासा' पद्धति का उपयोग .... के लिए किया है।

(a) नख-शिख वर्णन (b) विरह- वर्णन
(c) आध्यात्मिक साधना (d) शौर्य-चित्रण
(e) मसनवी शैली

Chattisgarh Asst. Prof. 2014

Ans. (b) : जायसी ने 'पद्मावत' में 'बारहमासा' पद्धति का उपयोग विरह- वर्णन के लिए किया है। जायसी कृत 'पद्मावत' में नागमती, पद्मावती और रत्नसेन की प्रेम कहानी का वर्णन है। बारहमासा मूलतः विरह प्रधान लोकसंगीत है। वह पद्य या गीत जिसमें बारह महीनों की प्राकृतिक विशेषताओं का वर्णन किसी विरही या विरहनी के मुँह से कराया गया हो। आचार्य शुक्ल के अनुसार पद्मावत की कथा का पूर्वार्द्ध कल्पित और उत्तरार्द्ध ऐतिहासिक है। पद्मावत का 'नागमती वियोगखंड' हिन्दी साहित्य की अनुपम निधि है।

283. सूफी प्रेमाख्यानक काव्य के संदर्भ में इनमें से कौन सा कथन असत्य है?

(a) आचार्य शुक्ल के अनुसार प्रेमाख्यानक काव्य में नायिका की अपेक्षा नायक के विरह को अधिक महत्त्व दिया गया है।
(b) सूफी काव्य अधिकांशतः मुक्तक रूप में लिखे गये थे।
(c) सूफी काव्य में कथानक रूढ़ियों का प्रयोग मिलता है।
(d) सूफी काव्यों में ऐतिहासिक-अनैतिहासिक पात्रों की गाथाओं के साथ-साथ रचयिताओं की कल्पना–शक्ति का योग भी न्यूनाधिक मात्रा में रहा है।

राजस्थान स्कूल शिक्षा प्राध्यापक परीक्षा–2018

Ans. (b) : सूफी प्रेमाख्यानक काव्य के संदर्भ में 'सूफी काव्य अधिकांशतः मुक्तक रूप में लिखे गये थे।' यह कथन असत्य है। आचार्य शुक्ल के अनुसार प्रेमाख्यानक काव्य में नायिका की अपेक्षा नायक के विरह को अधिक महत्त्व दिया गया है। सूफी काव्य में रूढ़ियों का प्रयोग मिलता है। सूफी काव्यों में ऐतिहासिक अनैतिहासिक पात्रों की गाथाओं के साथ–साथ रचयिताओं की कल्पना शक्ति का योग भी न्यूनाधिक मात्रा में रहा है। सूफी प्रेमाख्यानक काव्य के संदर्भ में ये सभी कथन सत्य हैं।

284. निम्नलिखित में से कौन-सा विकल्प, रचना और रचनाकार की दृष्टि से गलत है?

(a) मृगावती – कुतुबन
(b) पद्मावत – मलिक मुहम्मद जायसी
(c) मधुमालती – मंझन
(d) आखिरी कलाम – मुल्लादाऊद

राजस्थान स्कूल शिक्षा प्राध्यापक परीक्षा–2018

Ans. (d) : रचना और रचनाकार की दृष्टि से आखिरी कलाम – मुल्लादाऊद गलत है। रचना और रचनाकर के सही विवरण इस प्रकार हैं–

रचना		रचनाकार
आखिरी कलाम	–	मलिक मुहम्मद जायसी
मृगावती	–	कुतुबन
पद्मावत	–	मलिक मुहम्मद जायसी
मधुमालती	–	मंझन
चंदायन	–	मुल्लादाऊद

285. 'चन्दायन' की रचना कब हुई थी?

(a) 1379 (b) 1503
(c) 1540 (d) 1370

हरियाणा असिस्टेन्ट प्रोफेसर भर्ती परीक्षा-2017

Ans. (a) : 'चन्दायन' की रचना 1379 ई. में हुई थी। चन्दायन मुल्लादाऊद कृत प्रथम सूफी प्रेम काव्य है। इसमें नायक लोर/लोरिक तथा नायिका चन्दा की प्रेमकथा का वर्णन है।

286. 'मोहि का हँसेसि कि कोहरहि?' इसका क्या तात्पर्य है?

(a) कुम्हार मुझे देखकर हँसता है
(b) मेरे हँसने से क्रोधित हो गए
(c) मुझ पर हँसते हो या उस कुम्हार पर
(d) मुझे क्रोध दिलाकर हँसते हो

DSSSB PGT-24.07.2018 (2:00 pm-5:00 pm)

Ans. (c) : 'मोहि का हँसेसि कि कोहरहि' इसका तात्पर्य है कि मुझ पर हँसते हो या उस कुम्हार पर। एक बार मलिक मुहम्मद जायसी की प्रसिद्धि सुनकर शेरशाह सूरी ने उन्हें अपने दरबार में बुलवाया और उपस्थित होने पर जायसी के रंग एवं कुरुपता को देखकर शेरशाह सूरी हंस दिए तो इसी उक्ति के साथ प्रश्न किया। इस पर शेरशाह सूरी को अपनी भूल का एहसास हुआ। ध्यातव्य है कि जायसी रंग के काले, चेहरे पर चेचक के दाग थे, साथ ही साथ वे एक आँख से काने थे।

287. 'पद्मावत' की रचना शैली क्या है?

(a) मुक्त गीतात्मक शैली
(b) संस्कृत प्रबंध काव्यों की सर्गबद्ध शैली
(c) लोक गीतों की शैली
(d) फारसी की मसनवी शैली

DSSSB PGT-24.07.2018 (2:00 pm-5:00 pm)

Ans. (d) : मलिक मुहम्मद जायसी कृत 'पद्मावत' फारसी की मसनवी शैली में है। इस शैली के अंतर्गत प्रारम्भ में अल्लाह हजरत मुहम्मद, उनके गुरु और उस वक्त के बादशाह की वंदना की जाती है।

288. जायसी की काव्यभाषा थी:
(a) अवधी (b) खड़ी बोली
(c) ब्रज (d) राजस्थानी
DSSSB PGT-23.07.2018

Ans. (a) : मलिक मुहम्मद जायसी की काव्यभाषा अवधी थी। जायसी निर्गुण भक्ति धारा के प्रेमाश्रयी शाखा के प्रमुख कवि थे। ये प्रसिद्ध सूफी फकीर शेख मोहिदी (मुहीउद्दीन) के शिष्य थे और शेरशाह के समकालीन कवि थे तथा अमेठी के निकट जायस नगर में रहते थे। जायसी द्वारा रचित ग्रंथ इस प्रकार हैं- (1) पद्मावत (2) अखरावट (3) आखिरी कलाम (4) चित्ररेखा (5) कहरानामा (6) मसलानामा (7) कन्हावत।

289. सूफ़ी प्रेमाख्यान परम्परा का प्रथम काव्य ग्रंथ है?
(a) चंदायन (b) मुधमालती
(c) अनुराग बाँसुरी (d) मृगावती
DSSSB PGT-25.07.2018 (9:00 am-12:00 pm)

Ans. (a) : सूफी प्रेमाख्यान परम्परा का प्रथम काव्य ग्रंथ मुल्ला दाउद का 'चंदायन' है। मधुमालती 'मंझन' की रचना है। 'अनुराग बाँसुरी' नूरमुहम्मद की रचना है। 'मृगावती' काव्य ग्रंथ के रचयिता कुतुबन को आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने सूफी शाखा का प्रथम कवि एवं प्रस्तोता माना है।

290. निम्नलिखित ग्रंथों को उनके रचनाकारों के साथ सुमेलित करते हुए सही विकल्प चुनिए–

सूची–I	सूची–II
(1) मृगावती	(i) ईश्वरदास
(2) सत्यवती कथा	(ii) मुल्ला दाऊद
(3) चन्दायन	(iii) असाइत
(4) हंसावली	(iv) गणपति
	(v) कुतुबन

(a) 1-v, 2- ii, 3-iii, 4-vi
(b) 1-iv, 2-i, 3-v, 4-ii
(c) 1-v, 2-i, 3-ii, 4-iii
(d) 1-ii, 2-i, 3-iv, 4-v
राजस्थान कॉलेज लेक्चरर भर्ती परीक्षा (पेपर-II) 2014

Ans. (c) : रचना-रचनाकारों का सही सुमेल इस प्रकार है-

रचना	रचनाकार
मृगावती	कुतुबन
सत्यवती कथा	ईश्वरदास
चन्दायन	मुल्ला दाऊद
हंसावली	असाइत
माधवानल कामकंदला	गणपति

291. "नागमती वियोग खण्ड" से सम्बन्धित कौन–सा कथन सही नहीं है?
(a) जायसी के "बारहमासा के रूप में" नागमती के वियोग का मार्मिक चित्रण किया है।
(b) यह वियोग प्रवासज़न्य विरह के अंतर्गत आता है।
(c) यह वियोग चैत्र मास से प्रारम्भ होता है।
(d) इस खण्ड में पक्षियों के माध्यम से सन्देश भेजने का उल्लेख भी जायसी ने किया है।
राजस्थान कॉलेज लेक्चरर भर्ती परीक्षा (पेपर-I) 2014

Ans. (c) : 'यह वियोग चैत्र मास से प्रारम्भ होता है' यह नागमती वियोग खण्ड" से सम्बन्धित कथन सही नहीं है। नागमती वियोग खण्ड 'पद्मावत' में संग्रहीत है। 'पद्मावत' के लेखक मलिक मुहम्मद जायसी हैं। जायसी की अन्य कृतियाँ इस प्रकार हैं– अखरावट, आखिरी कलाम, चित्ररेखा, कहरानामा, मसलानामा, कन्हावत आदि। अन्य विकल्प सही हैं जो इस प्रकार हैं–
(1) जायसी ने "बारहमासा के रूप में" नागमती के वियोग का मार्मिक चित्रण किया है।
(2) नागमती वियोग खण्ड में बारहमासा का प्रारम्भ आषाढ़ महीने से होता है।
(3) यह वियोग प्रवासजन्य विरह के अंतर्गत आता है।
(4) इस खण्ड में पक्षियों के माध्यम से संदेश भेजने का उल्लेख भी जायसी ने किया है।

292. निम्नांकित कवियों एवं उनके समक्ष अंकित पंक्तियों में से कौन–सा युग्म असंगत है?
(a) जायसी– "चढ़ा आसाढ़, गगन घन गाजा।"
(b) सूरदास– "भज मन! चरण – कँवल अविनासी।"
(c) कबीर– "अषड़ियाँ झाई पड़ी, पंथ निहारि–निहारि।"
(d) बिहारी– "अजौं तरयौना ही रह्यो, श्रुति सेवत इक रंग।"
राजस्थान कॉलेज लेक्चरर भर्ती परीक्षा (पेपर-I) 2014

Ans. (b) : सूरदास– "भज मन! चरण – कँवल अविनासी।" युग्म असंगत है। यह पंक्ति मीराबाई की है। अन्य विकल्प संगत है।

293. "पिउ– बियोग अस बाउर जीऊ" पंक्ति में "बाउर" शब्द का अर्थ है–
(a) विधवा (b) ग्रामीण स्त्री
(c) पगली (d) रूग्ण स्त्री
राजस्थान कॉलेज लेक्चरर भर्ती परीक्षा (पेपर-I) 2014

Ans. (c) : 'पिउ– बियोग अस बाउर जीऊ' पंक्ति में 'बाउर' शब्द का अर्थ 'पगली' है। अन्य विकल्प असंगत है।

294. निम्नलिखित में कौन सी रचना मलिक मुहम्मद जायसी की नहीं है?
(a) आखरी कलाम (b) अखरावट
(c) चित्र रेखा (d) मधुमालती
DSSSB PGT-24.07.2018 (9:00 am-12:00 pm)
DSSSB PGT 24.07.2018, Shift III[rd]
UGC Net June 2014 (Paper-III)
UP PGT 2009

Ans. (d) : दी गयी रचनाओं में 'मधुमालती' मलिक मुहम्मद जायसी की रचना नहीं है बल्कि यह सूफी कवि मंझन की काव्यकृति है। इसका समय 1545 ई. है। शेष रचनाएँ आखरी कलाम, अखरावट, चित्ररेखा मलिक मुहम्मद जायसी की रचनाएँ हैं। 57 खण्ड में विभक्त 'पद्मावत' जायसी की प्रसिद्धि का कारण है। जायसी प्रेमाश्रयी निर्गुण भक्ति काव्य धारा के प्रतिनिधि कवि हैं।

295. 'कुतुबन' किस बादशाह के आश्रित थे?
(a) अहमद शाह (b) हुसैन शाह
(c) कुतुब शाह (d) शेरशाह
NVS PGT 17.09.2019

Ans. (b) : 'कुतुबन' हुसैन शाह के आश्रित थे। कुतुबन के गुरु का नाम 'शेख बुरहान' था। कुतुबन ने 'मृगावती' की रचना की है। जायसी शेरशाह के आश्रित कवि थे। जायसी के गुरु का नाम शेख मोहिदी था। जायसी की रचनाएँ– पद्मावत, अखरावट, आखिरी कलाम, चित्ररेखा, कहरानामा, मसलानामा, कन्हावत।

296. 'पद्मावत' में गुरू का प्रतीक कौन है?
(a) पद्मावती (b) सुआ
(c) रत्नसेन (d) नागमती
NVS TGT 18.09.2019

Ans. (b) : 'पद्मावत' में गुरू का प्रतीक 'सुआ' है। पद्मावत के रचनाकार मलिक मुहम्मद जायसी हैं। पद्मावत में नागमती, पद्मावती और रत्नसेन की प्रेम कहानी है। पद्मावत में प्रयुक्त अन्य प्रतीकार्थ इस प्रकार हैं-

पद्मावत	**प्रतिकार्थ**
रत्नसेन	मन (आत्मा)
सिंहल	हृदय
पद्मावती	श्रद्धा या सात्विक बुद्धि (परमात्मा)
नागमती	दुनिया धंधा या सांसारिक बुद्धि
राघव चेतन	शैतान
अलाउद्दीन	माया

297. निम्न में कौन सा सुमेलित नहीं है?
(a) चित्रावली - उसमान
(b) मधुमालती - मंझन
(c) मृगावती - कुतुबन
(d) हंस जवाहिर - नूर मुहम्मद

NVS TGT 18.09.2019

Ans. (d) : हंस जवाहिर - नूर मुहम्मद रचना एवं रचनाकार की दृष्टि से सुमेलित नहीं है। 'हंस जवाहिर' अवधी भाषा एवं दोहा-चौपाई पद्धति में रचित कासिम शाह की रचना है। नूर मुहम्मद दिल्ली के बादशाह मुहम्मदशाह के समकालीन थे। इनकी दो रचनाएँ 'इंद्रावती' एवं 'अनुराग बाँसुरी' हैं। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने नूर मुहम्मद कृत 'इंद्रावती' को सूफी आख्यान काव्यों की अखण्डित परम्परा की समाप्ति माना है।

298. इनमें से जायसी की रचना नहीं है–
(a) पद्मावत् (b) अखरावट
(c) इंद्रावती (d) आखिरी कलाम

UP PGT 2016

Ans : (c) 'इन्द्रावती' जायसी की रचना नहीं है बल्कि 'इन्द्रावती' तथा 'अनुराग बाँसुरी' दोनों नूर मुहम्मद की रचनाएँ हैं। जबकि पद्मावत, अखरावट, आखिरी कलाम जायसी की रचनाएँ हैं।

299. पद्मावत् के रतनसेन की पत्नी का नाम क्या है–
(a) कमलावती (b) नागमती
(c) वेदवती (d) मृगावती

UP PGT 2016

Ans : (b) पद्मावत महाकाव्य के नायक रतनसेन की पत्नी का नाम नागमती है, जबकि उसकी प्रेयसी (बाद में दूसरी पत्नी बनी) पद्मिनी है।

300. निम्नलिखित में से कौनसी पंक्ति पद्मावत की नहीं है–
(a) तन चितउर मन राजा कीन्हा, हिय सिंघल बुधि पद्मिनि चीन्हा।
(b) भूलि चकोर दीठि मुख लावा, मेघ घटा महँ चंद देखावा।।
(c) मधुकर हँसि समुझाय, सौह दे बूझति साँझ, न हाँसी।।
(d) ओहि मिलान जो पहुँचे कोई। तब हम कहव पुरुष भल होई।।

UP PGT 2016

Ans : (c) 'मधुकर हँसि समुझाय, सौह दे बूझति साँझ, न हाँसी।।' पंक्ति पद्मावत की नहीं है बल्कि सूरदास द्वारा रचित भ्रमरगीत (सूरसागर) की है, जबकि अन्य तीनों पंक्तियाँ जायसी कृत 'पद्मावत' महाकाव्य की हैं।

301. "छार उठाय लीन्ह एक मूँठी। दीन्ह उड़ाइ पिरथिमी झूठी।" यह पंक्ति किस ग्रंथ से ली गई है–
(a) पद्मावत (b) चन्दायन
(c) आखिरी कलाम (d) रामचरितमानस

LT Hindi 2018

Ans : (a) "छार उठाय लीन्ह एक मूँठी।
दीन्ह उड़ाइ पिरथिमी झूठी।।"
यह पंक्ति जायसी कृत 'पद्मावत' महाकाव्य से ली गई है। अन्य रचनाओं के विवरण इस प्रकार हैं–

रचना	**रचनाकार**
चन्दायन	मुल्ला दाऊद
आखिरी कलाम	जायसी
रामचरितमानस	तुलसीदास

302. आचार्य रामचंद्र शुक्ल, प्रेमाख्यान परम्परा की पहली रचना किसे मानते हैं–
(a) सत्यवती कथा (b) चंदायन
(c) मृगावती (d) हंसावली

LT Hindi 2018

Ans : (c) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने प्रेमाख्यानक परम्परा की पहली रचना कुतुबन कृत 'मृगावती' (1501 ई.) को माना है। जबकि राम कुमार वर्मा ने मुल्ला दाऊद कृत 'चन्दायन' को प्रथम प्रेमाख्यानक ग्रंथ माना है। गणपति चन्द्र गुप्त असाइत कृत 'हंसावली' को और हजारी प्रसाद द्विवेदी ईश्वरदास कृत 'सत्यवती कथा' को प्रेमाख्यानक काव्य परम्परा की पहली रचना मानते हैं।

303. निम्नलिखित में से कासिमशाह की रचना है:
(a) हंस जवाहिर (b) चंदायन
(c) सत्यवती कथा (d) मृगावती

Himanchal Pradesh PGT-2016

Ans. (a) : 'हंस जवाहिर' कासिमशाह की, 'चंदायन' मुल्ला दाउद की, 'सत्यवती कथा' ईश्वरदास की और 'मृगावती' कुतुबन की रचना है। ये सभी कवि भक्तिकाल के सूफी काव्यधारा के कवि हैं। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने कुतुबन को प्रेममार्गी शाखा का प्रथम कवि माना है।

304. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन 'पद्मावत' के बारे में सही नहीं है–
(a) इसमें प्रेम के लोकधर्मी स्वरूप का चित्रण हुआ है।
(b) इसमें दोहा चौपाई की शैली अपनायी गयी है।
(c) यह भारतीय लोक कथा पर आधारित प्रबंधकाव्य है।
(d) पद्मावत की काव्य शैली प्रौढ़ और गंभीर नहीं है।

KVS PGT 2018

Ans : (d) 'पद्मावत' की काव्य शैली प्रौढ़ और गम्भीर नहीं है। यह कथन पद्मावत के बारे में सही नहीं है। शेष कथन "इसमें प्रेम के लोकधर्मी स्वरूप का चित्रण हुआ है। इसमें दोहा-चौपाई की शैली अपनाई गई है। यह भारतीय लोक कथा पर आधारित प्रबंधकाव्य है।" सही है।

305. भक्तिकालीन किस काव्यधारा में 'परमात्मा' को 'स्त्री' तथा 'आत्मा' को 'पुरुष' रूप में चित्रित किया है–
(a) रामभक्ति काव्यधारा (b) सूफी काव्यधारा
(c) कृष्णभक्ति काव्यधारा (d) ज्ञानाश्रयी काव्यधारा

म.प्र. उच्च माध्यमिक शिक्षक भर्ती परीक्षा 2018

Ans : (b) भक्तिकालीन 'सूफी काव्यधारा' में परमात्मा को 'स्त्री' तथा 'आत्मा' को 'पुरुष' रूप में चित्रित किया गया है। सूफी कवियों की प्रेम पद्धति में 'इश्क मजीजी' (लौकिक प्रेम) से 'इश्क हकीकी' (अलौकिक प्रेम) तक पहुँचने की कोशिश है। सूफी सिद्धान्त में 'इश्क हकीकी' तक पहुंचने के लिए साधक को निम्नलिखित चरण और अवस्थाओ से गुजरना पड़ता है–

मनुष्य के चार विभाग	साधक की चार अवस्था
नफ्स (विषय भोगवृत्ति इन्द्रिय)	- शरीअत (धर्मग्रन्थों का विधि निषेध)
रूह (आत्मा और चित्त)	- तरीकत (हृदय की शुद्धता)
कल्ब (हृदय)	- हकीकत (भक्ति उपासना से सत्यबोध)
अक्ल (बुद्धि)	- मारीफत (सिद्धावस्था या आत्मा-परमात्मा मिलन)

306. 'हिन्दू मग पर पाँव न राख्यौ।
का बहुतें जो हिन्दी भाख्यौ॥'
ये काव्य-पंक्तियाँ किस बोली में है?

(a) ब्रज (b) भोजपुरी
(c) अवधी (d) बुंदेली

UPTGT 2016
UGC NET III^rd Paper June. 2015

Ans. (c) "हिन्दू मग पर पाँव ....हिन्दी भाख्यौ"।
यह 'अवधी' भाषा की पंक्ति है, इसके लेखक नूर मुहम्मद हैं। यह पंक्ति 'अनुराग बांसुरी' से उल्लिखित है। इस रचना में हिन्दी भाषा के प्रति मुसलमानों का भाव प्रकट होता है। जब नूरमुहम्मद पर हिन्दी का समर्थन करने का आरोप लगा तो उन्होंने इस पंक्ति के द्वारा अपनी सफाई दी थी।

307. प्रेममार्गी कवि नहीं हैं –

(a) सूरदास (b) मलिक मुहम्मद जायसी
(c) मुल्ला दाउद (d) मंझन

UP TGT 2010

Ans. (a) प्रश्नगत विकल्प में सूरदास प्रेममार्गी कवि नहीं हैं। सूरदास सगुणभक्ति काव्यधारा के कवि हैं। इनकी रचनाएँ– सूरसागर, साहित्य-लहरी एवं सूर सारावली हैं, जबकि जायसी, मुल्ला दाऊद एवं मंझन प्रेममार्गी कवि हैं।

308. 'चन्दायन' के रचयिता हैं-

(a) मलिक मुहम्मद जायसी (b) कुतुबन
(c) मंझन (d) मुल्ला दाऊद

UPPSC Degree College Exam. 2008
UGC net 2004 (Paper-II)

Ans. (d) 'चन्दायन' के रचयिता मुल्लादाउद है। डॉ. माता प्रसाद गुप्त ने 'चन्दायन' को 'लोर कहा' या लोर कथा के नाम से अभिहित किया है। 1379 ई. में रचित चन्दायन की भाषा अवधी है। इसमें चौपाई, दोहा, छन्द प्रयुक्त है।

309. 'पद्मावत' है –

(a) एक त्रासदी (b) मुक्तक काव्य
(c) गेय काव्य (d) आत्म वक्तव्य

UP TGT 2004

Ans. (a) मलिक मुहम्मद जायसी द्वारा रचित 'पद्मावत' सूफी प्रेमाख्यानक काव्यधारा की सर्वश्रेष्ठ कृति है। अवधी भाषा में लिखित 'पद्मावत' महाकाव्य एक त्रासदी है। आखिरी कलाम, अखरावट, मसलानामा, चित्ररेखा जायसी की रचनाएँ हैं।

310. 'कहरानामा' किसकी रचना है–

(a) मुल्ला दाउद (b) सूरजदास
(c) कुतुबन (d) जायसी

UP TGT 2003

Ans. (d) 'कहरानामा' जायसी की रचना है। इनकी अन्य रचनाएँ- पद्मावत, अखरावट, आखिरी कलाम, चित्ररेखा तथा मसलानामा। मध्यकालीन प्रेमाख्यानक सूफी काव्य परम्परा के अग्रणी कवि मलिक मुहम्मद जायसी हैं। 'चन्दायन' (लोरकहा) मुल्ला दाऊद की तथा 'मृगावती' कुतुबन की प्रसिद्ध रचना है।

311. 'चित्रावली' किसकी रचना है–

(a) उसमान (b) शेखनवी
(c) कासिमशाह (d) नूर मुहम्मद

DSSSB PGT Hindi (Male) 18.07.2021 Shift-II
UP TGT 2003

Ans. (a) 'चित्रावली' सूफी प्रेमाख्यानक काव्य परम्परा के कवि उसमान की रचना है। अवधी में लिखी गई 'चित्रावली' का नायक सुजान तथा नायिका चित्रावली है। शेखनबी द्वारा अवधी भाषा में रचित 'ज्ञानदीप' नामक प्रेमकाव्य के नायक ज्ञानदीप तथा नायिका देवयानी है। कासिमशाह की रचना 'हंस जवाहिर' के नायक राजा हंस तथा नायिका रानी जवाहिर हैं। नूर मुहम्मद की रचनाएँ 'अनुराग बांसुरी' तथा 'इन्द्रावती' हैं।

312. पद्मावत की विधा है –

(a) प्रबन्ध काव्य (b) खण्ड काव्य
(c) मुक्तक काव्य (d) सभी

UP TGT 2002

Ans. (a) भक्तिकाल की प्रेमाख्यानक काव्य धारा के अग्रणी कवि 'मलिक मुहम्मद जायसी' द्वारा रचित 'पद्मावत' **प्रबन्ध काव्य** है। इसमें चित्तौड़ के राजा रत्नसेन एवं सिंघल की राजकुमारी पद्मावती के प्रेम, विवाह एवं विवाहेत्तर जीवन का मार्मिक चित्रण है। 'पद्मावत' महाकाव्य के अतिरिक्त जायसी ने अखरावट, आखिरी कलाम, चित्ररेखा, कहरानामा तथा मसलानामा नामक काव्य ग्रंथों की रचना की।

313. निम्नलिखित में से 'ज्ञानदीप' का रचनाकार कौन है?

(a) उसमान (b) कासिमशाह
(c) नूर मुहम्मद (d) शेख नबी

UGC NET III^rd Paper Dec. 2015
UP TGT 2016

Ans. (d) रचना एवं रचनाकार का विवरण-

रचना	रचनाकाल	रचनाकार
ज्ञानदीप	1619 ई.	शेखनवी
चित्रावली	1613 ई.	उसमान
हंस जवाहिर	1731 ई.	कासिम शाह
अनुराग बाँसुरी,	1764 ई.	नूर मुहम्मद
इन्द्रावती	1744 ई.	नूर मुहम्मद

नोट- ये सभी सूफी काव्य परम्परा की प्रमुख रचनाएँ हैं। इन सभी रचनाओं में अवधी भाषा का प्रयोग तथा प्रयुक्त छंद दोहा-चौपाई है।

314. 'मधुमालती' के रचनाकार हैं–

(a) मंझन (b) कुतुबन
(c) जायसी (d) मुल्ला दाऊद

UP PSC GDC 2021
DSSSB PGT Hindi (Male) 18.07.2021 Shift-I
MP Asst. Prof. Hindi 2017
UP TGT 2002, UP PGT 2011,

Ans. (a) 'मधुमालती' हिन्दी सूफी प्रेमाख्यान काव्य परम्परा के कवि 'मंझन' की रचना है। इसमें नायक-नायिका के प्रथम दर्शनजन्य प्रेम के साथ-साथ पूर्व जन्म के प्रणय संस्कारों की महत्ता दिखाई गई है। मधुमालती में मनोहर और मधुमालती की प्रेमकथा के समानांतर प्रेमा और ताराचन्द की भी प्रेमकथा चलती है। प्रेमाख्यान काव्य परम्परा के सर्वप्रमुख कवि मलिक मुहम्मद जायसी ने पद्मावत, अखरावट, आखिरी कलाम, चित्रेखा, कहरानामा, मसलानामा आदि काव्य ग्रंथों की रचना की। मुल्ला दाउद ने 'चन्दायन' (मूल नाम 'लोरकहा' या 'लोरकथा') नामक काव्य ग्रंथ की तथा कुतुबन ने 'मृगावती' नामक काव्य की रचना की।

315. 'अखरावट' काव्य कृति के रचयिता कौन हैं?

(a) मलिक मुहम्मद जायसी (b) कुतुबन
(c) मंझन (d) उसमान

UP TGT 2009

Ans. (a) 'अखरावट' काव्य कृति के रचयिता मलिक मुहम्मद जायसी हैं। भक्ति काव्यधारा की प्रेमाश्रयी शाखा के प्रतिनिधि कवि मलिक मुहम्मद जायसी ने ठेठ अवधी में निम्नलिखित रचनाएँ की हैं। जिसमें - अखरावट, पद्मावत, आखिरी कलाम प्रसिद्ध हैं, जबकि कुतुबन ने 'मृगावती' लिखी है। मंझन की 'मधुमालती' और उसमान ने 'चित्रावली' नामक सूफी काव्यकृति लिखी है।

316. भक्तिकालीन सूफी काव्यधारा की विशेषताओं के संदर्भ में निम्नलिखित में से एक विशेषता गलत है। उस गलत विशेषता को चुनिए –

(a) इस काव्यधारा के सभी कवि मुसलमान तथा विदेशी थे।
(b) इस काव्यधारा के सभी कवियों ने हिंदू प्रेमी-प्रेमिकाओं की प्रेम-कथा का काव्यात्मक चित्रण प्रस्तुत किया।
(c) इस काव्यधारा के कवियों ने अवधी एवं राजस्थानी में रचनाएँ की।
(d) इस काव्यधारा के कवियों ने सिर्फ प्रबंध काव्य ही लिखे।

UP TGT 2001

Ans. (a) भक्तिकालीन सूफी काव्यधारा के संदर्भ में यह भ्रांति थी कि इस काव्यधारा से सम्बन्धित सभी कवि मुसलमान व विदेशी थे। जब इस परम्परा के केवल छह-सात काव्य ग्रंथ उपलब्ध थे जिनके रचनाकार मुसलमान थे। किन्तु अब सूफी काव्य परम्परा के पचास से अधिक कवियों के अस्तित्व का पता चला है जिनमें अधिकांशतः हिन्दू थे। अतः सूफी कवियों ने हिन्दी प्रेमी-प्रेमिकाओं की पौराणिक प्रेमकथाओं तथा कथा साहित्य से प्राप्त कथानक रूढ़ियों का काव्यात्मक चित्रण किया है। इस काव्यधारा के कवियों ने अवधी के अतिरिक्त ब्रजभाषा एवं राजस्थानी में भी रचनाएं की हैं। सूफी काव्यधारा के कवियों ने सिर्फ प्रबंध काव्य ही लिखे हैं।

317. निम्नलिखित में से किस कवि ने सिर्फ अवधी भाषा में ही रचना की?

(a) कबीर (b) सूरदास
(c) तुलसी (d) जायसी

UP TGT 2001

Ans. (d) भक्तिकाल के सूफी प्रेमाख्यानक काव्य परम्परा के सर्वप्रमुख कवि मलिक मुहम्मद जायसी ने अपनी रचनाओं में सिर्फ अवधी का प्रयोग किया। अवधी भाषा के प्रयोग की दृष्टि से जायसी 'रामचरितमानस' के प्रणेता गोस्वामी तुलसीदास के पथ प्रदर्शक थे। पद्मावत, अखरावट, आखिरी कलाम, कहरानामा, चित्रेखा, मसलानामा और कन्हावत जायसी रचित प्रमुख कृतियाँ हैं।

318. 'रौजतुल हकायक' के रचयिता हैं :

(a) शेख नबी (b) कासिम शाह
(c) नूर मुहम्मद (d) उसमान

UGC NET IInd Paper June. 2016

Ans. (c)

काव्य ग्रंथ	प्रकाशन वर्ष	रचयिता
रौजतुल हकायक	-	नूर मुहम्मद
इंद्रावती	1744 ई.	नूर मुहम्मद
अनुराग बाँसुरी	1764 ई.	नूर मुहम्मद
चित्रावली	1613 ई.	उसमान
ज्ञानदीप	1619 ई.	शेखनबी
हंस जवाहिर	1731 ई.	कासिम शाह

नोट- नूरमुहम्मद की '[illegible]ज़तुल हकायक' नामक ग्रंथ फारसी भाषा में लिखा है तथा अन्य सभी रचनाएँ अवधी भाषा में रचित प्रेमाख्यानक काव्य ग्रंथ है।

319. हिन्दी भाषा में रचना करने पर किस सूफी कवि को मुसलमानों का उपालंभ सुनने को मिला था?

(a) जायसी (b) उसमान
(c) शेख नबी (d) नूरमुहम्मद

UP PGT 2013

Ans. (d) हिन्दी भाषा में रचना करने पर सूफी कवि नूरमुहम्मद को मुसलमानों का उपालम्भ सुनने को मिला था। इन्द्रावती, अनुराग बाँसुरी इनके द्वारा रचित ग्रंथ हैं। इनका एक और ग्रंथ फारसी भाषा में रचित 'रौजतुल हकायक' भी मिलता है।

320. सुमेलित कीजिए:

रचना	रचनाकाल
(a) चंदायन	(a) 1379 ई.
(b) मृगावती.	(b) 1503 ई.
(c) मधुमालती	(c) 1545 ई.
(d) पद्मावत	(d) 1540 ई.

कूट :

	A	B	C	D
(a)	4	1	2	3
(b)	1	2	3	4
(c)	2	1	3	4
(d)	1	3	2	4

Higher Edu. Exam. 2015

Ans. (b) निम्नलिखित रचना तथा रचनाकार का सही सुमेलन है–

रचना		रचनाकाल	रचनाकार
चंदायन	–	1379 ई.	मुल्ला दाउद
मृगावती	–	1503 ई.	कुतुबन
मधुमालती	–	1545 ई.	मंझन
पद्मावत	–	1540 ई.	जायसी

नोट-आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसार 'मृगावती' का रचनाकाल 1501 ई. है।

321. निम्नलिखित कवियों में से किसने प्रेमाख्यानक काव्य की रचना नहीं की है?

(a) मुल्ला दाऊद (b) मलिक मुहम्मद जायसी
(c) उसमान (d) अब्दुल कादिर

UPPSC Degree College Exam. 2013

Ans. (d) कवि अब्दुल कादिर ने प्रेमाख्यानक काव्य की रचना नहीं की है। जबकि मुल्लादाउद ने 'चन्दायन' की तथा जायसी ने 'पदमावत' प्रेमाख्यान की रचना एवं उसमान ने 'चित्रावली' की रचना की है।

322. निम्नलिखित काव्यांश में विरह की किस दशा का वर्णन है?
यह तन जारौं छार कै, कहौं कि 'पवन! उड़ाव'!
मकु तेहि मारग उड़ि परै, कंत धरै जहँ पाव।

(a) अभिलाषा (b) उद्वेग
(c) उन्माद (d) स्मृति

Higher Edu. Exam. 2015

Ans. (a) यह तन जारौं छार कै, कहौं कि 'पवन! उड़ाव'। मकु तेहि मारग उड़ि परै, कंत धरै जहँ पाव।
उपर्युक्त काव्यांश में विरह की 'अभिलाषा' दशा का वर्णन है। उक्त पंक्ति जायसी द्वारा रचित पद्मावत से उधृत है। जायसी द्वारा रचित ग्रंथ है– पद्मावत, अखरावट, आखिरी कलाम आदि।

323. ''मोहिका हँसेसि कि कोहरहिं'' किसने किससे कहा है?

(a) केशवदास ने अकबर से
(b) तुलसीदास ने अकबर से
(c) जायसी ने शेरशाह से
(d) सूरदास ने वल्लभाचार्य से

UP PGT 2013

Ans. (c) जायसी काने और देखने में कुरूप थे। कहते हैं कि शेरशाह ने इनके रूप को देखकर हंसा था। इस पर जायसी ने शेरशाह से कहा 'मोहि का हँसेसि कि कोहरहि' अर्थात् मुझ पर हँस रहे हो या उस बनाने वाले कुँहार (भगवान्) पर। इस पर शेरशाह बहुत लज्जित हुआ और इनसे छमा माँगी।

324. अनलहक (मैं ही ब्रह्मा हूँ) .... की घोषणा है।

(a) जायसी (b) मंसूर
(c) अमीर खुसरो (d) कबीर

Delhi K.V. PGT. 2015

Ans. (b) मंसूर एक कवि और तसव्वुफ (सूफी) के प्रवर्तक विचारकों में से एक थे जिनको सन् 1922 में अब्बासी खलीफा अल मुक्तदर के आदेश पर बहुत पड़ताल करने के बाद फ़ासी पर लटका दिया गया था। इनको अनहलक (मैं ही ब्रह्मा हूँ) के लिए जाना जाता है। जो भारतीय अद्वैतवाद के अहंब्रह्मास्मि के बहुत करीब है।

325. कुतुबन के गुरु का नाम

(a) सैयद अशरफ (b) दामो
(c) मेंहदी बुरहान (d) शेख बुरहान

Delhi K.V. PGT. 2015

Ans. (d) कुतुबन 'शेख बुरहान' के शिष्य थे और जौनपुर के बादशाह हुसैनशाह के आश्रित थे। ये सूफी प्रेमकाव्य परम्परा के कवि थे। इनका प्रसिद्ध ग्रंथ 'मृगावती' है। इस ग्रंथ में लौकिक प्रेम की आड़ में अलौकिक प्रेम की बड़ी सुन्दर अभिव्यंजना हुई है। कवि की भाषा अवधी तथा छंद दोहा एवं चौपाई है।

326. सूफी कवियों का सबसे प्रिय अलंकार

(a) वक्रोक्ति (b) समासोक्ति
(c) अनुप्रास (d) श्लेष

Delhi K.V. PGT. 2015

Ans. (b) सूफी कवियों का सबसे प्रिय अलंकार 'समासोक्ति' है।

327. रसरतन के रचयिता हैं

(a) जानकवि (b) पुहकर
(c) शेखनबी (d) शेखनिसार

Delhi K.V. PGT. 2015

Ans. (b) 'रस रतन' के रचयिता **पुहकर** हैं। पुहकर कवि जहाँगीर के समय में थे। कहते हैं कि जहाँगीर ने किसी बात पर इन्हें आगरा में कैदकर लिया था। वहीं कारागार में इन्होंने 'रस रतन' नामक ग्रंथ संवत् 1673 में लिखा जिस पर प्रसन्न होकर बादशाह ने इन्हें कारागार से मुक्त कर दिया।

328. सूफी काव्य पद्धति का अंतिम ग्रन्थ कौन-सा है?

(a) युसूफ जुलेखा (b) पद्मावत
(c) मृगावती (d) इन्द्रावती

Delhi K.V. PGT. 2015

Ans. (d) सूफी काव्य का अन्तिम ग्रंथ 'इन्द्रावती' है। आचार्य शुक्ल ने नूरमुहम्मद कृत 'इन्द्रावती' को सूफी आख्यान काव्यों की अखण्डित परम्परा की समाप्ति माना है। 'इन्द्रावती' में कालिंजर के राजकुमार राजकुंवर और आगमपुर की राजकुमारी इन्द्रावती की प्रेम कहानी है। नूरमुहम्मद द्वारा रचित अन्य ग्रंथ हैं– अनुराग बांसुरी, रौजतुल हकायक (फारसी भाषा)।

329. 'पद्मावत' में रतनसेन किसका प्रतीक है?

(a) मन (b) बुद्धि
(c) अहंकार (d) हृदय

NVS. PGT. 2014

Ans. (a) 'पद्मावत' में रतनसेन मन का प्रतीक है। जायसी द्वारा रचित ग्रंथ पद्मावत के पात्रों का प्रतीकार्थ इस प्रकार हैं-

पात्र	प्रतीक
चौदह भुवन	मानव पिण्ड
चित्तौड़	शरीर
रतनसेन	मन
सिंहलद्वीप	हृदय
पद्मावती	बुद्धि (परमात्मा)
हीरामन तोता	गुरु
नागमती	भोग विलास (संसार का प्रतीक)

330. मलिक मोहम्मद जायसी के प्रसिद्ध प्रबंधकाव्य का क्या नाम है?

(a) मृगावती (b) पद्मावत
(c) मधुमालती (d) परमाल रासो

Delhi K.V. PGT 2015, KVS. PGT. 2014

Ans. (b) मलिक मोहम्मद जायसी के प्रसिद्ध प्रबंध काव्य का नाम 'पद्मावत' है। पद्मावत में कुल 57 खंड हैं और इनका प्रिय अलंकार उत्प्रेक्षा है। जायसी द्वारा रचित महत्वपूर्ण ग्रंथ हैं- अखरावट, आखिरी कलाम, चित्ररेखा, कहरानामा, मसलानामा, कन्हावत आदि। 'मृगावती' के रचनाकार कुतुबन, 'मधुमालती' के रचनाकार मंझन तथा 'परमाल रासो' के रचनाकार जगनिक हैं जिसे 'आल्हाखण्ड' के नाम से भी जाना जाता है।

331. सूफी काव्य-परम्परा का एक ग्रंथ है 'इन्द्रावती'। इसके रचनाकार थे :

(a) जायसी (b) कासिम शाह
(c) मंझन (d) नूर मुहम्मद

KVS PGT Hindi 2017, DIET PGT. 2014

Ans. (d) सूफी काव्य परम्परा के ग्रंथ 'इन्द्रावती' के रचनाकार नूरमुहम्मद हैं। इस ग्रंथ में कालिंजर के राजकुमार 'राजकुँवर' और आगमपुर की राजकुमारी 'इन्द्रावती' की प्रेम कहानी है। आचार्य शुक्ल जी ने नूरमुहम्मद कृत इन्द्रावती से सूफी आख्यान काव्यों की अखण्डित परम्परा की समाप्ति माना है। इनके द्वारा रचित अन्य ग्रंथ- अनुराग बाँसुरी, रौजतुल हकायक हैं।

332. 'जायसी' किस धारा के कवि हैं?

(a) ज्ञानमार्गी काव्यधारा (b) प्रेमाख्यानक काव्यधारा

(c) नाथपंथी काव्यधारा (d) रासक काव्यधारा

MP Asst. Prof. Hindi 2017

UP PGT 2005

Ans. (b) मलिक मुहम्मद जायसी **प्रेमाख्यानक काव्यधारा** के कवि हैं। पद्मावत, अखरावट तथा आखिरी कलाम जायसी की प्रमुख काव्य कृतियाँ है। इनकी सर्वप्रसिद्ध रचना 'पद्मावत' है जिसमें चित्तौड़ के शासक रतनसेन तथा सिंहल देश की राजकन्या पद्मिनी की प्रेमकथा का वर्णन है।

333. इनमें से जायसी की कौन सी रचना नहीं है?

(a) आखिरी कलाम (b) अखरावट

(c) पद्मावत (d) चित्रावली

UP PGT 2011

Ans. (d) 'चित्रावली' जायसी की रचना नहीं है, बल्कि चित्रावली सूफी कवि उसमान की रचना है जो अवधी भाषा में रचित है, जबकि पद्मावत, अखरावट, आखिरी कलाम, चित्ररेखा, कहरानामा, मसलानामा तथा कन्हावत आदि भक्तिकाल के निर्गुण धारा के प्रेममार्गी (सूफी) शाखा के प्रमुख कवि मलिक मुहम्मद जायसी की रचना है।

334. 'पद्मावत' को समासोक्ति किसने कहा है?

(a) गणपतिचन्द्र गुप्त (b) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

(c) माताप्रसाद गुप्त (d) रामकुमार वर्मा

UP PGT 2011

Ans. (b) मलिक मुहम्मद जायसी द्वारा रचित प्रमुख सूफी काव्य पद्मावत को **आचार्य रामचन्द्र शुक्ल** ने समासोक्ति काव्य कहा है। जबकि डॉ. शम्भुनाथ सिंह ने 'पद्मावत' को प्रतीकात्मक काव्य माना है।

335. सूफी प्रेमाख्यानक रचनाओं की भाषा कौन-सी है?

(a) अवधी (b) ब्रज

(c) बुन्देली (d) खड़ी बोली

UP PGT 2010

Ans. (a) सूफी कवियों ने अपनी प्रेमाख्यानक रचनाओं में 'अवधी भाषा' का प्रयोग किया। मलिक मुहम्मद जायसी की भाषा अवधी के लोक प्रचलित मुहावरों एवं लोकोक्तियों से युक्त है। जायसी ने 'पद्मावत' में ठेठ ग्रामीण अवधी भाषा का प्रयोग किया है।

336. मलिक मुहम्मद जायसी को 'जायसी' कहा जाता है, क्योंकि वे -

(a) जायस गोत्र में पैदा हुए थे

(b) जायस मत के मानने वाले थे

(c) जायस नामक स्थान के निवासी थे

(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

UP PGT 2005

Ans. (c) 'भक्तिकालीन' सूफी प्रेमाख्यानक काव्यधारा के प्रतिनिधि कवि मलिक मुहम्मद जायसी का जन्म रायबरेली (उत्तर प्रदेश) के 'जायस' नामक स्थान पर हुआ था। जायस नगर में जन्म लेने के कारण ही ये 'जायसी' कहलाए। 'जायसी' ने खुद अपनी रचना में अपने निवास स्थान का उल्लेख किया है -

''जायसनगर मोर अस्थानू
तहाँ आय कवि कीन्ह बखानू'
अधिकांश विद्वान जायसी के जन्म स्थल को 'जायस' ही मानते हैं। प्रेम के पीर के कवि जायसी ने 'आखिरी कलाम', 'पद्मावत' तथा 'अखरावट'' नामक काव्य कृतियों की रचना की।

337. निम्नलिखित पात्रों को उनकी रचनाओं के साथ सुमेलित कीजिए :

सूची-I		सूची-II	
(A)	मैना	(i)	मृगावती
(B)	ऋतुवर्ण	(ii)	चंदायन
(C)	रुक्मिणी	(iii)	सत्यवती कथा
(D)	राघवचेतन	(iv)	पद्मावत
		(v)	हंसजवाहिर

कोड :

	(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	(ii)	(iii)	(i)	(iv)
(b)	(iv)	(ii)	(v)	(i)
(c)	(iii)	(iv)	(ii)	(v)
(d)	(i)	(ii)	(iii)	(iv)

UGC NET III[rd] Paper Jan. 2017

Ans. (a)

रचना	वर्ष	रचनाकार	पात्र
चंदायन	1379 ई.	मुल्लादाऊद	मैना, लोर (लोरिक) चंदा
सत्यवती कथा	1501 ई.	ईश्वरदास	ऋतुवर्ण, सत्यवती
मृगावती	1501 ई.	कुतुबन	रुक्मिणी, राजकुमार
पद्मावत	1540 ई.	जायसी	राघवचेतन, रतनसेन पद्मावती, नागमती
हंस जवाहिर	1731 ई.	कासिमशाह	हंस (राजा), जवाहिर (रानी)

338. ''जायसी के शृंगार में मानसिक पक्ष प्रधान है, शारीरिक गौण है।'' – यह कथन किस आलोचक का है?

(a) रामचंद्र शुक्ल (b) विजयदेवनारायण साही

(c) रामपूजन (d) श्याममनोहर पांडेय

UGC NET III[rd] Paper Nov. 2017

Ans. (a) ''जायसी के शृंगार में मानसिक पक्ष प्रधान है, शारीरिक गौण है''- यह कथन रामचंद्र शुक्ल का है। जायसी सूफी काव्य धारा के प्रतिनिधि कवि माने जाते हैं।

339. 'पद्मावत' में पद्मिनी प्रतीक है –

(a) साधक की (b) शैतान की

(c) परम सत्ता की (d) प्रकृति की

UP PGT 2000

Ans. (c) 'पद्मावत' (1540 ई.) प्रेमाख्यानक परम्परा के प्रसिद्ध कवि मलिक मुहम्मद 'जायसी' की रचना है। यह एक प्रबन्ध काव्य है। इसके भागों को खण्ड कहा जाता है। इसमें कुल 57 खण्ड हैं। यह दो भागों में विभाजित है। पूर्वार्द्ध और उत्तरार्द्ध इसका पूर्वार्द्ध काल्पनिक तथा उत्तरार्द्ध भाग ऐतिहासिक है। पद्मावत में पद्मिनी परम सत्ता की प्रतीक है। नागमती धुनिया धंधा (सांसारिकता) सुआ-गुरु का प्रतीक है। राघव - शैतान का प्रतीक तथा अलाउद्दीन - माया का प्रतीक है।

340. साधना की चार अवस्थाओं-शरिअत, तरीकत, मारिफ़त और हकीकत का सम्बन्ध है -

(a) ज्ञान मार्गी साधना से (b) सूफी साधना से
(c) इस्लाम धर्म साधना से (d) रीतिमुक्त काव्य से

UP PGT 2004

Ans. (b) साधना की चार अवस्थाओं का संबंध 'सूफी साधना से' है। सूफी मत के अनुसार ईश्वर एक है, उसका नाम एक है। आत्मा और ईश्वर में कोई अन्तर नहीं है आत्मा तो स्वयं को ईश्वर के सामने एक बन्दे के रूप में प्रस्तुत करती है और बन्दा प्रेम के सहारे ईश्वर तक पहुँचने के लिए चार सोपानों को पार करता है। सूफी मत के अनुसार ये चार सोपान हैं--शरियत, तरीकत, हकीकत और मारिफत।

341. सूफी मत में वर्णित साधक की चार अवस्थाओं—शरीअत, तरीकत, मारिफत, हकीकत—की भारतीय भक्तिमार्ग के साथ सही क्रम में संगति होगी –

(a) आचरण, उपासना, सिद्धावस्था, सत्यबोध
(b) सत्यबोध, आचरण, उपासना, सिद्धावस्था
(c) आचरण, उपासना, सत्यबोध, सिद्धावस्था
(d) सत्यबोध, उपासना, आचरण, सिद्धावस्था

UP PGT 2000

Ans. (c) सूफी मत में वर्णित साधक की चार अवस्थाओं – शरीअत, तरीकत, मारिफत, हकीकत की भारतीय भक्ति मार्ग के साथ सही क्रम में संगति होगी – आचरण, उपासना, सत्यबोध, सिद्धावस्था। साधक की प्रथम अवस्था 'नासूत' कहलाती है। जिसमें वह शरीअत का अनुसरण करता है। दूसरी अवस्था 'मलकत' है जिसमें साधक तरीकत या उपासना में प्रवृत्त होता है। तीसरी अवस्था 'जबरूत' है जहाँ वह आरिफ बन जाता है अर्थात् मारिफत या सत्यबोध होता है। चौथी अवस्था 'लाहूत' है जहाँ पहुँचकर इसे हकीकत (सिद्धावस्था) की प्राप्ति होती है।

342. जायसीकृत 'पद्मावत' है

(a) पुराणकाव्य (b) धर्मकाव्य
(c) रूपक काव्य (d) चम्पूकाव्य

UGC NET II[nd] Paper June. 2010

Ans. (c) जायसी कृत 'पद्मावत' (1540ई.) उच्च कोटि का प्रबन्ध काव्य है। डॉ. नगेन्द्र ने इसे 'प्रतीकात्मक या रूपक काव्य' कहा है। इसे 'समासोक्ति काव्य' भी कहा जाता है।

343. प्रेमाख्यान काव्य परम्परा की प्रमुख रचनाओं का सही क्रम क्या है?

(a) चन्दायन-मृगावती-पद्मावत-मधुमालती
(b) मधुमालती-मृगावती-चन्दायन-पद्मावत
(c) पद्मावत-चन्दायन-मृगावती-मधुमालती
(d) मृगावती-पद्मावत-मधुमालती-चन्दायन

UGC NET III[rd] Paper June, 2016
UGC NET II[nd] Paper June. 2012

Ans. (a)

रचना	प्रकाशन वर्ष	रचनाकार
चन्दायन	1379 ई	मुल्ला दाऊद
मृगावती	1501 ई.	कुतुबन
पद्मावत	1540 ई.	जायसी
मधुमालती	1545 ई.	मंझन

344. आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने प्रेमाख्यान काव्य परंपरा का प्रथम कवि किसे माना है?

(a) मंझन (b) जायसी
(c) मुल्ला दाऊद (d) कुतुबन

UGC NET II[nd] Paper June. 2008

Ans. (d) आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने प्रेमाख्यान काव्य परंपरा का प्रथम कवि 'कुतुबन' को माना है। प्रेमाख्यान काव्य परम्परा का प्रथम कवि उनकी रचना एवं मानने वाले विद्वान की सारणी निम्नवत हैं-

प्रस्तोता	रचना	प्रकाशन वर्ष	रचनाकार /कवि
गणपति चन्द्र गुप्त/ डॉ. नगेन्द्र	हंसावली	1370 ई.	असाइत
रामकुमार वर्मा	चंदायन	1379 ई.	मुल्ला दाऊद
हजारी प्रसाद द्विवेदी	सत्यवती कथा	1501 ई.	ईश्वरदास
रामचन्द्र शुक्ल	मृगावती	1501 ई.	कुतुबन

345. कौन-सी कृति जायसी की है?

(a) मधुमालती (b) मृगावती
(c) कन्हावत (d) अनुराग बाँसुरी

UGC NET II[nd] Paper June. 2007

Ans. (c) 'कन्हावत' मलिक मुहम्मद जायसी की काव्य कृति है। अन्य कृतियों का विवरण-

काव्य ग्रंथ	काव्य ग्रंथकार
मृगावती	कुतुबन
मधुमालती	मंझन
अनुराग बाँसुरी	नूर मुहम्मद

346. निम्नलिखित रचनाओं को उनके कवियों के साथ सुमेलित कीजिए :

(a) हंसावली (i) कुतुबन
(b) चन्दायन (ii) ईश्वर दास
(c) सत्यवती (iii) कवि असाइत
(d) मृगावती (iv) मुल्ला दाउद
(v) उसमान

कोड-

	A	B	C	D
(a)	iii	iv	ii	i
(b)	i	ii	iv	v
(c)	v	ii	iii	iv
(d)	iv	iii	i	v

UGC NET II[nd] Paper June. 2009

Ans. (a)

रचना	प्रकाशन वर्ष	रचनाकार
हंसावली	1370 ई.	कवि असाइत
चन्दायन	1379 ई.	मुल्ला दाऊद
सत्यवती	1501 ई.	ईश्वरदास
मृगावती	1501 ई.	कुतुबन
चित्रावली	1613 ई.	उसमान

नोट-आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने 'मृगावती' का समय 1501 ई. माना है।

347. सूफीकाव्य का उद्देश्य है-

(a) प्रेम-निरूपण (b) काव्यशास्त्र निरूपण
(c) इस्लाम धर्म का प्रचार (d) राष्ट्रीय चेतना

UGC NET II[nd] Paper Dec. 2009

Ans. (a) सूफी काव्य का उद्देश्य प्रेम के माध्यम से ईश्वर की प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त करना है। इसमें स्त्री को परमात्मा तथा पुरुष को आत्मा के रूप में चित्रित किया गया है। अतः सूफी काव्य सर्वप्रमुख उद्देश्य प्रेम निरूपण है।

348. 'प्रेम चिंगारी' किसकी रचना है?
(a) शेख निसार (b) शेख नबी
(c) इब्न निशाती (d) नजफ अली
Uttarakhand Assi. Pro. 2017

Ans. (*) 'प्रेम चिंगारी' अली शाह की कृति है। शेख निसार की 'यूसुफ जुलेखा' तथा शेख नबी की 'ज्ञानदीप' नामक कृति है।

349. निम्नलिखित रचनाओं को कवियों के साथ सुमेलित कीजिए।
(a) मृगावती (i) जायसी
(b) मधुमालती (ii) मुल्ला दाऊद
(c) चन्दायन (iii) उसमान
(d) अखरावट (iv) कुतुबन
(v) मंझन

कोड -

	A	B	C	D
(a)	ii	iii	v	iv
(b)	iii	ii	i	iv
(c)	iv	v	ii	i
(d)	i	ii	iii	iv

UGC NET II[nd] Paper Dec. 2004

Ans. (c)

काव्य ग्रंथ	प्रकाशन वर्ष	काव्यकार
मृगावती	1501 ई.	कुतुबन
मधुमालती	1545 ई.	मंझन
चन्दायन	1379 ई.	मुल्ला दाऊद
अखरावट	-	मलिक मुहम्मद जायसी
चित्रावली	1613 ई.	उसमान

350. जायसी ने अपनी किस काव्यकृति में कयामत का वर्णन किया है?
(a) मसलानामा (b) अखरावट
(c) आखिरी कलाम (d) कहरानामा
UGC NET III[rd] Paper June. 2016
UP PGT 2013

Ans. (c) जायसी निर्गुणधारा के प्रेममार्गी शाखा (सूफी काव्य धारा) के प्रमुख कवि हैं। उपर्युक्त सभी रचनाएँ जायसी की ही है। जायसी प्रसिद्ध सूफी फकीर शेख मोहिदी (मुहीउद्दीन) के शिष्य थे।

रचना		विषयवस्तु
आखिरी कलाम	-	कयामत का वर्णन तथा मुगल बादशाह बाबर की प्रशंसा है।
अखरावट	-	वर्णमाला के एक-एक अक्षर को लेकर सिद्धान्त सम्बन्धी तत्वों से भरी चौपाई है।
कहरानामा	-	आध्यात्मिक विवाह का वर्णन है। यह कहरवा शैली में लिखा गया है।
मसलानामा	-	ईश्वर भक्ति के प्रति प्रेम निवेदन है।

351. हुज्वेरी के अनुसार 'फना' का अर्थ है :
(a) जीवात्मा के शरीर का नाश
(b) जीवात्मा का परमात्मा में विलय
(c) किसी वस्तु की अपूर्णता का ज्ञान और उसे पाने की इच्छा से विरत होना
(d) व्यक्ति के अस्तित्व, स्वरूप और गुण का विनाश
UGC NET III[rd] Paper Jan. 2017

Ans. (c) हुज्वेरी के अनुसार 'फना' शब्द का अर्थ है- "किसी वस्तु की अपूर्णता का ज्ञान और उसे पाने की इच्छा से विरत होना।"
सूफी हुज्वेरी ने कहा है कि "जब लोग ये समझते हैं कि फना का अर्थ सत्ता और इस मनुष्य शरीर का नष्ट होना है तब वे भूल करते हैं। फना का वास्तविक मतलब यह है कि त्रुटियों के प्रति मनुष्य सचेतन हो जाता है और उसकी चाहत से विरत हो जाता है। यह बिल्कुल नामुमकिन है कि परमात्मा के गुण मनुष्य के गुण बन जाएँ अथवा परमात्मा के गुण मनुष्य के गुण में आ जाएँ।

352. 'सुजान कुमार' किस सूफी प्रेमाख्यान का नायक है?
(a) मधुमालती (b) चित्रावली
(c) इंद्रावती (d) हंसजवाहिर
UGC NET II[nd] Paper Jan. 2017

Ans. (b) 'सुजान कुमार' चित्रावली नामक सूफी प्रेमाख्यानक काव्य का नायक है। 'चित्रावली' (1613 ई.) उसमान द्वारा अवधी भाषा तथा दोहा चौपाई छंद में रचित ग्रंथ है। इसमें नेपाल के राजकुमार सुजान तथा रूपनगर की राजकुमारी चित्रावली की प्रेमकथा का वर्णन है।
अन्य सूफी ग्रंथों की नायक-नायिका निम्नवत् हैं-

काव्य ग्रंथ		नायक-नायिका
मधुमालती	–	मधुमालती-मनोहर तथा प्रेमा-ताराचंद
इंद्रावती	–	राजकुँवर-इंद्रावती
हंसजवाहिर	–	हंस-जवाहिर

353. इनमें से सूफी काव्यधारा का कवि कौन सा नहीं है?
(a) मुल्ला दाउद (b) जायसी
(c) नाभादास (d) कुतुबन
UP TGT 2011

Ans. (c) नाभादास सूफी काव्यधारा के कवि नहीं हैं, ये रामभक्ति काव्यधारा के कवि हैं इनकी प्रसिद्ध रचना 'अष्टयाम' है। इनकी अन्य कृति 'भक्तमाल' है। शेष कवि मुल्ला दाउद, जायसी तथा कुतुबन प्रेमाश्रयी शाखा के सूफी कवि हैं।

354. "हिन्दू मग पर पाँव न राखेउँ,
का जौ बहुतै हिन्दी भाखेउँ"
यह उक्ति किस रचना और रचनाकार से सम्बन्धित हैं?
(a) नूर मोहम्मद – इन्द्रवती
(b) उसमान – चित्रावली
(c) नूर मोहम्मद – अनुराग बाँसुरी
(d) कासिमशाह – हंस जवाहिर
UP TGT 2010

Ans. (c) यह उक्ति नूर मुहम्मद की अमर रचना अनुराग बाँसुरी से सम्बन्धित हैं।

355. पद्मावत के अनुच्छेदों का नाम है –
(a) सर्ग (b) काण्ड
(c) खण्ड (d) अंक
UP TGT 2001

Ans. (c) पद्मावत के अनुच्छेदों का नाम 'खण्ड' है। 'पद्मावत' पूर्वमध्यकालीन सूफी प्रेमाख्यानक काव्य परम्परा के सर्वप्रमुख कवि मलिक मुहम्मद जायसी की श्रेष्ठतम काव्यकृति है। 57 खण्डों में

विभाजित इस रचना के प्रथम खण्ड में चित्तौड़ के राजा रतनसेन एवं सिंघल राजकुमारी पद्मावती के विवाह तक की काल्पनिक घटनाएँ तथा दूसरे भाग में ऐतिहासिक वर्णन है। 'पद्मावत' रोमांचक शैली में लिखा गया 'कथा काव्य' है। इसके विभिन्न पात्र दार्शनिक तत्वों के प्रतीक भी हैं। अतः इस दृष्टि से इसे 'रूपक काव्य' भी कहते हैं।

356. प्रेमाख्यान काव्य-परम्परा (सूफी कवियों) का मुख्य दर्शन है–

(a) तसव्वुफ (b) अहले हदीस
(c) हनफी (d) अहमदिया

UP TGT 2005

Ans. (a) हिन्दी साहित्य के भक्तिकाल की निर्गुण धारा के सूफी प्रेमाख्यानक काव्य परम्परा का मुख्यदर्शन 'तसव्वुफ' है। मुल्लादाऊद (चन्दायन), कुतुबन (मृगावती),। जायसी (पद्मावत, अखरावट, आखिरी कलाम), मंझन (मधुमालती), उसमान (चित्रावली), शेखनवी (ज्ञानदीप) आदि सूफी काव्य परम्परा के प्रमुख कवि है।

357. सूफी प्रेमाख्यानक काव्य-परम्परा में 'आराध्य' को प्रायः किस रूप में देखा गया है?

(a) गुरू के रूप में (b) प्रेमी के रूप में
(c) सखा के रूप में (d) प्रेमिका के रूप में

UGC NET IInd Paper June. 2012

Ans. (d) सूफी प्रेमाख्यानक काव्य-परम्परा में 'आराध्य' या 'परमात्मा' को प्रेमिका के रूप में देखा गया है। जबकि 'आराधक' या 'आत्मा' को प्रेमी के रूप में। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने स्त्री तथा पुरुष को क्रमशः 'परमात्मा' तथा 'आत्मा' का प्रतीक माना है। सूफी प्रेमाख्यानक परम्परा का प्रमुख कवि मलिक मुहम्मद जायसी को माना जाता है।

358. किस कवि की रचनाओं में भावात्मक रहस्यवाद की अभिव्यक्ति सर्वाधिक हुई है?

(a) मलिक मुहम्मद जायसी (b) तुलसीदास
(c) अग्रदास (d) माखनलाल चतुर्वेदी

Uttarakhand Assi. Pro. 2017

Ans. (a) मलिक मुहम्मद जायसी की रचनाओं में भावात्मक रहस्यवाद की अभिव्यक्ति सर्वाधिक हुई है। जब पारलौकिक सत्ता का वर्णन उसके प्रति प्रेम को लौकिक शब्दावली में न व्यक्त कर सके तो इसे ही भावात्मक रहस्यवाद कहते हैं। जायसी का 'पद्मावत' इसका प्रमुख उदाहरण है।

359. निम्नलिखित में से कौन-सी रचना मलिक मुहम्मद जायसी की नहीं है?

(a) अखरावट (b) आखिरी कलाम
(c) पद्मावत (d) नागमती विरह

KVS PGT Hindi, 2016

Ans. (d) : 'नागमती विरह' जायसी की रचना नहीं है। जबकि अखरावट, आखिरी कलाम, पद्मावत, जायसी की रचना है।

360. 'पद्मावत' को 'सूफी-काव्य' मानने से इनकार करने वाले आलोचक इनमें से कौन हैं?

(a) रामचन्द्र शुक्ल (b) हजारीप्रसाद द्विवेदी
(c) विजय देवनारायण साही (d) नामवर सिंह

KVS PGT Hindi, 2017

Ans. (c) : 'पद्मावत' को 'सूफी-काव्य' मानने से इनकार करने वाले आलोचक विजयदेव नारायण साही है। ये पद्मावत को 'एक त्रासदी' मानते हैं।' रामचन्द शुक्ल, हजारी प्रसाद द्विवेदी तथा नामवर सिंह 'पद्मावत' को सूफी काव्य मानते हैं।

361. 'ना नगरी काया विधि कीन्हा।
लेइ खोजा पावा, तेइ चीन्हा।
पै सुठि अगम पंथ बड़ बाँका।
तस मारग जस सुई क नाका।
बाँक चढ़ाव, सात खंड ऊँचा। चारि बसेरे जाई पहूँचा।'
शुक्लजी के अनुसार उक्त पंक्तियों में प्रयुक्त 'चारि बसेरे' से अभिप्राय है:

(a) चार धर्मशालाएं
(b) प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि नामक योग के अंग।
(c) शरीअत, तरीकत, मारिफत और हकीकत नामक चार सोपान।
(d) धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष नामक पुरुषार्थ।

कोड:

(a) (a) और (d) सही (b) (b) और (c) सही
(c) (b) और (d) सही (d) (c) और (d) सही

Ans : (b) प्रस्तुत पंक्तियाँ 'ना नगरी काया विधि कीन्हा .... चारि बसेरे जाइ पहूँचा।' में प्रयुक्त 'चारि बसेरे' से आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का अभिप्राय है- प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि नामक योग के अंग एवं शरीअत, तरीकत, मारिफत और हकीकत नामक चार सोपान।

362. सूफी काव्यधारा के पहले कवि है

(a) मलिक मुहम्मद जायसी (b) मुल्ला दाऊद
(c) कुतुबन (d) मंझन

NVS TGT Hindi, 2016
Delhi KV PGT 2015

Ans. (b) : सूफी काव्य धारा के पहले कवि 'मुल्ला दाऊद' है इनकी प्रसिद्ध कृति 'चन्दायन' है जिसका समय 1379 ई. है। जबकि आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने कुतुबन को प्रथम सूफी कवि माना है।

3. राम काव्य

363. 'कलि कुलिस जीव निस्तार हित वाल्मीकि तुलसी भयो' उक्ति किस कवि द्वारा रचित है?

(a) नरहरि बारहठ (b) ईश्वर दास
(c) अग्रदास (d) नाभादास

UPPSC GDC 2021

Ans. (d) : 'कलि कुलिस जीव निस्तार हित वाल्मीकि तुलसी भयो' उक्ति कवि नाभादास द्वारा रचित है। 'नाभादास' स्वामी अग्रदास के शिष्य थे। इनकी प्रमुख कृतियाँ हैं- भक्तमाल, अष्टयाम।

364. निम्नलिखित से रामभक्ति काव्य परम्परा के कवि नहीं हैं

(a) गदाधर भट्ट (b) नाभादास
(c) गोस्वामी तुलसीदास (d) हृदयराम

UPPSC GDC 2021
RPSC Assit. Prof. 2020, Paper-II

Ans. (a) : 'गदाधरभट्ट' राम भक्ति काव्य परम्परा के कवि नहीं हैं। 'गदाधरभट्ट' कृष्ण भक्ति परम्परा के 'गौड़ीय सम्प्रदाय' के कवि हैं। यह रघुनाथभट्ट गोस्वामी के शिष्य तथा भागवत के अद्वितीय वक्ता थे। जबकि गोस्वामी तुलसीदास, नाभादास तथा हृदयराम रामभक्ति परम्परा के कवि हैं।

365. 'मातु पिता जग जाई तज्यो, विधिहू न लिख्यौ कछु भाल भलाई।'
यह आत्मपरक काव्यपंक्ति इनमें से किस भक्तिकालीन कवि की है?
(a) सूरदस (b) कबीरदार
(c) तुलसीदास (d) हृदयराम

UKPSC Lecturer 2020

Ans. (c) : 'मातु पिता .... कछु भाल भलाई।' इस आत्मपरक काव्यपंक्ति के रचनाकार भक्तिकालीन कवि तुलसीदास हैं।

- तुलसीदास का बचपन घोर दरिद्रता एवं असहायावस्था में बीता था। उन्होंने लिखा है, 'माता-पिता ने दुनिया में पैदा करके मुझे त्याग दिया। विधाता ने भी मेरे भाल (भाग्य) में कोई भलाई नहीं लिखी'।
- तुलसीदास (1532-1623 ई.) के माता-पिता का नाम क्रमशः हुलसी एवं आत्माराम दुबे था। इनकी पत्नी का नाम रत्नावली तथा शिक्षागुरु शेष सनातन थे।
- नाभादास ने तुलसीदास को 'कलिकाल का वाल्मीकि' तथा अमृतलाल नागर ने 'मानस का हंस' कहा है।
- गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित 12 ग्रन्थ प्रामाणिक माने जाते हैं- दोहावली, कवित्त रामायण (कवितावली), गीतावली, रामचरित मानस, रामाज्ञाप्रश्न, विनयपत्रिका, रामलला नहछू, पार्वतीमंगल, जानकीमंगल, बरवै रामायण, वैराग्य संदीपनी एवं कृष्ण गीतावली।

366. गोस्वामी तुलसीदास की भक्ति किस प्रकार की है?
(a) सख्य भाव (b) कांत भाव
(c) दास्य भाव (d) वात्सल्य भाव

UKPSC Lecturer 2020

Ans. (c) : गोस्वामी तुलसीदास की भक्ति 'दास्य भाव' की है।

- गोस्वामी तुलसीदास (1532-1623 ई.) के पिता का नाम आत्माराम दुबे तथा माता का नाम हुलसी था। इनकी पत्नी का नाम रत्नावली तथा इनके दीक्षा गुरु नरहर्यानन्द थे।
- गोस्वामी तुलसीदास रामभक्ति शाखा के प्रतिनिधि कवि है।
- तुलसीदास रामानुजाचार्य के 'श्री सम्प्रदाय' और विशिष्टाद्वैतवाद से प्रभावित थे।
- तुलसीदास जी ने रामचरितमानस, विनय पत्रिका, कृष्ण गीतावली, रामलला नहछू, दोहावली, बरवै रामायण, रामाज्ञाप्रश्न, गीतावली जैसी प्रसिद्ध काव्य कृतियों की रचना की।

367. रामभक्ति-काव्यधारा से संबद्ध कवि नहीं हैं
(a) स्वामी अग्रदास (b) प्राणचंद चौहान
(c) गदाधर भट्ट (d) हृदयराम

RPSC Assit. Prof. 2020 Paper-II

Ans. (c) : गदाधर भट्ट, कृष्ण काव्यधारा से संबंधित कवि हैं।
राम भक्ति शाखा के प्रमुख कवि और उनकी रचनाएँ-

तुलसीदास	– रामचरितमानस, विनय पत्रिका, रामाज्ञा प्रश्न
विष्णुदास	– रुक्मिणी मंगल, स्वर्गारोहण
ईश्वरदास	– भरतमिलाप, अंगदपैज
स्वामी अग्रदास	– अष्टयाम, हितोपदेश, उपखाण बावनी
प्राणचंद चौहान	– रामायण महानाटक
हृदयराम	– हनुमन्नाटक, सुदामा चरित

368. 'सुंदरकांड' रामचरितमानस का कौन सा कांड (सर्ग) है?
(a) चौथा (b) पाँचवाँ
(c) दूसरा (d) तीसरा

UKPSC Lecturer 2020

Ans. (b) 'सुंदरकाण्ड' रामचरितमानस का पाँचवाँ (5) कांड (सर्ग) है।

- 'रामचरितमानस' में सात काण्ड (सर्ग) या सोपान है जो क्रमशः इस प्रकार है- (1) बालकाण्ड (2) अयोध्याकाण्ड (3) अरण्य काण्ड (4) किष्किन्धाकाण्ड (5) सुन्दरकाण्ड (6) लंकाकाण्ड (7) उत्तरकाण्ड।
- 'सुन्दरकाण्ड' में हनुमान जी द्वारा सीता की खोज और राक्षसो के संहार का वर्णन किया गया है। यह दोहा और चौपाई छन्द में लिखा गया है।
- 'अयोध्याकाण्ड' को 'रामचरितमानस' का हृदयस्थल कहा जाता है।
- 'रामचरितमानस' की रचना तुलसीदास जी ने संवत् 1631 में चैत्र शुक्ल रामनवमी (मंगलवार) को प्रारम्भ किया। इसे पूर्ण करने में 2 वर्ष 7 महीना 26 दिन लगा।
- तुलसीदास जी ने वैराग्यसंदीपनी, रामाज्ञाप्रश्न, कवितावली, विनयपत्रिका, गीतावली, पार्वती मंगल, जानकी मंगल जैसे अनेक महत्वपूर्ण ग्रन्थों की रचना की।

**369. 'सियराम मय सब जग जानी।
करहु प्रणाम जोरि जुग पानी।'
उपर्युक्त पंक्ति में तुलसीदास ने किस दार्शनिक सिद्धांत की व्यंजना की है?**
(a) अद्वैतवाद सिद्धांत (b) द्वैताद्वैत सिद्धांत
(c) विशिष्टाद्वैत सिद्धांत (d) द्वैतवादी सिद्धांत

UKPSC Lecturer 2020

Ans. (c) : 'सियराम मय सब .... जुग पानी' पंक्ति में तुलसीदास ने विशिष्टाद्वैत सिद्धान्त की व्यंजना की है।

विशिष्टाद्वैत सिद्धांत (विशिष्ट+अद्वैत) आचार्य रामानुज (सन् 1016-1127 ई.) का प्रतिपादित किया हुआ दार्शनिक मत है। इसके अनुसार यद्यपि जगत और जीवात्मा दोनों कार्यतः ब्रह्म से भिन्न है फिर भी वे ब्रह्म से ही उद्भव हैं और ब्रह्म से उसका उसी प्रकार का सम्बंध है जैसा कि किरणों का सूर्य से है, अतः ब्रह्म एक होने पर भी अनेक है।

**370. 'कीरति भनिति भूति भलि सोई,
सुरसरि सम सब कहँ हित होई।'
-ये किसकी पंक्तियाँ हैं?**
(a) तुलसीदास की (b) सूरदास की
(c) नंददास की (d) कबीर की

UKPSC Lecturer 2020

Ans. (a) :

पंक्तियाँ	रचनाकार
कीरति भनिति भूति भलि सोई। सुरसरि सम सब कह हित होई।।	तुलसीदास
मेरे नैन बिरह की बेल बई सींचत नैन नीर के, सजनी, मूल पतार गई।	सूरदास
नव मर्कट मनि स्याम कनक मनिगम ब्रजबाला। वृन्दावन को रीझि मनहुँ पहिराई माला।।	नन्ददास
माधौ मैं ऐसा अपराधी तेरी भगति होत नहीं साधी।	कबीरदास

371. 'रामचरितमानस' में तुलसीदास ने सर्वप्रथम इनमें से किनकी वंदना की है?
(a) पार्वती-शंकर (b) वाल्मीकि-हनुमान
(c) सरस्वती-गणेश (d) सीता-राम
UKPSC Lecturer 2020

Ans. (c) : 'रामचरितमानस' में तुलसीदास ने सर्वप्रथम 'सरस्वती-गणेश वंदना' की है। 'रामचरितमानस' की रचना संवत 1631 में चैत्र शुक्ल रामनवमी को हुई। इसकी रचना में कुल 2 वर्ष 7 महीना 26 दिन लगा।
'मानस' में सात काण्ड या सोपान हैं जो क्रमशः इस प्रकार हैं-
(1) बालकाण्ड (2) अयोध्याकाण्ड (3) अरण्यकाण्ड
(4) किष्किन्धाकाण्ड (5) सुन्दरकाण्ड (6) लंकाकाण्ड
(7) उत्तरकाण्ड।
- 'अयोध्याकाण्ड' को 'रामचरितमानस' का हृदयस्थल कहा जाता है।
- आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी- "तुलसी का सम्पूर्ण काव्य समन्वय की विराट चेष्टा है।"
  आचार्य शुक्ल के अनुसार- "हिन्दी काव्य की प्रौढ़ता के युग का आरम्भ गोस्वामी तुलसीदास द्वारा हुआ।"
- तुलसीदास ने सर्वप्रथम 'मानस' को रसखान को सुनाया था।
- 'रामचरितमानस' की प्रथम टीका अयोध्या के बाबा रामचरणदास ने लिखी थी।

372. निम्नलिखित में से, 'लोकमंगल की साधना का कवि' कहा जाता है:
(a) तुलसीदास को (b) कबीरदास को
(c) रविदास को (d) सूरदास को
UKSSSC LT 2020

Ans. (a) : 'लोकमंगल की साधना का कवि' तुलसीदास को कहा जाता है। तुलसी के सन्दर्भ में विद्वानों की कही गई उक्तियाँ –
रामचन्द्र शुक्ल- "तुलसीदास उत्तरी भारत की समग्र जनता के हृदय मन्दिर में पूर्ण प्रेम-प्रतिष्ठा के साथ विराज रहे है।"
हजारी प्रसाद द्विवेदी– "भारतवर्ष का लोकनायक वही हो सकता है जो समन्वय करने का अपार धैर्य लेकर आया हो।"
नाभादास– "कलिकाल का वाल्मीकि"।
रामविलास शर्मा– "जातीय कवि"।
अमृत लाल नागर– "मानस का हंस"।

373. तुलसीदास द्वारा रचित 'विनय पत्रिका' की रचना किस भाषा में हुई है?
(a) भोजपुरी (b) अवधी
(c) ब्रजभाषा (d) मैथिली
UKSSSC LT 2020

Ans. (c) : तुलसीदास द्वारा रचित 'विनय पत्रिका' की रचना 'ब्रजभाषा' में हुई है। तुलसीदास ने 'रामचरितमानस' की रचना संवत् 1631 में प्रारम्भ की, जिसे पूरा करने में उन्हें 2 वर्ष 7 महीने, 26 दिन का समय लगा। तुलसीदास की रचनाओं का सामान्य परिचय है-

रचना	भाषा	रचना	भाषा
रामचरितमानस	अवधी	वैराग्य संदीपनी	ब्रज
रामलला नहछू	अवधी	दोहावली	ब्रज
जानकी मंगल	अवधी	कवितावली	ब्रज
पार्वती मंगल	अवधी	गीतावली	ब्रज
बरवै रामायण	अवधी	कृष्ण गीतावली	ब्रज
रामाज्ञा प्रश्नावली	अवधी	विनय पत्रिका	ब्रज

374. मेधाकर बहुगुणा द्वारा रचित कृति है:
(a) रामायण प्रदीपम् (b) महावीर चरितम्
(c) गंगाशतकम् (d) अजेय भारतम्
UKSSSC LT 2020

Ans. (a) : मेधाकर बहुगुणा द्वारा रचित कृति 'रामायण प्रदीपम्' है। अन्य विकल्पों की कृति के रचनाकार निम्न हैं–
महावीर चरितम् – भवभूति
गंगा-शतकम् – लोकरत्न गुमानी पंत

375. नाभादास किस भक्तिधारा के कवि हैं?
(a) कृष्ण भक्त कवि
(b) राम भक्त कवि
(c) प्रेममार्गी कवि
(d) ज्ञानमार्गी कवि
UKSSSC LT 2020

Ans. (b) : नाभादास भक्तिकालीन रामभक्त कवि माने जाते हैं। ये स्वामी अग्रदास के शिष्य थे। नाभादास की तीन कृतियाँ उपलब्ध हैं– भक्तमाल, अष्टयाम एवं रामभक्ति सम्बन्धी स्फुट पद। 'भक्तमाल' में लगभग 200 भक्तों का चरित्रगान है। 'अष्टयाम' ब्रजभाषा गद्य और पद्य दोनों में अलग-अलग उपलब्ध है।

376. "सच पूछा जाए तो मध्ययुग की समग्र स्वाधीन चिंता के गुरु रामानंद ही थे।"
उक्त कथन किसका है?
(a) गोविंद त्रिगुणायन (b) रामचंद्र शुक्ल
(c) हजारीप्रसाद द्विवेदी (d) पीतांबरदत्त बड़थ्वाल
RPSC Assit. Prof. 2020 Paper-II

Ans. (c) : "सच पूछा जाए तो मध्ययुग की समग्र स्वाधीन चिंता के गुरु रामानंद ही थे।" उक्त कथन रामानंद के विषय में हजारीप्रसाद द्विवेदी का है।
रामानंद का जन्म प्रयाग के ब्राम्हण परिवार में हुआ था। इनकी माता का नाम 'सुशीला देवी' तथा पिता का नाम 'पुण्यसदन' था। कबीर, रैदास, सुरसरी, अनंतानंद, पीपा, धन्ना इनके प्रमुख शिष्य थे। स्वामी रामानंद द्वारा स्थापित रामानंदी सम्प्रदाय को ही 'रामावत संप्रदाय' कहा जाता है।
रामानंद के प्रमुख ग्रंथः- 1. श्रीरामार्चन पद्धति, 2. रामरक्षास्त्रोत, 3. आनन्द भाष्य, 4. वैष्णवमताब्ज भास्कर, 5. योगचिन्तामणि, 6. सतनामी पंथ।

377. आलवार भक्तों/संतों के विषय में कौन सा तथ्य गलत है?
(a) ये सुदूर दक्षिण के वैष्णव भक्त थे।
(b) इनकी संख्या 12 थी।
(c) ये सभी उच्च वर्ण-जाति के थे।
(d) आलवारों में आंडाल नाम की एक महिला भक्त भी थी।
RPSC Assit. Prof. 2020 Paper-II

Ans. (c) : दिये गये तथ्यों में 'ये सभी उच्च वर्ण-जाति के थे।' तथ्य सही नहीं है।

आलवार सुदूर दक्षिण के वैष्णव भक्त थे। इनकी कुल संख्या 12 (जिनमें महिला आलवार संत 'आण्डाल' भी शामिल है) मानी जाती है।

ये आलवार भिन्न-भिन्न जातियों में पैदा हुये थे, परंतु संत होने के कारण उनका समान रूप से आदर है। 12 आलवार संतों का समय छठी से नौवीं शताब्दी के बीच माना जाता है।

378. भगवान को सगुण मानकर उनकी भक्ति पर बल देने वाले भागवत धर्म के भेदों और उनके संस्थापकों को सुमेलित कीजिए:

(अ) श्री संप्रदाय i. मध्वाचार्य
(ब) ब्रह्म संप्रदाय ii. निंबार्काचार्य
(स) रुद्र संप्रदाय iii. रामानुजाचार्य
(द) सनकादिक संप्रदाय iv. विष्णुस्वामी

विकल्पः

	(अ)	(ब)	(स)	(द)
(a)	ii	iii	i	iv
(b)	iii	i	iv	ii
(c)	iv	i	iii	ii
(d)	iii	ii	iv	i

RPSC Assit. Prof. 2020 Paper-II

Ans. (b) : प्रमुख संप्रदाय व उनके प्रवर्तकों का सुमेलन है-

संप्रदाय	प्रवर्तक	दार्शनिकमत
श्री संप्रदाय	रामानुजाचार्य	विशिष्टाद्वैतवाद
ब्रह्म संप्रदाय	मध्वाचार्य	द्वैतवाद
रूद्र संप्रदाय	विष्णु स्वामी	शुद्धाद्वैत
सनकादिक संप्रदाय	निंबार्काचार्य	द्वैताद्वैत/भेदाभेदवाद
गौड़ीय संप्रदाय	चैतन्य महाप्रभु	द्वैताद्वैतवाद
राधा-वल्लभ	हितहरिवंश	–

⇒ सनकादिक संप्रदाय को निम्बार्क संप्रदाय, हंस संप्रदाय या कुमार संप्रदाय के नाम से भी जाना जाता है।

379. नाभादास कृत 'भक्तमाल' से संबंधित कौन सा तथ्य सही नहीं है?

(a) यह भक्तिकालीन भक्तों के संबंध में प्रामाणिक रचना मानी जाती है।
(b) इसके पूर्वार्द्ध में कलियुग से पहले के भक्तों का उल्लेख है।
(c) इतिहास की दृष्टि से इसका उत्तरार्द्ध अधिक महत्त्वपूर्ण है।
(d) उत्तरार्द्ध में मध्यकालीन भक्तों-संतों का विस्तृत जीवन-वृत्त दिया गया है।

RPSC Assit. Prof. 2020 Paper-II

Ans. (d) : उत्तरार्द्ध में मध्यकालीन भक्त-संतों का विस्तृत जीवन-वृत्त दिया गया है। नाभादास कृत 'भक्तमाल' के संबंध में उपर्युक्त कथन सही नहीं है। सन् 1585 ई. के लगभग नाभादास कृत 'भक्तमाल' के दो पहलू स्पष्ट होते हैं। प्रथम में 'छप्पयों' के माध्यम से रामानुजाचार्य से पूर्व के सभी प्रकार के भक्तों के नामों का स्मरण मात्र है दूसरे पहलू में एक-एक कवि या भक्त पर एक पूरा छप्पय, जिसमें उस भक्त कवि के विशिष्ट गुणों पर प्रकाश पड़ता है। एक छप्पय में 6 चरण होते है, जिसमें किसी कवि की जीवनी नहीं आ सकती। अतः इसे जीवनी साहित्य नहीं कहा जा सकता।

380. भक्तिकालीन रामकाव्य-धारा के विषय में असंगत कथन है

(a) इस साहित्य में तुलसीदास का प्रमुख स्थान है।
(b) इसमें लोकसंग्रह की भावना है।
(c) यह काव्य अवधी और ब्रज दोनों में रचित हैं।
(d) यह कृष्ण-काव्य के प्रभाव से पूर्णतः मुक्त है।

RPSC Assit. Prof. 2020 Paper-II

Ans. (d) : 'यह कृष्ण-काव्य के प्रभाव से पूर्णतः मुक्त है।' यह कथन भक्तिकालीन रामकाव्य-धारा के विषय में असंगत है।

रामकाव्य कृष्ण-काव्य के प्रभाव से पूर्णतः मुक्त नहीं है। रामकाव्य में काव्य की प्रायः सभी शैलियाँ दृष्टिगोचर होती हैं। तुलसीदास ने रामकाव्य के सृजन में विद्यापति और सूरदास के गीति पद्धति का सफलतापूर्वक प्रयोग किया है।

रामकाव्य धारा की प्रमुख विशेषतायें:-

1. लोकमंगल की भावना
2. अवधी और ब्रज दोनों भाषाओं की बहुलता
3. समन्वय की भावना
4. प्रबंध एवं मुक्तक रचना की प्रवृत्ति।

381. भक्तमाल (नाभादासकृत) के टीकाकार हैं

(a) प्रियादास (b) विट्ठलनाथ
(c) अग्रदास (d) कील्हा

RPSC Assit. Prof. 2020 Paper-II

Ans. (a) : नाभादास कृत 'भक्तमाल' के टीकाकार प्रियादास जी है। इन्होंने 'भक्तमाल' की टीका 'भक्तिरस बोधिनी' के नाम से की। इनकी अन्य रचनाएँ-रसिकमोहिनी, भक्तसुमिरनी हैं।

विट्ठलनाथ – यमुनाष्टक
अग्रदास – ध्यानमंजरी

382. 'मूल गोसाईं चरित' के रचनाकार हैं।

(a) नाभादास (b) प्रियादास
(c) बेनीमाधवदास (d) नरहरिदास

RPSC Assit. Prof. 2020 Paper-II

Ans. (c) : 'मूल गोसाईं चरित' के रचनाकार 'बेनीमाधवदास' हैं। अपनी इस रचना में बेनीमाधवदास ने तुलसीदास का चरित्र-चित्रण करने के साथ ही मीराबाई और तुलसीदास के पत्राचार का उल्लेख भी किया है।

रचनाकार	रचना
नाभादास	भक्तमाल
प्रियादास	भक्तिरस बोधिनी
नन्ददास	रुक्मिणी मंगल

383. ''उन्होंने रचना-नैपुण्य का भद्दा प्रदर्शन कहीं नहीं किया है और न शब्द-चमत्कार आदि के खेलवाड़ों में वे फँसे हैं....उनकी सी भाषा की सफाई और किसी कवि में नहीं।'' शुक्लजी का यह कथन किस कवि के विषय में है?

(a) तुलसीदास (b) जायसी
(c) बिहारी (d) घनानंद

RPSC Assit. Prof. 2020 Paper-II

Ans. (a) : शुक्ल जी का उपर्युक्त कथन भक्त कवि तुलसीदास के विषय में हैं।

"जायसी बड़े भावुक भगवद् भक्त थे और अपने समय में बड़े ही सिद्ध और पहुँचे हुये फकीर माने जाते थे।" (रामचंद्र शुक्ल-जायसी के संबंध में)

"प्रेममार्ग का एक ऐसा प्रवीण और धीरज पथिक तथा जबादानी का ऐसा दावा रखने वाला ब्रजभाषा का दूसरा कवि नहीं हुआ है।" (रामचंद्र शुक्ल-घनानंद के संबंध में)

384. "कवित्त विवेक एक नहिं मोरे, सत्य कहहुं लिखि कागद कोरें।" यह विनयोक्ति किस कवि की है?

(a) कबीर (b) सूरदास
(c) रहीम (d) तुलसीदास

RPSC Assit. Prof. 2020 Paper-II

Ans. (d) : प्रस्तुत विनयोक्ति गोस्वामी तुलसीदास की प्रमुख रचना 'रामचरितमानस' के 'बालकाण्ड' से अवतरित है।

कवि	रचना	जन्म-मृत्यु
कबीरदास	बीजक	1398-1518 ई.
सूरदास	सूरसागर	1478-1583 ई.
रहीम	मदनाष्टक	1553-1626 ई.

385. 'विज्ञानगीता' किसके द्वारा लिखी गई है?

(a) नाभादास (b) तुलसीदास
(c) केशवदास (d) मलूकदास

UP PGT 2021

Ans. (c) : 'विज्ञानगीता' केशवदास द्वारा लिखी गई है।

'विज्ञानगीता' में आध्यात्मिक विषय को प्रस्तुत किया गया है तथा 'नखशिख' में परम्परागत उपमानों की सहायता से राधा के विभिन्न अंगों का वर्णन हुआ है।

केशवदास की कविप्रिया, रसिकप्रिया और छन्दमाल रीतिग्रन्थ है, जिनमें क्रमशः रस, अलंकार और छन्दों का निरूपण किया गया है।

मलूकदास की रचनाएँ- रत्नखान, ज्ञानबोध, ज्ञानपरोछ, ध्रुवचरित आदि।

नाभादास की रचनाएँ- भक्तमाल, अष्टयाम, रामभक्ति सम्बंधी स्फुट पद।

तुलसीदास की रचनाएँ- रामचरितमानस, पार्वती मंगल, विनय पत्रिका, रामलला नहछू, हनुमानबाहुक।

386. 'संबत सोरह सै इकतीसा।
करउँ कथा हरि पद धरि सीसा॥'
उपर्युक्त पंक्तियों में किस प्रसिद्ध ग्रन्थ के रचनाकाल का संकेत किया गया है?

(a) पदमावत (b) अनुराग बाँसुरी
(c) रामचरितमानस (d) रामचरित चिंतामणि

UP PGT 2021

Ans. (c) : उपर्युक्त पंक्ति श्रीरामचरितमानस के लिए कही गई है। श्रीरामचरितमानस की रचना संवत् 1631 में चैत्र शुक्ल रामनवमी (मंगलवार) को प्रारंभ हुआ। इसकी रचना में कुल 2 वर्ष 7 महीना 26 दिन लगा।

- 'श्रीरामचरितमानस' तुलसी द्वारा रचित एक विशाल महाकाव्य है, जिसमें 7 काण्ड है।
- 'श्रीरामचरितमानस' की रचना गोस्वामी तुलसीदास ने स्वान्तः सुखाय के साथ लोकहित एवं लोक मंगल के लिए की।
- पद्मावत- जायसी द्वारा रचित महाकाव्य है, यह अवधी भाषा में रचित है।
- नूर मुहम्मद की रचना 'अनुराग बाँसुरी' है।

387. 'मानव-प्रकृति का ज्ञान तुलसीदास से अधिक उस युग में किसी को नही था।' यह कथन किसका है?

(a) रामचन्द्र शुक्ल (b) हजारी प्रसाद द्विवेदी
(c) रामविलास शर्मा (d) विश्वनाथ त्रिपाठी

UP PGT 2021

Ans. (b) : मानव प्रकृति का ज्ञान तुलसी ....। यह कथन हजारीप्रसाद द्विवेदी का है।

हजारीप्रसाद द्विवेदी की प्रमुख रचनाएँ- हिन्दी साहित्य की भूमिका (1940 ई.), हिन्दी साहित्य का आदिकाल (1952 ई.)।

रामविलास शर्मा की प्रमुख रचनाएँ- प्रगति और परंपरा (1949 ई.), साहित्य और संस्कृति (1949 ई.), प्रेमचन्द और उनका युग (1952 ई.)।

रामचन्द्र शुक्ल की प्रमुख रचनाएँ- रसमीमांसा, चिंतामणि, हिन्दी साहित्य का इतिहास आदि हैं।

388. रामकाव्य धारा से संबंधित कृति 'रामध्यानमंजरी' इनमें से किसकी है?

(a) प्राणचन्द चौहान की (b) अग्रदास की
(c) हृदयराम की (d) प्रियादास की

UPPSC GIC 2021

Ans. (b) : रामकाव्य धारा से संबंधित कृति 'रामध्यानमंजरी' अग्रदास की कृति है।

अग्रदास के अन्य प्रमुख ग्रंथ– हितोपदेश उपखाणा बावनी, ध्यान मंजरी, रामध्यानमंजरी, कुंडलिया, अष्टयाम या रामाष्टयाम।

प्रियादास	–	भक्ति रसबोधिनी (1769 संवत्)
प्राणचन्द्र	–	रामायण महानाटक (1667 संवत्)
हृदयराम	–	हनुमन्नाटक (1680 संवत्)

389. 'गोरख जगायो जोग, भगति भगायो लोग' –ये काव्य-पंक्ति इनमें से किस कृति में है?

(a) बीजक (b) गोरख बानी
(c) कवितावली (d) नाथ बानी

UPPSC GIC 2021

Ans. (c) : "गोरख जगायो जोग, भगति भगायो लोग' –ये काव्य पंक्ति 'कवितावली' ग्रंथ से है। इसके रचनाकार तुलसीदास हैं।

- गोरखनाथ की रचनाओं का संकलन और संपादन डॉ. पीताम्बर दत्त बड़थ्वाल ने किया जो 'गोरखबानी' के नाम से प्रकाशित हुआ।
- 'बीजक' संत कबीर की प्रामाणिक कृति है जिसके रमैनी, शब्द, ज्ञान चौतीसा, विप्रमतिसी, कहरा, बसंत, चाचर, बेलि, बिरहुली, हिण्डोला, साखी नामक 11 प्रकरण है।

तुलसीदास की कृतियाँ– वैराग्य संदीपनी, रामाज्ञा प्रश्न (ज्योतिष ग्रंथ), रामलला नहछू, जानकी मंगल, पार्वती मंगल, कृष्ण-गीतावली, गीतावली, विनय पत्रिका, दोहावली, बरवै रामायण, कवितावली।

390. तुलसीदास ने कौन-सी रचना अपनी शारीरिक पीड़ा के निवारणार्थ की थी?

(a) विनयपत्रिका (b) हनुमान बाहुक
(c) रामचरित मानस (d) जानकी मंगल

UP TGT- 2021

Ans. (b) : तुलसीदास ने 'हनुमान बाहुक' की रचना अपनी शारीरिक पीड़ा के निवारणार्थ की थी। यह तुलसीदास की हनुमत-भक्ति संबंधी स्वतंत्र रचना है। रामचरितमानस, रामललानहछू, बरवै रामायण, पार्वती मंगल, दोहावली, कवितावली, गीतावली, विनयपत्रिका, हनुमान बाहुक और ही तुलसी की अन्य अनेक प्रमुख रचना हैं जिन्होंने तुलसीदास को हिन्दी साहित्य का ही नहीं अपितु भारतीय जन-मानस के पटल पर अमर बना दिया है।

**391. साखी सबदी दोहरा, कहि किहनी उपखान।
भगति निरूपहिं भगत कलि, निन्दहिं बेद पुरान॥
उपर्युक्त पंक्तियों के रचनाकार हैं**

(a) तुलसीदास (b) कबीर
(c) मलिक मुहम्मद जायसी (d) कुतुबन

UP TGT- 2021

Ans. (a) : उपर्युक्त पंक्तियाँ तुलसीदास कृत 'दोहावली' से ली गयी है। निम्नलिखित पंक्तियाँ और रचनाकार -

पंक्ति	रचनाकार
हरि मोरा पिउ मैं हरि की बहुरिया	कबीरदास
बाहर वह भीतर वह होई। घर बाहर को रहै न जोई	कुतुबन
सरवर तीर पद्मिनी आई। खोंपा छोरि केस मुकलाई	जायसी

**392. 'ईश्वर अंस जीव अबिनासी।
चेतन अमल सहज सुख रासी॥
इन पंक्तियों में कौन-सा दर्शन है?**

(a) अद्वैतवाद (b) भेदाभेदवाद
(c) द्वैताद्वैतवाद (d) विशिष्टाद्वैतवाद

UGC NET Dec. 2020/June 2021 Shift-II

Ans. (d) : 'ईश्वर अंस .... सुख रासी।। पंक्तियों में विशिष्टाद्वैतवाद दर्शन है। रामानुजाचार्य विशिष्टाद्वैतवाद दर्शन के प्रवर्तक हैं।

दर्शन		प्रवर्तक
अद्वैतवाद	–	शंकराचार्य
द्वैताद्वैतवाद (भेदाभेदवाद)	–	निम्बार्काचार्य
द्वैतवाद	–	मध्वाचार्य
शुद्धाद्वैतवाद	–	विष्णुस्वामी

393. तुलसीदास ने 'रामचरितमानस' के 'उत्तरकांड' में क्या प्रतिपादित किया है?

1. ज्ञान की अपेक्षा भक्ति सुसाध्य और आशुफलदायिनी है।
2. कलियुग में असंतो की संगत लाभदायक होगी।
3. कलियुग में मनुष्य वर्ण, धर्म और आश्रम का पालन करने वाले होंगे।
4. कलियुग में लोग लोभ और स्वार्थ के वशीभूत होंगे और माता-पिता तथा गुरू का अनादर करेंगे।
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए।

(a) 1 और 2 (b) 2 और 3
(c) 3 और 4 (d) 1 और 4

UGC NET Dec. 2020/June 2021 Shift-II

Ans. (d) : गोस्वामी तुलसीदास ने 'रामचरितमानस' के 'उत्तरकांड' में ज्ञान की अपेक्षा भक्ति को कहीं अधिक सुसाध्य और आशुफल दायिनी कहा है तथा कलियुग में लोग स्वार्थ के वशीभूत होंगे और माता-पिता तथा गुरु का अनादर करेंगे। 'रामचरितमानस' में तुलसी केवल कवि रूप में ही नहीं, उपदेशक के रूप में भी सामने आते है। अतः कथन 1 और 4 दोनों सही है। 'रामचरित मानस' को मानव समाज का दर्पण कहा गया है। इसमें कुल 'सात' काण्ड है जो इस प्रकार है- 1. बालकाण्ड, 2. अयोध्याकाण्ड, 3. अरण्यकाण्ड, 4. किष्किन्धाकाण्ड 5. सुन्दरकाण्ड, 6. लंकाकाण्ड, 7. उत्तरकाण्ड।

394. निम्नलिखित में से कौन निर्गुण भक्तिकाव्य के कवि नहीं हैं?

(a) मलूक दास (b) बाबा लाल दास
(c) ईश्वरदास (d) सुंदरदास

UGC NET Dec. 2020/June 2021 Shift-I

Ans. (c) : 'ईश्वरदास' निर्गुण भक्तिकाव्य के कवि नहीं है। ईश्वरदास सगुण-भक्ति धारा के कवि हैं, जबकि मलूक दास, बाबा लाल दास तथा सुन्दरदास निर्गुण भक्तिकाव्य के कवि हैं।

395. गोस्वामी तुलसीदास जी ने रामचरितमानस की रचना किस उद्देश्य से की थी?

(a) मोक्ष प्राप्ति के लिए
(b) लोकरंजन के लिए
(c) राम कथा का स्मरण करने-कराने के लिए
(d) स्वान्तः सुखाय

DSSSB TGT (Female) 05.09.2021 Shift-II

Ans. (d) : 'रामचरितमानस' (सं. 1631) के संदर्भ में गोस्वामी तुलसीदास ने कहा है 'स्वातः सुखाय तुलसी रघुनाथ गाथा' अतः विकल्प (d) अर्थात गोस्वामी जी ने रामचरितमानस की रचना स्वांतः सुखाय के लिए किया, संगत उत्तर है। 'मानस' में सात काण्ड या सोपान है- (1) बालकाण्ड, (2) अयोध्याकाण्ड, (3) अरण्यकाण्ड, (4) किष्किन्धाकाण्ड, (5) सुन्दरकाण्ड, (6) लंकाकाण्ड, (7) उत्तरकाण्ड।

396. गीतावली किसकी काव्य कृति है?

(a) तुलसीदास (b) मयूर कवि
(c) दंडी (d) हजारीप्रसाद द्विवेदी

DSSSB PGT 4.7.2021 Shift-I

Ans. (a) : 'गीतावली' (सं. 1630-70 ई.) गोस्वामी तुलसीदास का ब्रजभाषा में रचित गीतिकाव्य है। कृष्ण गीतावली तथा विनयपत्रिका भी ब्रजभाषा में रचित गीतिकाव्य हैं। रामविलास शर्मा ने तुलसीदास को 'जातीय कवि' कहा है।

397. 'स्वांतः सुखाय' कहकर किसने उसे काव्य का प्रयोजन स्वीकार किया?

(a) तुलसीदास (b) सूरदास
(c) चंद बरदाई (d) कबीर

DSSSB PGT 4.7.2021 Shift-I

Ans. (a) : गोस्वामी तुलसीदास जी ने अपने काव्य की रचना 'स्वातः सुखाय' के साथ-साथ 'लोकहित' एवं 'लोकमंगल' के लिए किया है। 'बालकांड' के आरंभ में तुलसीदास लिखते हैं-

'स्वांतः सुखाय तुलसी रघुनाथ गाथा।'

398. निम्न कवियों में कौन हिंदी का महाकवि माना जाता है?

(a) कालिदास (b) भर्तहरी
(c) अश्वघोष (d) तुलसीदास

DSSSB PGT 4.7.2021 Shift-I

Ans. (d) : दिए गए विकल्पों में कालिदास, भर्तृहरि तथा अश्वघोष संस्कृत भाषा के कवि हैं अतः तुलसीदास हिंदी के महाकवि हैं। हिंदी का प्रथम महाकवि चन्दबरदाई को माना जाता है। बुद्धचरितम्, अश्वघोष की प्रसिद्ध रचना है। भर्तृहरि अपनी शतकत्रय (नीतिशतक, श्रृंगारशतक, वैराग्यशतक) रचनाओं के लिए जाने जाते हैं।

399. तुलसीदास के निम्न ग्रंथों को रचनाकाल के अनुसार आरोही क्रम में लगाइए।

(a) जानकी मंगल, कवितावली, गीतावली, रामचरितमानस
(b) जानकी मंगल, गीतावली, रामचरितमानस, कवितावली
(c) गीतावली, रामचरितमानस, जानकी मंगल, कवितावली
(d) गीतावली, कवितावली, रामचरितमानस, जानकी मंगल

DSSSB PGT 4.7.2021 Shift-I

Ans. (c) : तुलसीदास के ग्रंथों का रचनाकाल के अनुसार आरोही क्रम है- गीतावली, रामचरितमानस, जानकी मंगल, कवितावली, अतः विकल्प (c) संगत उत्तर है। तुलसीदास के अन्य ग्रंथ निम्नलिखित हैं- वैराग्य संदीपनी, पार्वती मंगल, विनय पत्रिका, कृष्णगीतावली।

नोट – आयोग द्वारा उत्तर (c) माना गया है जबकि डॉ. उदयभानु सिंह के अनुसार तुलसीदास की रचनाओं का क्रम इस प्रकार है–

(1) वैराग्य संदीपनी सं. (1626-27)
(2) रामाज्ञा प्रश्न सं. (1627-28)
(3) रामलला नहछू सं. (1628-29)
(4) जानकी मंगल सं. (1629-30)
(5) रामचरित मानस सं. (1631)
(6) पार्वतीमंगल सं. (1643)
(7) कृष्ण गीतावली सं. (1643-60)
(8) गीतावली सं. (1630-70)
(9) विनय पत्रिका सं. (1631-79)
(10) दोहावली सं. (1626-80)
(11) बरवै रामायण सं. (1630-80)
(12) कवितावली सं. (1631-80)

400. रामायण में किस भाषा का प्रयोग किया गया है?

(a) उर्दू (b) उपभ्रंश
(c) संस्कृत (d) पाली

DSSSB PGT 4.7.2021 Shift-I

Ans. (c) : आदिकवि वाल्मीकि ने रामायण की रचना संस्कृत भाषा में की, इसे 'वाल्मीकि रामायण' के नाम से भी जाना जाता है। इस ग्रन्थ में 24000 श्लोक समाहित हैं।

401. 'राम कैसो जस अध-ऊरध गनन है।' किसकी पंक्ति है?

(a) तुलसीदास (b) मतिराम
(c) सेनापति (d) उग्रदास

DSSSB PGT 4.7.2021 Shift-I

Ans. (c) : उपर्युक्त पंक्ति रामभक्ति शाखा के कवि 'सेनापति' की है। सेनापति का जन्म 1559 ई. के आसपास माना जाता है। इनके गुरु का नाम 'हीरामणि दीक्षित' था। कवित्त रत्नाकर, काव्य कल्पद्रुम इनके दो महत्वपूर्ण ग्रन्थ है। ऋतुवर्णन के ये सिद्धहस्त कवि है।

402. किस रचनाकार के बचपन का नाम रामबोला था?

(a) तुलसीदास (b) केशवदास
(c) कबीरदास (d) विद्यापति

DSSSB TGT (Female) 04.09.2021 Shift-II

Ans. (a) : तुलसीदास के बचपन का नाम 'रामबोला' था। तुलसीदास (1532-1623ई.) के पिता आत्माराम दुबे, माता का नाम हुलसी तथा पत्नी रत्नावली थी। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल तुलसीदास को 'स्मार्त वैष्णव' मानते हैं। आचार्य शुक्ल के अनुसार 'हिन्दी काव्य की प्रौढ़ता के युग का आरम्भ' गोस्वामी तुलसीदास द्वारा हुआ। नाभादास ने तुलसीदास को 'कलिकाल का वाल्मीकि' कहा है तथा अमृत लाल नागर ने 'मानस का हंस' कहा है।
तुलसीदास रामानुजाचार्य के 'श्री सम्प्रदाय' और विशिष्टाद्वैतवाद से प्रभावित थे। इनकी भक्ति भावना 'दास्यभाव' की थी। तुलसीदास की प्रमुख रचनाएँ हैं- रामचरितमानस, पार्वती मंगल, कृष्णगीतावली, विनयपत्रिका आदि।

403. निम्नलिखित में से कौन-सा गीति काव्य तुलसीदास का सर्वोत्तम काव्य है?

(a) कामयानी (b) बरवै रामायण
(c) प्रियप्रवास (d) रश्मिरथी

DSSSB PGT 18.7.2021 Shift-II

Ans : (b) दिए गए विकल्पों में 'बरवै रामायण' ही केवल 'तुलसीदास' की कृति है, यह अवधी भाषा में रचित मुक्तक काव्य है। प्रिय प्रवास (1914 ई.) अयोध्या सिंह उपाध्याय कृत खड़ी बोली हिन्दी का प्रथम महाकाव्य माना जाता है। रश्मिरथी (1952 ई.) रामधारी सिंह 'दिनकर' का खण्डकाव्य है। कामायनी (1935 ई.) जयशंकर प्रसाद का महाकाव्य है।

404. ''खेती न किसान को भिखरी को न भीख, बलि, बनिक को बनिज, न चाकर को चाकरी।'' पंक्ति तुलसी की किस कृति से संबंधित है?

(a) गीतावली (b) विनय पत्रिका
(c) रामचरित मानस (d) कवितावली

राजस्थान स्कूल शिक्षा प्राध्यापक परीक्षा 2018
DSSSB PGT 18.7.2021 Shift-II

Ans : (d) उपर्युक्त पंक्ति तुलसीदास की कृति 'कवितावली' से है। यह ब्रजभाषा में रचित मुक्तक काव्य है। 'कवितावली' में बनारस (काशी) के तत्कालीन समय में फैले 'महामारी' का वर्णन 'उत्तरकाण्ड' में किया गया है।

405. 'विनय पत्रिका' किस भाषा में लिखी गई?

(a) ब्रजभाषा (b) संस्कृत
(c) पंजाबी (d) बंगला

DSSSB PGT 18.7.2021 Shift-II

Ans : (a) 'विनय पत्रिका' तुलसीदास द्वारा ब्रजभाषा में रचित गीतिकाव्य है। ब्रजभाषा में ही दो अन्य गीतिकाव्य कृष्ण गीतावली तथा गीतावली भी तुलसीदास की कृति है। 'रामचरितमानस' और 'कवितावली' मे गोस्वामी जी ने 'कलिकाल' का वर्णन किया है।

406. जहाँगीर जस चन्द्रिका के रचयिता कौन हैं?

(a) देव (b) मतिराम
(c) चिंतामणी (d) केशव

DSSSB PGT 18.7.2021 Shift-II

Ans : (d) 'जहाँगीर जस चन्द्रिका' केशवदास की रचना है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल केशवदास को अलंकारवादी मानते हैं। आचार्य शुक्ल केशव की आलोचना करते हुए लिखते हैं- ''केशव को कवि हृदय नहीं मिला था।'' डॉ. विजयपाल सिंह ने केशव को 'कोर्ट का कवि' कहा है।

407. कवित्त रत्नाकर का लेखक कौन है?

(a) सेनापति (b) बलभद्र मिश्र
(c) नरोत्तमदास (d) केशवदास

DSSSB PGT 18.7.2021 Shift-II

Ans : (a) 'कवित्त रत्नाकर' सेनापति का ग्रन्थ है। इनका अन्य उपलब्ध ग्रन्थ 'काव्य कल्पद्रुम' है। सेनापति ने अपना सम्पूर्ण काव्य ब्रजभाषा में रचा है। आचार्य शुक्ल इन्हें ऋतु वर्णन का सबसे बड़ा शृंगारी कवि मानते हैं।

408. ब्रजभाषा का कौन-सा कवि ऋतु वर्णन के लिए विख्यात है?

(a) मतिराम (b) देव
(c) पद्माकर (d) सेनापति

DSSSB PGT 18.7.2021 Shift-II

Ans : (d) सेनापति का जन्म 1589 ई. के आस पास माना जाता है। सेनापति के दो ग्रन्थ उपलब्ध हैं- कवित्त रत्नाकर और काव्य कल्पद्रुम। ऋतु वर्णन में इनका मन अधिक रमा है। आचार्य शुक्ल ने सेनापति के सन्दर्भ में लिखा है- 'ये बड़े ही सहृदय कवि थे। ऋतु वर्णन तो इनके जैसा और किसी शृंगारी कवि ने नहीं किया।'

409. तुलसीदास जी ने निम्न में से किस गुरु से शास्त्रों का अध्ययन किया?

(a) शेषसनातन (b) रामानंद
(c) शेख फरीद (d) राघवाचार्य

DSSSB PGT 18.7.2021 Shift-II

Ans : (a) तुलसीदास जी ने शास्त्रों का अध्ययन काशी में गुरु 'शेष सनातन' के पास रहकर किया, जबकि राम नाम की दीक्षा नरहरिदास से पाई थी।

410. दक्षिण के अलवार संत किस शाखा से संबंधित माने जाते हैं ?

(a) प्रेम मार्गी (b) ज्ञान मार्गी
(c) राम भक्ति शाखा (d) कृष्ण भक्ति शाखा

UPHESC Assit. Prof. 2021

Ans. (c) : दक्षिण के आलवार संत 'राम भक्ति शाखा' से संबंधित माने जाते हैं। दक्षिण में आलवार संतों की वाणी से रामभक्ति प्रस्फुटित हुई। ये मुख्य रूप से विष्णु के भक्त थे। आलवार का शाब्दिक अर्थ 'मग्न' (भगवान की भक्ति में डूबा हुआ) होता है। आलवार संतों की संख्या 12 है, जो निम्न है-

आलवार संत	अवतार
मोयगै आलवार	पाञ्चजन्य (विष्णु का शंख)
भूतत्तालवार	कौमोदकी
पेयालवार	नन्दक (विष्णु की तलवार)
तिरूमालिसै आलवार	सुदर्शन चक्र
नम्मालवार	विश्वकसेन (विष्णु के सेनापति)
मधुरकवि आलवार	गरूड़
कुलशेखरालवार	कौस्तुभ मणि
पेरियालवार	गरूड़
आण्डाल (महिला आलवार)	भूदेवी (विष्णु पत्नी तथा पृथ्वी देवी)
तोण्डरडिप्पोड़ियालवार	वैजयंती (विष्णु की माला)
तिरुप्पाणालवार	श्री वत्सल
तिरुमंगैआलवार	शारंग (विष्णु का धनुष)

411. तुलसीदास की निम्नलिखित कृतियों में कौन सी कृति कांडों में विभाजित नहीं है?

(a) पार्वती मंगल (b) बरवै रामायण
(c) गीतावली (d) कवितावली

UPHESC Assit. Prof. 2021

Ans. (a) : तुलसीदास कृत 'पार्वती मंगल' कांडों मे विभाजित नहीं है बल्कि यह प्रबंध काव्य है। यह अवधी में रचित है। इसमें शिव-पार्वती विवाह का वर्णन है, इसका आधार कालिदास कृत 'कुमारसंभवम्' है जबकि रामचरितमानस में शिव-पार्वती कथा का आधार 'शिव पुराण' है।

बरवै रामायण – यह सात काण्डों में विभाजित है। यह ग्रंथ रहीम के 'बरवै नायिका भेद' से प्रभावित है।

गीतावली – यह सात काण्डों में विभाजित है, इसमे राम कथा का वर्णन है। यह राम गीतावली या पदावली रामायण के नाम से भी प्रसिद्ध है।

कवितावली – इसमें रामकथा सात काण्डों में है। कवितावली में काशी की महामारी का वर्णन 'उत्तरकाण्ड' में किया गया है, हनुमानबाहुक इसी का अंश माना जाता है।

412. श्री रामानुजाचार्य की भक्ति किस भाव की है ?

(a) दास्यभाव (b) साख्यभाव
(c) दाम्पत्यभाव (d) इनमें से कोई नहीं

UPHESC Assit. Prof. 2021

Ans. (a) : श्री रामानुजाचार्य की भक्ति दास्यभाव की है। रामानुजाचार्य ने 'अद्वैत वेदान्त' का खण्डन कर 'विशिष्टाद्वैतवाद' की स्थापना की, जिसके अनुसार ब्रह्म के ही अंश जगत के सारे प्राणी हैं। रामानुजाचार्य को शेष या लक्ष्मण का अवतार माना जाता है।

413. राघवानंद जी किस महान व्यक्ति के गुरु थे?

(a) कबीर (b) मध्वाचार्य
(c) रामानंद (d) सूरदास

DSSSB PGT Hindi (Male) 18.07.2021 Shift-I

Ans. (c) : राघवानन्द जी रामानन्द के गुरु थे।
- नाभादास के 'भक्तमाल' में रामानन्द के 12 शिष्यों का वर्णन मिलता है।
- आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने रामानन्द को 'आकाश धर्मागुरु' कहा है।
- रामानन्द ने विधर्मियों से मुक्ति के लिए अपने भक्तों को 'रामतारक मंत्र' दिया।

रामानन्द के ग्रंथ– रामार्चन पद्धति, रामरक्षा स्त्रोत, रामतारक मंत्र, हनुमान जी की आरती, वैष्णव मताब्ज भास्कर, योग चिंतामणि।

414. "गोरख जगायो जोग, भगति भगायो लोग।" किस कवि की पंक्तियाँ हैं?

(a) सूरदास (b) तुलसीदास
(c) निराला (d) रैदास

UPPSC GDC 2021

Ans. (b) : "गोरख जगायो जोग, भगति भगायो लोग।" गोस्वामी तुलसीदास की पंक्ति है। गोस्वामी तुलसीदास भक्तिकालीन रामभक्ति शाखा के प्रतिनिधि कवि हैं। इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं- कवितावली, गीतावली, विनय पत्रिका, रामचरितमानस आदि।

विकल्पगत अन्य कवियों की प्रमुख पंक्तियाँ हैं-
- सोई कुलीन बड़ौ सुन्दर सोइ जा पर कृपा करै। – सूरदास
- यह सच है! बार-बार हार-हार मैं गया। – निराला
- प्रभु जी तुम मोती हम धागा, जैसे सोनहिं मिलत सुहागा – रैदास

415. निम्नलिखित कृतियों को उनके रचनाकारों के साथ सुमेलित कीजिए

सूची-I	सूची-II
(A) भरत मिलाप	(i) अग्रदास
(b) ध्यानमंजरी	(ii) ईश्वरदास
(C) रामायण महानाटक	(iii) लालदास
(D) अवध-विलास	(iv) प्राणचंद चौहान
	(v) हृदयराम

कोड-

	A	B	C	D
(a)	ii	i	iv	iii
(b)	v	ii	iii	i
(c)	iii	v	i	ii
(d)	ii	i	v	iii

UGC NET III[rd] Paper Dec. 2013

Ans. (a)

रचना	रचनाकार
भरत मिलाप	ईश्वरदास
ध्यान मंजरी	अग्रदास
रामायण महानाटक	प्राणचन्द चौहान
अवध विलास	लालदास
हनुमन्नाटक	हृदयराम

416. ऋतुवर्णन करने वाले कवियों में सर्वश्रेष्ठ कहे गये हैं?

(a) सेनापति (b) गंगकवि
(c) केशवदास (d) बनारसीदास

राजस्थान कॉलेज लेक्चरर भर्ती परीक्षा (पेपर-II) 2014

Ans. (a) : 'सेनापति' ऋतुवर्णन करने वाले कवियों में सर्वश्रेष्ठ कहे जाते हैं। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने सेनापति के संदर्भ में लिखा है– "ये बड़े सहृदय कवि थे। ऋतु वर्णन तो इनके जैसा और किसी शृंगारी कवि ने नहीं किया।" इनकी दो प्रमुख रचनाएँ हैं– कवित्त रत्नाकर, काव्य कल्पद्रुम।

417. भक्तिकाल के किस कवि ने संस्कृत को छोड़कर भी संस्कृत की शास्त्रीय परम्परा का निर्वहन किया है?

(a) जायसी (b) सूरदास
(c) तुलसीदास (d) नंददास

UP TGT 2004

Ans. (c) भक्ति काल के रामकाव्य धारा के अग्रणी कवि तुलसीदास ने अपनी रचनाओं में संस्कृत कवि न होते हुए भी संस्कृत की काव्य शास्त्रीय परम्परा का निर्वाह किया है। रामचरितमानस, कवितावली, दोहावली, विनयपत्रिका, गीतावली, बरवै रामायण आदि तुलसीदास की कृतियां हैं। सूरसागर, साहित्य लहरी एवं सूरसारावली सूरदास की, पद्मावत जायसी की तथा रस मंजरी, अनेकार्थ मंजरी, रास पंचाध्यायी आदि नन्ददास की रचनाएँ हैं।

418. "भक्ति– रस का पूर्ण परिपाक जैसा 'विनयपत्रिका' में देखा जाता है, वैसा अन्यत्र नहीं।" यह कथन है–

(a) आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी
(b) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
(c) डॉ. नगेन्द्र
(d) वियोगीहरि

राजस्थान कॉलेज लेक्चरर भर्ती परीक्षा (पेपर-I) 2014

Ans. (b) : "भक्ति– रस का पूर्ण परिपाक जैसा 'विनयपत्रिका' में देखा जाता है, वैसा अन्यत्र नहीं।" यह कथन आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का है।

419. निम्नलिखित में से कौन–सी रचना तुलसीदास की नहीं है?

(a) बरवै रामायण (b) वैराग्य संदीपनी
(c) दोहावली (d) चित्रावली

राजस्थान कॉलेज लेक्चरर भर्ती परीक्षा (पेपर-I) 2014

Ans. (d) : 'चित्रावली' तुलसीदास की रचना नहीं है। 'चित्रावली' के रचयिता सूफी कवि उसमान हैं। जबकि रामचरितमानस, गीतावली, दोहावली, कवितावली, बरवै रामायण, विनयपत्रिका, वैराग्य संदीपनी, पार्वती मंगल, जानकी मंगल, रामलला नहछू आदि तुलसीदास की रचनाएँ हैं।

420. निम्नलिखित में से कौन 'हनुमच्चरित्र' का रचयिता है?

(a) नाभादास (b) तुलसीदास
(c) अग्रदास (d) रायमल्ल पांडे

UGC NET II[nd] Paper Dec. 2015

Ans. (d)

कवि	काव्य ग्रंथ
रायमल्ल पांडे	हनुमच्चरित (1639 ई.)
नाभादास	भक्तमाल, अष्टयाम
तुलसीदास	कवितावली
अग्रदास	ध्यानमंजरी
	रामध्यानमंजरी
	अष्टयाम या रामाष्टयाम

421. तुलसीदास किस दार्शनिक मत के भक्त कवि थे?

(a) अद्वैतवाद (b) शुद्धाद्वैतवाद
(c) द्वैतवाद (d) विशिष्टाद्वैतवाद

UP PGT 2003

Ans. (d) हिन्दी साहित्य में भक्तिकाल की सगुण काव्यधारा के रामभक्ति शाखा के सर्वप्रमुख कवि संत शिरोमणि आचार्य गोस्वामी तुलसीदास आचार्य रामानुजाचार्य के दार्शनिक मत 'विशिष्टाद्वैतवाद' से सर्वाधिक प्रभावित थे। भक्तिकाल के निर्गुण काव्य धारा के संत शाखा के प्रमुख कबीरदास जी शंकराचार्य के 'अद्वैतवाद' से प्रभावित थे। द्वैतवाद के प्रवर्तक मध्वाचार्य तथा शुद्धाद्वैतवाद के प्रवर्तक विष्णुस्वामी जी हैं।

422. "चलनौ अब केतिक, पर्नकुटी करिहौं कित ह्वै?", सीता द्वारा कही गई प्रस्तुत पंक्ति में राम ने उनकी कौन-सी मनोदशा को लक्षित किया?

(a) चंचलता (b) प्रसन्नता
(c) मधुरता (d) आतुरता

Haryana TGT 2020

Ans. (d) : "चलनौं अब केतिक, पर्नकुटी करिहौं कित ह्वै?" सीता द्वारा कही गई प्रस्तुत पंक्तियों के रचनाकार तुलसीदास जी हैं। 'कवितावली' से अवतरित प्रस्तुत 'सवैया' में सीता द्वारा उनकी 'आतुरता' की दशा को व्यक्त किया गया है।

423. ''जानत हौं हरि रूप चराचर मैं हठि नैन न लावौं।
अंजन-केस-सिखा जुवति तहँ, लोचन-सलभ पठावौं॥''
में रेखांकित अंश से असम्बद्ध अर्थ है-
(a) नेत्रों में काजल लगाए हुए
(b) पर्वत शिखर से बहते अग्नि झरने के समान
(c) सटकारे काले केश वाली
(d) दीपक की ज्योति के समान कामिनी

RPSC Assit. Prof. 2020 Paper-I

Ans. (b) : 'पर्वत शिखर से बहते अग्नि झरने के समान रेखांकित अंश से असम्बद्ध अर्थ है। शेष तीनो विकल्पों का अर्थ रेखांकित अंश से सम्बन्धित है।

ये पंक्तियाँ तुलसीदास द्वारा रचित हैं। गोस्वामी तुलसीदास (1532-1623 ई.) रामानुजाचार्य के 'श्री संम्प्रदाय' और 'विशिष्टाद्वैतवाद' से प्रभावित थे। तुलसीदास की भक्तिभावना दास्य भाव की थी। इनके दीक्षागुरू 'नरहर्यानन्द', शिक्षागुरू 'शेषसनातन' थे। गोस्वामी तुलसीदास की गुरू परम्परा का क्रम इस प्रकार है-

राघवानन्द → रामानन्द → अनन्तानन्द → नरहर्यानन्द (हरिदास) → तुलसीदास।

तुलसी की प्रथम रचना 'वैराग्य संदीपनी' तथा अंतिम रचना 'कवितावली' को माना जाता है। हालांकि कुछ विद्वान 'रामललानहछू' को पहली रचना मानते हैं। शुक्ल जी ने गोस्वामी तुलसीदास के 12 ग्रन्थों को ही प्रामाणिक माना है। इसमें 5 बड़े और 7 छोटे हैं। तुलसीदास की प्रमुख रचनाएँ निम्न हैं- वैराग्य संदीपनी, रामाज्ञाप्रश्न, रामललानहछू, जानकी मंगल, रामचरितमानस, पार्वती मंगल, कृष्णगीतावली, गीतावली, विनयपत्रिका, दोहावली, बरवै रामायण (बरवा), कवितावली, हनुमानबाहुक।

424. ''भलो पोच राम को कहैं मोहिं सब नरनारी।'' में 'पोच' से अभिप्राय है
(a) नीच
(b) उत्कृष्ट
(c) भक्त
(d) अनुगामी

RPSC Assit. Prof. 2020 Paper-I

Ans. (a) : पंक्ति में 'पोच' से अभिप्राय नीच है।

उपर्युक्त पंक्ति तुलसीदास कृत 'विनयपत्रिका' से उद्धृत है। तुलसीदास जी ने 'विनयपत्रिका' में आत्मनिवेदन व रामभक्ति की याचना की है। कलयुग के अत्याचारों के खिलाफ तुलसी की राम से फरियाद है। विनय पत्रिका ब्रजभाषा में रचित गीतिकाव्य (मुक्तक) है। यह एक प्रपत्ति काव्य है। तुलसीदास ने 'रामचरितमानस' (सात काण्ड) की रचना संवत् 1631 में चैत्र शुक्ल राम नवमी (मंगलवार) प्रारंभ किया। 'रामचरितमानस' की रचना में 2 वर्ष 7 माह 26 दिन लगा। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने 'रामचरितमानस' को 'लोकमंगल की साधनावस्था' का काव्य माना है। तुलसी की पाँच लघु कृतियाँ- वैराग्य संदीपनी, रामलला नहछू, जानकी मंगल, पार्वती मंगल और बरवै रामायण।

425. ''गज उधारि, हरि थप्यो विभीषन, ध्रुव अविचल कबहुँ न टरै।
अंबरीष की साप सुरति करि, अजहुँ महामुनि ग्लानि गरै॥''
- में महामुनि से आशय है
(a) वाल्मीकि
(b) वशिष्ठ
(c) दुर्वासा
(d) अम्बरीष

RPSC Assit. Prof. 2020 Paper-I

Ans. (c) : यहाँ 'महामुनि' से आशय दुर्वासा ऋषि से है। उपर्युक्त पंक्ति तुलसीदास द्वारा रचित 'रामचरितमानस' से उदधृत हैं।

• अम्बरीष इक्ष्वाकुवंशीय परमवीर राजा थे। यह भगीरथ के प्रपौत्र, वैवस्वत मनु के पौत्र और नाभाग के पुत्र थे। राजा अम्बरीष की कथा रामायण, महाभारत और पुराणों में विस्तार से वर्णित है। ये भगवान विष्णु के भक्त थे। वाल्मीकि संस्कृत रामायण के प्रसिद्ध रचयिता हैं जो आदिकवि के रूप में प्रसिद्ध हैं। वशिष्ठ वैदिक काल के विख्यात ऋषि हैं। वशिष्ठ एक सप्तर्षि हैं। ये राजा दशरथ के राजकुल गुरू भी थे। वशिष्ठ ब्रह्म के मानस पुत्र थे। रामचरितमानस की रचना तुलसीदास ने 'स्वान्तः सुखाय' के साथ-साथ 'लोकहित' एवं 'लोकमंगल' के लिए किया। तुलसी ने 'रामचरितमानस' की कल्पना 'मानसरोवर' के रूपक के रूप में की है। अयोध्याकाण्ड को 'रामचरितमानस' का 'हृदयस्थल' कहा जाता है। इस काण्ड की 'चित्रकूट सभा' को आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने 'एक आध्यात्मिक घटना' की संज्ञा प्रदान की। 'रामचरितमानस' पर सर्वाधिक प्रभाव 'अध्यात्म रामायण' का पड़ा है। आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी ने लिखा है ''तुलसी का सम्पूर्ण काव्य समन्वय की विराट चेष्टा है।''

426. वियोगी हरि ने तुलसीदास को किस सम्प्रदाय में परिगणित किया है?
(a) स्मार्त वैष्णव
(b) वेदान्ती
(c) निम्बार्की
(d) रामानन्दी

RPSC Assit. Prof. 2020 Paper-I

Ans. (d) : वियोगीहरि ने तुलसीदास को रामानन्दी सम्प्रदाय में परिगणित किया है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल तुलसीदास को 'स्मार्त वैष्णव' मानते हैं। शुक्ल जी तुलसीदास को रामानंद की वैरागी परम्परा में नहीं मानते। आस्तिक व पंचदेवोपासक को 'स्मार्त' कहते हैं। तुलसीदास पर 'विशिष्टाद्वैतवाद' व 'श्रीसंप्रदाय' (रामानुजाचार्य) का प्रभाव है। तुलसीदास को हिन्दी का जातीय कवि कहा जाता है। तुलसीदास ने नवधा भक्ति में दास्यभक्ति को प्रमुखता से स्थान दिया है। आचार्य शुक्ल के अनुसार 'हिन्दी काव्य की प्रौढ़ता के युग का आरम्भ' गोस्वामी तुलसीदास द्वारा हुआ। नाभादास ने तुलसीदास को 'कलिकाल का वाल्मीकि' कहा है। अमृतलाल नागर ने 'मानस का हंस' कहा है। तुलसीदास द्वारा रचित 'रामाज्ञा प्रश्न' एक 'ज्योतिष ग्रन्थ है। 'रामचरितमानस' और 'कवितावली' में गोस्वामी जी ने कलिकाल का वर्णन किया है। रामचरितमानस में सात काण्ड हैं- 1. बालकाण्ड 2. अयोध्याकाण्ड 3. अरण्य काण्ड 4. किष्किन्धाकाण्ड 5. सुन्दरकाण्ड 6. लंकाकाण्ड 7. उत्तरकाण्ड। तुलसीदास ने अपने बाहु रोग की मुक्ति के लिए 'हनुमानबाहुक' की रचना की। 'कृष्ण गीतावली' में गोस्वामी जी ने कृष्ण से सम्बन्धी पदों की रचना की तथा 'पार्वती मंगल' में पार्वती और शिव के विवाह का वर्णन है।

427. कठिन काव्य का प्रेत किस कवि को कहा जाता है?
(a) भूषण
(b) पद्माकर
(c) घनानंद
(d) केशव

DSSSB PGT Hindi (Male) 18.07.2021 Shift-I

Ans. (d) : 'कठिन काव्य का प्रेत' केशवदास को कहा जाता है। आचार्य शुक्ल जी केशव को 'कठिन काव्य का प्रेत' कहते हैं। शुक्ल जी– ''केशव को कवि हृदय नहीं मिला था। उनमें वह सहृदयता और भावुकता न थी, जो एक कवि में होनी चाहिए।''

केशवदास की कृतियाँ–

रसिक प्रिया, कविप्रिया, रामचन्द्रिका, रतन बावनी, जहाँगीर जस चन्द्रिका, विज्ञान गीता, छन्द माला आदि।

आचार्य शुक्ल जी– "रामचन्द्रिका में केशव को सर्वाधिक सफलता मिली है संवाद-योजना में केशव के पात्र बातों में से बात निकालकर संवाद करते हैं।"

428. रामचरितमानस की रचना कब प्रारंभ हुई?

(a) 1633 वि. (b) 1653 वि.

(c) 1631 वि. (d) 1680 वि.

DSSSB PGT Hindi (Male) 18.07.2021 Shift-I

UP PGT 2005

Ans. (c) : 'रामचरितमानस' की रचना संवत 1631 वि. में हुई। तुलसीदास की रचनाओं का संक्षिप्त परिचय–

रचना	काव्यरूप	भाषा
वैराग्य संदीपनी	मुक्तक	ब्रजभाषा
रामचरितमानस	प्रबन्ध (महाकाव्य)	अवधी
कृष्णगीतावली	गीतिकाव्य	ब्रजभाषा
विनय पत्रिका	गीतिकाव्य	ब्रजभाषा
कवितावली	मुक्तक	ब्रजभाषा
दोहावली	मुक्तक	ब्रजभाषा

429. तमिल भाषा में किस महाकवि ने 'रामायण' की रचना की?

(a) पंप (b) कम्ब

(c) नेमचंद्र (d) कृत्तिवास

DSSSB PGT Hindi (Male) 18.07.2021 Shift-I

Ans. (b) : तमिल भाषा में **कम्ब** ने रामायण की रचना की थी। रामावतारम् या कंब रामायण तमिल साहित्य की सर्वोत्कृष्ट कृति एवं एक वृहत् ग्रंथ है। इसके रचयिता कंब 'कविचक्रवर्ती' नाम की उपाधि से प्रसिद्ध हैं।

430. आलवार भक्त किसको कहा जाता है?

(a) राम भक्तों को (b) वैष्णवों को

(c) कृष्ण भक्तों को (d) सूफी कवियों को

DSSSB PGT Hindi (Male) 18.07.2021 Shift-I

Ans. (b) : वैष्णव भक्तों को आलवार भक्त कहा जाता है। आलवार वैष्णव भक्त थे। इनकी संख्या 12 है, जिनमें आण्डाल स्त्री है। 'नयनार' शैव भक्त थे। भगवान शिव के उपासक थे। इनकी कुल संख्या 63 है।

431. 'भक्तमाल' की रचना किसने की?

(a) वल्लभाचार्य (b) हरिराय

(c) गोकुलनाथ (d) नाभादास

DSSSB PGT Hindi (Male) 18.07.2021 Shift-I

Ans. (d) : भक्तमाल की रचना 'नाभादास' ने की। भक्तिकालीन कवियों में स्वामी अग्रदास के शिष्य नाभादास का विशिष्ट स्थान है। नाभादास की तीन कृतियाँ उपलब्ध हैं– भक्तमाल, अष्टयाम एवं रामभक्ति सम्बन्धी स्फूट पद।

वल्लभाचार्य की रचनाएँ– यमुनाष्टक, बालबोध, सिद्धान्त रहस्य, सेवाफल, भक्तिवर्धिनी आदि।

गोकुलनाथ की रचनाएँ– चौरासी वैष्णवन की वार्ता और दो सौ बावन वैष्णवन की वार्ता।

432. "श्री रामचरितमानस" में वक्ता- श्रोता के कितने युग्म है?

(a) तीन (b) दो

(c) पाँच (d) चार

DSSSB PGT-24.07.2018 (9:00 am-12:00 pm)

Ans. (d) : 'श्री रामचरितमानस' में वक्ता-श्रोता के चार युग्म हैं। जो निम्न है-

वक्ता	श्रोता
शिव	पार्वती
काकभुशुंडि	गरुड़
याज्ञवल्क्य	भरद्वाज
तुलसीदास	संत समाज

433. यह कथन किसका है?

"बुद्धदेव के बाद भारत में सबसे बड़े लोकनायक तुलसीदास है .... ये असाधारण प्रतिभा लेकर उत्पन्न हुए"

(a) फादर कामिल बुल्के (b) डॉ. नगेन्द्र

(c) जार्ज ग्रियर्सन (d) डॉ. नन्द दुलारे बाजपेयी

DSSSB PGT-24.07.2018 (9:00 am-12:00 pm)

Ans. (c) : "बुद्धदेव के बाद भारत के सबसे बड़े लोकनायक तुलसीदास हैं।- ये असाधारण प्रतिभा लेकर उत्पन्न हुए।" तुलसीदास के सम्बन्ध में यह कथन 'जार्ज ग्रियर्सन' का है। तुलसीदास के सम्बन्ध में कुछ अन्य महत्वपूर्ण विचार है-

नाभादास- कलिकाल का वाल्मीकि।

स्मिथ- मुगलकाल का सबसे महान व्यक्ति।

रामचन्द्र शुक्ल- यह एक कवि ही हिन्दी को प्रौढ़ साहित्यिक भाषा सिद्ध करने के लिए काफी है।

434. पुरतें निकसीं रघुवीर - वधु, धरि धीर दए मग में डग द्वै- यह पंक्ति तुलसीदास के किस ग्रन्थ से उद्धत है?

(a) बरवै रामायण (b) श्री रामचरित मानस

(c) दोहावलीत (d) कवितावली

DSSSB PGT-24.07.2018 (9:00 am-12:00 pm)

Ans. (d) : "पुरतें निकसी रघुवीर- वधु, धरि धीर दए मग में डग द्वै" यह पंक्ति तुलसीदास के कवितावली से उद्धृत है। तुलसीदास की अन्य कृतियों की प्रसिद्ध पंक्तियाँ है-

बरवै रामायण- तुलसी बंक विलोकनि मृदु मुसुकानि।
कस प्रभु नयन कमल अस कहौं बखानि।।

रामचरितमानस- देखरावा मातहि निज अद्भुत रूप अखण्ड।
रोम रोम प्रति लागे कोटि-कोटि ब्रह्मण्ड।।

दोहावली- नाम राम को अंक है सब साधन है सून।
अंक गएँ कछु हाथ नहिं अंक रहे दस गून।।

435. आचार्य शुक्ल के अनुसार निम्नांकित में से कौन सी रचना तुलसीदास की है?

(a) छप्पय रामायण (b) बरवै रामायण

(c) कड़खा रामायण (d) रोला रामायण

MP Asst. Prof. Hindi, 2017

Ans. (b) : आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार तुलसीदास की रचना 'बरवै रामायण' है। बरवै रामायण अवधी भाषा एवं बरवै छन्द में रचित है। बरवै अवधी का अपना छन्द है। बरवै अर्द्ध सम मात्रिक छन्द है जिसमें 12 व 7 मात्रा पर यति होती है।

436. 'प्रेम और श्रृंगार का ऐसा वर्णन जो बिना लज्जा और संकोच के सबके सामने पढ़ा जा सके, गोस्वामी जी का ही है।'
यह किसका कथन है?
(a) डॉ. रामकुमार वर्मा (b) आ. रामचंद्र शुक्ल
(c) आ. नंददुलारे वाजपेयी (d) आ. हजारी प्रसाद द्विवेदी
DSSSB PGT-24.07.2018 (2:00 pm-5:00 pm)

Ans. (b) : 'प्रेम और श्रृंगार का ऐसा वर्णन जो बिना लज्जा और संकोच के सबके सामने पढ़ा जा सके, गोस्वामी जी का ही है।' यह कथन आचार्य रामचंद्र शुक्ल का है।

437. 'संत हृदय नवनीत समाना' किसकी उक्ति है?
(a) कबीरदास (b) सूरदास
(c) रैदास (d) तुलसीदास
Uttarakhand Assi. Pro. 2017

Ans. (d) 'संत हृदय नवनीत समाना' यह उक्ति रामाश्रयी शाखा के प्रतिनिधि कवि 'तुलसीदास' की है। यह पंक्ति 'रामचरितमानस' से उद्धृत है जो कि चौपाई छन्द में रचित है। 'तुलसीदास' द्वारा रचित 'रामचरितमानस' सात काण्ड में विभक्त है। जिसके नाम क्रमशः इस प्रकार हैं-(1) बालकाण्ड, (2) अयोध्याकाण्ड, (3) अरण्यकाण्ड, (4) किष्किंधाकाण्ड, (5) सुन्दरकाण्ड, (6) लंकाकाण्ड, (7) उत्तरकाण्ड।

438. तुलसीदास-रचित 'विनयपत्रिका' में पदों की कुल संख्या है:
(a) 269 (b) 272
(c) 279 (d) 289
GIC प्रवक्ता भर्ती परीक्षा-2017

Ans : (c) तुलसीदास कृत- विनयपत्रिका में पदों की संख्या 279 है। तुलसीदास की अन्य काव्य कृति- रामचरितमानस (1074 दोहा), दोहावली (573 दोहा) बरवै रामायण में (69 पदो की सं.) कृष्ण गीतावली (61 पद) हैं।

439. इनमें से कौन-सा जोड़ा सही है?
(a) श्री संप्रदाय - मध्वाचार्य
(b) रुद्र संप्रदाय - विष्णु स्वामी
(c) सनकादि संप्रदाय - श्री हितजी
(d) राधा बल्लभ संप्रदाय - निम्बार्काचार्य
UP TGT 2016

Ans. (b) : दिये गये प्रमुख संत एवं उनसे सम्बद्ध सम्प्रदाय का सही सुमेल हैं-

संप्रदाय	संत/आचार्य
श्री संप्रदाय	रामानुजाचार्य
रुद्र संप्रदाय	विष्णु स्वामी
सनकादि संप्रदाय	निम्बार्काचार्य
राधा बल्लभ संप्रदाय	हितहरिवंश

440. रामभक्ति शाखा में रसिकोपासना का समावेश किसने किया?
(a) केशवदास (b) अग्रदास
(c) लालदास (d) नाभादास
UP TGT 2016

Ans. (b) : रामभक्ति शाखा में रसिकोपासना का समावेश अग्रदास ने किया। इन्होंने 'रसिक सम्प्रदाय' की स्थापना की। रसिक सम्प्रदाय में अग्रदास को 'अग्रअली' भी कहा जाता है। अग्रदास कृत 'ध्यान मंजरी' रसिकोपासना का सिद्धान्त ग्रंथ है। रसिक सम्प्रदाय के अन्य प्रमुख कवि है- बालकृष्ण 'बाल अली', रसमाला, रामशरण 'प्रेमकली', प्रयागदास, रामगुलाम द्विवेदी, रीवाँ नरेश महाराज रघुराज सिंह। ध्यातव्य है कि इस सम्प्रदाय के कवि स्वयं को सीता जी की 'सखी' के रूप में प्रस्तुत कर राम का विशेष स्नेह प्राप्त करने हेतु पदों की रचना करते थे।

441. 'महात्मा बुद्ध के बाद उत्तर भारत में सबसे बड़े लोकनायक तुलसी हुए हैं' यह कथन किस विद्वान का है?
(a) आचार्य रामचंद शुक्ल (b) जॉर्ज ग्रियर्सन
(c) फादर कामिल बुल्के (d) डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी
राजस्थान कॉलेज लेक्चरर भर्ती परीक्षा-2015

Ans. (b) 'महात्मा बुद्ध के बाद उत्तर भारत में सबसे बड़े लोकनायक तुलसी हुए हैं' **–जॉर्ज ग्रियर्सन**
''यह एक कवि ही हिन्दी को प्रौढ़ साहित्यिक भाषा सिद्ध करने के लिए काफी है'' **–आचार्य रामचन्द्र शुक्ल**
''भारतवर्ष का लोकनायक ही हो सकता है जो समन्वय करने का अपार धैर्य लेकर आया हो'' **– हजारीप्रसाद द्विवेदी**

442. इनमें से तुलसीदास की किस रचना की भाषा अवधी नहीं है?
(a) रामचरितमानस (b) जानकी मंगल
(c) कवितावली (d) रामलला नहछू
राजस्थान कॉलेज लेक्चरर भर्ती परीक्षा-2015
UGC Net 2012 (Paper-II)

Ans. (c) तुलसीदास कृत कवितावली की भाषा अवधी नहीं है। गोस्वामी तुलसीदास की रचना तथा भाषा का विवरण-

अवधी भाषा	ब्रजभाषा
रामचरितमानस	कवितावली
जानकी मंगल	वैराग्य संदीपनी
रामलला नहछू	कृष्णगीतावली
रामाज्ञा प्रश्न	गीतावली
पार्वतीमंगल	विनयपत्रिका
बरैव रामायण	दोहावली

443. 'भाषा निबन्ध मति मंजुल मातनोति' किस कवि द्वारा रचित श्लोक का अंश है?
(a) वाल्मीकि (b) कालिदास
(c) तुलसीदास (d) जयदेव
UPPCS GIC 2017

Ans. (c) : 'भाषा निबन्ध मति मंजुल मातनोति' कवि 'तुलसीदास' द्वारा रचित श्लोक का अंश है। तुलसीदास रामभक्ति शाखा के अन्यतम कवि हैं। तुलसीदास की रचनाएँ हैं– वैराग्य संदीपनी, रामाज्ञाप्रश्न, रामलला नहछू, जानकी मंगल, रामचरितमानस, पार्वती मंगल, कृष्णगीतावली, गीतावली, विनयपत्रिका, दोहावली, बरवै रामायण, कवितावली।

444. इनमें से 'ज्ञानाश्रयी शाखा' के कवि नहीं हैं:
(a) धर्मदास (b) अग्रदास
(c) दादू दयाल (d) कबीर दास
UPPCS GIC 2017

Ans. (b) : अग्रदास 'ज्ञानाश्रयी शाखा' के कवि नहीं हैं बल्कि 'रामभक्ति शाखा' के कवि हैं। अग्रदास की रचनाएँ हैं- हितोपदेश उपखाणा बावनी, ध्यानमंजरी, रामध्यानमंजरी, कुंडलिया, अष्टयाम या रामाष्टयाम। अग्रदास के शिष्य नाभादास है।

445. 'विनयपत्रिका' में काशी के लिए किसका रूपक वर्णित है?
(a) कामधेनु (b) वृक्ष
(c) वन (d) सूर्य
(e) चंद्र

Chattisgarh Asst. Prof. 2014

Ans. (a) : 'विनयपत्रिका' में काशी के लिए 'कामधेनु' रूपक वर्णित है। 'विनयपत्रिका' भक्तिकाल के सगुण धारा के रामभक्त कवि तुलसीदास की कृति हैं। 'विनयपत्रिका' गीतिकाव्य है इसकी भाषा ब्रज है, इसमें 279 छंद है। तुलसीदास की अन्य कृतियाँ - वैराग्य संदीपनी, रामाज्ञा प्रश्न, रामलला नहछू, जानकी मंगल, रामचरितमानस, पार्वती मंगल, दोहावली आदि हैं। रामचरितमानस की रचना संवत् 1631 में चैत्र शुक्ल रामनवमी प्रारंभ को हुई। इसकी रचना में कुल 2 वर्ष 7 माह 26 दिन लगे। तुलसीदास ने अपने बाहु रोग से मुक्ति के लिए 'हनुमान बाहुक' की रचना की।

446. बावरो रावरो नाह भवानी।
दानि बड़ो दिन देत दये बिनु, वेद-बड़ाई भानी॥
उपर्युक्त पंक्तियों में किसके द्वारा किसे संबोधन की कल्पना है?
(a) ब्रह्मा द्वारा सीता को (b) तुलसी द्वारा पार्वती को
(c) तुलसी द्वारा सीता को (d) तुलसी द्वारा काशी को
(e) ब्रह्मा द्वारा पार्वती को

Chattisgarh Asst. Prof. 2014

Ans. (e) : बावरो रावरो नाह भवानी।
दानि बड़ो दिन देत दये बिनु, वेद-बड़ाई भानी।।
उपर्युक्त पंक्तियों में 'ब्रह्मा द्वारा पार्वती' को संबोधन की कल्पना है। उपर्युक्त पंक्ति तुलसीदास जी द्वारा रचित उनके ग्रंथ विनयपत्रिका से उद्धृत है। यह ब्रजभाषा में रचित है। विनयपत्रिका में विनय के पद हैं। विनयपत्रिका का एक नाम रामविनयावली भी है। विनयपत्रिका में 21 रागों का प्रयोग हुआ है। इसका प्रमुख रस शांत है। इसमें पदों की संख्या 279 है। तुलसीदास जी के अन्य प्रमुख ग्रंथ - रामचरितमानस, गीतावली, दोहावली, बरवैरामायण, कवितावली, पार्वतीमंगल आदि है। 'रामचरितमानस' और 'कवितावली' में गोस्वामी जी ने कलिकाल का वर्णन किया है।

447. मांगत तुलसीदास कर जोरे। बसहिं रामसिय मानस मोरे॥
उपर्युक्त पंक्ति में किससे याचना की गई है?
(a) देवी से (b) शिव से
(c) गंगा से (d) हनुमान से
(e) गणेश से

Chattisgarh Asst. Prof. 2014

Ans. (e) : 'मांगत तुलसीदास कर जोरे। बसहिं रामसिय मानस मोरे।।' पंक्ति में गोस्वामी तुलसीदास जी गणेश से याचना कर रहे हैं। यह पंक्ति तुलसीदास के विनयपत्रिका से है, जिसमें वे गणेश की स्तुति करते हैं। तुलसी की 12 प्रमाणिक रचनाएँ मानी जाती हैं, जो निम्नलिखित हैं - (1) वैराग्य संदीपनी, (2) रामाज्ञाप्रश्न, (3) रामललानहछू, (4) जानकी मंगल, (5) रामचरितमानस, (6) पार्वतीमंगल, (7) कृष्ण गीतावली, (8) गीतावली, (9) विनयपत्रिका, (10) दोहावली, (11) बरवै रामायण, (12) कवितावली। नाभादास ने तुलसीदास को 'कलिकाल का वाल्मीकि' कहा है।

448. केलॉग ने तुलसी की भाषा को क्या कहा है?
(a) पुरानी बैसवाड़ी (b) छत्तीसगढ़ी
(c) गढ़वाली (d) मगही

हरियाणा असिस्टेन्ट प्रोफेसर भर्ती परीक्षा-2017

Ans. (a) : केलॉग ने तुलसी की भाषा को 'पुरानी बैसवाड़ी' कहा है। केलॉग ने जिसे 'पुरानी बैसवाड़ी' कहा वह वस्तुतः पुरानी अवधी ही है। कुछ लोगों ने बैसवाड़ी के अन्तर्गत अवधी और बघेली दोनों को रखा है।

449. 'कोउ नृप होउ हमहिं का हानी।
चेरि छाँड़ि अब होब कि रानी॥
'रामचरित मानस' में प्रस्तुत पंक्तियाँ किसके द्वारा कही गई हैं?
(a) मंथरा (b) मंदोदरी
(c) उर्मिला (d) कैकेयी

DSSSB PGT-24.07.2018 (2:00 pm-5:00 pm)

Ans. (a) : 'रामचरित मानस' में प्रस्तुत पंक्तियाँ मंथरा द्वारा कही गई हैं। उपर्युक्त पंक्ति में मंथरा कहती है कि कोई भी राजा बने अर्थात् राम या भरत मुझे तो कोई फर्क नहीं पड़ता क्योंकि मैं दासी की दासी ही रहूँगी।

450. 'जौ हौं मातुमते महँ ह्वैहों।
तौ जननी जग में या मुख की कहाँ कालिमा ध्वैहौं?'
उपर्युक्त काव्य पंक्तियों की भाषा क्या है?
(a) अवधी (b) पुरानी हिन्दी
(c) ब्रजभाषा (d) संस्कृत

DSSSB PGT-24.07.2018 (2:00 pm-5:00 pm)

Ans. (c) : 'जौ हौं मातुमते महँ ह्वैहौं
तौ जननी जग में या मुख की कहाँ कालिमा ध्वैहौं।'
उपर्युक्त पंक्तियों की भाषा ब्रजभाषा है। ये पंक्तियाँ गोस्वामी तुलसीदास कृत 'गीतावली' से हैं। इन पंक्तियों में कौशल्या के सामने भरत आत्मग्लानि की व्यंजना करते हैं।

451. 'रामचरितमानस' की रचना में कुल कितना समय लगा?
(a) तीन वर्ष पांच महीने (b) पांच वर्ष तीन महीने
(c) सात वर्ष दो महीने (d) दो वर्ष सात महीने

DSSSB PGT-24.07.2018 (2:00 pm-5:00 pm)
DSSSB PGT 24.7.2018, Shift-I
MP Asst. Prof. Hindi 2017

Ans. (d) : 'रामचरितमानस' की रचना करने में गोस्वामी तुलसीदास को दो वर्ष सात महीने का समय लगा। 'रामचरितमानस' की रचना संवत् 1631 में चैत्र शुक्ल रामनवमी (मंगलवार) को प्रारम्भ हुई। इसकी रचना में कुल दो वर्ष सात माह और 26 दिन लगे।

452. 'सीता-त्रिजटा-संवाद' रामचरितमानस के किस काण्ड में वर्णित है?
(a) लंकाकाण्ड (b) सुंदरकाण्ड
(c) अरण्यकाण्ड (d) किष्किंधाकाण्ड

DSSSB PGT-24.07.2018 (2:00 pm-5:00 pm)

Ans. (b) : 'सीता-त्रिजटा-संवाद' रामचरितमानस के 'सुंदरकाण्ड' में वर्णित है। सुंदरकाण्ड की अन्य महत्वपूर्ण घटनाएँ - लंका दहन, रामसेतु होना इत्यादि है। ध्यातव्य है कि रामचरितमानस में कुल सात काण्ड हैं, क्रमानुसार इनका वर्णन इस प्रकार है-
(1) बालकाण्ड, (2) अयोध्याकाण्ड, (3) अरण्यकाण्ड, (4) किष्किन्धाकाण्ड, (5) सुन्दरकाण्ड, (6) लंकाकाण्ड (7) उत्तरकाण्ड।

453. 'गीतावली' की भाषा क्या है?
(a) संस्कृत (b) ब्रजभाषा
(c) पुरानी हिन्दी (d) अवधी

DSSSB PGT-24.07.2018 (2:00 pm-5:00 pm)

Ans. (b) : 'गीतावली' की भाषा ब्रजभाषा है। यह गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित ग्रंथ है। गोस्वामी जी का अवधी एवं ब्रजभाषा पर समान अधिकार था। 'रामचरितमानस' की भाषा अवधी है, जबकि इनके द्वारा रचित ब्रजभाषा की रचनाएँ हैं - गीतावली, कृष्ण गीतावली, विनय पत्रिका, दोहावली, कवितावली।

454. 'शुक्ल जी की दुर्बलता यह थी कि वे भारत के हर कवि को तुलसी की कसौटी पर और हर पात्र को राम के आदर्श पर कसकर ही स्वीकार करते थे।' यह किसका कथन है।

(a) डॉ. नागेन्द्र (b) डॉ. रामकुमार वर्मा
(c) डॉ. गणपति चंद्र गुप्त (d) आ. हजारी प्रसाद द्विवेदी

DSSSB PGT-24.07.2018 (2:00 pm-5:00 pm)

Ans. (c) : 'शुक्ल जी की दुर्बलता यह थी कि वे भारत के हर कवि को तुलसी की कसौटी पर और हर पात्र को राम के आदर्श पर कसकर ही स्वीकार करते थे।' यह कथन डॉ. गणपति चंद्र गुप्त का है। डॉ. गणपति चंद्र गुप्त ने 'हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास' दो भागों में 1965 ई. में प्रकाशित कराया।

455. 'रामचरित मानस' में कितने काण्ड (सोपान) हैं?

(a) 9 (b) 8
(c) 7 (d) 6

DSSSB PGT 04.07.2021, Shift-I
DSSSB PGT-23.07.2018
Jharkhand PGT Hindi 2018
DSSSB PGT 24.7.2018 (2.00pm - 5.00pm)
UPPGT 2016

Ans. (c) : भक्तिकाल के रामाश्रयी शाखा के प्रतिनिधि कवि तुलसीदास कृत 'रामचरितमानस' में कुल सात काण्ड हैं। सातों काण्डों के नाम क्रमशः निम्नवत हैं- (1) बालकाण्ड, (2) अयोध्या काण्ड (3) अरण्य काण्ड (4) किष्किन्धा काण्ड (5) सुन्दर काण्ड (6) लंका काण्ड (7) उत्तर काण्ड।

456. निम्नलिखित में से कौन सा तुलसीदास की रचना नहीं है?

(a) बरवै रामायण (b) रामाज्ञा प्रश्न
(c) रामचन्द्रिका (d) रामचरित मानस

DSSSB PGT-23.07.2018
UP PGT 2016, KVS PGT 2014

Ans. (c) : दी गई रचनाओं में 'रामचन्द्रिका' तुलसीदास की रचना नहीं है बल्कि यह केशवदास की रचना है। तुलसीदास एवं केशवदास की रचनाएं निम्नवत् हैं-

तुलसीदास - वैराग्य संदीपनी, रामाज्ञा प्रश्न, रामलला नहछू, जानकी मंगल, रामचरितमानस, पार्वती मंगल, कृष्ण गीतावाली, गीतावली, विनय पत्रिका, दोहावली, बरवै रामायण, कवितावली।

केशवदास - रसिक प्रिया, रामचन्द्रिका, कविप्रिया, रतन बावनी, वीरसिंह देव चरित, विज्ञान गीता, जहाँगीर जस चन्द्रिका, नखशिख, छन्दमाल।

457. निम्नलिखित में से कौन रामभक्ति शाखा के कवि नहीं हैं?

(a) तुलसीदास (b) सूरदास
(c) अग्रदास (d) हृदयराम

DSSSB PGT-23.07.2018

Ans. (b) : दिये गये भक्तिकालीन कवियों में 'सूरदास' रामभक्ति शाखा के कवि नहीं हैं बल्कि ये कृष्णभक्ति शाखा के प्रतिनिधि कवि हैं। इन्हें पुष्टिमार्ग का जहाज कहा जाता है। तुलसीदास रामभक्ति शाखा के प्रतिनिधि कवि हैं। अग्रदास तथा हृदयराम भी रामभक्ति शाखा के कवि हैं।

458. 'कृष्णगीतावली' के रचयिता कौन हैं?

(a) तुलसीदास (b) परमानंददास
(c) नंददास (d) सूरदास

DSSSB PGT-25.07.2018 (9:00 am-12:00 pm)
MP Asst. Prof. Hindi 2017
UP PGT 2010, 2002
UGC Net June 2006 (Paper-II))
UP TGT 2001, 2004

Ans. (a) : 'कृष्णगीतावली' के रचयिता तुलसीदास हैं। तुलसीदास रामाश्रयी शाखा के कवि हैं। इनकी अन्य रचनाएँ इस प्रकार हैं– वैराग्य संदीपनी, रामाज्ञा प्रश्न, रामलला नहछू, जानकी मंगल, रामचरितमानस, पार्वती मंगल, गीतावली, विनय पत्रिका, दोहावली, बरवै रामयण, कवितावली।

459. केशव को 'कठिन काव्य का प्रेत' किसने कहा?

(a) विश्वनाथ प्रसाद मिश्र (b) विजयपाल सिंह
(c) रामचंद्र शुक्ल (d) नगेन्द्र

DSSSB PGT-25.07.2018 (9:00 am-12:00 pm)

Ans. (c) : केशव को 'कठिन काव्य का प्रेत' रामचंद्र शुक्ल ने कहा। आ. विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, डॉ. नगेन्द्र और गणपतिचन्द्र गुप्त आदि। विद्वानों ने केशवदास को हिन्दी में रीतिकाव्य का प्रवर्तक माना है। केशवदास की रचनाएँ हैं– रसिक प्रिया, रामचन्द्रिका, कविप्रिया, रतन बावनी, वीरसिंह देव चरित, विज्ञानगीता, जहाँगीर जसचन्द्रिका, नखशिख, छंदमाल।

460. कौन-सी रचना प्रबंध काव्य नहीं है?

(a) रामचरितमानस (b) पद्मावत
(c) कामायनी (d) विनय पत्रिका

DSSSB PGT-25.07.2018 (9:00 am-12:00 pm)

Ans. (d) : तुलसीदास कृत 'विनय पत्रिका' प्रबन्धकाव्य नहीं है। यह गीतिकाव्य है। जबकि रामचरितमानस, पद्मावत और कामायनी प्रबन्ध काव्य की श्रेणी में आते हैं इनके रचनाकार क्रमशः तुलसीदास, मलिक मुहम्मद जायसी और जयशंकर प्रसाद हैं।

461. 'अहिंसावाद' और 'प्रपत्तिवाद' किस सम्प्रदाय की देन है?

(a) सूफ़ी सम्प्रदाय (b) शाक्त सम्प्रदाय
(c) वैष्णव सम्प्रदाय (d) शैव सम्प्रदाय

DSSSB PGT-25.07.2018 (9:00 am-12:00 pm)

Ans. (c) : प्रश्नगत विकल्पों में 'अहिंसावाद' और 'प्रपत्तिवाद' वैष्णव सम्प्रदाय की देन है अन्य विकल्प संगत नहीं हैं। वैष्णव सम्प्रदाय भगवान विष्णु और उनके स्वरूपों को आराध्य मानता है।

462. 'विनय पत्रिका' की भाषा कौन सी है?

(a) ब्रजभाषा (b) अवधी
(c) मैथिली (d) भोजपुरी

DSSSB PGT male 18.07.2021 Shift-I
DSSSB PGT-25.07.2018 (9:00 am-12:00 pm)
UP TGT 2016
UPPSC Degree College Exam 2013

Ans. (a) : 'विनय पत्रिका' की भाषा ब्रजभाषा है। इसे राम गीतावली या विनयावली भी कहते हैं। यह गीतकाव्य है। इसमें विभिन्न राग-रागनियों का प्रयोग है। प्रधान रस शान्त है। इसे तुलसीदास ने काशी में लिखा है। इसे भक्तों के गले का कंठहार भी कहते हैं।

463. नीचे दी गई रचनाओं के आधार पर उत्तर दीजिए-(i) दोहावली (ii) हनुमन्नाटक (iii) रामध्यानमंजरी (iv) वैराग्यसंदीपनी किस विकल्प में सभी रचनाएँ तुलसीकृत नहीं हैं।
(a) (i) और (iii)
(b) (ii) और (iii)
(c) (iii) और (iv)
(d) (ii) और (iv)
राजस्थान कॉलेज लेक्चरर भर्ती परीक्षा (पेपर-II) 2014

Ans. (b) : 'हनुमन्नाटक' हृदयराम तथा 'रामध्यानमंजरी' अग्रदास की रचना है, ये तुलसीदास की रचनाओं का समूह नहीं है। 'दोहावली' एवं 'वैराग्य संदीपनी' तुलसीदास की रचनाएँ हैं।

464. तुलसीकृत कौन-सी रचना ब्रजभाषा में है?
(a) गीतावली
(b) पार्वती मंगल
(c) रामलाल नहछू
(d) बरवै रामायण
राजस्थान कॉलेज लेक्चरर भर्ती परीक्षा (पेपर-II) 2014

Ans. (a) : दी गयी रचनाओं में 'गीतावली' ब्रजभाषा में है। पार्वतीमंगल, रामलला नहछू एवं बरवै रामायण अवधी में है।

465. 'अगुनहि सगुनहिं नहिं कछु भेदा' उक्ति है-
(a) तुलसीदास
(b) मलिक मुहम्मद जायसी की
(c) मंझन की
(d) कबीरदास
राजस्थान कॉलेज लेक्चरर भर्ती परीक्षा (पेपर-II) 2014

Ans. (a) : 'अगुनहि सगुनहिं नहिं कछु भेदा' उक्ति तुलसीदास की है। गोस्वामी तुलसीदास रामभक्ति शाखा के प्रतिनिधि कवि हैं। उक्त पंक्ति में तुलसी के समन्वयवादी दृष्टि का परिचय मिलता है। हजारी प्रसाद द्विवेदी ने इनके विषय में कहा है– "भारतवर्ष का लोकनायक वही हो सकता है जो समन्वय करने का अपार धैर्य लेकर आया हो।" ग्रियर्सन इन्हें "बुद्धदेव के बाद सबसे बड़ा लोकनायक" मानते हैं।

466. साहित्य को 'सुरसरि सम' सबका हितकारी घोषित किया है-
(a) केशवदास ने
(b) रामानन्दाचार्य ने
(c) सूरदास ने
(d) गोस्वामी तुलसीदास ने
राजस्थान कॉलेज लेक्चरर भर्ती परीक्षा (पेपर-II) 2014

Ans. (d) : साहित्य को 'सुरसरि सम' सबका हितकारी गोस्वामी तुलसीदास ने घोषित किया है। गोस्वामी तुलसीदास ने अपने प्रसिद्ध कृति 'रामचरितमानस' के 'बालकाण्ड' में स्पष्ट लिखा है– "कीरति भनिति भूति भलि सोई। सुरसरि सम सब कहँ हित होई।"

467. 'बरवै रामायण' के नामकरण का आधार है–
(a) बरवै छन्द
(b) रहीम का सुझाव
(c) अज्ञात छन्द
(d) तुलसी का बिरवा
राजस्थान कॉलेज लेक्चरर भर्ती परीक्षा (पेपर-II) 2014

Ans. (a) : 'बरवै रामायण' के नामकरण का आधार बरवै छन्द है। बरवै अर्द्धसम मात्रिक छन्द है। इसके प्रथम एवं तृतीय चरण में 12-12 मात्राएँ तथा द्वितीय एवं चतुर्थ चरण में 7-7 मात्राएँ होती हैं। बरवै अवधी का निजी छन्द माना जाता है। बरवै का एक उदाहरण द्रष्टव्य है– चम्पक हरवा अंग मिलि, अधिक सुहाय।
जानि परै सिय हियरे, जब कुंभिलाय।।
'बरवै रामायण' तुलसीदास कृत एक मुक्तक काव्य है, जो सात काण्डों में विभक्त है। गोस्वामी तुलसीदास की चार रचनाएँ ऐसी हैं जिसमें 'उत्तरकाण्ड' का वर्णन है- रामचरितमानस, कवितावली, गीतावली एवं बरवै रामायण।

468. तुलसीदास को 'लोकनायक' कहने वाले हैं-
(a) रामविलास शर्मा
(b) रामचन्द्र शुक्ल
(c) हजारी प्रसाद द्विवेदी
(d) जॉर्ज ग्रियर्सन
राजस्थान कॉलेज लेक्चरर भर्ती परीक्षा (पेपर-II) 2014

Ans. (c) : हजारी प्रसाद द्विवेदी ने गोस्वामी तुलसीदास को 'लोकनायक' कहा है। विभिन्न दृष्टियों से तुलसी का महत्त्व प्रतिपादित करने वाले कुछ विद्वान हैं–

नाभादास	– कलिकाल का वाल्मीकि
स्मिथ	– मुगलकाल का सबसे महान व्यक्ति
रामविलास शर्मा	– जातीय कवि
अमृतलाल नागर	– मानस का हंस

469. 'रामलला नहछू' रचना की शैली है–
(a) अवधी लोकगीतों की
(b) छप्पन छन्द विशिष्ट
(c) सवैया प्रधान
(d) सतसई व्रत
राजस्थान कॉलेज लेक्चरर भर्ती परीक्षा (पेपर-II) 2014

Ans. (a) : 'रामलला नहछू' रचना की शैली अवधी लोकगीतों की शैली है। 'रामलला नहछू' को अधिकांश विद्वान तुलसीदास की प्रथम कृति मानते हैं। यह एक प्रबंध काव्य है जिसकी रचना ठेठ अवधी के सोहर छन्द में हुई है।

470. 'विनय पत्रिका' के बारे में कौन सा कथन सही नहीं है?
(a) इसमें कुल 270 पद हैं।
(b) इसमें सर्वप्रथम गणेशजी की वंदना की गई है।
(c) यह ब्रजभाषा में लिखी गई है।
(d) इसकी गणना आत्मनिवेदनपरक गीति काव्य में की जाती है।
राजस्थान कॉलेज लेक्चरर भर्ती परीक्षा (पेपर-I) 2014

Ans. (a) : इसमें कुल 270 पद हैं। विनय पत्रिका से संबंधित कथन सही नहीं क्योंकि विनयपत्रिका में कुल 279 पद हैं। विनयपत्रिका के लेखक गोस्वामी तुलसीदास हैं। विनयपत्रिका को भक्तों का कण्ठहार कहा जाता है। अन्य विकल्प सही हैं जो इस प्रकार हैं– 1. इसमें सर्वप्रथम गणेश जी की वंदना की गयी है। 2. यह ब्रजभाषा में लिखी गयी है। 3. इसकी गणना आत्मनिवेदनपरक गीति काव्य में की जाती है।

471. निम्नलिखित में से कौन सी रचना तुलसीदास रचित नहीं है?
(a) बरवै रामायण
(b) ध्यान मंजरी
(c) कवित्त रामायण
(d) कृष्ण गीतावली
DSSSB PGT-24.07.2018 (9:00 am-12:00 pm)

Ans. (b) : 'ध्यान मंजरी' तुलसीदास की रचना नहीं है बल्कि यह अग्रदास की रचना है। बरवै रामायण, कवित्त रामायण तथा कृष्ण गीतावली तुलसीदास की रचना है।

472. तुलसीदास ने कलियुग का वर्णन कवितावली के किस काण्ड में किया है?
(a) उत्तरकाण्ड
(b) लंका काण्ड
(c) सुन्दरकाण्ड
(d) बालकाण्ड
DSSSB PGT-24.07.2018 (9:00 am-12:00 pm)

Ans. (a) : तुलसीदास ने कलियुग का वर्णन कवितावली के 'उत्तरकाण्ड' में किया है। 'रामचरितमानस' के उत्तरकाण्ड में भी कलिकाल का वर्णन हुआ है। कवितावली ब्रजभाषा में रचित है। इसके उत्तरकाण्ड में काशी (बनारस) में तत्कालीन समय में फैली महामारी का वर्णन किया गया है।

473. तुलसीदास का 'रामचरित मानस' लिखा गया है:
(a) गीत पद्धति में (b) सवैया छंद में
(c) छप्पय और कवित्त पद्धति में (d) दोहा-चौपाई छंद में

DSSSB TGT-15.09.2018

Ans. (d) : तुलसीदास का 'रामचरित मानस' दोहा-चौपाई छंद में लिखा गया है। इसमें 1074 दोहे और 7 काण्ड है। यह एक प्रबन्ध काव्य तथा भाषा अवधी है। इसकी रचना संवत् 1631 में चैत्र शुक्ल रामनवी (मंगलवार) को प्रारम्भ हुई। इसकी रचना में कुल 2 वर्ष 7 माह 26 दिन लगा। कवित्त और छप्पय पद्धति में 'कवितावली' मुक्तक काव्य, ब्रजभाषा में लिखा गया।

474. 'लाज न आवत आपको दौरे आयहु साथ' पंक्ति का संबंध है:
(a) सूरदास से (b) मीराबाई से
(c) कबीर दास से (d) तुलसीदास से

DSSSB TGT (MALE)-28.08.2018

Ans. (d) : 'लाज न आवत आपको दौरे आयहु साथ' पंक्ति का संबंध तुलसीदास से है। पत्नी रत्नावली ने पत तुलसीदास के संबंध में इस पंक्ति को कहा है। पूरी पंक्ति इस प्रकार है–

लाज न लागत आपको, दौरे आयहु साथ।
धिक-धिक ऐसे प्रेम को, कहा कहौं मैं नाथ।।
अस्थि चर्म मय देह मम, तामे ऐसी प्रीति।।
तैसी जौ श्री राम महँ, होति न तौ भव भीति।।

475. तुलसीदास ने किस काव्य की रचना सूरदास के अनुकरण पर की है?
(a) गीतावली (b) दोहावली
(c) जानकी मंगल (d) कवितावली

NVS TGT 18.09.2019

Ans. (a) : तुलसीदास ने 'गीतावली' काव्य की रचना सूरदास के अनुकरण पर की है। यह गीतकाव्य है तथा ब्रजभाषा में रचित है।

476. 'आरती कीजै हनुमान लला की' के रचयिता कौन हैं?
(a) नाभादास (b) तुलसीदास
(c) रामानंद (d) रामानुज

NVS TGT 18.09.2019

Ans. (c) : 'आरती कीजै हनुमान लला की' के रचनाकार रामानंद है। रामानंद हिन्दी में रामकाव्य के पुरस्कर्ता माने जाते हैं। ये राघवानन्द के शिष्य थे। हजारीप्रसाद द्विवेदी ने इन्हें 'आकाशधर्मा' गुरु कहा है। इनके द्वारा रचित प्रमुख ग्रंथ हैं - (1) वैष्णवमताब्ज भास्कर, (2) श्री रामार्चन पद्धति, (3) योगचिंतामणि, (4) रामरक्षा स्तोत्र, (5) आनंद भाष्य।

477. 'सुंदर कांड' में प्रमुख पात्र है–
(a) हनुमान (b) भरत
(c) कैकेई (d) लक्ष्मण

UP PGT 2016

Ans : (a) तुलसीदास कृत रामचरितमानस के पाँचवें काण्ड सुन्दर काण्ड के प्रमुख पात्र हनुमान जी हैं। सम्पूर्ण सुन्दरकाण्ड में श्रीहनुमान जी की गौरव गाथा का वर्णन है। 'मानस के सुन्दरकाण्ड को रोगमुक्ति का काण्ड कहा गया है।'

478. 'रामचरितमानस' की भाषा है–
(a) भोजपुरी (b) अवधी
(c) ब्रज भाषा (d) मैथिली

Jharkhand PGT Hindi 2018
MP Asst. Prof. Hindi 2017
हरियाणा असिस्टेंट प्रोफेसर भर्ती परीक्षा 2017
UP PGT 2016, 2011, KVS PGT 2014

Ans : (b) 'रामचरितमानस' की भाषा अवधी है। यह गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित हिन्दी का श्रेष्ठ महाकाव्य है। इस महाकाव्य में मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम का जीवन-चरित्र का वर्णन है।
तुलसी के ग्रंथों की भाषा–
अवधी भाषा में–1. जानकी मंगल 2. पार्वती मंगल 3. रामाज्ञा प्रश्न 4. रामलला नहछू 5. बरवै रामायण 6. रामचरितमानस।
ब्रजभाषा में–1. विनय पत्रिका 2. कवितावली 3. गीतावली 4. वैराग्य संदीपनी 5. कृष्ण गीतावली 6. दोहावली।

479. निम्नलिखित तथ्यों को कालक्रमानुसार लिखिए–
1. आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' लिखा
2. तुलसीदास ने 'रामचरितमानस' की रचना की
3. अज्ञेय द्वारा 'तारसप्तक' का प्रकाशन किया गया
4. जयशंकर प्रसाद ने 'कामायनी' की रचना की

निम्नलिखित कूट के आधार पर सही उत्तर लिखिए–
(a) 1, 2, 4, 3 (b) 2, 1, 3, 4
(c) 2, 1, 4, 3 (d) 4, 2, 3, 1

LT Hindi 2018

Ans : (c) कालक्रमानुसार क्रम–

रचनाकार	रचना	प्रकाशन वर्ष
तुलसीदास	रामचरितमानस	1574 ई.
आचार्य रामचन्द्र शुक्ल	हिन्दी साहित्य का इतिहास	1929 ई.
अज्ञेय	तारसप्तक	1935 ई.
जयशंकर प्रसाद	कामायनी	1943 ई.

480. अधोलिखित स्थापना (A) और तर्क (R) पर विचार कीजिए–
स्थापना (A) :
तुलसी के मत में–
''निर्गुण रूप सुलभ अति, सगुन जान नहिं कोय।
सुगम अगम नाना चरित, सुनि मुनि मन भ्रम होय।''
तर्क (R) :
क्योंकि सगुण आकार की उपासना और अनुभव के दायरे में लाना सहज है, जबकि निर्गुण निराकार की उपासना और अनुभूति नितांत कठिन।
नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर का चयन कीजिए–
कूट :
(a) A और R दोनों सही हैं
(b) A सही है, R गलत
(c) A गलत है R सही
(d) A और R दोनों गलत हैं

LT Hindi 2018

Ans : (b) स्थापना (A) तुलसी के मत में–
''निर्गुण रूप .... भ्रम होय।'' कथन सत्य है और तर्क (R) 'क्योंकि सगुण आकार की उपासना और अनुभव के दायरे में लाना सहज है, जबकि निर्गुण निराकार की उपासना और अनुभूति नितांत कठिन।' यह तर्क गलत है। अतः यहाँ स्थापना (A) सही और तर्क (R) गलत हैं।

481. निम्नलिखित में से कौन स्वामी रामानंद का शिष्य नहीं था–
(a) अनंतानंद (b) सुखानंद
(c) नरहर्यानंद (d) रैदास
LT Hindi 2018

Ans : (*) स्वामी रामानन्द के शिष्यों में अनंतानन्द, सुखानंद, नरहर्यानंद तथा रैदास सभी हैं। अतः पूछा गया प्रश्न त्रुटिपूर्ण है।

482. 'विनयपत्रिका' के पदों में तुलसीदास की भक्ति किस भाव की है?
(a) सख्य भाव (b) आत्म भाव
(c) प्रेम भाव (d) दास्य भाव
Chattisgarh Asst. Prof. 2009

Ans. (d) : 'विनयपत्रिका' के पदों में तुलसीदास की भक्ति दास्य भाव की है। विनयपत्रिका तुलसीदास द्वारा रचित ग्रंथ है। यह ब्रजभाषा में रचित है विनयपत्रिका में विनय के पद है। विनयपत्रिका का एक नाम रामविनयावली है। इसमें 21 रागों का प्रयोग हुआ है। इस ग्रंथ का प्रमुख रस शांत रस है। तुलसीदास जी द्वारा रचित अन्य ग्रंथ हैं– रामचरितमानस, दोहावली, गीतावाली, जानकीमंगल, पार्वतीमंगल, रामाज्ञाप्रश्न, कवितावली, हनुमानबाहुक, रामललानहछू, बरवैरामायण आदि।

483. 'सुरतिय नरतिय नागतिय, सब चाहति असि होय।
गोद लिए हुलसी फिरे, तुलसी सो सुत होय'॥
— उपर्युक्त दोहा किस कवि का है?
(a) सूरदास (b) तुलसीदास
(c) रहीम (d) रसखान
Himanchal Pradesh PGT-2016

Ans. (b & c) : 'सुरतिय नरतिय नागतिय, सब चाहति असि होय। गोद लिए हुलसी फिरे, तुलसी सो सुत होय'।। यह पंक्ति तुलसीदास और रहीम दोनों की है। पहली पंक्ति सुरतिय नरतिय .... तुलसीदास की और दूसरी पंक्ति गोद लिए तुलसी .... रहीम की पंक्ति है।

484. 'जब मन लागे राम सों तब अनत काहे को जाइ।
दादु पाणो लूण ज्यों ऐसे रहै समाई॥'
उपर्युक्त पंक्तियों का आशय है कि–
(a) मन राम के समान है।
(b) मन जब राम में लीन है तो अन्यत्र नहीं भटकेगा
(c) पानी नमक के समान है।
(d) नमक पानी में लीन हो गया है।
KVS PGT 2018

Ans : (b) 'जब मन लागे राम सों तब अनत काहे को जाइ।
दादु पाणो लूण ज्यों ऐसे रहै समाई।।'
उपर्युक्त पंक्तियों का आशय 'मन जब राम में लीन है तो अन्यत्र नहीं भटकेगा' है।

485. प्रमुख रूप से किस कवि के आधार पर आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने अपने साहित्यिक प्रतिमान निर्धारित किए–
(a) कबीरदास (b) तुलसीदास
(c) केशवदास (d) सूरदास
KVS PGT 2018

Ans : (b) प्रमुख रूप से कवि 'तुलसीदास' के आधार पर आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने अपने साहित्यिक प्रतिमान निर्धारित किए। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल हिन्दी के प्रमुख आलोचक के रूप में विख्यात हैं। 'काव्य में रहस्यवाद' इनकी प्रथम सैद्धान्तिक आलोचना है। इनकी अन्य आलोचनात्मक कृतियाँ हैं–(1) गोस्वामी तुलसीदास (2) जायसी ग्रंथावली (3) भ्रमर-गीतसार (4) रसमीमांसा

486. 'उत्तरकांड' के कलियुग प्रसंग में तुलसीदास ने लिखा है:
(A) आचारहीन और वेद विरोधी लोग ज्ञानी और संन्यासी कहलाएंगे।
(B) माता-पिता अपने बच्चों को मानव धर्म की शिक्षा देंगे।
(C) पत्नी के मर जाने और घर-गृहस्थी और संपत्ति के नष्ट हो जाने के बाद लुटे-पिटे लोग ही संन्यास ग्रहण करेंगे।
(D) कलियुग में अच्छा समय होगा और लोग सुखी होंगे।
निम्नलिखित में से तुलसीदास द्वारा कहे गए सही विकल्प चुनिए:
(a) (A) और (C) (b) (B) और (C)
(c) (A) और (D) (d) (B) और (D)
UGC NET Dec. 2019

Ans. (a) : 'उत्तरकाण्ड' के कलियुग प्रसंग में तुलसीदास ने लिखा है की आचारहीन और वेद विरोधी लोग ज्ञानी और संन्यासी कहलाएंगे। पत्नी के मर जाने और घर-गृहस्थी और संपत्ति के नष्ट हो जाने के बाद लुटे-पिटे लोग ही संन्यास ग्रहण करेंगे। तुलसीदास कृत 'रामचरितमानस' का अन्तिम काण्ड उत्तरकाण्ड है। रामचरितमानस में सात काण्ड हैं जो इस प्रकार हैं- 1. बालकाण्ड, 2. अयोध्याकाण्ड, 3. अरण्यकाण्ड, 4. किष्किन्धाकाण्ड, 5. सुन्दरकाण्ड, 6. लंकाकाण्ड, 7. उत्तरकाण्ड।

487. हरि अनंत हरि कथा अनंता।
कहहिं सुनहिं बहुबिधि सब संता।
रामकथा के प्रसंग में तुलसीदास ने यह बात किससे कहलवाई है?
(a) शिव (b) याज्ञवल्क्य
(c) काग भुसुंडि (d) तुलसीदास की स्वयं की उक्ति
UGC NET Dec. 2018

Ans : (a) दी गयी काव्य पंक्ति- 'हरिअनंत हरि कथा अनंता कहहि सुनहिं बहुविधि सब संता।। राम कथा के प्रसंग में तुलसीदास ने यह बात शिव जी से कहलवाई है। तुलसीदास की सबसे महत्वपूर्ण रचना 'रामचरितमानस' है। जिसमें सात काण्ड और 1074 दोहे हैं। आचार्य शुक्ल ने तुलसीदास कृत 12 ग्रंथों का उल्लेख किया है जो इस प्रकार हैं-वैराग्य संदीपनी, रामाज्ञाप्रश्न, रामलला नहछू, जानकी मंगल, पार्वती मंगल, कृष्ण गीतावली, गीतावली, विनय पत्रिका, दोहावली, बरवै रामायण, कवितावली।

488. निम्नलिखित में से कौन-सी रचना अग्रदास की नहीं है?
(a) ध्यान मंजरी (b) कुंडलिया
(c) रामध्यान मंजरी (d) रूपमंजरी
UGC NET June. 2019

Ans. (d) : 'रूपमंजरी' अग्रदास की रचना नहीं है। 'रूपमंजरी' नन्ददास की रचना है। नन्ददास की कृतियाँ- रासपंचाध्यायी, सिद्धान्त पंचाध्यायी, मानमंजरी, विरहमंजरी, अनेकार्थ मंजरी, दानलीला, मानलीला, श्यामसगाई, भँवरगीत, सुदामाचरित, रसमंजरी आदि है। इनके विषय में उक्ति प्रसिद्ध है- 'और कवि गढ़िया, नंददास जड़िया' जबकि ध्यानमंजरी, कुंडलिया, रामध्यान मंजरी, अग्रदास की रचना है।

489. 'पार्वती मंगल' किसके द्वारा रचित ग्रन्थ है–
(a) सूरदास (b) मलिक मुहम्मद जायसी
(c) तुलसीदास (d) घनानन्द
म.प्र. उच्च माध्यमिक शिक्षक भर्ती परीक्षा 2018

Ans : (c) 'पार्वती मंगल' तुलसीदास द्वारा रचित ग्रंथ है। तुलसीदास द्वारा रचित अन्य ग्रंथ हैं – रामलला नहछू, वैराग्य संदीपनी, रामाज्ञा प्रश्न, जानकीमंगल, रामचरितमानस, पार्वतीमंगल, गीतावली, विनयपत्रिका, कृष्णगीतावली, बरवैरामायण, दोहावली और कवितावली। वात्सल्य रस के सम्राट कृष्णाश्रयी शाखा के प्रतिनिधि कवि सूरदास की प्रमुख रचनाएँ हैं– सूरसागर, सूरसारावली एवं साहित्य लहरी। ध्यातव्य है कि 'सूरसागर' भ्रमरगीत के लिए एवं 'साहित्य लहरी' दृष्टकूट पदों की रचना के लिए प्रसिद्ध है। 'साहित्य लहरी' में सूरदास की वंशावली का वर्णन मिलता है।

490. 'लोकमंगल की भावना' के सर्वश्रेष्ठ कवि हैं–

(a) मलिक मुहम्मद जायसी (b) तुलसीदास
(c) उसमान (d) केशवदास

UPPSC Degree College Exam. 2013, 2008

Ans. (b) 'लोकमंगल की भावना' के सर्वश्रेष्ठ कवि तुलसीदास है। 'रामचरितमानस' की रचना गोस्वामी तुलसीदास ने 'स्वान्तः सुखाय' के साथ-साथ लोकहित एवं लोकमंगल के लिए किया है।

491. ''केशव कहि न जाय का कहिए। देखत तव रचना विचित्र अति समुझि मनहिं मन रहिए।'' के रचयिता हैं–

(a) तुलसीदास (b) रहीम
(c) केशवदास (d) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

LT Hindi 2018
UPPSC Degree College Exam. 2013
UP TGT 2009

Ans. (a) 'केशव कहि न जाय का कहिए।
देखत तव रचना विचित्र अति समुझि मनहिं
मन रहिए' उपर्युक्त पंक्ति के रचयिता तुलसीदास जी हैं।

492. 'विनय पत्रिका' किस भक्तिकाव्य परम्परा की रचना है?

(a) कृष्णभक्ति काव्य परम्परा (b) रामभक्ति काव्य परम्परा
(c) निर्गुणकाव्य परम्परा (d) शिवभक्तिकाव्य परम्परा

UPPSC Degree College Exam. 2013

Ans. (b) 'विनय पत्रिका' रामभक्ति काव्य परम्परा की रचना है। विनय पत्रिका तुलसीदास द्वारा रचित काव्य है। इस काव्य में 279 छन्द है। यह ब्रजभाषा में रचित काव्य है। इसमें तुलसी के दास्य भाव की भक्ति का प्राकट्य हुआ है।

493. कवि केशवदास की कौन सी कृति अपने वर्ण्य-विषय की अपेक्षा छन्दों की विविधता में भटक गई लगती है?

(a) रामचन्द्रिका (b) कविप्रिया
(c) रसिकप्रिया (d) रतन बावनी

UPPSC Degree College Exam. 2008

Ans. (a) कवि केशवदास की कृति 'रामचन्द्रिका' अपने वर्ण्य विषय की अपेक्षा छन्दों की विविधता में भटक गई लगती है। रामचन्द्रिका केशवदास द्वारा रचित प्रबन्धकाव्य है। इसकी रचना 1601 ई. में की थी इसमें कुल 39 प्रकाश हैं। यह राम चरित्र पर आधारित है।

494. अवधी भाषा की शब्दावली को साहित्य की परिनिष्ठित शब्दावली बनाने का प्रथम श्रेय इन्हें दिया जाता है–

(a) मलिक मुहम्मद जायसी को (b) कुतुबन को
(c) गोस्वामी तुलसीदास को (d) अमीर खुसरो को

UPPSC Degree College Exam. 2008

Ans. (c) अवधी भाषा की शब्दावली को साहित्य की परिनिष्ठित शब्दावली बनाने का प्रथम श्रेय गोस्वामी तुलसीदास को दिया जाता है। गोस्वामी तुलसीदास ने अवधी तथा ब्रज दोनों भाषाओं में रचनाएँ की है। अवधी भाषा में रचित ग्रन्थ हैं- रामचरितमानस, पार्वती मंगल, जानकी मंगल, रामललानहछू, बरवैरामायण। जबकि ब्रजभाषा में लिखे ग्रन्थ हैं- विनय पत्रिका, गीतावली, कवितावली, दोहावली, श्रीकृष्ण गीतावली, वैराग्य संदीपनी आदि।

**495. 'अरथ न धरम न काम रुचि, गति न चहौं निर्वान।
जनम जनम रति राम पद, यह वरदान न आन॥'
'रामचरितमानस' में यह आकांक्षा निम्नलिखित में से किसकी है?**

(a) भरत (b) शबरी
(c) सुग्रीव (d) हनुमान्

GIC. PGT 2015

Ans. (a) 'अरथ न धरम न काम रुचि, गति न चहौं निर्वान।
जनम जनम रति राम पद, यह वरदान न आन।।'
'रामचरित मानस' में यह आकांक्षा 'भरत' की है। उपर्युक्त पंक्ति 'रामचरित मानस' के अयोध्याकाण्ड से उद्धृत है।

496. निम्नलिखित में से एक रामभक्त कवि हैः

(a) कृष्णदास (b) नाभादास
(c) ध्रुवदास (d) श्रीभट्ट

Higher Edu. Exam. 2015

Ans. (b) 'नाभादास' तुलसीदास के समकालीन राम भक्त कवि है। इनका जन्म अनुमानतः 1570 ई. के आस-पास हुआ था। नाभादास ने हिन्दी भक्तमाल की परम्परा का सूत्रपात किया। इनके गुरू का नाम अग्रदास था। नाभादास ने सन् 1585 ई. के आस-पास ब्रजभाषा में 'भक्तमाल' की रचना की।

497. गोस्वामी तुलसीदास जी की कुल कितनी कृतियों में उत्तर–काण्ड सम्बन्धी वर्णन प्राप्त होते हैं?

(a) दो (b) चार
(c) तीन (d) एक

Higher Edu. Exam. 2015

Ans. (b) गोस्वामी तुलसीदास की कुल चार कृतियों में उत्तरकाण्ड सम्बन्धी वर्णन प्राप्त होते हैं। जो इस प्रकार है – (a) रामचरित मानस (b) गीतावली (c) बरवैरामायण (d) कवितावली। तुलसीदास द्वारा रचित अन्य ग्रन्थ हैं– वैराग्य संदीपनी, पार्वती मंगल, कृष्ण गीतावली, विनय पत्रिका, दोहावली, रामाज्ञा प्रश्न, रामलला नहछू आदि।

498. रामचरितमानस के 'उत्तरकाण्ड' के सम्बंध में असत्य कथन का चयन कीजिए

(a) इसमें राम के लोकाश्रयी आनन्द का चित्रण है
(b) यह कवि की कालजयी रचना का समापान बिन्दु है
(c) इसमें शैव एवं वैष्णव मतों का समन्वय दृष्टिगत होता है
(d) इस काण्ड में कवि ने युगीन समस्याओं का उचित तथा सर्वग्राही समाधान दिया है

Higher Edu. Exam. 2015

Ans. (d) रामचरितमानस के 'उत्तरकाण्ड' के सम्बंध में कथन 'इस काण्ड में कवि ने युगीन समस्याओं का उचित तथा सर्वग्राही समाधान दिया है' असत्य है क्योंकि उत्तरकाण्ड में समस्याओं का उचित तथा सर्वग्राही समाधान न देकर युगीन समस्याओं का चित्रण हुआ है।

499. तुलसीदास ने कौनसी रचना कलिकाल से मुक्ति पाने हेतु लिखी?

(a) कवितावली (b) विनयपत्रिका
(c) रामाज्ञा प्रश्न (d) हनुमान बाहुक

NVS. PGT. 2014

Ans. (b) तुलसीदास ने 'विनयपत्रिका' की रचना कलिकाल से मुक्ति पाने हेतु लिखी। विनय पत्रिका में 279 पद है, यह ब्रजभाषा में लिखी गई है। इस ग्रंथ का प्रधान रस 'भक्ति रस' है। इसमें विभिन्न राग-रागिनियों का प्रयोग हुआ है। यह गीत काव्य है। इसकी रचना काशी में हुई थी। इनके द्वारा रचित अन्य ग्रंथ हैं- कवितावली, गीतावली, दोहावली, जानकी मंगल, पार्वती मंगल, रामलला नहछू, बरवै रामायण, वैराग्य संदीपनी, रामाज्ञाप्रश्न, रामचरितमानस, कृष्ण गीतावली तथा दोहावली इत्यादि।

500. ''संसार अपार के पार को, सुगम रूप नौका लियौ। कलि-कुटिल जीव निस्तार हित, वाल्मीकि तुलसी भयौ।''- यह निम्नलिखित में से किसकी उक्ति है?

(a) रहीम (b) स्वामी अग्रदास
(c) नाभादास (d) रामानन्द

UPPSC Degree College Exam. 2008

Ans. (c) ''संसार अपार के पार को, सुगम रूप नौका लियौ।
कलि-कुटिल जीव निस्तार हित, वाल्मीकि तुलसी भयौ।''
यह उक्ति **नाभादास** की है। नाभादास ने 'भक्तमाल' की रचना की है जिसमें 200 कवियों का जीवनवृत्त और उनकी भक्ति की महिमासूचक बातों को 316 छप्पयों में लिखा गया है।

501. 'रामचरितमानस' में वीभत्स रस का प्रयोग किन काण्डों में मिलता है?

(a) अरण्यकाण्ड और लंकाकाण्ड
(b) सुन्दरकाण्ड और उत्तरकाण्ड
(c) बालकाण्ड और अयोध्याकाण्ड
(d) उपर्युक्त सभी काण्डों में

Delhi K.V. PGT. 2015

Ans. (a) 'रामचरितमानस' में वीभत्स रस का प्रयोग अरण्यकाण्ड और लंकाकाण्ड में मिलता है। रामचरितमानस के रचयिता तुलसीदास हैं। इसमें कुल सात काण्ड हैं जो निम्न हैं– बालकाण्ड, अयोध्याकाण्ड, अरण्यकाण्ड, किष्किन्धाकाण्ड, सुन्दरकाण्ड, लंकाकाण्ड, उत्तरकाण्ड।

502. सीता को प्रधानता देकर लिखा गया काव्य 'सीतायन' के रचयिता

(a) नाभादास (b) पोलंकि रामूर्ति
(c) जानकी रसिक शरण (d) रामप्रिया शरण

Delhi K.V. PGT. 2015

Ans. (d) सीता को प्रधानता देकर लिख गया काव्य 'सीतायन' 1703 ई. के रचयिता रामप्रिया शरण दास हैं।

503. 'भक्तमाल' के रचयिता नाभादास के गुरु का नाम था:

(a) नरहरिदास (b) वल्लभाचार्य
(c) विट्ठलनाथ (d) अग्रदास

DIET PGT. 2014

Ans. (d) 'भक्तमाल' के रचयिता नाभादास के गुरू का नाम अग्रदास था। नाभादास ने सन् 1585 ई. के आस-पास ब्रजभाषा में 'भक्तमाल' की रचना की। 'भक्तमाल' में 200 कवियों का जीवनवृत्त और उनकी भक्ति की महिमासूचक बातों को 316 छप्पयों में लिखा गया है।

504. निम्नलिखित विकल्पों में से जो रामभक्ति काव्य की विशेषता नहीं है, उसे छाँटिए :

(a) विष्णु के अवतार-रूप में राम का वर्णन
(b) लोकमंगल एवं समन्वय भावना का प्रतिपादन
(c) असद् पर सद्वृत्तियों की विजय
(d) कृष्ण की विविध लीलाओं का गायन

KVS. PGT. 2014

Ans. (d) कृष्ण की विविध लीलाओं का गायन राम भक्ति काव्य की विशेषता नहीं है। बल्कि यह कृष्ण भक्ति काव्य की विशेषता है। जबकि राम की विविध लीलाओ का गायन, विष्णु के अवतार रूप में राम का वर्णन, लोकमंगल एवं समन्वय भावना का प्रतिपादन, असद् पर सद्वृत्तियों की विजय आदि रामभक्ति काव्य की विशेषताएँ हैं।

505. राम-कथा पर आधारित तुलसीदास के महाकाव्य का क्या नाम है?

(a) भरत मिलाप (b) रामचरितमानस
(c) रामरक्षा स्तोत्र (d) रामचन्द्रिका

KVS. PGT. 2014

Ans. (b) राम-कथा पर आधारित तुलसीदास के महाकाव्य का नाम 'रामचरित मानस' है। जिसकी रचना संवत् 1631 में चैत्रशुक्ल रामनवमी (मंगलवार) को प्रारम्भ हुई थी। इसकी रचना में कुल 2 वर्ष 7 महीना 26 दिन लगा।

506. 'लोकनायक वही हो सकता है जो समन्वय करने का अपार धैर्य लेकर आया हो। उनका सारा काव्य समन्वय की विराट चेष्टा है।' तुलसीदास के संबंध में यह कथन किसका है?

(a) रामचंद्र शुक्ल (b) नन्ददुलारे बाजपेयी
(c) हजारी प्रसाद द्विवेदी (d) ग्रियर्सन

DSSSB PGT-24.07.2018 (9:00 am-12:00 pm)
MP Asst. Prof. Hindi 2017
UP HSC Asst. Prof. 2016
GIC. PGT 2012, NVS. PGT 2014

Ans. (c) उपर्युक्त कथन गोस्वामी तुलसीदास के संबंध में आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी का है। हजारीप्रसाद द्विवेदी की प्रमुख आलोचनात्मक रचनाएँ हैं – (a) सूरसाहित्य (b) हिन्दी साहित्य की भूमिका (c) कबीर (d) हिन्दी साहित्य का आदिकाल (5) कालिदास की लालित्य योजना।

507. 'गोद लिए हुलसी फिरैं, तुलसी सो सुत होय।' यह पंक्ति इनमें से किस कवि की है?

(a) प्राणचन्द्र चौहान (b) नाभादास
(c) नरोत्तमदास (d) रहीम

LT Hindi 2018, GIC. PGT 2015
राजस्थान कॉलेज लेक्चरर भर्ती परीक्षा (पेपर-II) 2014

Ans. (d) 'गोद लिए हुलसी फिरैं, तुलसी सो सुत होय।' यह पंक्ति कवि रहीम की है। ये तुलसीदास के परम मित्र थे। कहा जाता है कि तुलसीदास एक व्यक्ति की सहायता के लिए कवि रहीम के पास एक पत्र देकर भेजे थे। जिसमें लिखे थे-सुरतिय, नरतिय, नागतिय, सब चाहत अस होय। जिसके उत्तर में कवि रहीम लिखे थे- 'गोद लिए हुलसी फिरैं, तुलसी सो सुत होय।'

508. 'रूपकों का बादशाह' किसे कहा जाता है?

(a) तुलसीदास (b) सूरदास
(c) कबीरदास (d) परमानन्द दास

UP PGT 2010

Ans. (a) 'रूपकों का बादशाह' रामभक्ति शाखा के सिरमौर महाकवि तुलसीदास जी को कहा जाता है। तुलसीदास जी ने 12 प्रामाणिक रचनाएं की हैं जिसमें से 6 ब्रजभाषा में और 6 अवधी में लिखी गयी है। तुलसीदास द्वारा लिखित महाकाव्य 'रामचरितमानस' अवधी भाषा में लिखा गया है। इसमें सात काण्ड हैं।

509. गोस्वामी जी के पिता का नाम था?

(a) गंगाराम (b) आत्माराम
(c) देवतादीन (d) इनमें से कोई नहीं है।

UP PGT 2011

Ans. (b) गोस्वामी तुलसीदास के पिता का नाम आत्माराम दुबे माता का नाम 'हुलसी' तथा इनकी पत्नी का नाम 'रत्नावली' था। गोस्वामी तुलसीदास के दीक्षा गुरु स्वामी नरहर्यानन्द तथा शिक्षा गुरु शेष सनातन थे। गोस्वामी का जन्म उ. प्र. के चित्रकूट जिले के राजापुर नामक गाँव में हुआ था।

510. रामानंद ने किस पुस्तक में अपनी पूरी गुरु परम्परा का उल्लेख किया हैः–

(a) आनंदभाष्य (b) पंचस्तवी
(c) सहस्रगीति (d) रामार्चन पद्धति

UP PGT 2013

Ans. (d) रामानंद ने 'रामार्चन पद्धति' नामक पुस्तक में अपनी पूरी परम्परा का उल्लेख किया है। इनके गुरु का नाम राघवानंद था। इन्होंने 'रामावत सम्प्रदाय' की स्थापना की थी। इनके द्वारा रचित प्रमुख ग्रंथ हैं–(a) वैष्णवमताब्जभास्कर (b) श्री रामार्चन पद्धति (c) योगचिंतामणि, (d) रामरक्षास्त्रोत (5) आनन्दभाष्य आदि।

511. 'अष्टयाम' नामक पुस्तक में किसकी दिनचर्या का वर्णन है?

(a) कृष्णा (b) राम
(c) विष्णु (d) शंकर

UP PGT 2013

Ans. (b) 'अष्टयाम' नामक पुस्तक के रचयिता नाभादास हैं। इस पुस्तक में राम की दिनचर्या का वर्णन है। अष्टयाम की रचना श्रृंगार एवं रसिक भावना को लेकर की गयी है।

512. नाभादास कृत 'भक्तमाल' की भाषा है–

(a) अवधी (b) ब्रजभाषा
(c) हिन्दी खड़ी बोली (d) मैथिली

UP PGT 2003

Ans. (b) गोस्वामी तुलसीदास के समकालीन रामभक्ति शाखा के प्रमुख कवियों में नाभादास का नाम उल्लेखनीय है। नाभादास ने 'भक्तमाल' (सन् 1585 ई.) की रचना ब्रजभाषा में की थी। नाभादास की अन्य रचना 'अष्टयाम' (ब्रजभाषा) तथा 'अष्टयाम' (अवधी) भी है। नाभादास को संस्कृत काव्यशास्त्र तथा छन्दशास्त्र का अच्छा ज्ञान था।

513. 'रामरक्षा स्त्रोत' रचना के लेखक हैं–

(a) केशवदास (b) नाभादास
(c) ईश्वरदास (d) रामानंद

UP PGT 2010

Ans. (d) 'रामरक्षास्त्रोत' के लेखक स्वामी रामानन्द हैं। रामानन्द द्वारा रचित रामरक्षा स्रोत की सूचना 'काशी नागरी प्रचारिणी सभा' के खोज विवरण में दी गई है। स्वामी रामानन्द संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान थे। 'श्रीरामार्चन पद्धति' तथा 'वैष्णव मताब्ज भास्कर' इनके अन्य प्रसिद्ध ग्रन्थ हैं- कविप्रिया, रसिकप्रिया, रामचन्द्रिका, विज्ञानगीता आदि केशवदास की रचनाएँ हैं। 'नाभादास' ने 'भक्तमाल' की रचना की है। सत्यवतीकथा और भरतमिलाप के लेखक ईश्वरदास हैं।

514. कीरति भनिति भूति भलि सोई।
सुरसरि सम सब कहँ हित होई।।
–तुलसीदास की इस पंक्ति में कौन-सा काव्य प्रयोजन स्पष्ट है?

(a) यश की प्राप्ति (b) स्वान्तः सुखाय
(c) लोक मंगल (d) धनार्जन

UP PGT 2010

Ans. (c) कीरति भनिति भूति भलि सोई।
सुरसरि सम सब कहँ हित होई।।
इस पंक्ति में गोस्वामी तुलसीदास जी लोकमंगल की कामना करते हैं। तुलसी की रचनाएँ लोक कल्याण तथा लोकमंगल की भावना से ओतप्रोत हैं।

515. "मैं पुनि निज गुरु सन सुनी कथा सो सूकर खेत'–यह कथन किस कवि का है–

(a) तुलसीदास (b) कबीरदास
(c) नाभादास (d) सूरदास

UP PGT 2009

Ans. (a) उपर्युक्त पंक्तियाँ तुलसीदास ने अपने गुरु के प्रति समर्पित करते हुए सोरो क्षेत्र का वर्णन किया है जो वर्तमान में एटा जनपद में गंगा जी के समीप स्थित है जिससे यह सिद्ध होता है कि तुलसीदास सोरो के निवासी थे।

516. 'रामचरितमानस' के ज्ञानदीपक प्रसंग किस काण्ड में वर्णित है–

(a) उत्तरकाण्ड (b) अयोध्याकाण्ड
(c) बालकाण्ड (d) अरण्यकाण्ड

UP PGT 2009

Ans. (a) ज्ञानदीपक प्रसंग 'रामचरितमानस' के उत्तरकाण्ड में वर्णित है। तुलसीदास कृत रामचरितमानस रामकथा पर आधारित महाकाव्य है। इसकी रचना अवधी भाषा में तथा दोहा-चौपाई शैली में हुई है।

517. तुलसीदास द्वारा शारीरिक पीड़ा से मुक्ति हेतु लिखा गया ग्रन्थ है -

(a) रामलला नहछू (b) बरवै रामायण
(c) हनुमान बाहुक (d) विनय पत्रिका

UP PGT 2004

Ans. (c) 'हनुमान बाहुक' गोस्वामी तुलसीदास द्वारा शारीरिक पीड़ा से मुक्ति पाने के लिए लिखा गया ग्रंथ है। 'बरवै रामायण' की रचना तुलसी ने अपने मित्र रहीम के आग्रह पर की थी। 'विनय पत्रिका' की रचना 'कलिकाल' से मुक्ति पाने के लिए की गई।

518. 'रामचरितमानस' से किस संवाद का सम्बन्ध नहीं है :

(a) शिव-पार्वती संवाद (b) याज्ञवल्क्य-भरद्वाज संवाद
(c) राम-सीता संवाद (d) काकभुशुण्डि-गरुड़ संवाद

UP PGT 2004

Ans. (c) गोस्वामी तुलसीदास जी द्वारा रचित 'रामचरितमानस' में राम-सीता संवाद वर्णित नहीं है। यह महाकाव्य शिव-पार्वती संवाद, याज्ञवल्क्य-भरद्वाज संवाद, काकभुशुण्डि-गरुड़ संवाद, तुलसी-संत-संवाद के माध्यम से वर्णित किया गया है।

519. 'मैं नारि अपावन प्रभु जग पावन रावन रिपु जन सुखदाई।
राजीव बिलोचन भव भय मोचन पाहि-पाहि सरनहिं आई।।
'रामचरितमानस' की उक्त चौपाई में व्यक्त विचार किस पात्र के हैं?
(a) अहल्या (b) शबरी
(c) तारा (d) मंदोदरी
UGC NET III[rd] Paper Jan. 2017

Ans. (a) मैं नारि अपावन प्रभु जग पावन रावन रिपु जन सुखदाई।
राजीव विलोचन भव भय मोचन पाहि-पाहि सरनहिं आई।। रामचरितमानस की उक्त चौपाई में व्यक्त-विचार अहल्या ने व्यक्त किया है। जब भगवान श्री राम अपने पत्नी सीता तथा अनुज लक्ष्मण के साथ 14 वर्षों का वनवास हेतु बन गये थे उस समय भगवान श्रीराम ने शापित अहल्या की अपने पवित्र चरणों से छूकर पुनः मानव जीवन प्रदान किया।

520. 'रामचरितमानस' नामक महाकाव्य की रचना शैली है।
(a) दोहा-चौपाई शैली (b) बरवै शैली
(c) मसनबी शैली (d) उपर्युक्त सभी
UP PGT 2002

Ans. (a) 'रामचरितमानस' महाकाव्य भक्त कवि तुलसीदास द्वारा रचित है। रामचरितमानस की रचना अवधी भाषा में दोहा-चौपाई शैली में हुई।

521. अवधी एवं ब्रजभाषा दोनों में रचना करने वाले कवि हैं
(a) सूरदास (b) तुलसीदास
(c) घनानंद (d) उपर्युक्त सभी
राजस्थान कॉलेज लेक्चरर भर्ती परीक्षा 2014
UP PGT 2002

Ans. (b) गोस्वामी तुलसीदास जी द्वारा अवधी एवं ब्रजभाषा दोनों में रचना की गई। तुलसीदास रचित अन्य ग्रन्थ-रामचरितमानस, बरवै रामायण, पार्वती मंगल, जानकी मंगल, रामलला नहछू आदि हैं।

522. तुलसीदास की किस रचना का सम्बन्ध ज्योतिष से है?
(a) रामलला नहछू (b) जानकी मंगल
(c) हनुमान-बाहुक (d) रामाज्ञा प्रश्नावली
UGC NET II[nd] Paper June. 2007

Ans. (d) तुलसीदास की रचना 'रामाज्ञा प्रश्नावली' का संबंध ज्योतिष से है। गोस्वामी तुलसीदास (1532-1623 ई.) की रचना एवं उसका सम्बन्ध या रचना की विषयवस्तु -

रचना	विषय वस्तु
रामलला नहछू	संस्कारों पर स्त्री गीत अर्थात सोहर, भगवान राम के जन्म के समय से सम्बन्धित है।
जानकी मंगल	भगवान राम-सीता के विवाह का वर्णन
हनुमान बाहुक	बाहु पीड़ा से मुक्ति के लिये हनुमान जी की स्तुति की गयी है।

523. तुलसीदास की किस रचना में संत-महंतों के लक्षण वर्णित हैं?
(a) वैराग्य संदीपनी (b) रामाज्ञा प्रश्न
(c) पार्वती मंगल (d) जानकी मंगल
UGC NET III[rd] Paper Dec. 2013

Ans. (a) तुलसीदास की रचना 'वैराग्य संदीपनी' में संतो और महंतो के लक्षण वर्णित हैं।

रचना	विषय-वस्तु
रामाज्ञा प्रश्न	ज्योतिष संबंधी रचना है।
पार्वती मंगल	पार्वती और शिव के विवाह का वर्णन है।
जानकी मंगल	जानकी एवं राम के विवाह का वर्णन है।

524. तुलसीदास के गुरू थे
(a) रामानंद (b) हनुमत् शास्त्री
(c) नरहर्यानन्द (d) रामानुजाचार्य
UGC NET II[nd] Paper Dec. 2014

Ans. (c) लोकनायक तुलसीदास के दीक्षा गुरू- नरहर्यानन्द, और शिक्षा गुरू शेषसनातन थे।

525. 'बरवै रामायण' किसकी रचना है?
(a) सूरदास (b) तुलसीदास
(c) नंददास (d) केशवदास
UGC NET II[nd] Paper June. 2010

Ans. (b) 'बरवै रामायण' तुलसीदास की रचना है। अन्य रचना एवं रचनाकार इस प्रकार हैं-

रचना	रचनाकार
साहित्य लहरी	सूरदास
रासपंचाध्यायी	नन्ददास
विज्ञानगीता	केसवदास

526. इनमें से कौन सी रचना तुलसीदास की है?
(a) रामध्यान मंजरी (b) रामसतसई
(c) कृष्णगीतावली (d) श्रीरामार्चन पद्धति
UGC NET III[rd] Paper Dec. 2012

Ans. (c) 'कृष्ण गीतावली' तुलसीदास की रचना है।

रचना	रचनाकार
श्रीरामार्चन पद्धति	रामानन्द
रामध्यानमंजरी	स्वामी अग्रदास

नोट-शिव सिंह सेंगर ने रामसतसई' को तुलसीदास की रचना बताया है।

527. 'कबीर कानि राखी नहीं, वर्णाश्रम षट दरसनी' किसने कहा है?
(a) रैदास (b) मलूकदास
(c) नाभादास (d) प्रियादास
UGC NET III[rd] Paper Dec. 2012

Ans. (c) नाभादास रामभक्ति शाखा के कवि हैं। इन्होंने लगभग 1585 ई. में भक्तमाल की रचना की। यह एक जीवनीपरक ग्रन्थ है। इसी में कबीर के सन्दर्भ में कहते हैं कि-
'कबीर कानि राखी नहीं, वर्णाश्रम षट दरसनी'
नाभादास तुलसी के सन्दर्भ में भी कहते हैं-
कलि कुटिल जीव निस्तारहि वाल्मीकि तुलसी भयो।
नोट-प्रियादास ने 'भक्तमाल' की टीका लिखी है।

528. गोस्वामी तुलसीदास की रचनाओं का सही क्रम कौन सा है?
(a) गीतावली-दोहावली-विनय पत्रिका-रामचरित मानस
(b) रामचरित मानस-दोहावली-गीतावली-विनय पत्रिका
(c) दोहावली-गीतावली-रामचरित मानस-विनय पत्रिका
(d) विनय पत्रिका-दोहावली-गीतावली-रामचरित मानस
UGC NET II[nd] Paper Dec. 2012

Ans. (b) गोस्वामी तुलसीदास (1532-1623 ई.) की रचनाओं का सही अनुक्रम है- रामचरित मानस-दोहावली-गीतावली-विनय पत्रिका। जबकि डॉ उदयभानु सिंह के अनुसार इनका क्रम है-

वैराग्य संदीपनी (सं. 1626-27),
रामाज्ञा प्रश्न (दोहावली रामायण) (सं. 1627-28),
रामलला नहछू (सं. 1628-29),
जानकी मंगल (सं. 1629-30),
रामचरित मानस (सं. 1631)
पार्वती मंगल (सं. 1643),
कृष्ण गीतावली (सं. 1643-60),
गीतावली (पदावली रामायण) (सं. 1630-70),
विनय पत्रिका (विनयावली, रामगीतावली) (सं. 1631-79),
दोहावली (सं. 1626-80)
बरवै रामायण (बरवा (सं. 1630-80),
कवितावली या कबित्तावली (हनुमानबाहुक) (सं. 1631-80)

529. गोस्वामी तुलसीदास की अन्तिम रचना कौन-सी है?
(a) विनयपत्रिका (b) दोहावली
(c) कवितावली (d) हनुमानबाहुक

UGC NET III[rd] Paper June. 2012

Ans. (d) 'हनुमानबाहुक' तुलसीदास की अन्तिम रचना मानी जाती है। जीवन के अन्तिम समय जब तुलसीदास जी के भुजाओं में असहनीय पीड़ा हो रही थी, तब उससे मुक्ति के लिए गोस्वामी जी ने इसकी रचना की थी। हनुमानबाहुक, कवितावली या कवित्तावली में संग्रहीत है। यह ब्रजभाषा में तथा कवित्त एवं छप्पय छन्दों में रचित है।

530. इनमें से कौन सी रचना अवधी भाषा की नहीं है?
(a) रामचरितमानस (b) पद्मावत
(c) विनयपत्रिका (d) चंदायन

UGC NET II[nd] Paper Dec. 2010

Ans. (c) 'विनयपत्रिका' अवधी भाषा की रचना नहीं है बल्कि यह ब्रजभाषा में रची गई है। अन्य रचना एवं भाषा का विवरण-

रचना	रचनाकार	भाषा
रामचरितमानस	तुलसीदास	अवधी
पद्मावत	जायसी	ठेठ अवधी
विनयपत्रिका	तुलसीदास	ब्रजभाषा
चंदायन	मुल्ला दाऊद	अवधी

531. तुलसीकृत कृष्ण काव्य कौन सा है?
(a) कृष्णायन (b) कृष्ण चरित
(c) कृष्ण चन्द्रिका (d) कृष्णगीतावली

UGC NET II[nd] Paper Dec. 2006

Ans. (d) 'कृष्ण गीतावली' तुलसीदास जी के कृष्ण काव्य पर रचित ग्रंथ है। कृष्णायन (1942 ई.) द्वारका प्रसाद मिश्र का महाकाव्य है।

532. इनमें से कौन सा ग्रन्थ तुलसी द्वारा रचित नहीं है?
(a) गीतावली (b) दोहावली
(c) विनय पत्रिका (d) रसमंजरी

UP TGT 2011

Ans. (d) 'रसमंजरी' नंददास द्वारा रचित है। गीतावली, दोहावली, विनय पत्रिका, रामचरितमानस, कवितावली आदि तुलसीदास द्वारा रचित ग्रन्थ हैं।

533. राम और सीता के विवाह के अवसर पर किस कवि ने मिथिला की स्त्रियों से 'गारी गीत' गवाया है?
(a) तुलसीदास (b) स्वामी अग्रदास
(c) केशवदास (d) प्राणचंद चौहान

UGC NET III[rd] Paper Jan. 2017

Ans. (c) केशवदास जी ने राम और सीता के विवाह के अवसर पर मिथिला की स्त्रियों से 'गारी गीत' गवाया है। केशवदास कृत रामचन्द्रिका (1901 ई.) प्रबन्धकाव्य में जो कि भगवान श्रीराम के चरित्र पर आधारित है। इसमें 39 प्रकाश हैं।

534. इनमें से कौन सी रचना तुलसीदास की नहीं है?
(a) रामचरित मानस (b) कवितावली
(c) गीतावली (d) साकेत

UP TGT 2011

Ans. (d) 'साकेत' तुलसीदास की रचना नहीं है, बल्कि यह राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त की रचना है। मैथिलीशरण गुप्त की अन्य रचनाएँ-जयद्रथवध, भारत-भारती, पंचवटी, यशोधरा, द्वापर, सिद्धराज, नहुष, जयभारत, झंकार, मेघनादवध आदि हैं। रामचरितमानस, कवितावली एवं गीतावली गोस्वामी तुलसीदास की रचनाएँ हैं।

535. स्वामी अग्रदास का संबंध किस भक्ति-शाखा से है?
(a) ज्ञानमार्गी शाखा (b) प्रेममार्गी शाखा
(c) रामभक्ति शाखा (d) कृष्णभक्ति शाखा

UGC NET III[rd] Paper June. 2016
GIC PGT 2015

Ans. (c) स्वामी अग्रदास सगुण काव्यधारा के 'रामभक्ति शाखा' से सम्बन्धित हैं। स्वामी अग्रदास ने अपनी गद्दी जयपुर के पास रैवास में स्थापित किया। रसिक सम्प्रदाय में इन्हें 'अग्रअली' भी कहा जाता है। स्वामी अग्रदास द्वारा रचित प्रमुख ग्रंथ हैं-
हितोपदेश उपखाणा बावनी, ध्यानमंजरी, रामध्यानमंजरी, कुण्डलिया, तथा अष्टयाम या रामाष्टयाम।

536. भक्तिकाल के किस कवि को जातीय कवि कहा जाता है–
(a) सूरदास (b) तुलसीदास
(c) नाभादास (d) नन्ददास

UP TGT 2003

Ans. (b) भक्तिकाल की रामकाव्य धारा के सर्वप्रमुख भक्त कवि संत शिरोमणि गोस्वामी तुलसीदास हिन्दी साहित्य के सर्वाधिक लोकप्रिय कवि हैं। तुलसीदास को भक्तिकाल के 'जातीय कवि' की संज्ञा दी जाती है। रामचरितमानस, विनयपत्रिका तथा कवितावली, गीतावली, दोहावली आदि तुलसीदास की प्रमुख रचनाएं हैं। सूरदास, नन्ददास कृष्ण भक्ति शाखा के प्रमुख कवि हैं। सूरसागर, सूरसारावली तथा साहित्य लहरी सूरदास की, अनेकार्थ मंजरी, रसमंजरी, मानमंजरी, रासपंचाध्यायी तथा सिद्धापंचाध्यायी नन्ददास एवं 'अष्टयाम' नाभादास की रचना है।

537. 'गीतावली' है–
(a) मुक्तक काव्य (b) अतुकांत काव्य
(c) प्रबन्धक काव्य (d) इनमें से कोई नहीं

UP TGT 2003

Ans. (a) 'गीतावली' तुलसीदास द्वारा रचित एक गीतिकाव्य मुक्तक काव्य है। रामभक्ति शाखा के सर्वाधिक लोकप्रिय भक्त कवि गोस्वामी तुलसीदास ने बड़े-छोटे कुल बारह ग्रंथों की रचना की। गीतावली, रामचरितमानस, दोहावली, कवित्त रामायण, रामाज्ञा प्रश्न तथा विनयपत्रिका तुलसी द्वारा रचित बड़े ग्रंथ हैं। समन्वयवादी चेतना एवं लोकमंगल की विराट भावना से अभिप्रेरित तुलसीदास ने प्रबन्ध एवं मुक्तक दोनों काव्य ग्रंथों की रचना की। गीतावली व कवितावली तुलसी द्वारा रचित मुक्तक काव्य ग्रंथ हैं।

538. तुलसीदास जी ने भी 'भ्रमरगीत-परम्परा' के अन्तर्गत 'भ्रमरगीत' की रचना की है, जो संकलित है –
(a) जानकी मंगल में (b) कृष्णगीतावली में
(c) गीतावली में (d) कवितावली में
UP TGT 2002

Ans. (b) राम काव्य धारा के सर्वप्रमुख भक्त कवि गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित 'भ्रमरगीत' उनकी रचना 'कृष्णगीतावली' में संकलित है। रामचरितमानस, विनयपत्रिका, रामलला नहछू, पार्वती मंगल, जानकी मंगल, बरवै रामायण, वैराग्य संदीपनी, रामाज्ञा प्रश्न, कवितावली, गीतावली आदि तुलसीदास की अन्य रचनाएँ हैं।

539. 'गिरा अरथ, जल बीचि सम कहियत भिन्न न भिन्न।
बंदौं सीताराम पद जिनहि परम प्रिय खिन्न॥'
उक्त काव्य पंक्तियाँ किस कवि की हैं?
(a) केशवदास (b) तुलसीदास
(c) ईश्वरदास (d) नागरीदास
UGC NET III[rd] Paper June. 2016

Ans. (b)
'गिरा अरथ, जल बीचि सम कहियत भिन्न न भिन्न।
बंदौ सीताराम पद जिनहि परम प्रिय खिन्न।।'
काव्य पंक्तियाँ तुलसीदास की हैं। अन्य काव्य पंक्तियाँ निम्न हैं-

काव्य पंक्तियाँ	कवि
केसव केसनि अस करी बैरिहु जस न कराहिं। चन्द्रबदनि मृगलोचनी 'बाबा' कहि-कहि जाहि।।	केशवदास
अधर मधुरता कठिनता कुच तिक्षनता त्यौर। रस कवित्त परिपक्वता जाने रसिक न और।।	भिखारीदास
एक चित्त हमैं चितवै उस जोगी चित जोग। धरम न जानसि पापी, कहसि कौन तैं लोग।।	ईश्वरदास

540. तुलसी की भक्ति किस प्रकार की है?
(a) सख्य (b) माधुर्य
(c) दास्य (d) वात्सल्य
Uttarakhand Assi. Pro. 2017
KVS PGT 2016, UP PGT 2011

Ans. (c) तुलसी की भक्ति दास्य भाव की थी। नौ प्रकार की भक्ति मानी गई है, जिसे नवधा भक्ति कहते हैं। निम्न श्लोक द्रष्टव्य हैं-
श्रवणं कीर्तनं विष्णोः स्मरणं पादसेवनम्।
अर्चनं वन्दनं दास्यं साख्यमात्मनिवेदनम्।।

541. ''सचिव बैद गुरू तीनि ज्यों प्रिय बोलहिं भय आस।
राज, धर्म, तन तीनि कर होहिं बेगिहीं नास ॥''
यह दोहा 'रामचरितमानस' के किस कांड में है?
(a) बालकांड (b) अयोध्याकांड
(c) सुन्दरकांड (d) लंकाकांड
UGC NET III[rd] Paper Nov. 2017

Ans. (c) उक्त दोहा 'रामचरितमानस' के सुन्दरकाण्ड में वर्णित है। रामचरितमानस में कुल सात काण्ड हैं जो इस प्रकार हैं–
(1) बालकाण्ड (2) अयोध्याकाण्ड (3) अरण्यकाण्ड
(4) किष्किन्धाकाण्ड (5) सुन्दरकाण्ड (6) लंकाकाण्ड
(7) उत्तरकाण्ड

542. तुलसीदास ने 'रामचरितमानस' के किस कांड में कलियुग का वर्णन किया है?
(a) बालकांड (b) अयोध्याकांड
(c) अरण्यकांड (d) उत्तरकांड
UGC NET III[rd] Paper Nov. 2017

Ans. (d) तुलसीदास ने 'रामचरितमानस' के 'उत्तरकाण्ड' में कलियुग का वर्णन किया है यह अवधी भाषा तथा दोहा-चौपाई छन्द में रचित एक प्रबंध काव्य है।। 'रामचरितमानस' में कुल सात काण्ड हैं– बालकाण्ड, अयोध्याकाण्ड, अरण्यकाण्ड, किष्किन्धाकाण्ड, सुन्दरकाण्ड, लंकाकाण्ड तथा उत्तरकाण्ड।

543. 'सगुनहि अगुनहि नहिं कछु भेदा' – इस तथ्य को तुलसीदास ने किसके द्वारा कहलवाया है?
(a) शिव
(b) काग भुसुंडि
(c) भरद्वाज
(d) तुलसीदास की स्वयं की उक्ति
UGC NET II[nd] Paper Nov. 2017

Ans. (a) गोस्वामी तुलसीदास ने रामचरितमानस के बालकाण्ड के अन्तर्गत 'शिव-पार्वती संवाद' में भगवान शिव द्वारा यह चौपाई कहलवायी है।
यथा– सगुनहिं अगुनहिं नहिं कछु भेदा।
गावहिं मुनि पुरान बुध बेदा।
अगुन अरूप अलख अज जोई।
भगत प्रेम बस सगुन सो होई।।

544. 'राम-राज्याभिषेक की तैयारी' रामचरितमानस के किस काण्ड का हिस्सा है?
(a) अरण्यकाण्ड (b) सुन्दरकाण्ड
(c) अयोध्याकाण्ड (d) उत्तरकाण्ड
Jharkhand PGT Hindi, 2018

Ans : (c) तुलसीदास कृत 'रामचरितमानस' में राम राज्याभिषेक की तैयारी का वर्णन अयोध्याकाण्ड में है। यह अवधी भाषा में लिखा गया है। इसमें सात काण्ड हैं- (1) बालकाण्ड (2) अयोध्याकाण्ड (3) अरण्यकाण्ड (4) किष्किन्धाकाण्ड (5) सुन्दरकाण्ड (6) लंकाकाण्ड (7) उत्तरकाण्ड है।

545. रामचरितमानस के अयोध्या-काण्ड में कौन सा संवाद नहीं है?
(a) श्री राम-भारत-संवाद
(b) श्री सीता-राम- संवाद
(c) श्री राम-बाल्मीकि-संवाद
(d) शिव-पार्वती-संवाद
Jharkhand PGT Hindi, 2018

Ans : (d) रामचरितमानस के अयोध्याकाण्ड में शिव-पार्वती-संवाद नहीं हुआ है जबकि अयोध्या-काण्ड में श्रीराम-भरत-संवाद, श्रीराम-सीता-संवाद तथा श्रीराम और वाल्मिकी संवाद हुआ है।

546. अयोध्याकाण्ड के प्रथम श्लोक में किसकी स्तुति की गयी है?
(a) राम की (b) सीता की
(c) शंकर की (d) हनुमान की
Jharkhand PGT Hindi, 2018

Ans : (c) रामचरितमानस का हृदय स्थल कहे जाने वाले काण्ड - अयोध्याकाण्ड के प्रथम श्लोक में भगवान शंकर की स्तुति की गयी हैं।

547. 'चित्रकूट-निवास' रामचरितमानस के किस काण्ड का हिस्सा है?
(a) अयोध्याकाण्ड (b) अरण्यकाण्ड
(c) सुंदरकाण्ड (d) बालकाण्ड
Jharkhand PGT Hindi, 2018

Ans : (a) रामचरितमानस के हृदयस्थल कहे जाने वाले अयोध्याकाण्ड में भगवान राम-सीता और लक्ष्मण का चित्रकूट निवास वर्णित है, शेष काण्ड-अरण्य, बाल और सुन्दरकाण्ड तीनों असंगत हैं।

548. तुलसीदास की कौन सी रचना ब्रजभाषा में है?
(a) जानकी मंगल (b) कवितावली
(c) बरवै रामायण (d) रामलला नहछू

Jharkhand PGT Hindi, 2018

Ans : (b) तुलसीदास की रचना 'कवितावली' ब्रजभाषा में है। जबकि जानकी मंगल, बरवै रामायण और रामलला नहछू अवधी भाषा में है। ब्रजभाषा में रचित इनकी अन्य रचनाएँ है- विनय पत्रिका, कृष्णगीतावली, दोहावली इत्यादि।

549. 'अब लौं नसानी अब न नसैहौं' तुलसीदास की यह उक्ति उनकी किस रचना से उद्धृत है?
(a) कवितावली (b) दोहावली
(c) रामचरित मानस (d) विनयपत्रिका

KVS PGT Hindi, 2016
UP TGT 2005

Ans. (d) : 'अब लौं नसानी अब न नसैहौं' पंक्ति तुलसी कृत 'विनय पत्रिका' ग्रंथ से उद्धृत है। इनका यह ग्रंथ ब्रज भाषा में रचित है। कवितावली, गीतावली, दोहावली, रामचरितमानस के भी रचनाकार तुलसीदास हैं।

550. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित ग्रंथों की संख्या कितनी मानी है?
(a) 10 (b) 12
(c) 5 (d) 7

MP Asst. Prof. Hindi 2017
KVS PGT Hindi, 2016

Ans. (b) : आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित ग्रंथों की संख्या 12 मानते हैं। वे ग्रंथ निम्न हैं (1) रामचरितमानस (2) गीतावली (3) दोहावली (4) कवितावली (5) विनय पत्रिका (6) बरवै रामायण (7) पार्वती मंगल (8) जानकी मंगल (9) वैराग्य संदीपनी (10) कृष्णगीतावली (11) रामललानहछू (12) रामाज्ञाप्रश्नावली।

551. प्राणचंद चौहान का संबंध भक्ति की किस शाखा से है?
(a) रामभक्ति शाखा (b) कृष्णभक्ति शाखा
(c) स्वसुखी शाखा (d) ज्ञानमार्गी शाखा

Ans : (a) प्राणचंद चौहान का संबंध भक्ति की रामभक्ति शाखा से है। भक्ति की प्रमुख शाखाएं तथा उनके पुरोधा कवि इस प्रकार है-

शाखा		प्रमुख कवि
ज्ञानमार्गी शाखा	-	कबीरदास
प्रेममार्गी शाखा	-	मलिक मुहम्मद जायसी
रामभक्ति शाखा	-	तुलसीदास
कृष्ण भक्ति शाखा	-	सूरदास
स्वसुखी शाखा	-	जीवाराम

552. 'गोरख जगायो जोग'
- भगति भगायो लोग।'
इन पंक्तियों में तुलसी का अभिप्राय है:
(a) नाथ पंथ का हठयोग मार्ग हृदयपक्ष शून्य है।
(b) जनता हठयोग को पसंद करती थी।
(c) योगियों की रहस्यभरी बनियों से जनता की भक्ति-भावना दब गई थी।
(d) जनता भक्ति मार्ग से विमुख हो गई थी।

कोड:
(a) (a), (b) और (d) सही (b) (b), (c) और (d) सही
(c) (a) और (d) सही (d) (a) और (c) सही

Ans : (d) गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित 'गोरख जगायो जोग, भगति भगायो लोग।' से गोस्वामी जी का अभिप्राय है- 'नाथ पंथ का हठयोग हृदय पक्ष शून्य है एवं योगियों की रहस्यभरी बानियों से जनता की भक्ति-भावना दब गई थी। अतः (a) और (c) सही है।

553. झूठो है, झूठो है, झूठो सदा जगु, संत कहंत जे अंतु लहा है।
ताको सहै सठ! संकट कोटिक, काढत दंत, करंत हहा है।
जानपनी को गुमान बड़ो, तुलसी के बिचार गँवार महा है।
जानकी जीवनु जान न जान्यों तौ जान कहावत जान्यो कहा है।।
तीसरी पंक्ति में तुलसीदास कहना चाहते हैं कि:
(A) उन्हें अपने ज्ञानीपने का बहुत अभिमान है।
(B) वे स्वयं महा गँवार है।
(C) संसार को झूठा कहने वाले महा गँवार हैं।
(D) जानकी के जीवन से अनभिज्ञ लोग गँवार हैं।
कोड:
(a) (C) और (D) सही
(b) (A) और (B) सही
(c) (A) और (C) सही
(d) (A), (C) और (D) सही

Ans : (b) दिये गये काव्यांश में वर्णित तीसरी पंक्ति "जानपनी को गुमान बड़ो, तुलसी के विचार गँवार महा है।" में गोस्वामी तुलसीदास कहना चाहते हैं कि "उन्हें अपने ज्ञानीपने का बहुत अभिमान है एवं वे स्वयं महा गँवार हैं।"
अर्थात् जिसको भी अपने ज्ञानी होने का गुमान (अभिमान या घमण्ड) होता है तो वह स्वयं महागँवार (महामूर्ख) है। अतः (a) और (b) सही हैं।

554. तुलसीदास की प्रमुख रचना है
(a) रामायण (b) रामचरितमानस
(c) कीर्तनावली (d) रामरासो

NVS TGT Hindi, 2016

Ans. (b) : तुलसीदास की प्रमुख रचना 'रामचरितमानस' (1574 ई.) है। जो कि सात काण्डों में विभक्त है। तुलसीदास की अन्य रचनाएँ- कवितावली, गीतावली, विनयपत्रिका, कृष्णगीतावली, रामलला नहछू, वैराग्य संदीपनी, हनुमानबाहुक आदि।

555. 'कबहूँ जोग बियोग न जाके।
देखा प्रगट बिरह दुखु ताके।।'
उपर्युक्त पंक्तियाँ कहाँ से उद्धृत हैं और रचनाकार कौन हैं?
(a) गीतावली और तुलसीदास
(b) सूर-सागर और सूरदास
(c) पद्मावत और जायसी
(d) रामचरितमानस और तुलसीदास

NVS TGT Hindi, 2016

Ans. (d) : कबहूँ जोग बियोग न जाके।
देखा प्रगट बिरह दुखु ताके।।
उपर्युक्त काव्य पंक्तियाँ 'रामचरितमानस' के अयोध्याकाण्ड से उद्धृत है और इसके रचनाकार 'गोस्वामी तुलसीदास' हैं। तुलसीदास ने

रामचरितमानस की रचना (1574 ई.) में किया था। इस ग्रन्थ में सात काण्ड है–
1. बालकाण्ड
2. अयोध्याकाण्ड
3. किष्कन्धाकाण्ड
4. अरण्यकाण्ड
5. सुन्दरकाण्ड
6. लंकाकाण्ड
7. उत्तरकाण्ड

556. 'भक्तमाल' के रचयिता हैं-
(a) सुंदरदास (b) अग्रदास
(c) नाभादास (d) कृष्णदास
MP Asst. Prof. Hindi, 2017

Ans. (c) : 'भक्तमाल' के रचयिता नाभादास हैं। इनकी एक और रचना 'अष्टयाम' है। निम्नलिखित रचनाएँ एवं रचनाकार–

रचनाकार	रचनाकार
अग्रदास	रामध्यानमंजरी
सुन्दरदास	सुन्दर विलास
कृष्णदास	जुगलमान चरित्र

4. कृष्ण काव्य

557. 'सुदामाचरित' किसकी रचना है?
(a) नन्ददास (b) कृष्णदास
(c) नरोत्तम दास (d) सूरदास
UPPSC GDC 2021

Ans. (c) : 'सुदामा चरित' नरोत्तमदास की रचना है। यह ब्रज भाषा में रचित खण्ड काव्य है। सुदामा चरित के सम्बन्ध में शुक्ल जी ने कहा है- 'यद्यपि' यह छोटा है पर इनकी रचना बहुत ही सरस और हृदयग्राहिणी है और कवि के भावुकता का परिचय देती है भाषा भी बहुत परिमार्जित और व्यवस्थित है। नरोत्तमदास जी द्वारा रचित अन्य ग्रंथ हैं- ध्रुवचरित, नामसंकीर्तन, विचारमाला आदि।
नोट- 'सुदामा चरित' नंददास की भी रचना है।

558. निम्नांकित में से 'अष्टछाप' के कवि नहीं हैं:
(a) सूरदास (b) नंददास
(c) रैदास (d) कुंभनदास
UKPSC Lecturer 2020

Ans. (c) : रैदास 'अष्टछाप' के कवि नहीं है। रैदास भक्तिकाल के अन्तर्गत 'ज्ञानाश्रयी शाखा' के संत कवि हैं।
- गोस्वामी विट्ठलनाथ ने 1565 ई. में चार वल्लभाचार्य और चार अपने शिष्यों को मिलाकर 'अष्टछाप' की स्थापना की।
- वल्लभाचार्य के कुल 84 तथा विट्ठलनाथ के 252 शिष्य थे।
- अष्टछाप के प्रमुख कवि निम्नलिखित है- (1) कुंभनदास, (2) सूरदास, (3) परमानंददास, (4) कृष्णदास, (5) गोविन्द स्वामी, (6) छीतस्वामी, (7) चतुर्भुजदास, (8) नन्ददास।
- कुंभनदास प्रथम अष्टछापी कवि थे। ये जाति के क्षत्रिय थे।
- विट्ठलनाथ ने सूरदास को 'पुष्टिमार्ग का जहाज' कहा था।
- परमानन्द ने परमानंदसागर, दानलीला और ध्रुवचरित जैसे ग्रंथों की रचना की।
- नन्ददास को 'जड़िया' कहा जाता है।

559. स्वामी हरिदास द्वारा प्रवर्तित संप्रदाय है:
(a) राधावल्लभ संप्रदाय (b) सखी संप्रदाय
(c) निम्बार्क संप्रदाय (d) इनमें से कोई नहीं
UKPSC Lecturer 2020

Ans. (b) : स्वामी हरिदास द्वारा प्रवर्तित सम्प्रदाय 'सखी सम्प्रदाय' है।
- स्वामी हरिदास ने वृंदावन में निम्बार्क मत के अन्तर्गत 'सखी सम्प्रदाय' या 'टट्टी सम्प्रदाय' की स्थापना की।
- स्वामी हरिदास अकबर के दरबारी कवि तानसेन के शिष्य थे।
- सखी सम्प्रदाय में निकुंज बिहारी भगवान श्रीकृष्ण को सर्वोपरि माना गया है।
- स्वामी हरिदास के दो ग्रन्थ प्राप्त हुए हैं- (1) सिद्धान्त के पद, (2) केलिमाला
- जगन्नाथ गोस्वामी, बिहारिनदास, बिठल विपुल, नागरीदास सखी सम्प्रदाय के प्रमुख कवि हैं।
- 'राधावल्लभ सम्प्रदाय' की स्थापना 1534 ई. में आचार्य हितहरिवंश ने वृंदावन में किया।
- 'सनकादि' या 'निम्बार्क सम्प्रदाय' का प्रवर्तन निम्बार्काचार्य ने किया था। इनका मूलनाम नियमानन्द था।

560. 'अष्टछाप' का संबंध इनमें से किस काव्य-धारा से है?
(a) सूफी काव्यधारा (b) राम काव्यधारा
(c) कृष्ण काव्यधारा (d) रासो काव्यधारा
UKPSC Lecturer 2020

Ans. (c) : 'अष्टछाप' का सम्बन्ध कृष्णभक्ति काव्य धारा से है।
- गोस्वामी विट्ठलनाथ ने सन् 1565 ई. में चार वल्लभाचार्य और चार अपने शिष्यों को मिलाकर 'अष्टछाप' की स्थापना की।
- अष्टछाप कवियों के नाम निम्नलिखित है- (1) कुंभनदास (2) सूरदास (3) परमानंददास (4) कृष्णदास (5) गोविन्दस्वामी (6) छीतस्वामी (7) चतुर्भुजदास (8) नंददास।
- कुंभनदास प्रथम अष्टछापी कवि थे। ये जाति के क्षत्रिय थे।
- भक्तिकाल की दो प्रमुख काव्यधाराएँ हैं- (1) निर्गुणभक्ति काव्यधारा (2) सगुण भक्तिकाव्यधारा। निर्गुण काव्यधारा के अन्तर्गत ज्ञानाश्रयी काव्य शाखा (संत काव्यधारा) एवं प्रेमाश्रयी काव्य शाखा (सूफी काव्यधारा) को स्थान प्राप्त हुआ।
- सगुण काव्यधारा के अन्तर्गत, रामभक्ति शाखा एवं कृष्णभक्ति शाखा नामक दो धाराएं प्रवाहित हुई।
- 'रासोकाव्यधारा' आदिकाल से सम्बन्धित है।

561. इनमें से अकबर-दरबार के नवरत्नों में शामिल कवि थे-
(a) रसखान (b) कुंभनदास
(c) रहीम (d) तुलसीदास
UKPSC Lecturer 2020

Ans. (c) : अकबरी-दरबार के नवरत्नों में शामिल कवि रहीम थे।
- रहीमदास का मूल नाम 'अब्दुल रहीम खानखाना' था।
- 'दोहावली', 'नगरशोभा', 'शृंगार सोरठा', 'मदनाष्टक' रहीमदास की प्रमुख रचनाएँ हैं।
- 'बरवैनायिका भेद' रहीम द्वारा अवधी भाषा में लिखा प्रथम रीतितिरूपक ग्रन्थ है।

• अकबर ने अपनी सत्ता के सुदृढ़ीकरण हेतु 9 विद्वानों की नियुक्ति की जिन्हें कालांतर में अकबर के नवरत्न के नाम से भी जाना गया। अकबर के 'नवरत्नो' में शामिल प्रमुख विद्वान हैं- (1) अबुल फजल, (2) फैजी, (3) तानसेन, (4) बीरबल, (5) राजा टोडरमल, (6) राजा मानसिंह, (7) अब्दुल रहीम खान-ऐ-खाना, (8) हकीम हूकाम, (9) मुल्ला दो पिआजा

• रसखान और कुंभनदास कृष्णभक्त कवि तथा तुलसीदास रामभक्त कवि थे।

562. 'अष्टछाप' के कवियों में किनमें, पिता-पुत्र का संबंध था?

(a) नंददास-कृष्णदास (b) कुंभनदास-चतुर्भुजदास
(c) परमानंददास-कृष्णदास (d) गोविंद स्वामी-छीतस्वामी

UKPSC Lecturer 2020
DSSSB PGT (24.07.2018) 9:00 AM to 12:00 PM

Ans. (b) : 'अष्टछाप' के कवियों 'कुंभनदास-चतुर्भुजदास' में पिता-पुत्र का सम्बंध था। अष्टछाप की स्थापना वल्लभाचार्य के पुत्र विट्ठलनाथ ने किया। विट्ठलनाथ ने श्रीनाथ मन्दिर में आठों प्रहर भगवान की भक्ति के गुणगान हेतु सन् 1565 ई. में 'अष्टछाप' की स्थापना की। इसमें चार वल्लभाचार्य के शिष्य थे, जिनमें- कुंभनदास, सूरदास, परमानन्द दास, कृष्णदास और चार विट्ठलनाथ के शिष्य थे जिनमें - गोविवन्दस्वामी, छीतस्वामी, चतुर्भुजदास, नन्ददास प्रमुख थे।

563. 'सूरसागर' में वर्णित राधा-कृष्ण की लीलाओं की अनुरूपता है:

(a) 'भागवत' के द्वादश स्कंध से
(b) 'भागवत' के द्वितीय स्कंध से
(c) 'भागवत' के अष्टम् स्कंध से
(d) 'भागवत' के नवम् स्कंध से

UKSSSC LT 2020

Ans. (a) : 'सूरसागर' में वर्णित राधाकृष्ण की लीलाओं की अनुरूपता 'भागवत के द्वादश स्कंध' से है। 'सूरसागर' ब्रजभाषा में महाकवि सूरदास कृत कीर्तन पदों का सुंदर संकलन है। सूरसागर के दो रूप मिलते हैं– संग्रहात्मक और संस्कृत भागवत के अनुसार द्वादश स्कंधात्मक। सूरसागर को विभिन्न विद्वानों ने सर्वसम्मति से 'गेय मुक्तक काव्य' कहा है।

सूरदास द्वारा रचित 25 ग्रन्थ बताया जाता है जिसमें तीन ही उपलब्ध जो निम्न हैं– 1. सूरसागर 2. सूरसारावली 3. साहित्य लहरी।

564. नंददास के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के संबंध में कौन सा कथन सही नहीं है?

(a) वे गोस्वामी विट्ठलनाथ के शिष्य थे।
(b) अष्टछाप के कवियों में वे ही सर्वाधिक प्रसिद्ध हुए हैं।
(c) उनकी सर्वोत्कृष्ट रचनाएँ 'रासपंचाध्यायी' और 'भँवरगीत' हैं।
(d) 'रसमंजरी' नायक-नायिका-भेद से संबंधित रचना है।

RPSC Assit. Prof. 2020 Paper-II

Ans. (b) : दिये गये कथनों में 'अष्टछाप के कवियों में वे ही सर्वाधिक प्रसिद्ध हुए हैं।' सही नहीं है।

नंददास, ब्रजभाषा के कवि थे। वे वल्लभ संप्रदाय के 'अष्टछाप कवियों' में से एक प्रमुख कवि थे तथा गोस्वामी विट्ठलनाथ के शिष्य थे।

नंददास की सर्वोत्कृष्ट रचनाएँ– रासपंचाध्यायी, रूपमंजरी, रस मंजरी, भँवर गीत, गोवर्धन लीला, रूक्मिणी मंगल, सुदामा चरित आदि हैं।

रस मंजरी नायक नायिका भेद पर आधारित है जबकि रूप मंजरी लघु आख्यानक काव्य है। रस मंजरी में 270 पद हैं।

अष्टछाप के भक्त कवियों में सबसे ज्येष्ठ कुम्भनदास थे और सबसे कनिष्ठ 'नंददास' थे।

565. किस आचार्य के दार्शनिक सिद्धांत को 'भेदाभेदवाद' के नाम से भी जाना जाता है?

(a) रामानुजाचार्य (b) निंबार्काचार्य
(c) मध्वाचार्य (d) विष्णुस्वामी

RPSC Assit. Prof. 2020 Paper-II

Ans. (b) : निम्बर्काचार्य के 'द्वैताद्वैतवाद' दार्शनिक सिद्धांत को 'भेदाभेदवाद' के नाम से भी जाना जाता है। निम्बार्क सम्प्रदाय, वैरागियों के 4 संप्रदायों में अत्यन्त प्राचीन संप्रदाय है। इस सम्प्रदाय को हंस सम्प्रदाय, कुमार संप्रदाय और सनकादि सम्प्रदाय भी कहते हैं। इस सम्प्रदाय का सिद्धान्त "द्वैताद्वैतवाद" कहलाता है। इसे ही 'भेदाभेदवाद' भी कहा जाता है। मथुरा में स्थित ध्रुव टीले पर 'निम्बार्क संप्रदाय' का प्राचीन मंदिर बताया जाता है। निम्नलिखित आचार्य उनके दार्शनिक सिद्धांत–

आचार्य		दार्शनिक सिद्धान्त
रामानुजाचार्य	–	विशिष्टाद्वैतवाद
मध्वाचार्य	–	द्वैतवाद
विष्णुस्वामी	–	शुद्धाद्वैतवाद

566. वल्लभाचार्य के विषय में कौन सा कथन सही नहीं है?

(a) इनका दार्शनिक सिद्धांत शुद्धाद्वैतवाद कहलाता है।
(b) इनके मत को पुष्टिमार्ग कहा जाता है।
(c) इन्होंने अणुभाष्य, सुबोधिनी टीका आदि ग्रंथों की रचना की।
(d) मूलतः इनका संबंध रामानुजाचार्य के श्री संप्रदाय से स्थिर किया जाता है।

RPSC Assit. Prof. 2020 Paper-II

Ans. (d) : 'मूलतः इनका संबंध रामानुजाचार्य के 'श्री संप्रदाय' से स्थिर किया जाता है।' कथन वल्लभाचार्य के विषय में सही नहीं है।

श्री वल्लभाचार्य जी 'भक्तिकालीन' सगुणधारा की कृष्णभक्ति शाखा के आधार स्तंभ एवं पुष्टिमार्ग के प्रणेता थे। इन्हें 'वैश्वानरावतार' (अग्नि का अवतार) कहा गया है। इनके द्वारा स्थापित मत को वर्तमान में वल्लभ संप्रदाय या पुष्टिमार्ग संप्रदाय के नाम से जाना जाता है और यह मूल रूप से विष्णु स्वामी के 'रूद्र संप्रदाय' से स्थिर किया जाता है।

वल्लभाचार्य के प्रमुख दार्शनिक ग्रंथः- 1. अणुभाष्य, 2. तत्वदीप निबन्ध, 3. पंचश्लोकी, 4. पुरूषोत्तम सहस्रनाम, 5. पत्रावलम्बन, 6. मधुराष्टक, 7. पूर्वमीमांसा भाष्य, 8. सुबोधिनी टीका (भागवत पर आधारित) आदि।

567. कौन सा विवरण सही नहीं है?

(a) 'चौरासी वैष्णवन की वार्ता' में वल्लभाचार्य के शिष्यों की कथाएँ संकलित हैं।
(b) 'दो सौ बावन वैष्णन की वार्ता' में विट्ठलनाथ के शिष्यों की कथाएँ हैं।

(c) उक्त दोनों वार्ताएँ गोस्वामी विट्ठलनाथ द्वारा लिखी गई हैं।
(d) इन वार्ताओं में प्राचीन ब्रजभाषा गद्य का रूप मिलता है।

RPSC Assit. Prof. 2020 Paper-II

Ans. (c) : दिये गये विवरणों में 'उपर्युक्त दोनों वार्ताएँ गोस्वामी विट्ठलनाथ द्वारा लिखी गई हैं।' सही नहीं है। गोकुलनाथ रचित दो वार्ता ग्रंथ प्राप्त होते हैं, पहला 'चौरासी वैष्णवन की वार्ता' तथा दूसरा 'दो सौ बावन वैष्णवन की वार्ता'। 'चौरासी वैष्णवन की वार्ता' में वल्लभाचार्य के शिष्यों की कथाएं है जबकि 'दो सौ बावन वैष्णवन' की वार्ता में विट्ठलनाथ के शिष्यों की कथाएँ हैं। इन वार्ताओं में प्राचीन ब्रजभाषा गद्य का रूप मिलता है।

568. भक्तिकालीन कृष्ण-काव्य-धारा के सम्बन्ध में कौन सा कथन सही नहीं है?
(a) इसकी एक सामान्य प्रकृति यह है कि यह अधिकतर प्रबन्ध रूप में रचा गया है।
(b) पुष्टिमार्गीय कृष्ण-काव्य में गोपाल कृष्ण की बाललीला को विशेष महत्त्व दिया गया है।
(c) कृष्ण-काव्य का सर्वाधिक प्रिय विषय राधा-कृष्ण की प्रेमलीला है।
(d) अधिकांश कृष्ण-काव्य गीतिपदों में रचा गया है।

RPSC Assit. Prof. 2020 Paper-II

Ans. (a) : भक्तिकालीन कृष्ण काव्य धारा के संबंध में उक्त कथन इसकी एक सामान्य प्रकृति यह है कि यह अधिकतर प्रबन्ध रूप में रचा गया है। सही नहीं हैं।
कृष्ण भक्ति काव्य की प्रमुख विशेषताएं:- 1. अवतारवाद की भावना, 2. राधा-कृष्ण की लीलाओं का वर्णन, 3. वात्सल्य एवं श्रृंगार रस का वर्णन, 4. प्रकृति चित्रण, 5. संगीतात्मकता, 6. ब्रजभाषा की प्रमुखता।

569. इनमें से कौन सा कवि ज्ञानमार्गी विचारधारा से संबद्ध नहीं माना जाता है?
(a) जंभनाथ (b) ध्रुवदास
(c) मलूकदास (d) सुंदरदास

RPSC Assit. Prof. 2020 Paper-II

Ans. (b) : ध्रुवदास जी राधावल्लभ संप्रदाय के भक्त कवियों में प्रमुख हैं। जबकि जंभनाथ, मलूकदास और सुंदरदास ज्ञानमार्गी शाखा के प्रमुख कवि हैं।

मलूकदास	–	बारह खड़ी, रत्न खान, ज्ञान बोध
सुंदरदास	–	ज्ञान समुद्र, सुंदर विलास
जम्भनाथ	–	विश्नुई संप्रदाय के प्रवर्तक

570. 'राधावल्लभ' नामक वैष्णव भक्ति संप्रदाय के प्रवर्तक हैं
(a) वल्लभाचार्य (b) हित हरिवंश
(c) स्वामी हरिदास (d) चैतन्य महाप्रभु

RPSC Assit. Prof. 2020 Paper-II

Ans. (b) : राधावल्लभ संप्रदाय के प्रवर्तक गोस्वामी हित हरिवंश हैं। इनका जन्म वि0सं0 1559 तथा निधन संवत् 1609 में हुआ। स्फुट पदावली तथा हित चौरासी (ब्रजभाषा) इनकी प्रमुख रचनाएं हैं।

संप्रदाय	प्रवर्तक
वल्लभ संप्रदाय	वल्लभाचार्य
राधावल्लभ संप्रदाय	हित हरिवंश
सखी संप्रदाय	स्वामी हरिदास
गौड़ीय संप्रदाय	चैतन्य महाप्रभु

⇒ वल्लभाचार्य ने शुद्धाद्वैतवाद की स्थापना की।
⇒ राधावल्लभ संप्रदाय में राधा प्रमुख है।
⇒ स्वामी हरिदास तानसेन के गुरू हैं।
⇒ गौड़ीय संप्रदाय की आस्था द्वैताद्वैतवाद के प्रति है।

571. "पुष्टिमारग को जहाज जात है सो जाको कछु लेना होय सो लेउ।"
सूरदास की मृत्यु को सन्निकट जानकर ये शोकार्त्त वचन किसके हैं?
(a) गोकुलनाथ (b) विट्ठलनाथ
(c) कुंभनदास (d) नंददास

RPSC Assit. Prof. 2020 Paper-II

Ans. (b) : "पुष्टिमारग को जहाज जात है सो जाको कछु लेना होय सो लेउ।" सूरदास की मृत्यु को सन्निकट जानकर ये शोकार्त वचन विट्ठलनाथ के हैं। कुंभनदास अष्टछाप भक्त कवियों में सबसे ज्येष्ठ तथा नंददास, अष्टछाप कवियों में सबसे कनिष्ठ थे। गोस्वामी विट्ठलनाथ, पुष्टिमार्ग के संस्थापक श्री वल्लभाचार्य के पुत्र थे। इन्होंने कुंभनदास, सूरदास, परमानंद दास, कृष्णदास (चारों वल्लभाचार्य के शिष्य) तथा गोविंद स्वामी, छीतस्वामी, चतुर्भुजदास, नंददास (चारों विट्ठलनाथ के शिष्य) को लेकर "अष्टछाप" भक्त कवियों की मंडली की स्थापना की।

572. " 'सूरसागर' किसी चली आती हुई गीत काव्य-परंपरा का–भले ही वह मौखिक हो, – विकास प्रतीत होता है।" उक्त स्थापना किसकी है?
(a) रामचंद्र शुक्ल (b) रामकुमार वर्मा
(c) दीनदयाल गुप्त (d) मुंशीराम शर्मा

RPSC Assit. Prof. 2020 Paper-II

Ans. (a) : सूरसागर के संदर्भ में उपर्युक्त स्थापना रामचंद्र शुक्ल की है। रामचंद्र शुक्ल जी के अनुसार रामचरित गान करने वाले भक्त कवियों में गोस्वामी तुलसीदास का सर्वश्रेष्ठ स्थान है उसी प्रकार कृष्ण चरितगान करने वाले भक्त कवियों में वात्सल्य सम्राट सूरदास जी का है।

573. निम्न में से किस रचनाकार का असली नाम 'सैय्यद इब्राहिम' है?
(a) रसखान (b) मलूकदास
(c) रहीम (d) सूरदास

DSSSB TGT (Female) 04.09.2021 Shift-III

Ans. (a) : रसखान का वास्तविक नाम - सैय्यद इब्राहिम था।
- इनकी रचना 'प्रेम वाटिका' में इनका दिल्ली छोड़कर गोवर्द्धन जाने का दृश्य मिलता है। रसखान विट्ठलनाथ के कृपा पात्र शिष्य थे।
- भारतेन्दु ने इनके समर्पण पर लिखा- "इन मुसलमान हरिजनन पर कोटिन हिन्दू वारिए।"
- आचार्य शुक्ल ने लिखा है- "और कृष्ण भक्तों के समान इन्होंने 'गीति-काव्य' का आश्रय न लेकर कवित्त सवैयों में अपने सच्चे प्रेम की व्यंजना की है।"
- रचनाएँ- दानलीला, रसखान सतक, सुजान रसखान, अष्टयाम, प्रेम वाटिका।

मलूकदास की प्रमुख रचनाएँ– ज्ञानबोध, रामावतार लीला, ध्रुवचरित।

रहीम की प्रमुख रचनाएँ– बरवै नायिका भेद, रास पंचाध्यायी, खेट कौतुकम्, मदनाष्टक आदि।

सूरदास की प्रमुख रचनाएँ– सूरसारावली, साहित्य लहरी, सूरसागर आदि।

574. भक्तिकालीन 'रस सिद्धान्त' विषयक ग्रन्थ है–

(a) रस प्रबोध (b) रस मंजरी
(c) रस रहस्य (d) रस रंग

UP PGT 2021

Ans. (*) : दी गई रचनाओं में कोई भी ग्रंथ मुख्यतः रस विषयक नहीं है। रसमंजरी नायिका भेद से सम्बंधित ग्रंथ है। इसके लेखक नंददास हैं।

'रस प्रबोध' (1747) रसलीन की रचना हैं। 'रस रहस्य' कुलपति मिश्र की रचना है। रस रंग' ग्वाल की रचना है, जो रीतिकालीन कवि है।

नंददास की प्रमुख रचनाएँ हैं– रसमंजरी, अनेकार्थमंजरी, भागवत् दशम् स्कन्ध, श्यामसगाई, गोवर्द्धनलीला, सुदामाचरित, विरहमंजरी, रूपमंजरी, रासपंचाध्यायी, भंवरगीत, सिद्धांत पंचाध्यायी, है।

नंददास जी के बारे में एक कथन प्रचलित है–

"और कवि गढ़िया, नंददास जड़िया"

नोट- आयोग ने इसका उत्तर (f) माना है।

575. भक्तिकाल के किस कवि ने बरवै नायिका भेद लिखा है?

(a) रहीम (b) रसखान
(c) नन्ददास (d) कृष्णदास

UP PGT 2021

Ans. (a) : 'बरवै नायिका भेद' रहीमदास की रचना है।

- रहीमदास का बरवै नायिका भेद अवधी भाषा में रचित प्रथम रीति निरुपक ग्रन्थ है। यह नायिका भेद का सर्वोत्तम ग्रन्थ है।
- रहीम के बारे में तुलसीदास ने कहा–
  सुरतिय नरतिय नागतिय सब चाहति अस होय।
  इसके उत्तर में रहीम दास कहते है– गोद लिए हुलसी फिरे, तुलसी सो सुत होय।
- रसखान की दो प्रसिद्ध रचनाएँ हैं–
  1. प्रेमवाटिका, 2. सुजान रसखान
- नंददास की प्रमुख रचनाएँ हैं – रासपंचाध्यायी, रसमंजरी, अनेकार्थमंजरी, श्यामसगाई आदि।
- नंददास अष्टछाप के कवियों में से एक तथा विट्ठलनाथ के शिष्य थे।
- कृष्णदास की रचनाएँ– रागरत्नाकर, जुगलमान चरित, राग कल्पद्रुम है।

576. मीराबाई की उपासना है–

(a) माधुर्य भाव (b) सख्य भाव
(c) दास्य भाव (d) वात्सल्य भाव

UP PGT 2021

Ans. (a) : मीराबाई की उपासना माधुर्यभाव की है। कृष्ण के प्रति अनन्य प्रेम के कारण ही मीरा की भक्ति माधुर्य भाव उपासना कहलायी।

तुलसीदास की भक्ति दास्यभाव की भक्ति थी।

सख्य तथा वात्सल्य भाव की उपासना सूरदास जी ने की थी।

577. 'नरसी जी का मायरा' किसकी रचना है?

(a) हरिदास (b) रहीम
(c) मीराबाई (d) रसखान

UP PGT 2021

Ans. (c) : 'नरसी जी का मायरा' मीराबाई की प्रसिद्ध रचना है। मीराबाई भक्तिकाल की प्रसिद्ध कवयित्री हैं, जिनका जन्म (1516 ई.) 16वीं शताब्दी में हुआ। ये कृष्ण भक्त कवयित्री हैं, इनकी प्रसिद्ध रचनाएँ हैं– नरसीजी का मायरा, गीत गोविन्द की टीका, राग सोरठा आदि।

- रहीम – आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने इन्हे भक्तिकाल के रामकाव्य धारा के फुटकल कवियों में रखा है। इनकी प्रमुख रचना रहीम सतसई, श्रृंगार सोरठा, रासपंचाध्यायी, बरवै नायिका भेद आदि हैं।
- रसखान– कृष्णकाव्य धारा के कवि हैं, ये सवैये के लिए प्रसिद्ध हैं। इनकी प्रमुख रचनाएँ– प्रेम वाटिका, दानलीला, अष्टयाम, सुजान रसखान है।

578. 'मदनाष्टक' इनमें से किसकी रचना है?

(a) नंददास (b) गंग
(c) ध्रुवदास (d) रहीम दास

UPPSC GIC 2021

Ans. (d) : 'मदनाष्टक' रहीमदास की रचना है।

'मदनाष्टक' संस्कृत और हिन्दी खड़ी बोली की मिश्रित शैली में रचित कृति है। इसका वर्ण्य-विषय 'भगवान श्री कृष्ण' की रासलीला है। इस कृति में 'मालिनी छंद' का प्रयोग किया गया है।

कवि गंग का वास्तविक नाम गंगाप्रसाद था। ये अकबर के दरबारी कवि थे। 'गंग पच्चीसी', 'गंग पदावली' तथा 'गंगरत्नावली' इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं।

रहीमदास की अन्य रचनाएँ– दोहावली या सतसई, बरवै नायिका भेद, नगर शोभा, मदनाष्टक, खेट कौतुकम्, श्रृंगार सोरठा, रास पंचाध्यायी।

नंददास की रचनाएँ– अनेकार्थ मंजरी, मानमंजरी, सुदामा चरित, रसमंजरी, रूपमंजरी, विरहमंजरी, प्रेमबारह खड़ी, श्यामसगाई, रुक्मिणी मंगल, भँवर गीत, रासपंचाध्यायी, सिद्धांत पंचाध्यायी, दशमस्कंध भाषा।

ध्रुवदास की रचनाएँ– जीवदशा लीला, मन श्रृंगार लीला, रसविहार लीला।

579. ब्रह्मसम्प्रदाय' के संस्थापक कौन है?

(a) श्री निम्बार्काचार्य (b) श्री शंकराचार्य
(c) श्री मध्वाचार्य (d) श्री रामानुजाचार्य

UP TGT- 2021

Ans. (c) : ब्रह्मसंप्रदाय के संस्थापक 'श्री मध्वाचार्य' है। श्री मध्वाचार्य जी महाराज 12 वीं शताब्दी के महान संत थे। इनका जन्म दक्षिण भारत में तुलुब देश के वेलीग्राम में हुआ था। इनके पिता का नाम श्री नारायण जी भट्ट तथा माता का नाम वेदवती था। इन्होंने अपने सिद्धान्त को 'द्वैतवाद' नाम से प्रख्यात किया।

580. गोस्वामी विट्ठलनाथ द्वारा 'अष्टछाप' की स्थापना का वर्ष है
(a) 1555 ई. (b) 1558 ई.
(c) 1560 ई. (d) 1565 ई.
UP TGT- 2021

Ans. (d) : गोस्वामी विट्ठलनाथ द्वारा अष्टछाप की स्थापना का वर्ष 1565 ई. है।
अष्टछाप महाप्रभु श्री वल्लभाचार्य एवं उनके पुत्र श्री विट्ठलनाथ जी द्वारा संस्थापित भक्तिकालीन आठ कृष्ण भक्त कवियों का समूह था, जिन्होंने अपने विभिन्न पद एवं कीर्तनों के द्वारा भगवान श्री कृष्ण की लीलाओं का गुणगान किया। अष्टछाप के प्रमुख कवि- सूरदास, कुंभनदास, परमानंददास व कृष्णदास वल्लभाचार्य के शिष्य थे तथा शेष 4 कवि - छीतस्वामी, गोविंदस्वामी, चतुर्भुजदास व नंददास - विट्ठलनाथ के शिष्य थे।

581. 'सूरदास का प्रेमपक्ष लोक से न्यारा है' यह कथन किस विद्वान का है?
(a) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
(b) आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी
(c) डॉ. रामकुमार वर्मा
(d) डॉ. बच्चन सिंह
UP TGT- 2021

Ans. (a) : 'सूरदास का प्रेमपक्ष लोक से न्यारा है' यह कथन आचार्य रामचंद्र शुक्ल जी ने 'भ्रमरगीत सार' की भूमिका में लिखा है।
सूरदास ने प्रेम के लगभग सभी पक्षों संयोग, वियोग, वात्सल्य को अपनी रचनाओं से सर्वोत्कृष्टता प्रदान की है। 'भ्रमरगीत' श्रीमद्भगवत के दशम स्कन्ध के 47वें अध्याय में वर्णित केवल 10 श्लोकों से लिया गया है। 'सूर सागर' के कुल 700 पदों में भ्रमरगीतों को प्रस्तुत किया गया है। भ्रमरगीत को प्रायः 'उपालम्भ काव्य' कहा गया है। आचार्य शुक्ल ने 'ध्वनि काव्य' कहा है। सूरदास के भ्रमरगीत की यह परम्परा आगे भी चलती रही; जैसे -

रचनाकार		भ्रमरगीत
नन्ददास	-	भंवरगीत
सत्यनारायण कविरत्न	-	भ्रमरदूत
जगन्नाथ दास 'रत्नाकर'	-	उद्धव शतक

582. 'पौन मया करि घूँघट टारै, दया करी दामिनी दीप देखावै'- काव्य पंक्ति किस कवि की है?
(a) नेही नागरिदास (b) पद्माकर
(c) देव (d) ग्वाल
UP TGT- 2021

Ans. (a) : 'पौन मया करि घूंघट टारै,दया करी दामिनी दीप देखावै' उपर्युक्त काव्य पंक्ति 'नेही नागरीदास' की है। नेही नागरीदास हिन्दी साहित्य के जाज्वल्यमान नक्षत्र हैं। नागरीदास जी का जन्म संवत् 1590 के आसपास माना जाता है। इनकी गणना 'राधावल्लभ संप्रदाय' के प्रमुख भक्त कवियों में की जाती है।

583. निम्नलिखित में से कौन-सी नंददास की कृति नहीं है?
(a) रुपमंजरी (b) विरहमंजरी
(c) मानमंजरी (d) कविप्रिया
UGC NET Dec. 2020/June 2021 Shift-II

Ans. (d) : 'कविप्रिया' नंददास की कृति नहीं है। नंददास की रचनाएँ– रूपमंजरी, विरहमंजरी, मानमंजरी हैं। कविप्रिया केशवदास की रचना है। इसका समय 1601 ई. है। केशवदास की अन्य रचनाएँ– रसिक प्रिया, रामचन्द्रिका, विज्ञान गीता आदि।

584. अँखिया हरि-दरसन की भूखी।
बारक वह मुख फेरि दिखाओं दुहि पय पिवत पतूखी।
उक्त पद में 'पतूखी' का अर्थ है–
(a) साग-सब्जी (b) पेय पदार्थ
(c) पकवान (d) पत्ते का दोना
UGC NET Dec. 2020/June 2021 Shift-II

Ans. (d) : अँखिया हरि-दरसन की भूखी।
बारक वह मुख फेरि दिखाओं दुहि पय पिवत पतूखी।
उक्त पद में 'पतूखी' का अर्थ है 'पत्ते का दोना' जो सूरदास जी के पद से लिया गया है। सूरदास की रचनाएँ हैं- सूरसागर, सूरसारावली, साहित्य-लहरी।

585. 'म्हारां री गिरिधर गोपाल दूसरा णां कूयां।
दध मथ घृत काढ़ लयां डार दया छूयां।'
उक्त पंक्तियों में प्रयुक्त 'छूयां' का अर्थ है–
(a) छार (b) मट्ठा
(c) मथानी (d) मक्खन
UGC NET Dec. 2020/June 2021 Shift-II

Ans. (b) : 'म्हारां री गिरिधर गोपाल दूसरा णां कूयां।
दध मथ घृत काढ़ लयां डार दया छूयां।'
उक्त पंक्ति में प्रयुक्त 'छूयां' का अर्थ 'मट्ठा' है। उपर्युक्त पंक्ति भक्तिकाल के सम्प्रदाय निरपेक्ष की कवयित्री मीराबाई की है। इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं- रागगोविंद, रागसोरठा, गीत गोविंद, नरसी जी का मायरा। मीराबाई की अन्य महत्त्वपूर्ण पंक्तियाँ हैं-
- बसो मेरे नैनन में नन्द लाल।
- हरि तुम हरो जन की पीर।
- घायल की गति घायल जानै और न जानै कोई।
- जाके सिर मोर मुकुट मेरो पति सोई।

586. निम्नलिखित में से चतुर्भुजदास के संबंध में सही है।
1. कुंभनदास के पुत्र थे।
2. इनकी भाषा तत्सम प्रधान थी।
3. इनके दो ग्रंथ मिलते है।
4. 'हितजू को मंगल' इनकी काव्य कृति है।
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए–
(a) 1 और 2 (b) 1 और 3
(c) 1 और 4 (d) 2 और 4
UGC NET Dec. 2020/June 2021 Shift-II

Ans. (c) : चतुर्भुजदास के सम्बन्ध में सही कथन-चतुर्भुजदास 'कुम्भनदास' के पुत्र थे, हितजू को मंगल' इनकी काव्य कृति है। चतुर्भुजदास का समय (1530-1585 ई.) है। इनके गुरु गोसाईं विट्ठलनाथ थे। इनका जन्म जमुनावती (उ.प्र.) में हुआ था। ये अष्टछाप के कवि थे। अष्टछाप के कवियों में कुम्भनदास सबसे बड़े तथा नन्ददास सबसे छोटे थे।

587. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:

सूची-I	सूची –II
A. प्रकृति जाके जोई अंग परी। स्वान-पूँछ कोटिक जो लागै सूधि न काहु करी।	1. सूरदास
B. बहुबिध चित्र बनाय कै, हरि रच्यौ क्रीड़ा-रास। जेहि न इच्छा झूलिबे की, ऐसी बुधि केहि पास।	2. कबीरदास

C. थारो रूप देख्यां अटकी 3. मीरा
कुल कुटुंब सजण सकल
बार बार हटकी।
D. गुर नित मोहि प्रबोध दुखित 4. तुलसीदास
देखि आचरन मम।
मोहि उपजइ अति क्रोध
दंभिहि नीति कि भावई॥
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए–

	A	B	C	D
(a)	2	1	4	3
(b)	3	2	4	1
(c)	1	2	3	4
(d)	4	1	3	2

UGC NET Dec. 2020/June 2021 Shift-I

Ans. (c) : सूची-I तथा सूची-II का सही मिलान–

सूची-I		सूची –II
• प्रकृति जाके जोई अंग परी। स्वान-पूंछ कोटिक जो लागै, सूधि न काहु करी।	–	सूरदास
• बहुबिध चित्र बनाय कै, हरि रच्यौ क्रीड़ा-रास। जेहि न इच्छा झूलिबे की, ऐसी बुधि केहि पास।	–	कबीरदास
• थारो रूप देख्यां अटकी कुल कुटुंब सजण सकल बार बार हटकी।	–	मीरा
• गुर नित मोहि प्रबोध दुखित देखि आचरन मम। मोहि उपजइ अति क्रोध दंभिहि नीति कि भावई।।	–	तुलसीदास

588. निम्न विकल्पों में से कौन-सा विकल्प अष्टछाप के कवियों से सम्बंधित सही विकल्प है?
(a) निर्गुण ब्रह्म के उपासक थे (b) कृष्णभक्त थे
(c) सूफी कवि थे (d) रामभक्त थे

DSSSB TGT (Female) 05.09.2021 Shift-II

Ans. (b) : 'अष्टछाप' के सभी कवि कृष्णभक्त थे। अष्टछाप की स्थापना वर्ष 1565 ई. में वल्लभाचार्य के पुत्र गोस्वामी विट्ठलनाथ ने चार अपने तथा चार वल्लभाचार्य के शिष्यों को मिलाकर की। कुंभनदास प्रथम अष्टछापी कवि थे। कुंभनदास ने लिखा है-
'संतन को कहा सीकरी सों काम।
आवत जात पन्हैया टूटी बिसरि गयो हरिनाम।।'

589. निम्न में से कौन-सा कथन 'रहीम जी' के बारे में असत्य है?
(a) वह योद्धा और राजनीतिज्ञ भी थे
(b) वह अनपढ़ थे
(c) वह कलामर्मज्ञ थे
(d) वह विद्या व्यसनी थे

DSSSB TGT (Female) 05.09.2021 Shift-II

Ans. (b) : रहीमदास अनपढ़ थे यह कथन असत्य है। रहीमदास का मूलनाम अब्दुल रहीम 'खानखाना' था, रहीमदास विद्वान व्यक्ति थे, रहीमदास बहुमुखी प्रतिभा के धनी व्यक्ति थे, इन्होंने अवधी और ब्रजभाषा दोनों में ही कविता की है। इनका 'बरवै नायिका भेद' अवधी भाषा में लिखा नायिका भेद का ग्रन्थ है, दोहावली, नगर शोभा, शृंगार सोरठा तथा मदनाष्टक इनके महत्वपूर्ण रचनाएँ हैं।

590. किस रस की अभिव्यक्ति में सूरदास संसार के सर्वश्रेष्ठ कवियों में गिने जाते हैं?
(a) रौद्र (b) हास्य
(c) वात्सल्य (d) वीभत्स

DSSSB TGT (Female) 05.09.2021 Shift-II

Ans. (c) : वात्सल्य रस की अभिव्यक्ति में सूरदास संसार के सर्वश्रेष्ठ कवियों में गिने जाते हैं। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने लिखा है- 'वात्सल्य और शृंगार के क्षेत्र का जितना अधिक उद्घाटन सूर ने बन्द आँखों से किया, उतना किसी और कवि ने नहीं। इन क्षेत्रों का कोना-कोना वे झाँक आए।' सूरदास, वल्लभाचार्य के शिष्य थे और अष्टछाप में शामिल कवि थे।

591. 'भ्रमरगीत' नाम से सूर के काव्य को किसने सम्पादित किया?
(a) आचार्य रामचंद्र शुक्ल
(b) डॉ. रामकुमार वर्मा
(c) आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी
(d) डॉ. श्यामसुंदर दास

DSSSB TGT (Male) 18.09.2021 Shift-II

Ans. (a) : 'भ्रमरगीत' नाम से सूर के काव्य को आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने सम्पादित किया। शुक्ल जी का आलोचनात्मक कृतियाँ हैं- गोस्वामी तुलसीदास (1923), जायसी ग्रन्थावली (1924), भ्रमर-गीत सार (1925 ई.), रस मीमांसा (1949 ई.)।
• 'रस मीमांसा' आचार्य शुक्ल की सैद्धान्तिक आलोचना है।
• आचार्य शुक्ल ने आलोचना के क्षेत्र में 'विरुद्धों का सामंजस्य' सिद्धान्त का प्रवर्तन किया।

592. 'प्रेमवाटिका' के रचनाकार कौन है?
(a) रसखान (b) रत्नाकर
(c) मीरा (d) विद्यापति

DSSSB PGT 4.7.2021 Shift-I

Ans. (a) : 'प्रेमवाटिका' के रचनाकार रसखान हैं, ये 'वल्लभ सम्प्रदाय' में दीक्षित थे। रसखान कृष्ण भक्त कवि थे और इन्होंने कृष्ण के सगुण और निर्गुण दोनों रूपों का वर्णन पूरे मनोयोग से किया है। गंगावतरण, हिंडोला जगन्नाथदास 'रत्नाकर' की रचनाएं हैं तथा कीर्तिलता, कीर्तिपताका विद्यापति की अवहट्ठ भाषा में लिखी रचनाएँ हैं।

593. मीराबाई को किसकी शिष्या कहा जाता है?
(a) कबीर दास (b) रैदास
(c) तुलसीदास (d) धर्मदास

DSSSB PGT 4.7.2021 Shift-I
N.V.S. PGT 2014

Ans. (b) : मीराबाई को संत रैदास की शिष्या कहा जाता है। इनका समय सोलहवीं शताब्दी है। मीराबाई का जन्म राजस्थान में हुआ था, ये बचपन से ही कृष्णभक्त थीं। इनकी भक्ति 'माधुर्य भाव' की थी। इनकी महत्वपूर्ण रचनाएँ हैं– नरसी जी का मायरा, गीतगोविंद टीका, रागगोविंद तथा राग सोरठ के पद।

594. 'महावाणी' किस संप्रदाय की रचना है
(a) अष्टछाप (b) गौडीय
(c) राधा वल्लभ (d) निम्बार्क
DSSSB TGT (Female) 04.09.2021 Shift-II

Ans. (d) : 'महावाणी' निम्बार्क सम्प्रदाय की रचना है। 'महावाणी' के रचनाकार 'हरिव्यास देव' निम्बार्क सम्प्रदाय के प्रमुख कवि हैं। हरिव्यास देव के गुरु का नाम श्री भट्ट था। श्रीभट्ट को निम्बार्क सम्प्रदाय में 'हितू सखी' का अवतार माना जाता है। परशुराम देव के गुरु का नाम हरिव्यास देव था। परशुरामदेव ने निम्बार्क सम्प्रदाय की गद्दी को राजस्थान के सलेमाबाद में स्थापित किया। निम्बार्क सम्प्रदाय के संस्थापक निम्बार्काचार्य है। विष्णु के स्थान पर कृष्ण के सगुण रुप का सर्वप्रथम प्रतिपादन निम्बार्काचार्य ने किया। अष्टछाप की स्थापना 1565 ई. में गोस्वामी विट्ठलनाथ नें किया। 'गौणीय सम्प्रदाय' के प्रवर्तक कृष्ण चैतन्य महाप्रभु है। 'राधा वल्लभ सम्प्रदाय' की स्थापना 1534 ई. में आचार्य हितहरिवंश ने वृंदावन में किया।

595. ज्योतिष ग्रन्थ 'खेट कौतुकम' का रचयिता कौन है?
(a) सेनापति (b) मतिराम
(c) बिहारी (d) रहीम
DSSSB TGT (Female) 04.09.2021 Shift-II

Ans. (d) : ज्योतिष ग्रन्थ 'खेट कौतुकम' के रचयिता रहीम है। रहीमदास जी का मूलनाम 'अब्दुल रहीम खानखाना' था। इनकी रचनाओं की खोज सर्वप्रथम भरतपुर के 'मायाशंकर याज्ञिक' ने किया। रहीमदास ने संस्कृत फारसी और हिन्दी मिश्रित भाषा में 'खेटकौतुक जातकम्' नामक एक ज्योतिष ग्रन्थ की रचना की। रहीमदास जी की प्रमुख रचनायें हैं- दोहावली, नगरशोभा, शृंगार सोरठा, मदनाष्टक, बरवै नायिका भेद। 'बरवैनायिका भेद' अवधी भाषा में लिखा प्रथम 'रीति निरुपक' ग्रन्थ है। इसकी रचना संस्कृत के भानुदत्त की 'रसमंजरी' के आधार पर हुई है।

596. पुष्टिमार्ग के प्रवर्तक कौन थे?
(a) रामानंद (b) शंकराचार्य
(c) रामानुजाचार्य (d) वल्लभाचार्य
DSSSB TGT (Female) 04.09.2021 Shift-II
KVS PGT 2018
KVS PGT 2016

Ans. (d) : 'पुष्टिमार्ग' के प्रवर्तक वल्लभाचार्य थे। 'पुष्टिमार्गी' भक्ति में 'पुष्टि' भगवद् अनुग्रह या कृपा को कहा जाता है। 'शुद्धाद्वैतवाद' के प्रतिपादक वल्लभाचार्य हैं। 'रामावत सम्प्रदाय' के संस्थापक रामानन्द हैं। 'स्मार्त सम्प्रदाय' और 'अद्वैतवाद' के संस्थापक शंकराचार्य हैं। 'विशिष्टाद्वैतवाद' के संस्थापक रामानुजाचार्य हैं।

597. निम्न में से कौन-सी नरोत्तमदास की विख्यात कृति है?
(a) नखसिख (b) प्रिय प्रवास
(c) कवित्त रत्नाकर (d) सुदामाचरित
DSSSB TGT (Female) 04.09.2021 Shift-II

Ans. (d) : 'सुदामा चरित' नरोत्तमदास की विख्यात कृति है। नरोत्तमदास का जन्म सीतापुर जिले के वाड़ी नामक कस्बे में हुआ था। नरोत्तमदास की प्रमुख काव्य-कृतियाँ- 1- सुदामा चरित (खण्डकाव्य), 2- ध्रुवचरित, 3- विचारमाला। नरोत्तमदास की प्रमुख भाषा 'ब्रजभाषा' है।

598. मीराबाई के पदों में किस भाषा का प्रयोग हुआ है?
(a) अवधी भाषा (b) भोजपुरी
(c) राजस्थानी मिश्रित ब्रज (d) खड़ी बोली
DSSSB TGT (Female) 05.09.2021 Shift-II

Ans. (c) : मीराबाई का जन्म 1516 ई. में हुआ था, इन्होंने श्रीकृष्ण की उपासना प्रियतम या पति के रुप में की, मीराबाई की भाषा राजस्थानी मिश्रित ब्रजभाषा है। मीराबाई की प्रमुख रचनाएँ हैं- गीत गोविन्द की टीका, नरसीजी का मायरा, राग सोरठा, राग गोविन्द, रुक्मणी मंगल आदि। मीराबाई की भक्ति 'माधुर्य भाव' की थी।

599. ''खीरा सिर से काटिए, मलियत नमक लगाय'', यह उक्ति किसकी है?
(a) रसखान (b) रहीम
(c) केशवदास (d) कबीर
DSSSB PGT 18.7.2021 Shift-II

Ans : (b) उपर्युक्त उक्ति 'रहीमदास' की है। इनका मूलनाम 'अब्दुल रहीम खानखाना' था। रहीमदास ने 'बरवैनायिका भेद' नामक ग्रंथ की रचना अवधी भाषा में की, यह अवधी भाषा में रचित प्रथम रीति निरूपक ग्रंथ है। दोहावली, नगर शोभा, श्रृंगार सोरठा, मदनास्टक, खेट कौतुकम् इनके अन्य प्रमुख ग्रन्थ हैं।

600. निम्नलिखित में से कौन राधावल्लभ संप्रदाय का प्रवर्तक है?
(a) वल्लभाचार्य (b) हित हरिवंश
(c) गोविंद स्वामा (d) छीत स्वामी
UGC NET IIIrd June 2015, 2014

Ans. (b)

सम्प्रदाय	प्रवर्तक
राधावल्लभ सम्प्रदाय	हित हरिवंश (इन्होंने राधा जी को गुरु रूप में स्वीकार किया है।)
वल्लभ सम्प्रदाय	वल्लभाचार्य (इन्हें पुष्टिमार्ग का प्रवर्तक और 'शुद्धाद्वैतवाद सिद्धान्त' के प्रतिपादक।)
निम्बार्क सम्प्रदाय	निम्बार्काचार्य
हरिदासी/सखी/या टट्टी सम्प्रदाय	स्वामी हरिदास
गौड़ी सम्प्रदाय	चैतन्य महाप्रभु

601. सखी संप्रदाय को कहा जाता है
(a) राधावल्लभ संप्रदाय (b) हरिदास संप्रदाय
(c) चिंत्याचिंत्य संप्रदाय (d) अष्टछाप संप्रदाय
UGC NET IIIrd Paper June. 2014
DIET PGT 2014

Ans. (b) सखी सम्प्रदाय को हरिदासी या टट्टी सम्प्रदाय भी कहा जाता है। इसके संस्थापक स्वामी हरिदास जी हैं। 'राधावल्लभ सम्प्रदाय' के संस्थापक हितहरिवंश हैं 'गौड़ीय सम्प्रदाय' के प्रवर्तक चैतन्य महाप्रभु हैं। चैतन्य मत का दार्शनिक सिद्धांत 'अचिन्त्यभेदाभेद' कहलाता है। 'अष्टछाप' के संस्थापक विट्ठलनाथ जी हैं।

602. वृन्दावन में मीराबाई की मुलाकात किस कृष्णभक्त कवि से हुई?
(a) छीतस्वामी (b) रूपगोस्वामी
(c) गोविन्दस्वामी (d) जीवगोस्वामी
NVS PGT 17.09.2019

Ans. (d) : वृन्दावन में मीराबाई की मुलाकात कृष्ण भक्त कवि 'जीवगोस्वामी' से हुई। वहाँ से मीरा द्वारका चली गई, और वहीं रणछोड़ जी के मन्दिर में कृष्ण लीला और आत्मविरह वेदना का निवेदन करने लगी। मीरा ने कृष्ण को 'बाल स्नेही' कहा है। मीरा ने प्रसिद्ध आलवार कवयित्री अण्डाल की भाँति कृष्ण को अपना पति मानकर अपनी भावनाएँ, 'नट नागर' के चरणों में अर्पित की।

603. 'राग गोविन्द' के रचयिता का नाम बताइए।

(a) सूरदास (b) नन्ददास
(c) रैदास (d) मीराबाई

DSSSB PGT-24.07.2018 (9:00 am-12:00 pm)

Ans. (d) : 'राग गोविन्द' की रचयिता धर्मनिरपेक्ष कवयित्री 'मीराबाई' है। इनकी अन्य प्रसिद्ध रचनाएँ है- नरसीजी का मायरा, राग-सोरठा, गीत गोविन्द की टीका, मलार राग, सत्यभामा नु रूसणं, मीरां की गरबी, रुक्मिणी मंगल।

604. मीराबाई की उपासना-पद्धति थी।

(a) सखा भाव की (b) पुष्टिमार्गीय
(c) माधुर्य भाव की (d) श्रुति सम्मत हरिभक्तिपथ की

म.प्र. उच्च माध्यमिक शिक्षक भर्ती परीक्षा 2018
UGC Net June 2017 (Paper-II)
KVS PGT Hindi 2016
राजस्थान कॉलेज लेक्चरर भर्ती परीक्षा (पेपर-I,II) 2014

Ans. (c) : मीराबाई की उपासना-पद्धति माधुर्य भाव की थी। मीराबाई मूलतः सम्प्रदाय निरपेक्ष कृष्णभक्त कवयित्री हैं। इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं– गीत गोविन्द की टीका, नरसीजी का मायरा, राग सोरठा, राग गोविन्द, मलार राग, सत्यभामा नु रूसणं, मीरां की गरबी, रुक्मिणी मंगल।

605. 'तुम म्हारे घर आवो जी प्रीतम प्यारा'
चुन चुन कलियाँ मैं सेज बनाऊँ, भोजन करूँ मैं सारा।।
ये किनकी पंक्तियाँ हैं

(a) मीराबाई (b) महादेवी वर्मा
(c) विद्यापति (d) भूषण

UP PGT 2016

: (a) दी गयी पंक्ति–
"तुम म्हारे घर .... मैं सारा।।"
मीराबाई की हैं, मीराबाई कृष्ण भक्त कवियों में माधुर्य भाव की श्रेष्ठ कवयित्री है।

कवि/कवयित्री	–	प्रमुख पंक्ति
महादेवी वर्मा	–	मैं नीर भरी दु:ख की बदली।
विद्यापति	–	देसिल बयना सब जन मिठ्ठा।
भूषण	–	तीन बेर खाती वे तीन बेर खाती है।

606. 'स्वस्ति श्री तुलसी कुल भूषण दूषण हरण गोसाईं।
बारहिं बार प्रनाम करहूँ, अब हरहु सोक समुदाई।।'
प्रस्तुत काव्य-पंक्तियाँ किसकी हैं–

(a) तुलसीदास (b) स्वामी अग्रदास
(c) मीराबाई (d) स्वामी हरिदास

KVS PGT 2018

Ans : (c) मीराबाई ने तुलसीदास को एक पत्र में लिखा था–
'स्वस्ति श्री तुलसी कुल भूषण दूषण हरण गोसाईं।
बारहिं बार प्रनाम करहूँ, अब हरहु सोक समुदाई।।'
पत्रोत्तर में गोस्वामी तुलसीदास ने लिखा की–
जाके प्रिय न राम वैदेही।
तजिये ताहि कोटि बैरी सम, जद्यपि परम सनेही।

607. मीराबाई की रचनाओं में किस भाषा की छौंक ज्यादा पाई जाती है?

(a) हरियाणवी (b) मराठी की
(c) राजस्थानी की (d) पंजाबी की

UPPSC Degree College Exam. 2008

Ans. (c) मीराबाई की रचनाओं में राजस्थानी भाषा की छौंक ज्यादा पाई जाती है। मीराबाई कृष्णभक्ति शाखा की प्रमुख कवयित्री है। उनकी कविताओं में एक गहरी टीस है। जो भक्ति के रंग में रंगकर और गहरी हो गई है। मीराबाई द्वारा रचित ग्रन्थ हैं– नरसीजी का मायरा, गीत गोविन्द टीका, राग गोविन्द, रागसोरठ के पद, मलार राग, सत्यभामा नु रूसणं, मीरा की गरबी, रुक्मिणी मंगल।

608. 'बसो मेरे नैनन मे नन्दलाल' -किसकी पंक्ति है

(a) सूरदास (b) नंददास
(c) मीराबाई (d) कृष्णदास

UGC NET II[nd] Paper June 2010

Ans. (c)

पंक्ति	पंक्तिकार
'बसो मेरे नैनन में नन्दलाल'	मीराबाई
लरिकाई कौ प्रेम कहौ अलि कैसे करि के छूटत	सूरदास
नव मर्कत मनि स्याम मनिगम ब्रजबाला। वृन्दावन को रीझि मनहुँ पहिराई माला।	नन्ददास
कंचन मनि मरकत रस ओपी। नंद सुवन के संगम सुखकर अधिक विराजति गोपी।	कृष्णदास

609. 'रसखान' कवि का वास्तविक नाम था–

(a) नसीमखान (b) अली मुहम्मद
(c) अब्दुल (d) सैयद इब्राहीम

UPPSC Degree College Exam. 2008

Ans. (d) 'रसखान' कवि का वास्तविक नाम 'सैय्यद इब्राहिम' था। इनका जन्म अनुमानतः दिल्ली में सन् 1533 में तथा मृत्यु 1618 ई. में हुई। रसखान की प्रमुख काव्य कृतियाँ है- सुजान रसखान, प्रेमवाटिका, दानलीला, अष्टायाम आदि।

610. गौड़ीय संप्रदाय के संस्थापक हैं :

(a) हरिदास निरंजनी (b) लालदास
(c) हितहरिवंश (d) चैतन्य महाप्रभु

UGC NET III[rd] Paper June. 2016

Ans. (d)

संस्थापक आचार्य	सम्प्रदाय
चैतन्य महाप्रभु	गौड़ीय सम्प्रदाय
हितहरिवंश	राधावल्लभ सम्प्रदाय
स्वामी हरिदास	सखी/टट्टी सम्प्रदाय
लाल दास	लाल पंथ

611. 'मेरे तो गिरिधर गोपाल, दूसरो न कोई' किसका पद है?

(a) सूरदास (b) मीराबाई
(c) बिहारी (d) जायसी

MP Asst. Prof. Hindi, 2017

Ans. (b) : 'मेरे तो गिरिधर गोपाल, दूसरो न कोई।' पद की रचयिता मीराबाई हैं। ये सम्प्रदायनिरपेक्ष अनन्य कृष्ण भक्त कवयित्री थीं। इनकी भक्ति 'माधुर्य भाव' या 'प्रेम भाव' वाली थी।

612. ''पायोजी मैंने राम रतन धन पायो''
प्रस्तुत पद के रचयिता का नाम है:

(a) सूरदास (b) कुंभनदास
(c) मीराबाई (d) तुलसी

UP TGT 2001

Ans. (c) 'पायो जी मैंने राम रतन धन पायौ' इस पद की रचना धर्मनिरपेक्ष कवयित्री मीराबाई हैं। गीत गोविन्द की टीका, नरसी जी का मायरा (माहेरो), मलार राग, राग गोविन्द, सत्यभामा नु रूसणं, मीरा की गरबी, 'रुक्मणी मंगल' आदि मीरा की प्रमुख रचनाएं हैं।

613. 'मीराबाई का मलाल' किसकी कृति है–
(a) मीराबाई (b) नन्ददास
(c) छीतस्वामी (d) गोविन्द स्वामी

UP TGT 2003

Ans. (a) राजस्थान के मेड़ता में राठौरवंशी रतन सिंह के यहाँ 1516 ई. में जन्मीं मीराबाई गिरधर गोपाल श्रीकृष्ण की प्रमुख भक्त थीं। मीराबाई ने अपने इष्टदेव की उपासना में मीराबाई का मलार, नरसी जी की मायरा, गीतगोविन्द टीका, राग गोविन्द आदि की रचना की। अष्टछाप के कवि नन्ददास ने अनेकार्थमंजरी, रसमंजरी, मानमंजरी, रूपमंजरी, श्याम सगाई, भंवरगीत, रास पंचाध्यायी, सिद्धान्त पंचाध्यायी नामक कृतियों की रचना की। छीतस्वामी की स्फुट रचनाओं का संकलन 'पदावली' नाम से प्रसिद्ध है। गोविन्द स्वामी के पदों का संकलन 'गोविन्द स्वामी के पद' नाम से प्रसिद्ध है।

614. 'पुष्टिमार्ग' मत के प्रवर्तन का श्रेय निम्नलिखित वैष्णवाचार्यों में किसे दिया जाता है?
(a) निम्बार्काचार्य (b) मध्वाचार्य
(c) वल्लभाचार्य (d) रामानुजाचार्य

UPPSC GDC 2021

Ans. (c) : कृष्णभक्ति काव्यधारा में 'पुष्टिमार्ग' के प्रवर्तन का श्रेय 'वल्लभाचार्य' को दिया जाता है। वल्लभाचार्य ने वल्लभ संम्प्रदाय की स्थापना की। भागवत महापुराण में पुष्टिमार्ग के संदर्भ में कहा गया है कि- "पुष्टि कि में? पोषणम्। पोषणं किम्। तदनुग्रहः भगवत्कृपा ।" वल्लभाचार्य ने निम्न ग्रंथो की रचना की-पूर्व मीमांसा भाष्य, उत्तर मीमांसा या ब्रह्मसूत्र भाष्य (अणुभाष्य), श्रीमद्भागवत की सूक्ष्मटीका, तत्वदीप निबंध। निम्बार्काचार्य ने 'निम्बार्क सम्प्रदाय' की स्थापना की। इनके द्वारा रचित ग्रंथ-वेदान्त पारिजात सौरभ, दशश्लोकी, श्रीकृष्णास्तवराज, प्रपन्नकल्पपल्लवी आदि हैं। रामानुजाचार्य ने 'श्री सम्प्रदाय' की स्थापना की तथा इनका मत 'विशिष्टद्वैतवाद' है।

615. निम्नलिखित में से कौन कृष्ण भक्ति शाखा का कवि नहीं था?
(a) कबीरदास (b) नंददास
(c) सूरदास (d) रसखान

DSSSB TGT (Female) 04.09.2021 Shift-II

Ans. (a) : कबीरदास 'कृष्णभक्ति शाखा' के कवि नहीं थे। कबीरदास 'संतकाव्य धारा' या 'निर्गुण' काव्यधारा के प्रमुख कवि हैं। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार "निर्गुण मार्ग के निर्दिष्ट प्रवर्तक कबीरदास ही थे।" डॉ. बच्चन सिंह ने लिखा है, "हिन्दी भक्तिकाव्य का प्रथम क्रान्तिकारी पुरस्कर्त्ता कबीर है।" कबीर की वाणी का संग्रह उनके शिष्य धर्मदास ने 'बीजक' नाम से सन् 1464 ई. में किया। नंददास, सूरदास, रसखान, मीराबाई ये सभी सगुण काव्यधारा के कृष्णभक्ति शाखा के प्रमुख कवि हैं।

616. 'नरसी जी का मायरा' किसकी रचना है?
(a) सूरदास (b) मीराबाई
(c) बालकृष्ण (d) कबीर

DSSSB PGT 18.7.2021 Shift-II

Ans : (b) 'नरसी जी का मायरा' मीराबाई की रचना है। इनका जन्म 1516 ई. में हुआ था। मीराबाई की भाषा राजस्थानी मिश्रित ब्रजभाषा है। इनकी अन्य प्रमुख रचनाएँ इस प्रकार हैं- गीत गोविन्द की टीका, राग सोरठा, राग गोविन्द, मलार राग, रुक्मणी मंगल आदि।

617. धान को गाँव पयार ते जानौ
ज्ञान विषयरस भोरे
सूर सो बहुत कहै न रहे रस
गूलर को फल फोरे ।'
इसमें अंतिम पंक्ति का क्या अर्थ है?
(a) गूलर में रस नहीं है।
(b) गूलर का फल रुखा है।
(c) गूलर का फल खट्टा है।
(d) ढकी छिपी बात बोलने से कही गई बात का आनन्द समाप्त हो जाता है।

UPHESC Assit. Prof. 2021

Ans. (d) : उपर्युक्त काव्यांश के अन्तिम पंक्ति का अर्थ है- 'ढकी छिपी बात बोलने से कही गई बात का आनन्द समाप्त हो जाता है।' यह पद रामचन्द्र शुक्ल द्वारा सम्पादित 'भ्रमरगीत सार' में संकलित है। 'भ्रमरगीत सार' महाकवि सूरदास के पदों का संग्रह है। जिसे शुक्ल जी ने 'सूरसागर' के भ्रमरगीत से लगभग 400 पदों को छांटकर उनकों 'भ्रमरगीत सार' के रूप में प्रकाशित कराया था।

618. मीरा की कविता के सम्बन्ध में अनुपयुक्त है
(a) मीरा के काव्य में बिछोह की तड़पन ज्यादा है।
(b) मीरा का प्रेम परिवार से निरन्तर तिरस्कार पाता है।
(c) मीरा के काव्य में रहस्यानुभूति का रंग है।
(d) मीरा का विद्रोह साध्य है साधन नहीं।

RPSC Assit. Prof. 2020 Paper-I

Ans. (d) : मीरा की कविता के सम्बन्ध में 'मीरा का विद्रोह साध्य है साधन नहीं' अनुपयुक्त कथन है। शेष कथन मीरा के काव्य के सन्दर्भ में सत्य हैं। डॉ. शिवकुमार शर्मा मीरा के काव्य के सन्दर्भ में लिखते हैं "मीरा का काव्य आँसुओं के जल से सिक्त, पल्लवित एवं पुष्पित प्रेमबेल के मनोहारिणी सुगंध से सुवासित है।" मीरा की कविता का विषय उनकी आत्मानुभूति और जीवनानुभव है। उनकी आत्मा उनके आराध्य 'गिरिधर नागर' के विविध अनुभवों से विकसित और समृद्ध है। प्रेम ही उनके जीवन और भक्ति का सर्वोत्तम सार है। इस प्रेम की प्रेरणा मीरा स्वयं है। उनका एक मात्र संकट कृष्ण से विद्रोह है। इस प्रकार गोविन्द-गुणगान ही मीरा की कविता का विषय है। मीराबाई ने श्रीकृष्ण की उपासना प्रियतम या पति के रूप में की है। मीरा के लिए उनकी 'कृष्ण भक्ति' साधन और साध्य दोनों है। मीरा का विद्रोह कबीर के विद्रोह की तरह साधन है साध्य नहीं। मीरा का साध्य ऐसे भाव की प्राप्ति है जो समस्त दुविधाओं और भेदों से ऊपर उठा दे।

619. 'या ब्रज में कुछ देख्यो री टोना'- पद में प्रयुक्त पंक्ति 'ले लेहु री कोई स्याम सलोना' के माध्यम से संकेतित है
(a) आवाज़ लगाकर दही बेचना
(b) गुजरिया की विक्रय कुशलता
(c) प्रेमावेग में वर्तमान का विस्मरण
(d) विरह पीड़ा में कृष्ण को बेचने का भाव

RPSC Assit. Prof. 2020 Paper-I

Ans. (c) : पद में प्रयुक्त पंक्ति के माध्यम से प्रेमावेग में वर्तमान का विस्मरण संकेतित है। अन्य तीनों विकल्प गलत है। इस पद में मीरा ब्रज की गोपियों का कृष्ण-प्रेम दरसा रही हैं। मीरा कहती हैं लगता है किसी ने उनके ऊपर टोना कर दिया है, वह दही बेचने घर से निकलती हैं किन्तु आगे जाने पर जब राह में श्याम मिल जाते हैं, तो वह सुध-बुध खो बैठती हैं। दही की जगह श्याम-सलोना ही लोगों

को बेचने लगती हैं। गिरिधर के प्रेम में वह पूरी तरह से खो गयी हैं। मीरा की कविता में प्रेम की गंभीर अभिव्यंजना है। उसमें विरह की वेदना है तो मिलन का उल्लास भी। इनकी कविता में सादगी व सरलता है। इन्होंने मुक्तक गेय पदों की रचना की। रैदास को मीरा का गुरू माना जाता है। ये माधुर्य भाव की कवयित्री हैं। उन्होंने कृष्ण का स्मरण 'गिरिधर नागर' के रूप में किया है। सुमित्रानंदन पंत ने मीरा को 'राजपूताने की मरुस्थल की मंदाकिनी' कहा है।

620. 'जोगी! मत जा, मत जा, मत जा,'- पंक्ति में 'जोगी' से मीरा का अभिप्राय है

(a) कृष्ण (b) उद्धव
(c) योगी (d) गोरखनाथ

RPSC Assit. Prof. 2020 Paper-I

Ans. (a) : उपर्युक्त पंक्ति में 'जोगी' से मीरा का अभिप्राय 'कृष्ण' है। शेष विकल्प असत्य है।

मीरा ने कृष्ण को 'जोगी', 'जोगिया', 'रावल' आदि संबोधन भी दिये हैं। इन संबोधनों के संदर्भ से ही मीरा पर नाथपंथी प्रभाव की बात कही जाती है। ऐसे पदों में मीरा की अपने आराध्य के प्रति प्रेम की तीव्रता दीवानगी की हद तक है। मीरा की इस तीव्रता को सूफी संतो के प्रभाव से भी जोड़ा जाता है। इसके अतिरिक्त मीरा ने कुछ पदों में 'सद्‌गुरु' का भी उल्लेख किया है। इस प्रकार के साक्ष्यों से मीरा को निर्गुण संत परम्परा का प्रमाणित करने का प्रयास किया जाता है। यद्यपि मीरा, कबीर, रैदास, नानक या पुष्टिमार्गीय भक्त कवियों की तरह भ्रमणशील नहीं थी यद्यपि उनकी साधु मण्डली में प्रत्येक पंथ के साधु तथा भक्तजनों का स्वागत था। मीरा की भक्ति का आधार कृष्ण के प्रति एकनिष्ठ प्रेम है। मीरा के पदों को तीन भागों में बांटा जाता है। - लीला, विनय तथा व्यक्तिगत अनुराग। मीरा जोधपुर के राजा 'रत्न सिंह' पुत्री तथा चित्तौड़ के राजा भोजराज की पत्नी थीं। इनका जन्म (1516-1546 ई.) कुड़की (राजस्थान) में तथा मृत्यु द्वारका स्थित रणछोर नाथ जी के मंदिर में हुई। मीरा की प्रमुख काव्यकृतियाँ हैं- गीतगोविन्द का टीका, नरसीजी का मायरा, राग गोविन्द, मलार राग, मीरा की गरबी, राग सोरठा, रुक्मिणी मंगल आदि है। मीरा के स्फुट पद 'मीराबाई की पदावली' नाम से प्रकाशित है।

**621. ''गोकुल सबै गोपाल-उपासी।
जोग अंग साधत जे ऊधो, ते सब बसत ईसपुर कासी॥''
में 'ईसपुर' से व्यंजित अर्थ है**

(a) शिव की नगरी (b) विष्णु की नगरी
(c) देवताओं की नगरी (d) कृष्ण की नगरी

RPSC Assit. Prof. 2020 Paper-I

Ans. (a) : 'ईसपुर' से व्यंजित अर्थ 'शिव की नगरी' है। उपर्युक्त काव्य पंक्तियाँ सूरदास द्वारा प्रणीत 'भ्रमरगीत सार' से उद्‌धृत हैं। गोपियाँ कहती हैं हे उद्धव गोकुल के सब लोग कृष्णोपासक हैं। आप तो हम लोगों को अष्टांग योग की शिक्षा दे रहे हैं। अष्टांग योग की साधना करने वाले तो 'शंकर की नगरी काशी' में निवास करते हैं।

सूरदास द्वारा रचित प्रमुख ग्रन्थ हैं-

(1) सूरसागर (2) सूरसारावली (3) साहित्य लहरी

सूरदास ने सूरसागर में तीन भ्रमरगीतों की योजना की है। हिन्दी साहित्य में 'भ्रमरगीत' काव्य परम्परा का प्रवर्तन सूरदास ने किया।

**622. ''आये जोग सिखावन पाँडे .... सूरदास तीनों नहिं उपजत धनियां, धान, कुम्हाँडे।''
इस पद में 'तीनों' का व्यंग्यार्थ है**

(a) धनिया, धान, कुम्हाँडा
(b) प्रेमाभक्ति साधना, निर्गुण की साधना, योग साधना
(c) भक्ति, प्रकृति, ज्ञान
(d) कृषि उपज, हृदय के भाव, साधना

RPSC Assit. Prof. 2020 Paper-I

Ans. (b) : उक्त पद में तीनों शब्द का व्यंग्यार्थ- प्रेमाभक्ति साधना, निर्गुण की साधना, योग साधना है। उपर्युक्त काव्य पंक्तियाँ सूरदास कृत 'सूरसागर' के 'भ्रमरगीत प्रसंग' से उद्‌धृत हैं। प्रस्तुत दोहे में गोपियाँ उद्धव पर तंज कसते हुए कह रही हैं हे सखी, देखो तो योगशास्त्र सिखाने के लिए पंडित जी आ गये हैं। गोपियाँ कहती हैं उद्धव! तुम अच्छी प्रकार से जानते हो कि धनिया, धान और काशीफल इन तीनों की खेती एक स्थान पर होना सम्भव नहीं है, असम्भव है इसलिए हमारे लिए श्रीकृष्ण को छोड़कर तुम्हारे परम ब्रह्म को स्वीकार करना असम्भव है।

**623. ''नागरि नारि भलै बूझेगी अपने बचन सुभाव।''
पंक्ति से अभिव्यंजित नहीं है**

(a) नगर का चतुराई भरा जीवन
(b) मथुरा की स्त्रियों का स्वभाव
(c) गोपियों का असूया भाव
(d) यशोदा का कृष्ण प्रेम

RPSC Assit. Prof. 2020 Paper-I

Ans. (d) : उक्त पंक्ति से 'यशोदा का कृष्ण प्रेम' अभिव्यंजित नहीं है। अन्य विकल्पों का कथन इस पंक्ति से सम्बन्धित है। सूरदास द्वारा रचित 25 ग्रंथ बताया जाता है जिसमें की तीन ही उपलब्ध हैं जो निम्न हैं- (1) सूरसागर (2) सूरसारावली (3) साहित्य लहरी। 'सूरसागर' में 4936 पद तथा 12 स्कन्ध है। हिन्दी साहित्य में 'भ्रमरगीत' काव्य परम्परा का प्रवर्तन सूरदास ने किया। 'साहित्य लहरी' (1550 ई.) में अलंकार और नायिका भेदों के उदाहरण प्रस्तुत करने वाले 118 दृष्टिकूट पद हैं।

624. ''इसमें सगुणोपासना का निरूपण बड़े ही मार्मिक ढंग से- हृदय की अनुभूति के आधार पर, तर्क पद्धति पर नहीं- किया है।'' सूरदास के भ्रमरगीत के सन्दर्भ में यह कथन किसका है?

(a) नन्ददुलारे वाजपेयी (b) हजारीप्रसाद द्विवेदी
(c) रामचन्द्र शुक्ल (d) ब्रजेश्वर वर्मा

RPSC Assit. Prof. 2020 Paper-I

Ans. (c) : सूरदास के 'भ्रमरगीत के सन्दर्भ में उपर्युक्त कथन आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का है। नंददुलारे वाजपेयी, डा. मैनेजर पाण्डेय, कवि विजयेन्द्र स्नातक ने भ्रमरगीत (गोपीचरित) को 'दुखांत काव्य' कहा है। भ्रमरगीत में अन्योक्ति व वक्रोक्तियों की भरमार है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने 'भ्रमरगीत' को 'उपालंभ काव्य' व 'ध्वनि काव्य' कहा है। आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी ने लिखा है- ''सूरदास जब अपने विषय का वर्णन शुरू करते हैं तो मानों अलंकार शास्त्र हाथ जोड़कर उनके पीछे दौड़ा करता है, उपमाओं की बाढ़ आ जाती है, रूपकों की वर्षा होने लगती है, संगीत के प्रवाह में कवि स्वयं बह जाता है।'' सूरदास की रचनाओं का सर्वप्रथम संम्पादन कलकत्ता में 1841 ई. में 'रागकल्पद्रुम' नाम से हुआ। हजारीप्रसाद द्विवेदी ने 'सूरसागर' को 'स्त्री चरित्र का विशाल काव्य' कहा है। 'भ्रमरगीत' में परमविरहाशक्ति का गहरा समावेश है।

625. **अष्टयाम किसकी रचना है?**
(a) पंत (b) निराला
(c) नाभादास (d) घनानंद
DSSSB PGT Hindi (Male) 18.07.2021 Shift-I

Ans. (c) : 'अष्टयाम' भक्तिकाल के कवियों में स्वामी अग्रदास के शिष्य नाभादास की रचना है। इनकी कृतियाँ- 'भक्तमाल', 'अष्टयाम' एवं 'रामभक्ति सम्बन्धी स्फुट पद'। 'भक्तमाल' में लगभग दो सौ भक्तों का चरित्रगान है। 'अष्टयाम' ब्रजभाषा गद्य और पद्य दोनों में पृथक्- पृथक् उपलब्ध है।

626. **नंददास की किस कृति पर मुग्ध होकर उन्हें 'जड़िया' उपाधि दी गई?**
(a) अनेकार्थ मंजरी (b) पदावली
(c) रास पंचाध्यायी (d) भंवरगीत
DSSSB PGT Hindi (Male) 18.07.2021 Shift-I

Ans. (c) : 'रास पंचाध्यायी' कृति पर मुग्ध होकर नंददास को जड़िया की उपाधि दी गयी। नंददास ब्रजभाषा के कृष्णभक्त कवि थे। वे अष्टछाप (पुष्टिमार्ग) के आठ कवियों में एक थे। ये गोस्वामी विट्ठलनाथ के शिष्य थे।
रचनाएँ–रास पंचाध्यायी, सिद्धान्त पंचाध्यांयी, अनेकार्थ मंजरी, रूप मंजरी, रस मंजरी, भँवर गीत, रुक्मिणी मंगल, सुदामा चरित आदि।
• नन्ददास और सूरदास में सूरदास की नायिकाएँ भावुक हैं, जबकि नन्ददास की नायिकाएँ तर्कशील है।
• 'पदावली' ग्रंथ के रचयिता विद्यापति है।

627. **'साहित्य लहरी' के रचयिता कौन है?**
(a) नंददास (b) गोविन्द स्वामी
(c) सूरदास (d) कृष्णदास
DSSSB PGT Hindi (Male) 18.07.2021 Shift-I

Ans. (c) : 'साहित्य लहरी' के रचयिता **सूरदास** है।
इसी ग्रंथ में सूर की वंश परम्परा का परिचय मिलता है कि सूर अकबर के दरबारी कवि और रामदास के पुत्र चन्द्रवरदाई के वंशज ब्रह्मभट्ट हैं।
सूरदास के कुल 25 ग्रंथ बताये जाते हैं, जिनमें 7 उपलब्ध हैं–
(1) सूरसागर, (2) साहित्य लहरी,
(3) सूर सारावली, (4) राधा रस केलि,
(5) सूर रामायण, (6) सूर पचीसी,
(7) सूर साखी।
सूरदास की मृत्यु पर विट्ठलदास ने कहा था–
पुष्टि मार्ग कौ जहाज जात है।
सो जाको कछू लेनों हो सो लेउ।।
आचार्य शुक्ल ने लिखा– "सूर की बड़ी भारी विशेषता है नवीन प्रसंगों की उद्भावना। प्रसंगोद्भावना करने वाली ऐसी प्रतिभा हम तुलसी में नहीं पाते।"

628. **"तोरि मानिनी तें हियो फोरि मोहिनी मान।**
प्रेमदेव की छबि ही लखि भए मियाँ रसखान॥"
आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसार उपर्युक्त दोहे से प्रमाणित होता है कि
(A) रसखान किसी स्त्री पर आसक्त थे।
(B) स्त्री मानवती थी और रसखान का अनादर करती थी।
(C) रसखान स्वयं को प्रेम का मानदंड मानते थे।
(D) रसखान को भास हुआ कि जिस पर गोपियाँ मरती हैं उसी पर ध्यान लगाया जाए।
(E) रसखान मोहिनी का मान-मर्दन करना चाहते थे।
निम्नलिखित विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:
(a) (A), (B) और (C) (b) (A), (B) और (D)
(c) (B), (C) और (E) (d) (B), (C), (D) और (E)
UGC NET June. 2019

Ans. (b) : आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार उपर्युक्त दोहे से प्रमाणित होता है कि-
(1) रसखान किसी स्त्री पर आसक्त थे।
(2) स्त्री मानवती थी और रसखान का अनादर करती थी।
(3) रसखान को भास हुआ कि जिस पर गोपियाँ मरती है उसी पर ध्यान लगाया जाए।
रसखान का पूरा नाम 'सैय्यद इब्राहीम' है। कृष्णभक्ति के लिए 'कवित्त सवैया' पद्धति को अपनाने वाले प्रथम कवि थे।
इनकी रचनाएँ हैं-सुजान रसखान, दानलीला, अष्टयाम, प्रेमवाटिका।
तुलसीदास जी ने अपना 'रामचरितमानस' सर्वप्रथम रसखान जी को सुनाया था।

629. **'प्रेमवाटिका' किसकी काव्यकृति है ?**
(a) रसखान (b) नागरीदास
(c) आलम (d) भातेन्दु हरश्चिन्द्र
MP Asst. Prof. 2017
UGC NET II[nd] Paper Dec. 2014

Ans. (a) 'प्रेमवाटिका' रसखान (1614) की काव्य कृति है। इसमें राधा-कृष्ण को मालिन-माली मानकर प्रेमोद्योग का वर्णन किया गया है। रसखान का मूलनाम सैयद इब्राहीम था।
आलम-ये रीतिमुक्त धारा के कवि हैं। 'प्रेम की पीर या इश्क का दर्द' इनके एक-एक वाक्य में मिलता है, इनकी प्रमुख रचना - आलम केलि, माधवानलकामकंदला, सुदामा चरित है।,
नागरीदास-की प्रमुख रचना 'इश्कचमन' है। बणीढ़णी इनकी पत्नी थी।
भारतेन्दु जी- इनको गद्य के प्रवर्तक के रूप में जाना जाता है, इनके काव्य ग्रंथों की संख्या 70 है। इनके प्रमुख काव्य संग्रह हैं- भक्ति सर्वस्य, कार्तिक स्नान, प्रेम सरोवर, प्रेममाधुरी, होली, वर्षा विनोद।

630. **नायिका भेद पर आधारित ग्रंथ 'रसमंजरी' के रचनाकार हैं**
(a) सूरदास (b) बिहारी
(c) नंददास (d) विद्यापति
UP TGT 2016
UGC NET III[rd] Paper June. 2014

Ans. (c) नायिका भेद पर आधारित ग्रंथ 'रसमंजरी' के रचनाकार नंददास हैं। यह रीतिनिरूपण सम्बन्धी रचना है। इसमें नायिका भेद का वर्णन किया गया है। स्वकीया, परकीया नायिका के भेदों के साथ नौ प्रकार की नायिकाओं का वर्णन है। इनकी अन्य रचना इस प्रकार हैं- रासपंचाध्यायी, सिद्धांत पंचाध्यायी, रूपमंजरी, विरहमंजरी, भंवर गीत इत्यादि।

631. **निम्नलिखित में से कौन अष्टछाप का कवि है?**
(a) मीराबाई (b) रसखान
(c) सूरदास (d) विद्यापति
UGC NET II[nd] Paper June. 2005

Ans. (c) 'सूरदास' अष्टछाप के कवि हैं। आचार्य रामचंद्र शुक्ल अपने 'हिन्दी साहित्य के इतिहास' में कृष्ण भक्ति शाखा के अष्टछाप कवियों का जीवनक्रम निम्नवत दिया है-

कवि	जीवनकाल	जन्म स्थान	गुरू
कुम्भनदास	1468-1583 ई.	जमुनावती (उ.प्र.)	वल्लभाचार्य
सूरदास	1478-1583 ई.	सीही (उ.प्र.)	"
परमानन्ददास	1493 ई.	कन्नौज (उ.प्र.)	"
कृष्णदास	1496-1578 ई.	चिलोतरा (गुजरात)	"
गोविन्द स्वामी	1505-1585 ई.	आंतरी (राजस्थान)	विट्ठलनाथ
छीतस्वामी	1515-1585 ई.	मथुरा (उ.प्र.)	"
चतुर्भुजदास	1530-1585 ई.	जमुनावती (उ.प्र.)	"
नंददास	1533-1583 ई.	रामपुर (उ.प्र.)	"

632. **निम्नलिखित में से कौन-सा कवि कृष्णभक्ति धारा के कवियों में शामिल नहीं है?**
(a) नाभादास (b) नंददास
(c) हरिदास (d) ध्रुवदास

UGC NET June. 2019

Ans. (a) : 'नाभादास' कृष्णभक्ति धारा के कवियों में शामिल नहीं है। नाभादास रामभक्ति धारा के कवि हैं। कृष्णभक्ति काव्यधारा के कवि-नंददास, हरिदास, ध्रुवदास, सूरदास, कुभंनदास, परमानंददास, कृष्णादास, गोविन्दस्वामी, छीतस्वामी, चतुर्भुजदास, रसखान, मीरा, रहीम आदि। रामभक्ति काव्यधारा के कवि रामानन्द, अग्रदास, तुलसीदास, नाभादास, विष्णुदास, नरहरिदास, ईश्वरदास आदि हैं।

633. **'केवल प्रेम लक्षणा भक्ति' का आधार ग्रहण करने के कारण कृष्ण भक्ति शाखा में अश्लील विलासिता की प्रवृत्ति जाग्रत हुई।'- यह विचार किसका है?**
(a) जार्ज ग्रियर्सन (b) मिश्र बंधु
(c) रामचंद्र शुक्ल (d) रामकुमार वर्मा

Ans : (c) "केवल 'प्रेम लक्षणा भक्ति' का आधार ग्रहण करने के कारण कृष्ण भक्ति शाखा में अश्लील विलासिता की प्रवृत्ति जाग्रत हुई।" यह विचार आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का है।

634. **श्रीवल्लभाचार्य ने जिस कृष्ण-भक्ति को प्रतिष्ठित किया, उसका दार्शनिक आधार है–**
(a) अद्वैत दर्शन (b) द्वैत दर्शन
(c) शुद्धाद्वैत दर्शन (d) द्वैताद्वैत दर्शन

UP PGT 2009

Ans. (c) वल्लभाचार्य ने अपनी कृष्ण भक्ति में जिस दार्शनिक आधार को अपनाया वह शुद्धाद्वैतवाद था जिसमें पुष्टि भक्ति ही आधार थी। भगवान का पोषण प्राप्त करना ही भक्ति का लक्ष्य था। मध्यकाल के अन्य दर्शन थे – मध्वाचार्य का द्वैत दर्शन, शंकराचार्य का अद्वैत दर्शन, निम्बार्काचार्य का द्वैताद्वैतवाद, रामानुजाचार्य का विशिष्टाद्वैतवाद आदि।

635. **''भ्रमरगीत'' प्रसंग का प्रतिपाद्य है–**
(a) वात्सल्य रस का चित्रण
(b) गोपियों का विरह वर्णन
(c) सगुण भक्ति की महिमा का निर्गुण का खण्डन
(d) कृष्ण की भक्ति

राजस्थान कॉलेज लेक्चरर भर्ती परीक्षा (पेपर-I) 2014

Ans. (c) : 'भ्रमरगीत' प्रसंग का प्रतिपाद्य है सगुण भक्ति की महिमा का निर्गुण का खण्डन। 'भ्रमरगीत' के लेखक सूरदास हैं। 'भ्रमरगीत' सूरदास कृत 'सूरसागर' में संग्रहीत है। हिन्दी साहित्य में 'भ्रमरगीत' काव्य परम्परा का प्रवर्तन सूरदास ने किया। 'भ्रमरगीत' का सर्वप्रथम एक पूर्ण प्रसंग के रूप में वर्णन श्रीमद्भागवत के दशम् स्कन्ध के 47वें अध्याय के 12 से 21 श्लोक में मिलता है। सूरदास की प्रमुख तीन रचनाएँ हैं– 1. सूरसागर 2. सूरसारावली 3. साहित्य लहरी।

636. **भ्रमरगीत का उपजीव्य ग्रंथ कौन-सा है?**
(a) श्रीमद्भागवत महापुराण (b) विष्णु पुराण
(c) हरिवंश पुराण (d) शिवपुराण

UP TGT 2016

Ans. (a) : भ्रमरगीत का उपजीव्य ग्रंथ 'श्रीमद्भागवत महापुराण' का दशम् स्कन्ध माना जाता है। सूरदास ने सूरसागर में तीन भ्रमरगीतों की योजना की है। भ्रमरगीत का सर्वप्रथम एक पूर्ण प्रसंग के रूप में वर्णन श्रीमद्भागवत के दशम स्कन्ध के 47वें अध्याय के 12 से 21 श्लोक में मिलता है। हिन्दी साहित्य में भ्रमरगीत परम्परा का प्रवर्तन सूरदास ने किया।

637. **सूरदास के दृष्टकूट पद किस काव्य-ग्रंथ में संकलित है?**
(a) सूरसागर (b) साहित्य लहरी
(c) सूर सारावली (d) इनमें से कोई नहीं

UP TGT 2016
UGC Net Hindi December 2013 (Paper-III)

Ans. (b) : सूरदास के दृष्टकूट पद 'साहित्य-लहरी' काव्य-ग्रंथ में संकलित हैं। 'साहित्य लहरी' (1550ई.) में अलंकार और नायिका भेदों के उदाहरण प्रस्तुत करने वाले 118 दृष्टिकूट पद हैं। सूरदास को वात्सल्य रस का सम्राट कहा जाता है।

638. **शृंगार और वात्सल्य रस का सम्राट किस कवि को कहा जाता है?**
(a) तुलसीदास (b) सूरदास
(c) नंददास (d) कृष्णदास

DSSSB PGT 23.07.2018
UP TGT 2016

Ans. (b) : कृष्ण भक्ति शाखा के प्रतिनिधि कवि सूरदास को शृंगार और वात्सल्य रस का सम्राट कहा जाता है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने तुलसीदास को 'अनुप्रास का बादशाह' कहा है। नन्ददास को 'जड़िया कवि' कहा जाता है।

639. **गौड़ीय सम्प्रदाय के प्रवर्तक आचार्य थे-**
(a) वल्लभाचार्य (b) मध्वाचार्य
(c) चैतन्य महाप्रभु (d) स्वामी हरिदास

UP TGT 2016

Ans. (c) : गौड़ीय सम्प्रदाय के प्रवर्तक आचार्य चैतन्य महाप्रभु थे। प्रमुख सम्प्रदाय एवं उनके प्रवर्तक इस प्रकार हैं-

प्रवर्तक	सम्प्रदाय	सम्बद्ध दार्शनिक मत
वल्लभाचार्य	रूद्र	शुद्धाद्वैतवाद
मध्वाचार्य	ब्रह्म संप्रदाय	द्वैतवाद
चैतन्य महाप्रभु	गौड़ीय	अचिन्त्य भेदाभेदवाद
स्वामी हरिदास	सखी संप्रदाय	

640. **अष्टछाप में कवियों की संख्या कितनी थी?**
(a) 10 (b) 8
(c) 12 (d) 15

UP TGT 2016

Ans. (b) : अष्टछाप में कवियों की संख्या आठ (8) थी। गोस्वामी बिट्ठलनाथ ने सन् 1565 ई. में चार वल्लभाचार्य और चार अपने शिष्यों को मिलाकर 'अष्टछाप' की स्थापना की। अष्टछाप के आठ कवि इस प्रकार हैं-

(i) कुंभनदास (ii) सूरदास (iii) परमानन्द दास
(iv) कृष्णदास (v) गोविन्द स्वामी (vi) छीत स्वामी
(vii) चतुर्भुजदास (viii) नन्ददास।
ध्यातव्य है कि प्रथम चार वल्लभाचार्य के तथा अंतिम चार बिट्ठलनाथ के शिष्य थे।

641. निम्नलिखित को कालक्रम के अनुसार व्यवस्थित करें–
(a) सूरदास, स्वामी हरिदास, मीराबाई, रसखान
(b) स्वामी हरिदास, सूरदास, मीराबाई, रसखान
(c) सूरदास, रसखान, मीराबाई, स्वामी हरिदास
(d) स्वामी हरिदास, सूरदास, रसखान, मीराबाई

UPHSC असिस्टेन्ट प्रोफेसर 2016

Ans : (*) कालक्रम के अनुसार व्यवस्थित क्रम–

रचनाकार	कालक्रम
स्वामी हरिदास	1478 ई.
सूरदास	1478 ई.
मीराबाई	1516 ई.
रसखान	1533 ई.

642. 'दो सौ बावन वैष्णवन की वार्ता' की भाषा क्या है?
(a) ब्रजभाषा (b) खड़ी बोली
(c) अवधी (d) बघेली

UPHSC असिस्टेन्ट प्रोफेसर 2016

Ans : (a) 'दो सौ बावन वैष्णवन की वार्ता' की भाषा 'ब्रजभाषा' है। इस वार्ता ग्रंथ के लेखक गोसाई गोकुलनाथ हैं। इस वार्ता ग्रंथ के अतिरिक्त "चौरासी वैष्णवन की वार्ता' भी गोकुलनाथ का ग्रंथ है। इन दोनों ग्रंथों का सम्बन्ध वल्लभ सम्प्रदाय से है।

643. 'मीराबाई' से सम्बन्धित कौन सा कथन सही नहीं है?
(a) उन्होंने मुक्त भाव से सभी भक्ति संप्रदायों का प्रभाव ग्रहण किया।
(b) उन्होंने लोकजीवन में रची-बसी भाषा का प्रयोग किया।
(c) अपने अधिकांश पदों में कृष्ण को बंशीधर, नंदनंदन, श्यामसुंदर, गोपाल आदि नामों से याद किया।
(d) उनकी भक्ति माधुर्य भाव की है।

राजस्थान कॉलेज लेक्चरर भर्ती परीक्षा-2015

Ans. (*) मीराबाई से सम्बन्धित कथन-
(i) मीराबाई ने मुक्त भाव से सभी भक्ति सम्प्रदायों (सम्प्रदाय निरपेक्ष कृष्ण भक्त) का प्रभाव ग्रहण किया।
(ii) उन्होंने लोकजीवन में रची बसी भाषा का प्रयोग किया।
(iii) अपने अधिकांश पदों में कृष्ण को वंशीधर, नंदनंदन, श्यामसुन्दर, गोपाल आदि नामों से याद किया।
(iv) उनकी भक्ति माधुर्य भाव की है।
(v) मीराबाई की भाषा राजस्थानी मिश्रित ब्रजभाषा है।

644. "सूर कवित सुनि कौन कवि जो नहिं सिर चालन करै।" सूरदास के संबंध में यह प्रशस्तिकथन किसका है?
(a) ब्रजरत्नदास (b) पं. परशुराम चतुर्वेदी
(c) विट्ठलनाथ (d) नाभादास

UPPCS GIC 2017

Ans. (d) : "सूर कवित सुनि कौन कवि जो नहिं सिर चालन करै।" सूरदास के संबंध में यह प्रशस्तिकथन 'नाभादास' का है। नाभादास ने हिन्दी भक्तमाल की परम्परा का सूत्रपात किया। इनके गुरु का नाम 'अग्रदास' था। नाभादास ने सन् 1585 ई. के आस पास ब्रजभाषा में 'भक्तमाल' की रचना की। 'भक्तमाल' में 200 कवियों की जीवनवृत्त और उनकी भक्ति की महिमासूचक बातों को 316 छप्पयों में लिखा गया है।

645. निम्नलिखित में से विट्ठलनाथ के शिष्य हैः
(a) कृष्णदास (b) नंददास
(c) कुंभनदास (d) परमानंददास

GDC प्रवक्ता भर्ती परीक्षा-2017

Ans. (b) : विट्ठलनाथ के शिष्य 'नंददास' हैं। इनके अन्य शिष्य– छीतस्वामी, गोविन्दस्वामी, चतुर्भुजदास हैं। कृष्णदास, कुंभनदास, सूरदास, परमानंददास ये वल्लभाचार्य के शिष्य हैं। इन सभी को अष्छाप का कवि कहा जाता है। 'अष्टछाप' की स्थापना 1565 ई. में विट्ठलनाथ ने किया। यह बल्लभ सम्प्रदाय का साहित्यिक रूप है।

646. निम्नलिखित मे से वल्लभाचार्य के शिष्यों के संबंध में कौन सा कथन असत्य है?
(a) कुंभनदास तथा कृष्णदास
(b) सूरदास तथा परमानन्ददास
(c) नंददास तथा चतुर्भुजदास
(d) सूरदास तथा कृष्णादास

GDC प्रवक्ता भर्ती परीक्षा-2017

Ans. (c) : वल्लभाचार्य के शिष्यों के संबंध में 'नंददास तथा चतुर्भुजदास' कथन असत्य है। कुंभनदास, सूरदास, परमानन्ददास तथा कृष्णदास वल्लभाचार्य के शिष्य हैं। जबकि 'नंददास तथा चतुर्भुजदास' गोबिन्द स्वामी, छीतस्वामी विट्ठल नाथ के शिष्यों में आते हैं। ये सभी अष्टछाप के कवि है।

647. हम तो दुहूँ भाँति फल पायो।
जौ ब्रजनाथ मिलैं तो नीको, नातरु जस गयो॥
उपर्युक्त पंक्तियों में .... है।
(a) व्यंग्य (b) अतत्परता
(c) आत्मसमाधान (d) कटाक्ष
(e) विनोद

Chattisgarh Asst. Prof. 2014

Ans. (c) : हम तो दुहूँ भाँति फल पायो।
जौ ब्रजनाथ मिलैं तो नीको, नातरु जस गयो।।
उपर्युक्त पंक्तियों में 'आत्मसमाधान' है। यह पंक्ति सूरदास जी द्वारा रचित सूरसागर में संकलित भ्रमरगीत से है। सूरदास द्वारा रचित 25 ग्रंथ बताएँ जाते हैं, जिसमें तीन ही उपलब्ध है-(1) सूरसागर, (2) सूरसारावली, (3) साहित्यलहरी।
सूरदास कृत 'सूरसागर' का उपजीव्य भागवत महापुराण का दशम स्कन्ध है। हिन्दी साहित्य में 'भ्रमरगीत' काव्य परम्परा का प्रवर्तन सूरदास ने किया। 'भ्रमरगीत' में कुल सात सौ पद हैं। भ्रमरगीत को उपालम्भ काव्य भी कहते हैं। 'सूर सारावली' में 1107 छंद हैं। इसकी रचना संसार को होली का रूपक मानकर की है। 'साहित्यलहरी' में अलंकार और नायिका भेदों के उदाहरण प्रस्तुत करने वाले 118 दृष्टिकूट पद हैं। सूरदास को वात्सल्य रस का सम्राट माना जाता है। सूरदास की रचनाओं का सर्वप्रथम सम्पादन कलकत्ता में सन 1841 ई. में 'राग कल्पद्रुम' नाम से हुआ।

648. सूरसागर की रचना का आधार .... है।
(a) गर्ग संहिता (b) महाभारत
(c) विष्णुपुराण (d) श्रीमद्भागवत
(e) ब्रह्मवैवर्तपुराण

Chattisgarh Asst. Prof. 2014

Ans. (d) : सूरदास कृत 'सूरसागर' की रचना का आधार 'श्रीमद्भागवत' का दशम स्कंध है। सूरसागर में 4936 पद तथा 12 स्कंध है। हिन्दी साहित्य में 'भ्रमरगीत' काव्य परंपरा का प्रवर्तन सूरदास ने किया। सूरदास की रचनाएँ हैं-सूरसागर, सूरसारावली और साहित्य लहरी।

649. **कृष्ण भक्ति काव्य के संदर्भ में इनमें से कौन सा कथन असत्य है?**
(a) भगवत्कृपा की प्राप्ति के लिए सूर की भक्ति पद्धति में अनुग्रह का प्राधान्य है।
(b) नन्ददास ने 'भँवरगीत' नामक ग्रंथ की रचना की थी।
(c) राधावल्लभ सम्प्रदाय में राधा का स्थान गौण तथा कृष्ण का स्थान प्रधान तथा उच्च माना गया है।
(d) सखी संप्रदाय का प्रवर्तन स्वामी हरिदास द्वारा किया गया।

राजस्थान स्कूल शिक्षा प्राध्यापक परीक्षा–2018

Ans. (c) : राधावल्लभ सम्प्रदाय में राधा का स्थान गौण तथा कृष्ण का स्थान प्रधान तथा उच्च माना गया है। यह कथन कृष्ण भक्ति काव्य के संदर्भ में असत्य है। भगवत्कृपा की प्राप्ति के लिए सूर की भक्ति पद्धति में अनुग्रह का प्राधान्य है। नन्ददास ने 'भँवरगीत' नामक ग्रंथ की रचना की थी। सखी सम्प्रदाय का प्रवर्तन स्वामी हरिदास द्वारा किया गया। राधा वल्लभ सम्प्रदाय राधा का स्थान प्रथम तथा उच्च है एवं कृष्ण का स्थान गौड़ है।

650. **'साहित्य लहरी' के रचयिता कौन हैं?**
(a) नन्ददास (b) चतुर्भुजदास
(c) सूरदास (d) कृष्णदास

DSSSB PGT 25.07.2018
हरियाणा असिस्टेन्ट प्रोफेसर भर्ती परीक्षा-2017
UGT Net June 2012 (Paper-III)
UP TGT 2011

Ans. (c) : 'साहित्य लहरी' के रचयिता सूरदास हैं। 'साहित्य लहरी' (1550 ई.) में अलंकार और नायिक भेदों का उदाहरण प्रस्तुत करने वाले 118 दृष्टिकूट पद हैं। इनकी अन्य कृतियाँ हैं- सूरसागर, सूरसारावली।

651. **'काहे को रोकल मारग सूधो।**
सुनहु मधुप! निर्गुन कंटक ते राजपंथ क्यों रूँधो।।'
इस काव्य पंक्ति में 'राजपंथ' का प्रयोग किसके लिए किया गया है?
(a) साधना मार्ग (b) ज्ञान मार्ग
(c) भक्ति मार्ग (d) योग मार्ग

DSSSB PGT-24.07.2018 (2:00 pm-5:00 pm)

Ans. (c) : उपर्युक्त काव्य पंक्ति में 'राजपंथ' का प्रयोग भक्ति मार्ग के लिए किया गया है। यह सूरदास द्वारा रचित 'भ्रमरगीत' में इस पंक्ति का उल्लेख है।

652. **वल्लभाचार्य ने अपने मार्ग का नाम 'पुष्टि मार्ग' क्यों रखा?**
(a) क्योंकि भक्ति की ओर जीव की प्रवृत्ति तभी होती है जब भगवान का अनुग्रह होता है
(b) क्योंकि इससे जीव सांसरिक सुखों की प्राप्ति करते हैं
(c) क्योंकि यह प्रेमलक्षणा भक्ति है
(d) क्योंकि जीव वेद-विधियों का अनुसरण करके स्वर्गलोक प्राप्त करते हैं

DSSSB PGT-24.07.2018 (2:00 pm-5:00 pm)

Ans. (a) : वल्लभाचार्य ने अपने मार्ग का नाम 'पुष्टि मार्ग' रखा क्योंकि भक्ति की ओर जीव की प्रवृत्ति तभी होती है जब भगवान का अनुग्रह होता है। इन्होंने जीवों के तीन रूप बतायें हैं–
1. पुष्टि जीव– जो भगवान के अनुग्रह पर निर्भर रहते हुए नित्यलीला में प्रवेश के अधिकारी बनते हैं।
2. मर्यादा जीव– जो वेदोक्त विधियों का अनुसरण करते हुए भिन्न-भिन्न लोक प्राप्त करते हैं।
3. प्रवाह जीव– जो जगत प्रपंच में ही निमग्न रहते हुए सांसारिक सुखों की प्राप्ति हेतु सतत् चेष्टारत् रहते हैं।

653. **सूरदास के किस ग्रंथ में अलंकारों और नायिकाभेदों के उदाहरण प्रस्तुत करने वाले कूट पद हैं?**
(a) सूरसागर (b) सारावली
(c) सूरसागर सारावली (d) साहित्य लहरी

DSSSB PGT-24.07.2018 (2:00 pm-5:00 pm)

Ans. (d) : सूरदास के 'साहित्य लहरी' में अलंकारों और नायिकाभेदों के उदाहरण प्रस्तुत करने वाले कूट पद लिखें हैं। इसमें 118 दृष्टिकूट पद हैं। सूरदास को श्रृंगार और वात्सल्य का सम्राट माना गया है। इनके द्वारा रचित अन्य कृतियाँ है– सूरसागर तथा सूर-सारावली।

654. **गोपियों की वचनवक्रता का मनोहारी चित्रण, सूरसागर के किस अंश में मिलता है?**
(a) बाललीला (b) प्रेमलीला
(c) दानलीला (d) भ्रमरगीत

DSSSB PGT-24.07.2018 (2:00 pm-5:00 pm)

Ans. (d) : गोपियों की वचनवक्रता का मनोहारी चित्रण, सूरसागर के 'भ्रमरगीत' अंश में मिलता है। सूरदास कृत 'सूरसागर' का उपजीव्य 'भागवत महापुराण' का दशम स्कन्ध है। हिन्दी साहित्य में 'भ्रमरगीत' काव्य परम्परा का प्रवर्तन सूरदास ने किया। 'भ्रमरगीत' को उपालम्भ काव्य भी कहते हैं। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने इसे 'ध्वनि काव्य' कहा है।

655. **जिस प्रकार स्वामी रामानंद जी ने विष्णु के अवतार राम की उपासना पर जोर दिया उसी प्रकार किस आचार्य ने कृष्ण को लेकर जनता को रसमग्न किया?**
(a) मध्वाचार्य (b) रामानुज
(c) वल्लभाचार्य (d) शंकराचार्य

DSSSB PGT-24.07.2018 (2:00 pm-5:00 pm)

Ans. (c) : जिस प्रकार स्वामी रामानंद जी ने विष्णु के अवतार राम की उपासना पर जोर दिया उसी प्रकार वल्लभाचार्य ने कृष्ण को लेकर जनता को रसमग्न किया। वल्लभाचार्य द्वारा रचित ग्रन्थ हैं– पूर्व मीमांसा भाष्य, उत्तर मीमांसा या अणुभाष्य तथा तत्व दीप निबन्ध श्रीमद्भागवत का सूक्ष्म टीका।

656. **निम्नलिखित में से कौन अष्टछाप के कवि नहीं हैं?**
(a) रैदास (b) सूरदास
(c) परमानन्द दास (d) कुम्भन दास

DSSSB PGT-24.07.2018
DSSSB PGT-23.07.2018
राजस्थान स्कूल शिक्षा प्राध्यापक परीक्षा 2018
MP Asst. Prof. Hindi 2017
राजस्थान कॉलेज लेक्चरर भर्ती परीक्षा 2015
UGC Net June 2014 (Paper-III)
UP TGT 2010
UP TGT 2002

Ans. (a) : रैदास 'ज्ञानाश्रयी शाखा' के संत कवि है न कि अष्टछाप के कवि है। 'अष्टछाप' की स्थापना स्वामी विट्ठल नाथ ने सन् 1565 ई. में चार अपने तथा चार अपने पिता वल्लभाचार्य के शिष्यों को मिलाकर किया था। यह आठ कृष्ण भक्त कवियों का समूह है। अष्टछाप के आठ कवि इस प्रकार हैं-

वल्लभाचार्य के शिष्य	**विट्ठल नाथ के शिष्य**
(1) सूरदास	(1) गोविन्द स्वामी
(2) कुंभनदास	(2) छीत स्वामी
(3) परमानन्द दास	(3) चतुर्भुज दास,
(4) कृष्णदास	(4) नन्ददास

657. 'काग के भाग बड़े सजनी हरि हाथ सों लै गयों माखन रोटी'
(a) परमानंद दास (b) सूरदास
(c) रसखान (d) नन्ददास
DSSSB PGT-25.07.2018 (9:00 am-12:00 pm)

Ans. (c) : 'काग के भाग बड़े सजनी हरि हाथ सों लै गयों माखन रोटी' रसखान की पंक्तियां हैं। अन्य कवियों की पंक्तियाँ हैं–
⇒ जब ते प्रीति श्याम ते कीनी।
ता दिन ते मेरे इन नैननि नेंकह नींद न लीनी।। – परमानन्ददास
⇒ प्रभु हौं सब पतितन कौ टीकौ – सूरदास
⇒ सेस महेस गनेस दिनेस सुरेसहु जाहि निरंतर गावै।– रसखान
नवमर्कत मनि श्याम कनक मनिगम ब्रजबाला।
वृन्दावन को रीझि मनहुँ पहिराइ माला।।

658. सूरदास किस सम्प्रदाय में दीक्षित हुए थे?
(a) निम्बार्क सम्प्रदाय (b) पुष्टि मार्गी सम्प्रदाय
(c) रामनन्दी सम्प्रदाय (d) सखी सम्प्रदाय
DSSSB PGT-25.07.2018 (9:00 am-12:00 pm)

Ans. (b) : सूरदास 'पुष्टिमार्गी सम्प्रदाय' में दीक्षित हुए थे। पुष्टि मार्गी सम्प्रदाय के प्रवर्तक वल्लभाचार्य हैं। 'निम्बार्क सम्प्रदाय' के प्रवर्तक निम्बार्काचार्य हैं। 'सखी संम्प्रदाय' स्वामी हरिदास का है। सूरदास के प्रमुख ग्रंथ हैं– सूरसागर, साहित्य लहरी, सूर सारावली आदि।

659. महाकवि सूरदास का जन्म स्थान हैः
(a) वृंदावन (b) मथुरा
(c) मगहर (d) सीही
DSSSB PGT-25.07.2018 (9:00 am-12:00 pm)

Ans. (d) : महाकवि सूरदास का जन्म स्थान 'सीही' है। सूरदास के जन्म के संबंध में दो मत हैं– श्यामसुंदर दास, आचार्य शुक्ल, हजारी प्रसाद द्विवेदी इनका जन्म स्थान रूनकता (गऊघाट) मानते हैं, जबकि वार्ता साहित्य में, डॉ0 नगेन्द्र, गणपति चन्द्र गुप्त 'सीही' मानते हैं। मगहर में कबीर दास की मृत्यु हुई थी।

660. सखी सम्प्रदाय के प्रवर्तक थेः
(a) रामानंद (b) स्वामी हरिदास
(c) वल्लभाचार्य (d) परमानंद दास
DSSSB PGT-25.07.2018 (9:00 am-12:00 pm)
MP Asst. Prof. Hindi 2017
GDC प्रवक्ता भर्ती परीक्षा 2017

Ans. (b) : 'सखी सम्प्रदाय' के प्रवर्तक स्वामी हरिदास थे। इस सम्प्रदाय को हरिदासी व टट्टी सम्प्रदाय के नाम से भी जाना जाता है। यह निम्बार्क सम्प्रदाय की एक शाखा है। इस सम्प्रदाय के लोग आगरा में यमुना किनारे बास की टट्टी बनाकर रहते थे इसलिए इसे टट्टी सम्प्रदाय भी कहते हैं।

661. सूरदास के गुरू का नाम क्या था?
(a) विष्णु स्वामी (b) रामानंद
(c) वल्लभाचार्य (d) विट्ठलनाथ
DSSSB PGT-25.07.2018 (9:00 am-12:00 pm)
UP PGT 2016, 2011

Ans. (c) : सूरदास के गुरू का नाम 'वल्लभाचार्य' था। सूरदास जी पहले कवि हैं, जिन्होंने ब्रजभाषा को साहित्य की भाषा के रूप में प्रतिष्ठित किया। इनके कुल 25 ग्रंथ बताये जाते हैं परन्तु 3 ग्रंन्य उपलब्ध हैं- सूरसागर, साहित्य लहरी, सूरसारावली।

662. सूरदास ने श्रीमद्‌भागवत के किस स्कन्ध को आधार बनाया
(a) सप्तम स्कन्ध (b) पंचम स्कन्ध
(c) तृतीया स्कन्ध (d) दशम स्कन्ध
DSSSB PGT-25.07.2018 (9:00 am-12:00 pm)
DSSSB PGT-24.07.2018 (9:00 am-12:00 pm)

Ans. (d) : सूरदास ने श्रीमदभागवत के 'दशम स्कन्ध' को आधार बनाया। सूररदास ने 'सूरसागर' की रचना श्रीमद्‌भागवत के अनुकरण पर की। इसमें सवा लाख पद बताये जाते हैं परन्तु 4936 पद ही मिलते हैं। सूरसागर में सूरदास ने भ्रमरगीत का वर्णन किया है। 'भ्रमरगीत' श्रीमदभागवत के दशम स्कन्ध के 47वें अध्याय के 10 श्लोको से लिया है। 'भ्रमर' रस लोलुप एवं प्रेम प्रवंचक का प्रतीक है। क्योंकि यह कभी किसी एक कली या एक पुष्प का रसपान नहीं करता और इसके हृदय मे कभी स्थिरता नहीं होती है। शुक्ल ने इसे 'ध्वनिकाव्य या उपालम्भ काव्य' कहा है।

663. राधावल्लभ संप्रदाय का प्रवर्तन किसने किया?
(a) हितहरिवंश ने (b) मध्वाचार्य ने
(c) गोपीनाथ ने (d) गोपाल भट्ट ने
राजस्थान कॉलेज लेक्चरर भर्ती परीक्षा (पेपर-II) 2014

Ans. (a) : 'राधावल्लभ' संप्रदाय का प्रवर्तन हितहरिवंश ने किया। इसका प्रवर्तन 1534 ई. में वृन्दावन में किया गया। इस सम्प्रदाय में 'राधा' का स्थान सर्वोपरि है तथा इसमें 'तत्सुखीभाव' को महत्त्व प्रदान किया गया है। हितहरिवंश अपनी रचना की मधुरता के कारण श्रीकृष्ण की वंशी का अवतार कहे जाते हैं।

664. निम्नलिखित में से कौन-सी रचना मीरा द्वारा नहीं रची गयी है।
(a) गीतगोविन्द की टीका (b) राग सोरठ के पद
(c) प्रेमवाटिका (d) नरसी जी का मायरा
NVS PGT 17.09.2019
राजस्थान कॉलेज लेक्चरर भर्ती परीक्षा (पेपर-II) 2014

Ans. (c) : 'प्रेमवाटिका' मीराबाई की रचना नहीं है बल्कि यह रसखान की रचना है। रसखान की प्रमुख रचनाएँ हैं– सुजान रसखान, प्रेम वाटिका, दानलीला, अष्टयाम। मीराबाई की रचनाएँ हैं– गीत गोविन्द का टीका, नरसीजी का मायरा, राग सोरठा, राग गोविन्द, मलार राग, सत्यभामा नु रूसणं, मीरा की गरबी, रुक्मणी मंगल।

665. निम्नलिखित में से किस ग्रन्थ की रचना नन्ददास ने नहीं की है?
(a) गीतगोविन्द की टीका (b) रासपंचाध्यायी
(c) अनेकार्थ मंजरी (d) श्यामसगाई
राजस्थान कॉलेज लेक्चरर भर्ती परीक्षा (पेपर-II) 2014

Ans. (a) : 'गीत गोविन्द की टीका' की रचना नन्ददास ने नहीं की है बल्कि इसकी रचना मीराबाई ने की है। नन्ददास अष्टछाप के कवि है। इनकी प्रसिद्ध रचनाएँ हैं– अनेकार्थ मंजरी, मानमंजरी, सुदामा चरित, रस मंजरी, रूप मंजरी, विरहमंजरी, प्रेमबारह खड़ी, श्याम सगाई, रुक्मिणी मंगल, भँवर गीत, रासपंचाध्यायी, सिद्धान्त पंचाध्यायी, दशमस्कन्ध भाषा।

666. निम्नलिखित में से कौन-सा संत अकबर के बुलावे पर फतेहपुर सीकरी गया था?

(a) सूरदास (b) कुम्भनदास
(c) नन्ददास (d) तुलसीदास

राजस्थान कॉलेज लेक्चरर भर्ती परीक्षा (पेपर-II) 2014

Ans. (b) : दिये गये संतों में कुम्भनदास अकबर के बुलावे पर फतेहपुर सीकरी गये थे। कुम्भनदास प्रथम अष्टछापी कवि थे। ये जाति के क्षत्रिय थे। ये सन् 1492 ई. में वल्लभाचार्य से दीक्षा ग्रहण किये। फतेहपुर सीकरी जाने के अफसोस पर इन्होंने लिखा था।

"संतन को कहा सीकरी सों काम।
आवत जात पन्हैया टूटी बिसरि गयो हरिनाम।"

667. "कर्म जोग पुनि ज्ञान उपासन सब ही भ्रम भरमायो।" इस काव्य-पंक्ति के रचनाकार हैं–

(a) कबीर (b) तुलसीदास
(c) सूरदास (d) परमानंददास

राजस्थान कॉलेज लेक्चरर भर्ती परीक्षा (पेपर-II) 2014

Ans. (c) : कर्म जोग पुनि ज्ञान उपासन सब ही भ्रम भरमायो।" उक्त पंक्ति सूरदास रचित भ्रमरगीत से है। अन्य की प्रसिद्ध पंक्तियाँ इस प्रकार हैं–

कवि		प्रसिद्ध पंक्ति
कबीर	–	माधो मैं ऐसा अपराधी, तेरी भगति होत नहीं साधी।
तुलसीदास	–	गोरख जगायो जोग, भगति भगायो लोग।
परमानन्द दास	–	कहा करौं बैकुंठहि जाये। जहँ नहि नंद, जहाँ न जसोदा, नहिं जँह गोपी ग्वाला न गाय।

668. किशनगढ़ के भक्त कवि महाराज सावन्त सिंह साहित्य के क्षेत्र में किस नाम से जाने जाते हैं।

(a) भक्त शिरोमणि (b) दासानुदास
(c) नागरीदास (d) राठौड़ वंशावतंस

राजस्थान कॉलेज लेक्चरर भर्ती परीक्षा (पेपर-II) 2014

Ans. (c) : किशनगढ़ के भक्त कवि महाराज सावन्त सिंह साहित्य के क्षेत्र में नागरीदास नाम से जाने जाते हैं। नागरीदास बल्लभ कुल के गोस्वामी रणछोड़ जी के शिष्य थे। इनके इष्टदेव श्री कल्याण राय जी तथा श्री नित्यगोपाल जी थे। इनके रचे पद ब्रज मंडल में काफी प्रसिद्ध थे। नागरीदास के पद इस प्रकार हैं–

इक मिलत भुजनि भरि दौरि दौरि,
इक टेरि बुलावत और औरि,
कोउ चले जात सहजै सुभाय
पद गाय उठत भोगहिं सुनाय।

669. 'सूरसागर' का सबसे मर्मस्पर्शी और वाग्वैदग्ध्यपूर्ण अंश है–

(a) संयोग शृंगार वर्णन (b) बाल वर्णन
(c) प्रकृति वर्णन (d) भ्रमरगीत

राजस्थान कॉलेज लेक्चरर भर्ती परीक्षा (पेपर-II) 2014

Ans. (d) : 'सूरसागर' का सबसे मर्मस्पर्शी और वाग्वैदग्ध्यपूर्ण अंश 'भ्रमरगीत' है। हजारी प्रसाद द्विवेदी ने लिखा है, "सूरदास ही ब्रजभाषा के प्रथम कवि हैं और लीलागान का महान समुद्र 'सूरसागर' ही उनका प्रथम काव्य है।" सूरसागर का उपजीव्य 'भागवत महापुराण' का दशम स्कन्ध है। हिन्दी साहित्य में 'भ्रमर गीत' काव्य परम्परा का प्रवर्तन सूरदास ने किया।

670. 'और सब गढ़िया नंददास जड़िया' उक्ति में नन्ददास की किस विशेषता की ओर संकेत है।

(a) नन्ददास का चिंतक रूप (b) नन्ददास की तार्किकता
(c) नन्ददास शब्द प्रयोग (d) नन्ददास का व्यवहार

राजस्थान कॉलेज लेक्चरर भर्ती परीक्षा (पेपर-II) 2014

Ans. (c) : 'और सब गढ़िया नंददास जड़िया' इस उक्ति में नन्ददास के शब्द प्रयोग की विशेषता की ओर संकेत किया गया है। अष्टछाप के कवियों में नन्ददास का स्थान काव्य सौष्ठव और भाषा की प्रांजलता में सूरदास के बाद आता है। इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं– अनेकार्थ मंजरी, मानमंजरी, सुदामा चरित, रसमंजरी, रूपमंजरी, विरह मंजरी, प्रेमबारह खड़ी, श्याम सगाई, रुक्मिणी मंगल, भँवर गीत, रासपंचाध्यायी, सिद्धान्त पंचाध्यायी, दशम स्कंध भाषा।

671. "काहे को गोपीनाथ कहावत?" इस पंक्ति में व्यक्त भाव है–

(a) क्षोभ (b) उत्सुकता
(c) समर्पण (d) उपालम्भ

राजस्थान कॉलेज लेक्चरर भर्ती परीक्षा (पेपर-I) 2014

Ans. (d) : 'काहे को गोपीनाथ कहावत?' इस पंक्ति में व्यक्त 'उपालम्भ' भाव है। उपालंभ का अर्थ शिकायत, उलाहना होता है। यह पंक्ति सूरदास विरचित सूरसागर के 'भ्रमरगीत' की है। पूरी पंक्ति इस प्रकार है–

काहे कौ गोपीनाथ कहावत।
जो मधुकर वै स्याम हमारे,
क्यौं न इहाँ लौ आवत॥

672. "भ्रमरगीत सूरसागर के भीतर का एक सार तत्व है।" यह कथन किसका है?

(a) आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी
(b) आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी
(c) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
(d) डॉ. नगेन्द्र

राजस्थान कॉलेज लेक्चरर भर्ती परीक्षा (पेपर-I) 2014

Ans. (c) : "भ्रमरगीत सूरसागर के भीतर का एक सार तत्व है।" यह कथन आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का है। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने लिखा है– 'सूरदास' जब अपने विषय का वर्णन शुरू करते हैं तो मानो अलंकारशास्त्र हाथ जोड़कर उनके पीछे दौड़ा करता है।

673. "जहाँ बैठावे तित ही बैठूँ, बेचै तो बिक जाऊँ।" इस पंक्ति में मीरा का व्यक्त भाव है–

(a) उत्साह (b) हर्ष
(c) समर्पण (d) क्षोभ

राजस्थान कॉलेज लेक्चरर भर्ती परीक्षा (पेपर-I) 2014

Ans. (c) : "जहाँ बैठावे तित ही बैठूँ, बेचै तो बिक जाऊँ।" पंक्ति में मीरा का 'समर्पण' भाव व्यक्त है– इनकी अन्य पंक्तियाँ हैं–

1. मनमोहन कान्हा विनती करूं दिन रैन राह तके मेरे नैन
2. हरि आप हरो जन री भीर, द्रोपदी री लाज राखी, आप बढ़ायो चीर।
3. मन रे परसी हरी के चरण सुभाग शीतल कमल कोमल।

674. **निम्नलिखित में से कौन अवधी भाषा का कवि नहीं है?**

(a) जायसी (b) कुतुबन
(c) उसमान (d) नन्ददास

राजस्थान कॉलेज लेक्चरर भर्ती परीक्षा (पेपर-I) 2014

Ans. (d) : 'नन्ददास' अवधी भाषा का कवि नहीं है बल्कि 'नन्ददास' कृष्ण भक्ति धारा के अन्तर्गत अष्टछाप के कवियों में 'ब्रजभाषा' के कवि हैं। जायसी, कुतुबन, उसमान सूफी काव्य धारा के अन्तर्गत अवधी भाषा के कवि हैं।

675. **किस कवि की गणना अष्टछाप के कवियों में नहीं की जाती है?**

(a) कुंभनदास (b) नरोत्तम दास
(c) परमानन्द दास (d) कृष्णदास

DSSSB PGT-24.07.2018 (9:00 am-12:00 pm)

Ans. (b) : नरोत्तमदास की गणना अष्टछाप के कवियों में नहीं होती है। अष्टछाप आठ कृष्णभक्त कवियों का समूह है। ये आठ कवि इस प्रकार है- 1. कुंभनदास 2. सूरदास 3. परमानन्ददास, 4. कृष्णदास 5. गोविन्द स्वामी 6. छीत स्वामी 7. चतुर्भुज दास 8. नन्ददास।

676. **भ्रमरगीत में भ्रमर का प्रतीक कौन है?**

(a) अक्रूर (b) श्रीदामा
(c) उद्धव (d) बलराम

DSSSB PGT-24.07.2018 (9:00 am-12:00 pm)

Ans. (c) : भ्रमरगीत में 'उद्धव' भ्रमर के प्रतीक है। हिन्दी साहित्य में 'भ्रमरगीत' काव्य परम्परा का प्रवर्तन सूरदास ने किया है। 'भ्रमरगीत' को 'उपालम्भ काव्य' कहते हैं। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने इसे 'ध्वनिकाव्य' कहा है।

677. **निम्नलिखित में कौन सा कवि विठ्ठल नाथ जी का शिष्य है?**

(a) परमानन्द दास (b) चतुर्भुज दास
(c) सूरदास (d) कृष्णदास

DSSSB PGT-24.07.2018 (9:00 am-12:00 pm)

Ans. (b) : अष्टछाप के आठ कवियों में चार वल्लभाचार्य के तथा चार विट्ठलनाथ के शिष्य थे। इनका विवरण इस प्रकार है-

वल्लभाचार्य के शिष्य	विट्ठलनाथ के शिष्य
कुंभन दास	गोविन्द स्वामी
सूरदास	छीत स्वामी
परमानन्द दास	चतुर्भुज दास
कृष्णदास	नन्ददास

678. **किस सम्प्रदाय में श्रीकृष्ण को प्रमुख स्थान प्राप्त नहीं है?**

(a) वल्लभ सम्प्रदाय (b) राधावल्लभ सम्प्रदाय
(c) गौडीय सम्प्रदाय (d) निम्बार्क सम्प्रदाय

DSSSB PGT-24.07.2018 (9:00 am-12:00 pm)

Ans. (b) : 'राधावल्लभ सम्प्रदाय' में श्रीकृष्ण को प्रमुख स्थान प्राप्त नहीं है। राधावल्लभ सम्प्रदाय का प्रवर्तन सन् 1534 ई. में आचार्य हितहरिवंश ने वृन्दावन में किया। इस सम्प्रदाय में 'राधा' का स्थान सर्वोपरि है न कि श्रीकृष्ण का। इसमें 'तत्सुखी भाव' को महत्त्व प्रदान किया गया है।

679. **यह कथन किसका है?**

''वात्सल्य और शृंगार के क्षेत्रों का जितना अधिक उद्घाटन सूर ने अपनी बंद आँखों से किया है, उतना किसी अन्य कवि ने नहीं। इन क्षेत्रों का वे कोना-कोना झाँक आये हैं।

(a) डॉ. हज़ारी प्रसाद द्विवेदी (b) पं. रामचन्द्र शुक्ल
(c) डॉ. दीनदयालु गुप्त (d) डॉ. नगेन्द्र

DSSSB PGT-24.07.2018 (9:00 am-12:00 pm)

Ans. (b) : पं. रामचन्द्र शुक्ल ने कृष्णाश्रयी शाखा के प्रतिनिधि कवि सूरदास की विशेषताओं का वर्णन करते हुए कहा है ''वात्सल्य और शृंगार के क्षेत्रों का जितना अधिक उद्घाटन सूर ने अपनी बंद आँखों से किया उतना किसी अन्य कवि ने नहीं। इन क्षेत्रों का वे कोना-कोना झाँक आये है।''

680. **शुद्धाद्वैत दर्शन के प्रवर्तक आचार्य का नाम क्या है?**

(a) शंकराचार्य (b) निम्बार्काचार्य
(c) मध्वाचार्य (d) वल्लभाचार्य

DSSSB PGT-24.07.2018 (9:00 am-12:00 pm)
DSSSB PGT-24.07.2018 (2:00 am-5:00 pm)

Ans. (d) : शुद्धाद्वैत दर्शन के प्रवर्तक आचार्य का नाम 'वल्लभाचार्य' है। शेष दिये गये आचार्यों द्वारा प्रणीत दार्शनिक सिद्धान्त निम्नलिखित प्रकार है-

आचार्य	दार्शनिक सिद्धान्त
शंकराचार्य	अद्वैतवाद
निम्बार्काचार्य	द्वैताद्वैतवाद
मध्वाचार्य	द्वैतवाद

681. **अष्टछाप की स्थापना करने वाले कवि हैः**

(a) नामादास (b) चतुर्भुज दस
(c) विट्ठल नाथ (d) सूरदास

DSSSB TGT-15.09.2018
DSSSB PGT-24.07.2018 (9:00 am-12:00 pm)
Delhi K.V. PGT. 2015
GIC. PGT 2015, NVS. PGT. 2014
राजस्थान कॉलेज लेक्चरर भर्ती परीक्षा 2014
UPPSC Degree College Exam. 2008
UP PGT 2002

Ans. (c) : 'अष्टछाप' की स्थापना करने वाले कवि वल्लभाचार्य के पुत्र विट्ठलनाथ है। 1565 ई. विट्ठलनाथ ने चार वल्लभाचार्य और चार अपने शिष्यों को मिलाकर अष्टछाप की स्थापना की जो इस प्रकार हैं–

वल्लभाचार्य शिष्य	विट्ठलनाथ शिष्य
कुंभनदास (1468 ई.)	गोविन्द स्वामी (1505 ई.)
सूरदास (1478 ई.)	छीत स्वामी (1515 ई.)
परमानंददास (1493 ई.)	चतुर्भुजदास (1530 ई.)
कृष्णदास (1496)	नंददास (1533 ई.)

682. **नन्ददास का पर्यायकोश ग्रंथ है।**

(a) विरह मंजरी (b) रसमंजरी
(c) अनेकार्थ मंजरी (d) रूपमंजरी

NVS PGT 17.09.2019

Ans. (c) : नन्ददास का पर्यायकोश ग्रंथ 'अनेकार्थ मंजरी' है। अन्य ग्रंथ का विषय वस्तु इस प्रकार है–
विरह मंजरी – नायिकाओं का विरह वर्णन। इसमें बाहरमासा भी है।
रस मंजरी– नायिका भेद
रूप मंजरी– लघु प्रेमाख्यानक काव्य
'अष्टछाप' के कवियों में नन्ददास का स्थान काव्य सौष्ठव और भाषा की प्रांजलता में सूरदास के बाद है।

683. **निम्न में से कौन 'अष्टछाप' में शामिल नहीं है?**

(a) परमानन्द दास (b) कृष्णदास
(c) नन्ददास (d) सुन्दरदास

NVS PGT 17.09.2019

Ans. (d) : सुन्दरदास 'अष्टछाप' में शामिल नहीं हैं। गोस्वामी विट्ठलनाथ ने सन् 1565 ई. में चार वल्लभाचार्य और चार अपने शिष्यों को मिलाकर 'अष्टछाप' की स्थापना की। वल्लभाचार्य के कुल 84 तथा विट्ठलनाथ के कुल 252 शिष्य थे। अष्टछापी कवि हैं- कुंभनदास, सूरदास, परमानंद दास, कृष्णदास, गोविन्द स्वामी, छीत स्वामी, चतुर्भुजदास, नंददास।

684. 'मेरे नैना बिरह की बेल बई' पंक्ति के रचयिता कौन हैं?

(a) जायसी (b) घनानंद
(c) विद्यापति (d) सूरदास

NVS TGT 18.09.2019

Ans. (d) : 'मेरे नैना बिरह की बेल बई' पंक्ति के रचयिता सूरदास हैं। अन्य विवरण-

फिर-फिर रोइ कोई नहीं बोला। आधी रात विहंगम बोला **-जायसी**
बदरा बरसै रितु में घिरकै नित हो अखियां उधरी बरसैं **-घनानंद**
कालि कहल पिय सांझहिटे, जाइब मइ मारु देस **-विद्यापति**

685. 'रासपंचाध्यायी' का रचयिता कौन है?

(a) नंददास (b) कृष्णदास
(c) परमानंद दास (d) रसखान

DSSSB PGT 18.7.2021, Shift-II
NVS TGT 18.09.2019
DSSSB 24.07.2018 (2.00 pm - 5.00 pm)

Ans. (a) : 'रासपंचाध्यायी' के रचयिता नंददास है। अष्टछाप के कवियों में नंददास का स्थान काव्य सौष्ठव और भाषा की प्रांजलता में सूरदास के बाद है। 'रास पंचाध्यायी' रोला छंद में लिखा गया है। वियोगी हरि ने इसे 'हिन्दी का गीत गोविन्द' कहा है। यह पाँच अध्याय में विभक्त है।

686. 'बिनु गोपाल बैरिनि भई कुंजे' यह किसका पद है–

(a) केशवदास (b) जयशंकर प्रसाद
(c) सूरदास (d) कबीर

UP PGT 2016

Ans : (c) 'बिनु गोपाल बैरिनि भई कुंजै' यह सूरदास का पद है। यह भ्रमरगीत (सूरसागर) से लिया गया है। निम्नलिखित कवि एवं उनकी पंक्तियाँ–

कवि		पंक्ति
कबीर	–	माया महा ठगनी हम जानी।
केशवदास	–	भूषण बिनु न विराजई कविता वनिता मित्त।
जयशंकर प्रसाद	–	सरासर भूल करते हैं उन्हें जो प्यार करते हैं।

687. कहु रे मधुकर ! मधु मतवारे।
कहा करौ निर्गुण लै कै हौं जीवहु कान्ह हमारे।
ये पंक्तियाँ किस काव्य की हैं–

(a) यशोधरा (b) साकेत
(c) भ्रमरगीत (सूरसागर) (d) जयद्रथ वध

UP PGT 2016

Ans : (c) दी गयी पंक्ति-
"कहु रे मधुकर ! .... कान्ह हमारे।"
यह सूरदास द्वारा रचित 'भ्रमरगीत' (सूरसागर) से अवतरित है। जबकि यशोधरा, साकेत और जयद्रथ वध तीनों राष्ट्र कवि मैथिलीशरण गुप्त की काव्य रचनाएं हैं।

688. निम्न कवियों और उनकी कृतियों में कौन-सा सुमेलित नहीं है–

	कवि	काव्यकृति
(a)	विद्यापति	पदावली
(b)	नाभादास	भक्तमाल
(c)	नंददास	यमुनाष्टक
(d)	सुंदरदास	सुंदर विलास

LT Hindi 2018

Ans : (c) कवियों और उनकी कृतियों में नन्ददास–यमुनाष्टक सुमेलित नहीं है–सही सुमेलित क्रम निम्न है–

कवि		काव्यकृति
विद्यापति	–	पदावली
नाभादास	–	भक्तमाल
नन्ददास	–	रासपंचाध्यायी
सुन्दरदास	–	सुन्दर विलास

'यमुनाष्टक' हितहरिवंश एवं विट्ठलनाथ दोनों की रचना है।

689. सूरदास के विषय में कौन-सा कथन गलत है–

(a) सूरदास को सभी विद्वान जन्मान्ध मानते हैं।
(b) सूरदास श्रीनाथ मंदिर, वृन्दावन में कीर्तन करते थे।
(c) सूरदास वल्लभाचार्य के शिष्य थे।
(d) "प्रभु हौं सब पतितन को राजा।
परनिन्दा मुख पूरि रह्यौ जग, यह निसान नित बाजा।"
–पंक्तियाँ सूरदास द्वारा लिखित हैं।

LT Hindi 2018

Ans : (a) सूरदास के विषय में गलत कथन है–"सूरदास को सभी विद्वान जन्मान्ध मानते हैं।" क्योंकि कुछ आलोचक (विशेषतः हजारी प्रसाद द्विवेदी) ऐसे हैं जो सूर को जन्मान्ध नहीं मानते हैं।

690. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा सूचियों के नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए–

सूची-I (काव्य पंक्तियाँ)	सूची-II (रचनाकार)
A. मोरपखा सिर ऊपर राखिहौं	1. रसखान
B. बसौ म्हारे नैनन में नंदलाल	2. मीरा
C. भक्तन को कहा सीकरी सों काम	3. सूरदास
D. प्रीति कर दीन्हीं गरै छुरी	4. कुम्भनदास

	A	B	C	D
(a)	1	2	3	4
(b)	4	2	3	1
(c)	1	2	4	3
(d)	2	4	1	3

LT Hindi 2018

Ans : (c)

काव्य पंक्तियाँ	रचनाकार
A. मोरपखा सिर ऊपर राखिहौं	1. रसखान
B. बसौ म्हारे नैनन में नन्दलाल	2. मीराबाई
C. भक्तन को कहाँ सीकरी सो काम	3. कुम्भनदास
D. प्रीति कर दीन्हीं गरै छुरी	4. सूरदास

691. 'भ्रमरगीतसार' में किन अलंकारों की प्रमुखता है?

(a) अन्योक्ति (b) शब्दालंकार
(c) सादृश्यमूलक अलंकार (d) रूपकातिशयोक्ति

Chattisgarh Asst. Prof. 2009

Ans. (c) : 'भ्रमरगीत सार' में सादृश्य मूलक अलंकार की प्रमुखता है। 'भ्रमरगीत सार' आचार्य रामचन्द्र शुक्ल द्वारा सम्पादित महाकवि सूरदास के पदों का संग्रह है उन्होंने 'सूरसागर' के 'भ्रमरगीत' से लगभग 400 (चार सौ) पदों को छाँटकर 'भ्रमरगीत सार' के रूप प्रकाशित कराया था.

692. 'भ्रमरगीतसार' के किन पदों में "श्लेष" और "यमक" अलंकार पाए जाते हैं?

(a) गेय पद (b) कूट पद
(c) संस्कृत पद (d) कहावत

Chattisgarh Asst. Prof. 2009

Ans. (b) : 'भ्रमरगीतसार' के 'गेय पदों' में श्लेष और यमक अलंकार पाये जाते हैं। 'भ्रमरगीत सार' ग्रंथ के लेखक आचार्य रामचन्द्र शुक्ल है।

693. 'भ्रमरगीत' शृंगार रस का कैसा काव्य है?

(a) विप्रलम्भ काव्य (b) मुक्त काव्य
(c) उपालम्भ काव्य (d) शृंगार काव्य

Chattisgarh Asst. Prof. 2009

Ans. (c) : 'भ्रमरगीत' शृंगार रस का उपालम्भ काव्य है। भ्रमर गीत में गोपियों की वचन वक्रता अत्यन्त मनोहारिणी है। ऐसा सुन्दर उपालम्भ काव्य और कहीं नहीं मिलता।

694. 'रासपंचाध्यायी' की प्रमुख विशेषताएँ हैं-

(i) यह रोला छंद में लिखी गई है।
(ii) इसमें कृष्ण की रासलीला का विस्तार के साथ वर्णन किया गया है।
(iii) इसमें अनुप्रासादियुक्त साहित्यिक भाषा का प्रयोग किया गया है।
(iv) इसमें दूरारूढ़ कल्पना दिखाई पड़ती है।

नीचे दिए गए कूट में से सही उत्तर को चुनिए :

कूटः

(a) (i), (ii) और (iv) सही
(b) (i), (ii) और (iii) सही
(c) (ii), (iii) और (iv) सही
(d) (i), (iii) और (iv) सही

UGC NET Dec. 2018

Ans : (b) कृष्ण भक्त कवियों में प्रसिद्ध अष्टछापी कवि नन्ददास द्वारा रचित ग्रंथ 'रासपंचाध्यायी' की प्रमुख विशेषताएं हैं-
(1) यह रोला छन्द में लिखी गयी है।
(2) इस ग्रंथ में श्रीकृष्ण की रासलीला का विस्तार के साथ वर्णन किया गया है।
(3) इसमें अनुप्रासादियुक्त साहित्यक भाषा का प्रयोग किया गया है।
अतः दिये गये कूटों में कूट (i) (ii) तथा (iii) सही है।

695. सूरदास के बारे में आचार्य रामचंद्र शुक्ल द्वारा लिखित कौन-से कथन सही है?

(i) उन्होंने विट्ठलनाथ की आज्ञा से श्रीमद्भावगत की कथा को पदों में गाया।
(ii) उन्होंने भागवत के दशम स्कंध की कथा इतिवृत्त के रूप में कह दी है।
(iii) उन्होंने भिन्न-भिन्न लीलाओं को अत्यन्त मधुर और मनोहर पदों में गाया।
(iv) उनके पद अत्यंत प्रगल्भ और काव्यपूर्ण है।

नीचे दिए कूट में से सही उत्तर को चुनिएः

कूट :

(a) (i), (ii) और (iii) सही
(b) (i), (ii) और (iv) सही
(c) (ii), (iii) और (iv) सही
(d) (i), और (ii) सही

UGC NET Dec. 2018

Ans : (c) सूरदास के बारे में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल द्वारा लिखित निम्नलिखित कथन सत्य है-
1. उन्होंने भिन्न-भिन्न लीलाओं को अत्यंत मधुर और मनोहर पदों में गाया।
2. उनके पद अत्यंत प्रगल्भ और काव्यपूर्ण हैं।
3. उन्होंने (सूरदास ने) भागवत के दशम स्कंध की कथा इतिवृत्त के रूप में कह दी है।
अतः दिये गये कूटों में से कूट (ii) (iii) और (iv) सही है।

696. स्याम बिनोदी रे मधुबनियाँ ।
अब हरि गोकुल काहे को आवहिं चाहत नौ यौवनियाँ।
सूरदास प्रभु तजी कामरी अब हरि भए चिकनियाँ।
'अब हरि भए चिकनियाँ' के द्वारा सूरदास क्या कहना चाहते हैं?

(i) श्रीकृष्ण चिकने घड़े हो गये है।
(ii) श्रीकृष्ण चिकने चुपड़े हो गये है।
(iii) श्रीकृष्ण छैला हो गये हैं।
(iv) श्रीकृष्ण सुन्दर छवि वाले हो गए है।

नीचे दिए गए कूट में से सही उत्तर को चुनिए :

कूट :

(a) (ii) और (iii) सही (b) (i) और (iv) सही
(c) (ii) और (iv) सही (d) (iii) और (iv) सही

UGC NET Dec. 2018

Ans : (d) दी गयी काव्य पंक्तियों में वर्णित 'अब हरि भए चिकनियाँ' के द्वारा सूरदास कहना चाहते हैं कि-'श्रीकृष्ण छैला हो गये हैं' या दूसरे शब्दों में कहा जाये कि-श्रीकृष्ण सुन्दर छवि वाले हो गये हैं। अतः कूट (iii) और (iv) सही है।

697. यों ही मन मेरो मेरे काम का न रह्यौ माई,
स्याम रंग ह्वै करि समान्यो स्याम रंग मैं।
उक्त काव्य पंक्तियों में कोई गोपी या भक्त कहना चाहते हैं-

(i) श्रीकृष्ण के रंग में रंगकर मेरा रंग काला हो गया है।
(ii) मेरा रंग पहले से काला है इसलिए श्रीकृष्ण के रंग में मिल सका
(iii) श्रीकृष्ण के रंग में रंग कर मेरा मन उन्हीं के जैसा हो गया।
(iv) मेरा मन श्रीकृष्ण के वश में हो गया है।

नीचे दिए गए कूट में से सही उत्तर को चुनिए :

कूटः

(a) (iii) और (iv) सही (b) (ii) और (iii) सही
(c) (i) और (ii) सही (d) (i) और (iv) सही

UGC NET Dec. 2018

Ans : (a) दी गयी काव्य पंक्ति-"यो ही मन---------स्याम रंग मैं।" में कोई गोपी या भक्त यह कहना चाहता है कि 'श्रीकृष्ण के रंग में रंगकर मेरा मन उन्हीं के जैसा हो गया तथा मेरा मन श्रीकृष्ण के वश में हो गया है।' अतः कूट संख्या (iii) तथा (iv) सही है।

698. हरिदासी सम्प्रदाय के राधा-कृष्ण है
(a) लोकहितरक्षक (b) लोकनिरपेक्ष
(c) आत्मनिष्ठ (d) जीवन सापेक्ष
UGC NET Dec. 2018

Ans : (b) हरिदासी सम्प्रदाय के राधा-कृष्ण लोकनिरपेक्ष हैं न कि लोकहितरक्षक, आत्मनिष्ठ और जीवन सापेक्ष अर्थात् तीनों असंगत हैं। हरिदासी सम्प्रदाय के प्रवर्तक स्वामी हरिदास जी है। स्वामी हरिदास ने वृन्दावन में निम्बार्क मत के अनुसार सखी सम्प्रदाय या ट्ट्टी सम्प्रदाय की स्थापना की।

699. ''जीवन मुँह चाही को नीको।
दरस परस दिन राति करति है, कान्ह पियारे पी को।
उपर्युक्त पंक्तियों में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने किस भाव की अभिव्यक्ति मानी है?
(a) निर्गुण भक्तिभाव की (b) सगुण भक्तिभाव की
(c) असूया भाव की (d) दैहिक शृंगार की
UGC NET June. 2019

Ans. (c) : प्रश्नोक्त पंक्ति में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने असूया भाव की अभिव्यक्ति मानी है निर्गुण भक्तिभाव सगुण भक्तिभाव से विपरीत धारा है। निर्गुण भक्तिभाव में ईश्वर की सत्ता को स्वीकार नहीं करते हैं।
निर्गुण शाखा प्रमुख कवि- कबीर, रैदास, जंभनाथ, लालदास, दादू दयाल आदि हैं।
सगुण शाखा के प्रमुख कवि- सूरदास, तुलसीदास, मीरा, नन्ददास, कृष्णदास, परमानन्ददास, कुम्भनदास आदि हैं।
असूया भाव- इसमें दूसरे के गुण में दोष निकालना।
दैहिक शृंगार- बाहरी साज सज्जा का स्वरूप जो मुख्य रूप से स्त्रियों में देखने को मिलता है।
निर्गुण काव्य की विशेषताएं-
(i) निर्गुणोपासना
(ii) रहस्यवाद का उत्कृष्ट वर्णन
(iii) बहुदेववाद का विरोध
(iv) सामाजिक अन्याय और आडम्बर का विरोध
(v) लोक-कल्याण की भावना और जातिपाति का विरोध
(vi) नारी के कामिनी रूप की निन्दा
(vii) साधुक्कड़ी भाषा का प्रयोग।

'वल्लभाचार्य जिस सम्प्रदाय के आचार्य हैं, उस सम्प्रदाय के प्रवर्तक हैं-
(a) रूद्र (b) ब्रह्म
(c) सनकादि (d) श्री
UPPSC Degree College Exam. 2008

Ans. (a) वल्लभाचार्य जिस सम्प्रदाय के आचार्य है वह 'रुद्र' सम्प्रदाय है जिसके प्रवर्तक विष्णु स्वामी' है। इनका दार्शनिक मत 'शुद्धाद्वैतवाद' है।

701. 'अष्टछाप' की स्थापना कब हुई?
(a) 1565 ई. (b) 1600 ई.
(c) 1560 ई. (d) 1570 ई.
Higher Edu. Exam. 2015

Ans. (a) गोस्वामी विट्ठलनाथ ने अष्टछाप की स्थापना 1565 ई. में की थी। उन्होंने वल्लभाचार्य के चार शिष्यों और चार अपने शिष्यों को मिलाकर 'अष्टछाप' की स्थापना की थी।

702. प्रस्तुत पंक्तियों के रचयिता हैं:
प्रेम निकेतन श्रीबनहिं, आइ गोबर्धन–धाम।
लह्यो सरन चितचाहि कै, जुगलसरूप ललाम।
(a) नन्ददास (b) पद्माकर
(c) रहीम (d) रसखान
Higher Edu. Exam. 2015

Ans. (d) 'प्रेम निकेतन श्रीबनहिं, आइ गोबर्धन–धाम। लह्यो सरन चितचाहि कै, जुगलसरूप ललाम।' उक्त पंक्ति के रचयिता रसखान हैं। हिन्दी के मुसलमान कवियों में रसखान का महत्वपूर्ण स्थान है। 'दो सौ बावन वैष्णवों की वार्ता' में इनका उल्लेख है। ऐसा प्रसिद्ध है कि इन्होंने गोस्वामी विट्ठलनाथ जी से बल्लभ सम्प्रदाय की दीक्षा ली थी। रसखान द्वारा रचित दो कृतियाँ उपलब्ध हैं- (a) प्रेमवाटिका (b) दानलीला। वर्तमान समय में सर्वाधिक प्रचलित संकलन 'सुजान रसखान' है। जिसमें 181 सवैये, 17 कवित्त 12 दोहे और 4 सोरठे संकलित हैं।

703. 'श्रीकृष्ण-भक्ति शाखा में मधुरा-भक्ति-भावना का समावेश हुआ, निम्नलिखित के अनुकरण में
(a) मलिक मुहम्मद जायसी (b) चैतन्य महाप्रभु
(c) स्वामी हरिदास (d) रसखान
UPPSC Degree College Exam. 2008

Ans. (b) श्री कृष्ण-भक्ति शाखा में मधुरा-भक्ति भावना का समावेश 'चैतन्य महाप्रभु' के अनुकरण में हुआ। 'चैतन्य महाप्रभु' गौड़ीय सम्प्रदाय के प्रवर्तक थे तथा इनका दार्शनिक मत अचिन्त्य भेदाभेदवाद है।

704. ''बाल-वर्णन सम्बन्धी कविताएँ आधुनिक काल में भी खूब रची गई। मध्यकाल में यह कवियों का रुचिकर क्षेत्र रहा है। समग्र रूप से समस्त हिन्दी कविता में बाल-वर्णन का सर्वश्रेष्ठ कवि कौन है?
(a) द्वारकाप्रसाद महेश्वरी (b) सुमित्रतानंदन पंत
(c) सूरदास (d) बिहारी
UPPSC Degree College Exam. 2008

Ans. (c) बाल वर्णन सम्बन्धी कविताएँ आधुनिक काल में भी खूब रची गयी। मध्यकाल में यह कवियों का रुचिकर क्षेत्र रहा है। समग्र रूप से समस्त हिन्दी कविता में बाल वर्णन का सर्वश्रेष्ठ कवि सूरदास है। सूरदास द्वारा रचित 25 ग्रंथ बताया जाता है जिसमें कि तीन ही उपलब्ध हैं। जो इस प्रकार हैं- 1. सूरसागर, 2. सूरसारावली, 3. साहित्य लहरी।

705. 'सनेह लीला' के रचयिता है–
(a) रैदास (b) पीपा
(c) विष्णुदास (d) बेनी
Delhi K.V. PGT. 2015

Ans. (c) 'सनेह लीला' के रचयिता विष्णुदास हैं। विष्णुदास ग्वालियर नरेश डूंगरेन्द्र के राजकवि थे। इनके द्वारा लिखे ग्रंथ हैं– महाभारत कथा, रुक्मिण मंत्र, स्वर्गारोहण, रामायण कथा। विष्णुदास कृत 'रामायण कथा' रामकथा संबंधी हिन्दी का प्रथम प्रबन्ध काव्य है। रैदास के 40 पद 'गुरु ग्रंथ साहब' में संकलित है। 'पीपा' के गुरु का नाम 'रामानन्द' था। बेनी रीतिकालीन कवि हैं। इनकी रचनाएँ हैं- 1. नवरसतरंग 2. शृंगार भूषण 3. नानारावप्रकाश।

706. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिये गये कूट की सहायता से सही उत्तर चुनिए।

सूची-I		सूची-II	
A.	प्रद्युम्न चरित्र	1.	नारायणदास
B.	स्वर्गारोहण	2.	चतुर्भुजदास
C.	मधुमालती कथा	3.	विष्णुदास
D.	छिताई वार्ता	4.	सुधीर अग्रवाल

कूट :

	A	B	C	D
(a)	1	2	3	4
(b)	4	3	2	1
(c)	3	4	1	2
(d)	2	1	4	3

Delhi K.V. PGT. 2015

Ans. (b) सूची–I तथा सूची–II का सही सुमेलन इस प्रकार होगा–

सूची–I	सूची–II
(a) प्रद्युम्न चरित्र	सुधीर अग्रवाल
(b) स्वर्गारोहण	विष्णुदास
(c) मधुमालती कथा	चतुर्भुज दास
(d) छिताई वार्ता	नारायण दास

707. सूरदास के एक अति प्रचलित पद के निम्नलिखित चरण-''नखत वेद ग्रह जोरि अरध करि को बरजै हम खात।'' से किस खाए जाने वाले पदार्थ का अर्थ निष्पन्न होता है?

(a) अमृत (b) खीर
(c) विष (d) कल्पवृक्ष का फल

UPPSC Degree College Exam. 2008

Ans. (c) सूरदास के प्रचलित पद– नखत वेद ग्रह जोरि अरध करि को बरजै हम खात' से खाए जाने वाले पदार्थ 'विष' का अर्थ निष्पन्न होता है। अर्थात 27 नक्षत्र + 4 वेद + 9 ग्रह $= \frac{40}{2} = 20$ होता है अतः यहाँ 20 का अभिप्राय 'विष' से है।

708. ''चौरासी वैष्णवन'' की वार्ता के लेखक हैं।

(a) नाभादास (b) नंददास
(c) गोकुलनाथ (d) सूरदास

Delhi K.V. PGT. 2015

Ans. (c) 'चौरासी वैष्णवन' की वार्ता के लेखक गोकुलनाथ हैं। इनके द्वारा रचित एक अन्य ग्रंथ 'दो सौ बावन वैष्णवन की वार्ता' है। चौरासी वैष्णवन वार्ता में आचार्य वल्लभाचार्य के शिष्यों का तथा दो सौ बावन वैष्णवन वार्ता में आचार्य विट्ठलनाथ के शिष्यों का जीवन परिचय है।

709. 'चौरासी वैष्णवों की वार्ता' का संबंध किस संप्रदाय से है?

(a) सखी संप्रदाय (b) रामानुज संप्रदाय
(c) श्री संप्रदाय (d) वल्लभ संप्रदाय

UP PGT 2013

Ans. (d) 'चौरासी वैष्णवों की वार्ता' का संबंध वल्लभ सम्प्रदाय से है इस ग्रंथ के रचयिता विट्ठलनाथ के पुत्र गोसाई गोकुल नाथ जी माने जाते हैं। इस ग्रंथ में वल्लभाचार्य के शिष्यों का जीवन वृत्त लिखा गया है।

710. उर में माखन चोर गड़े।
अब कैसेहूं निकसत नहिं ऊधौ, तिरछे है जु अड़े।।
ये पंक्तियाँ किस कवि की हैं?

(a) सूरदास (b) तुलसीदास
(c) मीराबाई (d) कबीर

NVS. PGT. 2014

Ans. (a) उपर्युक्त पंक्ति सगुण भक्त कवि सूरदास की हैं। सूरदास ब्रजभाषा के प्रथम प्रतिष्ठित कवि हैं। इनकी भक्ति साख्य भावना की है किन्तु वल्लभाचार्य के सम्पर्क में आने के पूर्व वह दास्यभाव से उपासना करते थे। इनके द्वारा रचित ग्रंथ हैं- सूरसागर, सूरसरावली, साहित्यलहरी इत्यादि।

711. सूरदास किस रस का कोना-कोना झाँक आए हैं?

(a) शान्त (b) करुण
(c) मैत्री (d) वात्सल्य

NVS. PGT. 2014

Ans. (d) सूरदास 'वात्सल्य' रस का कोना-कोना झाँक आए हैं। सूर साहित्य के सम्बन्ध में विद्वानो का मत है ''सूर ही वात्सल्य है और वात्सल्य ही सूर है।'' वात्सल्य और श्रृंगार के क्षेत्रों का जितना अधिक उद्घाटन सूर ने अपनी बंद आँखों से किया उतना किसी और ने नहीं। सचमुच इन क्षेत्रों का कोना-कोना झाँक आए हैं।

712. निम्न में से कौन विट्ठलनाथ का शिष्य था?

(a) सूरदास (b) चतुर्भुज दास
(c) परमानन्द दास (d) कृष्णदास

UP PGT 2010

Ans. (b) 'चतुर्भुज दास' विट्ठलनाथ के शिष्य थे। विट्ठलनाथ के अन्य तीन शिष्य इस प्रकार हैं- गोविन्द स्वामी, छीतस्वामी, नन्ददास। सूरदास जबकि कुम्भनदास परमानन्ददास, कृष्णदास 'वल्लभाचार्य' के शिष्य थे।

713. भ्रमरगीत प्रसंग का मूल स्रोत है–

(a) श्रीमद्भागवत का पंचम स्कन्ध
(b) श्रीमद्भागवत का दशम स्कन्ध
(c) श्रीमद्भागवत का तृतीय स्कन्ध
(d) श्रीमद्भागवत का नवम स्कन्ध

UP PGT 2009, UP PGT 2004

Ans. (b) भ्रमरगीत एक उपालम्भ काव्य सर्जना है जिसमें भ्रमर को लक्ष्य बनाकर नायक की निष्ठुरता लम्पटता के साथ-साथ उसकी पलायनवादी वृत्ति को चित्रित किया जाता है। इसके साथ ही नायिका के आत्मगत विरह वेदना को भी मार्मिक ढंग से चित्रित किया जाता है। भ्रमरगीत का मूल स्रोत श्रीमद्भगवत पुराण का दशम् स्कन्ध है जिसमें 46वें एवं 47वें अध्याय में भ्रमरगीत का प्रसंग है।

714. सूरदास कौन सी धारा के प्रतिनिधि कवि है?

(a) कृष्ण काव्य धारा (b) राम काव्य धारा
(c) संत काव्य धारा (d) सूफी काव्य धारा

UP PGT 2011

Ans. (a) सूरदास भक्तिकाल के सगुण धारा के कृष्ण काव्यधारा के प्रतिनिधि कवि हैं। सूरसागर, सूर सारावली और साहित्य लहरी सूरदास की रचनाएँ हैं।

715. 'रास पंचाध्यायी' किस छंद में लिखी गई है?

(a) इन्द्रवज्रा (b) उपेन्द्रवज्रा
(c) रोला (d) मालिनी

UGC NET III[rd] Paper Jan. 2017

Ans. (c) कृष्ण भक्तिशाखा के कवि नंददास द्वारा कृत 'रासपंचाध्यायी' रोला छंद में लिखा गया है, यह पाँच अध्यायों में विभाजित है। इस ग्रंथ में कृष्ण की रासलीला का अनुप्रासादियुक्त साहित्यिक भाषा में वर्णन है।
वियोगी हरि ने इसे 'हिन्दी का गीत गोविन्द' कहा है। अष्टछाप के कवियों में नंददास का स्थान काव्य सौष्ठव और भाषा की प्रांजलता में सूरदास के बाद है। नंददास के ग्रंथ इस प्रकार हैं- अनेकार्थ मंजरी, मान मंजरी, सुदामा चरित, रस मंजरी, रूप मंजरी, विरह मंजरी, रुक्मिणी मंगल, भँवर गीत, रासपंचाध्यायी, सिद्धान्त पंचाध्यायी, दशमस्कंध भाषा।

716. इनमें से पुष्टिमार्गी कवि कौन है?
(a) सूर (b) कबीर
(c) जायसी (d) तुलसी

UP PGT 2011

Ans. (a) सूरदास पुष्टिमार्गी कवि हैं। वल्लभाचार्य जो कि सूरदास के गुरु थे उन्होंने पुष्टिमार्ग भक्ति का सूत्रपात किया था। भक्तिकाल के सगुण धारा के कृष्ण भक्ति शाखा के प्रमुख अष्टछापी कवि सूरदास ने भी कृष्ण भक्ति के पुष्टिमार्ग को अपनाया था। सूरदास की मृत्यु पर विट्ठलदास ने कहा था-
"पुष्टि मार्ग की जहाज जात है।
जाय कछू लैनों होय सा लेउ।।"

717. वल्लभाचार्य का 'वेदांत सूत्र' पर लिखा प्रसिद्ध ग्रंथ है
(a) पुष्टिमार्ग रहस्य (b) आनन्द भाष्य
(c) अणु भाष्य (d) सृष्टि हस्य

UGC NET IInd Paper Dec. 2014

Ans. (c) वल्लभाचार्य की रचना 'अणुभाष्य' वेदान्त सूत्र पर आधारित (अपूर्ण) कृति है। जो इनके पुत्र विट्ठलनाथ द्वारा पूर्ण की गयी। इनकी प्रमुख रचना-पूर्व मीमांसा भाष्य, उत्तर मीमांसा भाष्य, ब्रह्मसूत्र भाष्य, तत्त्वदीप हैं।

718. निम्नलिखित काव्य-कृतियों में से किसकी रचयिता मीराबाई नहीं हैं?
(a) गीतगोविंद टीका (b) प्रेमतत्वनिरूपण
(c) राग गोविंद (d) नरसी जी का मायरा

UGC NET IIIrd Paper June. 2015

Ans. (b) प्रेमतत्वनिरुपण 'मीराबाई' की रचना नहीं है। 'प्रेम तत्वनिरूपण' कृष्णदास की रचना है, इन्होंने वल्लभाचार्य से शिक्षा ग्रहण की इनकी भाषा गुजराती थी ये संगीतज्ञ तथा सुकवि गायक भी थे।

719. जन्म के आधार पर इन कवियों का सही अनुक्रम क्या है?
(a) सूरदास- परमानंद दास- कृष्णदास- कुंभनदास
(b) कुंभनदास- सूरदास- परमानंद दास -कृष्णदास
(c) परमानंद दास- कृष्णदास- कुंभनदास- सूरदास
(d) कृष्णदास- कुंभनदास- सूरदास- परमानंद दास

UGC NET IInd Paper June. 2013

Ans. (b) जन्म के अनुसार कवियों का सही अनुक्रम-कुम्भनदास (1468 ई.), सूरदास (1478 ई.), परमानन्ददास (1493 ई.) कृष्णदास (1496 ई.) है।

720. 'साहित्य लहरी' की विषयवस्तु क्या है?
(a) नायिका भेद (b) अवतार लीला
(c) निर्गुण का खण्डन (d) नीति

UGC NET IInd Paper June 2008

Ans. (a) साहित्य लहरी (1550 ई.) सूरदास की रचना है। इसमें दृष्टकूट में राधाकृष्ण की लीलाओं का वर्णन है तथा अलंकारों एवं नायिका भेदों का वर्णन भी कूट पद में किया गया है। इस ग्रंथ में सूरदास की वंश परम्परा का भी वर्णन मिलता है।
सूरदास (1478-1583) की रचनाएँ-सूरसागर, सूरसारावली, तथा साहित्य लहरी।

721. नन्ददास की किस रचना का सम्बन्ध नायक-नायिका भेद से है :
(a) रासपंचाध्यायी (b) रसमंजरी
(c) स्यामसगाई (d) भंवर गीत

UGC NET IInd Paper June 2009

Ans. (b) रसमंजरी (1550 ई.) में नन्ददास ने दोहा, चौपाई शैली में नायक नायिकाओं का वर्णन किया है। इसमें स्वकीया और परकीया नायिका के भेदोपभेद को चित्रित किया गया है। 'रास पंचाध्यायी' में कृष्ण की रासलीला को रोला छन्द में वर्णित किया गया है जबकि, भँवर गीत में सगुण और निर्गुण पर गोपी और उद्धव के संवाद का वर्णन है। 'श्याम सगाई' में श्याम की सगाई का वर्णन है।

722. महाप्रभु वल्लभाचार्य के शिष्यों का वृत्तान्त इस ग्रंथ में है:
(a) दो सौ बावन वैष्णवन की वार्ता
(b) भक्तिमाल
(c) चौरासी वैष्णवन की वार्ता
(d) वचनामृत

UGC NET IInd Paper June. 2011

Ans. (c)

ग्रंथ	रचनाकार	विषयवस्तु
चौरासी वैष्णवन की वार्ता	गोकुलनाथ	इसमें वल्लभाचार्य के शिष्यों का जीवनवृत्त वर्णित है।
दो सौ बावन वैष्णवन की वार्ता	गोकुलनाथ	इसमें विट्ठलनाथ के शिष्यों का जीवनवृत्त वर्णित है।

723. अष्टछाप के कवियों में प्रथम नियुक्त कीर्तनकार कवि कौन थे?
(a) नन्ददास (b) कृष्णदास
(c) सूरदास (d) कुंभनदास

UGC NET IInd Paper June. 2010

Ans. (d) अष्टछाप के कवियों में प्रथम नियुक्त कीर्तनकार कवि कुंभनदास थे। आचार्य रामचंद्र शुक्ल अपने 'हिन्दी साहित्य के इतिहास' में कृष्ण भक्ति शाखा के कवियों का सही अनुक्रम निम्नवत दिया है
अष्टछाप कवियों का जीवनक्रम-

कवि	जीवनकाल	जन्म स्थान	गुरू
कुंभनदास	1468-1583ई.	जमुनावती (उ.प्र.)	वल्लभाचार्य
सूरदास	1478-1583ई.	सीही (उ.प्र.)	,,
परमानन्ददास	1493 ई.	कन्नौज (उ.प्र.)	,,
कृष्णदास	1496-1578ई.	चिलोतरा(गुजरात)	,,
गोविन्द स्वामी	1505-1585ई.	आंतरी(राजस्थान)	विट्ठलनाथ
छीतस्वामी	1515-1585ई.	मथुरा (उ.प्र.)	,,
चतुर्भुजदास	1530-1585ई.	जमुनावती (उ.प्र.)	,,
नंददास	1533-1583ई.	रामपुर (उ.प्र.)	,,

724. 'सूरसागर' के पदों का भावानुसरण करते हुए किस कवि ने कृष्ण के जीवन का चित्रण किया है?
(a) ब्रजवासीदास (b) रामचरणदास
(c) मंचित (d) प्रेमसखी

UGC NET IIIrd Paper Jan. 2017

Ans. (a) ब्रजवासीदास वृंदावन के रहने वाले तथा वल्लभ सम्प्रदाय के अनुयायी थे। इन्होंने सूरदास के पदों का भावानुसरण करते हुए 'भावविलास' नामक ग्रंथ में कृष्ण के जीवन का चित्रण किया है। इस ग्रंथ में कथा भी सूरसागर क्रम से ली गई है और बहुत से स्थलों पर सूरदास के शब्दों और भाव भी चौपाइयों में रखे गये हैं। इस बात को ग्रंथकार भी स्वीकार करते हैं। यह रचना कुछ ब्रजभाषा में है।

725. 'उज्ज्वलनीलमणि' के रचयिता कौन हैं?
(a) रूप गोस्वामी (b) वल्लभाचार्य
(c) विट्ठलनाथ (d) मध्वाचार्य
UGC NET II[nd] Paper Dec. 2004

Ans. (a)

ग्रंथ	ग्रंथकार
उज्ज्वलनीलमणि	रूपगोस्वामी
पूर्व मीमांसा भाष्य	वल्लभाचार्य
उत्तर मीमांसा भाष या ब्रह्म सूत्र भाष्य (जो अणुभाष्य के नाम से प्रसिद्ध है)	

नोट-'अणु भाष्य' वल्लभाचार्य का अधूरा ग्रन्थ था जिसे उनके पुत्र विट्ठलनाथ ने पूरा किया।

726. "अष्टछाप में सूरदास के पीछे इन्हीं का नाम लेना पड़ता है। इनकी रचना भी बड़ी सरस और मधुर है। इनके संबंध में यह कहावत प्रसिद्ध है कि "और कवि गढ़िया, नंददास जड़िया।" यह कथन किस आलोचक का है?
(a) रामचंद्र शुक्ल (b) हजारी प्रसाद द्विवेदी
(c) रामकुमार वर्मा (d) नंददुलारे वाजपेयी
UGC NET III[rd] Paper June. 2016

Ans. (a) "अष्टछाप में सूरदास के पीछे नंनदास का नाम लेना पड़ता है। इनकी रचना भी बड़ी सरस और मधुर है। इनके सम्बन्ध में यह कहावत प्रसिद्ध है कि "और कवि गढ़िया नन्ददास जड़िया।" यह कथन आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का है।

727. "सखी हौ स्याम रंग रँगी।
देखि बिकाय गई वह मूरति, सूरत माहिं पगी॥"
ये काव्य पंक्तियाँ किसकी हैं?
(a) हितहरिवंश (b) गदाधर भट्ट
(c) मीराबाई (d) जीव गोस्वामी
UGC NET II[nd] Paper Jan. 2017

Ans. (b)

काव्य पंक्ति	कवि
सखी हौं स्याम रंग रंगी। देखी विकाय गई वह मूरति सूरत माहि पगी।।	गदाधर भट्ट
रहो कोउ काहू मनहिं दिए। मेरे प्राननाथ श्री स्यामा सपथ करौ तिन छिए।।	हितहरि वंश
मन रे परसि हरि के चरन। सुभग सीतल कमल कोमल त्रिविध ज्वाला हरन।।	मीराबाई
एक दिनं बाजाय वंशी हाँसिया हाँसिया। श्री जीवे कहये – मोरे देखह आसिया।।	जीव गोस्वामी

728. वल्लभाचार्य द्वारा रचित ग्रंथ का नाम है –
(a) सिद्धान्त संग्रह (b) अध्यात्म रामायण
(c) महाभाष्य (d) अणुभाष्य
UP TGT 2013

Ans. (d) वल्लभाचार्य द्वारा रचित ग्रंथ 'अणुभाष्य' है। इनके अन्य ग्रन्थ हैं – पूर्व मीमांसाभाष्य, तत्त्वदीप निबन्ध, सुबोधिनी टीका, शृंगार रस मण्डन। जबकि 'अध्यात्म रामायण' माधवदास चारण द्वारा तथा 'महाभाष्य' पतंजलि द्वारा रचित ग्रंथ हैं।

729. "यह सूचित करने की आवश्यकता नहीं है कि न तो सूर का अवधी पर अधिकार था और न जायसी का ब्रजभाषा पर।" यह कथन किसका है?
(a) हजारीप्रसाद द्विवेदी (b) नगेन्द्र
(c) रामचंद शुक्ल (d) रामकुमार वर्मा
UGC NET III[rd] Paper June. 2016

Ans. (c) "यह सूचित करने की आवश्यकता नहीं है कि न तो सूर का अवधी पर अधिकार था और न जायसी का ब्रजभाषा पर।" यह कथन आचार्य रामचंद्र शुक्ल का है।

730. 'नन्द दास' किस काव्यधारा से सम्बन्धित हैं?
(a) संत काव्य धारा (b) सूफी काव्य धारा
(c) कृष्ण काव्य धारा (d) रामभक्ति काव्य धारा
UP TGT 2011

Ans. (c) 'नन्ददास' कृष्ण काव्य धारा से सम्बन्धित हैं। इन्हें 'जड़िया कवि' कहा जाता है। कृष्ण काव्य धारा के अन्य कवि सूरदास, कुंभनदास, चतुर्भुजदास, परमानन्द दास, गोविन्द स्वामी आदि हैं। संत काव्यधारा के प्रमुख कवियों में कबीरदास, दादू दयाल, गुरू नानक, रैदास आदि माने जाते हैं। सूफी काव्यधारा में जायसी, कुतुबन, मंझन, असाइत, नूरमुहम्मद आदि कवि आते हैं। रामभक्ति काव्यधारा में तुलसीदास, नाभादास, अग्रदास, ईश्वरदास, केशवदास आते हैं।

731. इनमें से सूर की रचना कौन सी नहीं है?
(a) सूर सागर (b) सूर सारावली
(c) साहित्य लहरी (d) रास पंचाध्यायी
UP TGT 2011

Ans. (d) 'रासपंचाध्यायी' सूर की रचना नहीं है। जबकि 'सूरसागर', 'सूरसारावली', 'साहित्य लहरी' सूरदास की रचनाएँ हैं। 'रासपंचाध्यायी' नन्ददास की रचना है, नन्ददास की अन्य रचनाएँ हैं- रुक्मिणी मंगल, सिद्धान्त पंचाध्यायी, रूपमंजरी, रस मंजरी, मानमंजरी, विरहमंजरी, नाभचिंताभागिमाला, दानलीला, मानलीला, अनेकार्थमंजरी, ज्ञानमंजरी, श्यामासगाई, प्रेम बारह घड़ी, सुदामाचरित्र आदि।

732. 'इनमें से कृष्णभक्त कवि कौन सा नहीं है?
(a) सूरदास (b) रसखान
(c) कृष्णदास (d) तुलसीदास
UP TGT 2011

Ans. (d) 'तुलसीदास' कृष्णभक्त कवि नहीं हैं वे रामभक्ति शाखा के प्रतिनिधि कवि हैं। सूरदास, कृष्णदास तथा रसखान कृष्णभक्त कवि हैं।

733. 'हितचौरासी' के रचयिता हैं :
(a) नंददास (b) हितहरिवंश
(c) छीतस्वामी (d) स्वामी हरिदास
UGC NET III[rd] Paper June. 2016

Ans. (b) हितचौरासी, राधा सुधानिधि तथा यमुनाष्टक आदि स्वामी हितहरिवंश की रचनाएँ हैं। 'सिद्धान्त के पद' तथा 'केलिमाला' स्वामी हरिदास जी के ग्रंथ हैं। ज़बकि छीतस्वामी की रचनाओं का संकलन 'पदावली' है।

नंददास के ग्रंथों का अनुक्रम-
अनेकार्थ मंजरी, मानमंजरी, सुदामाचरित, रसमंजरी, रूपमंजरी, विरह मंजरी, प्रेमबारहखड़ी, श्याम सगाई, रुक्मिणी मंगल, भँवर गीत, रासपंचाध्यायी, सिद्धान्त पंचाध्यायी, दशम स्कंध।

734. नीचे दिए गए नामों में से कौन-से कवि वल्लभाचार्य के शिष्य नहीं हैं?
(a) चतुर्भुजदास (b) सूरदास
(c) कुंभनदास (d) परमानंददास

UP TGT 2010, 2009

Ans. (a) आठ भक्त कवियों में चार वल्लभाचार्य के शिष्य थे – कुम्भनदास, सूरदास, परमानन्ददास और कृष्णदास। अन्य चार विट्ठलनाथ के शिष्य थे- चतुर्भुजदास, गोविन्ददास, छीत स्वामी, नन्ददास।

735. सूरदास ने किस कृति को नहीं लिखा?
(a) सूरसारावली (b) दोहावली
(c) साहित्य लहरी (d) सूरसागर

UP TGT 2010

Ans. (b) दिये गये विकल्पों में 'दोहावली' सूरदास की रचना नहीं है। यह रचना गोस्वामी तुलसीदास ने की है। सूरसारावली, साहित्यलहरी और सूरसागर 'सूरदास' की रचना है।

736. 'जुगलमान चरित' नामक ग्रन्थ के लेखक है –
(a) नन्ददास (b) कृष्णदास
(c) चतुर्भुजदास (d) छीतस्वामी

UP TGT 2003

Ans. (b) वल्लभ सम्प्रदाय के कृष्ण भक्त कवि गोस्वामी विट्ठलनाथ द्वारा स्थापित 'अष्टछाप' के कवि कृष्णदास ने 'जुगलमान चरित' नामक ग्रंथ की रचना की। 'अष्टछाप' के अन्य कवि नन्ददास ने अनेकार्थ मंजरी, रसमंजरी, रूपमंजरी, भंवरगीत, रासपंचाध्यायी, सिद्धान्तपंचाध्यायी आदि ग्रंथों की रचना की। दानलीला तथा कीर्तनावली, चतुर्भुजदास तथा पदावली छीतस्वामी द्वारा रचित ग्रंथ हैं।

737. कृष्ण काव्य के प्रमुख कवि कौन माने जाते है?
(a) रहीम (b) तुलसी
(c) सूरदास (d) आचार्य शुक्ल

Jharkhand TGT 2017

Ans. (c) 'सूरदास' कृष्णकाव्य के प्रमुख कवि (प्रतिनिधि कवि) माने जाते हैं। वहीं तुलसीदास रामकाव्य के प्रतिनिधि कवि हैं। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल आधुनिक युग के प्रमुख आलोचक है। जबकि रहीम दास सम्प्रदाय निरपेक्ष कवि थे, सभी सम्प्रदायों के प्रति समादर भाव रखते थे।

738. 'ध्रुव चरित्र' के रचयिता हैं –
(a) रसखान (b) स्वामी हरिदास
(c) नरोत्तम दास (d) भिखारीदास

UP TGT 2004

Ans. (c) ध्रुव चरित्र, सुदामा चरित्र एवं विचारमाला आदि काव्य ग्रंथों की रचना 'नरोत्तमदास' ने की। सुजान रसखान, मूल गोसांई चरित, प्रेमवाटिका, दानलीला आदि मुसलमान कृष्ण भक्त कवि रसखान की रचनाएँ हैं। शृंगार निर्णय, काव्य निर्णय, रस सारांश आदि भिखारीदास की रचनाएँ हैं। 'कलिकाल' स्वामी हरिदास की कृति है।

739. भक्ति काल के किस कवि को 'जड़िया' विशेषण से विभूषित किया जाता है?
(a) नन्ददास (b) परमानन्द दास
(c) सूरदास (d) चतुर्भुज दास

UP TGT 2009

Ans. (a) अष्टछाप के प्रमुख कवियों में नन्ददास अपनी तर्कपूर्ण शैली के लिए प्रसिद्ध हैं। इनके द्वारा कही गई बातें मानो काव्य में नग की तरह पिरोयी गई। इसी बात को लेकर कहा जाता है ''और कवि गढ़िया नन्ददास जड़िया।''

740. अष्टछाप की स्थापना सन् 1565 ई. में किसने की थी –
(a) गोकुलनाथ (b) विट्ठलनाथ
(c) वल्लभाचार्य (d) निम्बका चार्य

UP TGT 2003

Ans. (b) श्री वल्लभाचार्य ने 'पुष्टिमार्ग' नामक कृष्ण भक्ति सम्प्रदाय की स्थापना की। इस भक्ति सम्प्रदाय का पल्लवन 'अष्टछाप' के भक्त कवियों ने किया। पुष्टिमार्ग में दीक्षित आठ प्रमुख कृष्ण भक्त कवियों के समूह 'अष्टछाप' की स्थापना वल्लभाचार्य के पुत्र गोस्वामी विट्ठलनाथ ने 1565 ई. में की। इन आठ कृष्ण भक्त कवियों में चार विट्ठल नाथ के शिष्य थे – नन्ददास, गोविन्दस्वामी, छीतस्वामी एवं चतुर्भुजदास। अन्य चार श्री वल्लभाचार्य के शिष्य थे – कुम्भनदास, सूरदास, परमानंददास एवं कृष्णदास।

741. चौरासी वैष्णवन की वार्ता और दो सौ बावन वैष्णवन की वार्ता मूल रूप से –
(a) जीवन वृत्त है (b) कथा-कहानी
(c) आत्मकथा है (d) निबन्ध है

UP TGT 2002

Ans. (a) 'चौरासी वैष्णवन की वार्ता' और 'दो सौ बावन वैष्णवन की वार्ता' गोकुलनाथ द्वारा रचित कृष्णभक्त कवियों का जीवन वृत्त है। 'चौरासी वैष्णवों' की वार्ता में वल्लभाचार्य के शिष्यों का वर्णन है तथा 'दो सौ बावन वैष्णवों की वार्ता' में विट्ठलनाथ के शिष्यों का वर्णन है।

742. 'तत्वदीप निबन्ध' किसकी रचना है –
(a) वल्लभाचार्य (b) निम्बाकाचार्य
(c) नाभादास (d) नन्ददास

UP TGT 2003

Ans. (a) 'पुष्टिमार्ग' के प्रवर्तक आचार्य वल्लभाचार्य ने 'तत्वदीप निबंध' की रचना की। निम्बार्काचार्य ने अपने सिद्धांतों की स्थापना के लिए 'वेदान्त परिजात सौरभ', दशश्लोकी, श्रीकृष्णस्तवराज, मंत्ररहस्यषोडषी तथा प्रपन्न-कल्पवल्ली नामक कृतियों का प्रणयन किया। नाभादास ने 'अष्टयाम' नामक ग्रंथ की रचना की। अनेकार्थमंजरी, मानमंजरी, रसमंजरी, रूपमंजरी, विरहमंजरी, श्याम सगाई, सुदामाचरित, रासपंचाध्यायी, भंवरगीत आदि नन्ददास की प्रमुख रचनाएँ हैं।

743. सुदामा चरित के लेखक हैं –
(a) सूरदास (b) नन्ददास
(c) रत्नाकर (d) इनमें से कोई नहीं

UP TGT 2002

Ans. (b) सुदामाचरित के लेखक नन्ददास हैं। कृष्ण भक्ति शाखा के अष्टछाप के कवि नन्ददास की प्रमुख काव्य कृतियाँ – सुदामा चरित, रूपमंजरी, अनेकार्थमंजरी, रसमंजरी, विरहमंजरी, मानसमंजरी, रुक्मिणी मंगल, भंवरगीत, सिद्धान्त पंचाध्यायी, रास पंचाध्यायी, गोवर्धन लीला आदि हैं।

744. "संतन को कहा सीकरी सों काम/आवत जात पन्हैया टूटी बिसरि गयो हरि नाम।"
ये किसकी प्रसिद्ध पंक्तियाँ हैं –
(a) कुम्भनदास (b) नन्ददास
(c) चतुर्भुजदास (d) कृष्णदास

DSSSB PGT 25.07.2018 (9.00 am-12.00pm)
KVS PGT Hindi 2017
MP Asst. Prof. Hindi 2017
UPPSC Degree College Exam. 2008
UP TGT 2002, 2005

Ans. (a) स्वाभिमानी भक्त कवि कुम्भनदास (1468-1583) परमानन्द दास के समकालीन थे। फतेहपुर सीकरी के राजसम्मान का विरोध करते हुए उन्होंने लिखा था - "भक्तन को कहा सीकरी सों काम/आवत जात पन्हैया टूटी बिसरि गयो हरिनाम।" कुम्भनदास के 186 पद 'पद संग्रह' में संकलित हैं। कृष्णदास की कृतियाँ - जुगलमान चरित्र, भ्रमरगीत, प्रेमतत्व निरूपण आदि हैं। कीर्तनावली, दानलीला, चतुर्भुज कीर्तन संग्रह चतुर्भुजदास की रचनाएं हैं। अनेकार्थ मंजरी, रसमंजरी, मानमंजरी, रूप मंजरी, विरह मंजरी, भंवरगीत, श्यामसगाई आदि नन्ददास की रचनाएं हैं।

745. निम्नलिखित में से 'अष्टछाप' के अंतर्गत न पड़ने वाले कवि का नाम है –
(a) कुंभनदास (b) सुंदरदास
(c) नंददास (d) परमानंददास

Uttarakhand Asst. Prof. 2017
UPPSC Degree College :Exam 2013
UP TGT 2001, UGC Net-II Paper Dec. 2012

Ans. (b) 'सुन्दरदास' पुष्टिमार्गीय कृष्ण भक्त कवियों के समूह 'अष्टछाप' के कवि न होकर भक्तिकाल की निर्गुण संत काव्य धारा के कवि हैं। दादू दयाल के शिष्य सुन्दरदास संत परम्परा के सर्वाधिक शिक्षित और प्रतिभासम्पन्न साधक और कवि थे। 'ज्ञान समुद्र' और 'सुन्दर विलास' उनकी प्रमुख रचनाएं हैं। 'अष्टछाप' की स्थापना वल्लभाचार्य के पुत्र गोस्वामी विट्ठलनाथ ने की। 'अष्टछाप' में वल्लभाचार्य चार शिष्य (कुम्भनदास, सूरदास, परमानन्ददास, कृष्णदास) तथा अन्य चार विट्ठलनाथ के शिष्य (गोविन्द स्वामी, छीतस्वामी, चतुर्भुजदास, नन्ददास) सम्मिलित थे।

746. छीतस्वामी किस धारा के कवि हैं?
(a) रामभक्ति धारा (b) अष्टछाप धारा
(c) प्रेममार्गी धारा (d) निर्गुणमार्गी धारा

UP TGT 2004

Ans. (b) 'छीतस्वामी' कृष्ण भक्ति से सम्बंधित अष्टछाप धारा के कवि हैं। 'अष्टछाप' की स्थापना 1565 ई. में वल्लभाचार्य के पुत्र गोस्वामी विट्ठलनाथ ने की। अष्टछाप में बल्लभ के चार शिष्य- सूरदास, कुम्भनदास, परमानन्द दास, कृष्ण दास तथा विट्ठलनाथ के चार शिष्य - गोविन्द स्वामी, छीत स्वामी, चतुर्भजदास एवं नन्ददास सम्मिलित हैं।

747. 'अष्टछाप' के प्रमुख कवि 'नन्ददास' किसके शिष्य थे?
(a) वल्लभाचार्य (b) विट्ठलनाथ
(c) रामानन्द (d) निम्बार्काचार्य

UP TGT 2005

Ans. (b) वल्लभाचार्य के पुष्टिमार्ग को मानने वाले जिन आठ कृष्ण भक्त कवियों पर वल्लभाचार्य के पुत्र विट्ठलनाथ ने अपने आशीर्वाद की छाप लगाई वे कवि 'अष्टछाप' के नाम से जाने गए अष्टछाप में सम्मिलित चार भक्त कवि 'नन्ददास', 'गोविन्दस्वामी', 'छीतस्वामी' तथा 'चतुर्भुज दास' गोस्वामी विट्ठलनाथ के शिष्य थे जबकि शेष 4 भक्त कवि - कुम्भनदास, सूरदास, परमानन्ददास तथा कृष्णदास आचार्य वल्लभाचार्य के शिष्य थे।

748. कृष्ण काव्यधारा के प्रवर्तक हैं –
(a) सूरदास (b) स्वामी वल्लभाचार्य
(c) नाभादास (d) चैतन्य महाप्रभु

UP TGT 2005

Ans. (b) कृष्ण काव्य धारा के प्रवर्तक स्वामी वल्लभाचार्य हैं। इनके भक्ति मार्ग को 'पुष्टिमार्ग' कहा जाता है। वल्लभाचार्य के पुष्टिमार्ग को मानने वाले आठ कृष्ण भक्त कवियों के समूह 'अष्टछाप' की स्थापना 1565 ई. में गोस्वामी विट्ठलनाथ ने की। सूरदास अष्टछाप के प्रमुख कवि हैं। चैतन्य महाप्रभु के कृष्ण भक्ति सम्प्रदाय का नाम गौड़ीय सम्प्रदाय है।

749. 'सूरदास जब अपने प्रिय विषय का वर्णन शुरू करते हैं तो मानों अलंकारशास्त्र हाथ जोड़कर उनके पीछे-पीछे दौड़ा करता है। उपमाओं की बाढ़ आ जाती है, रूपकों की वर्षा होने लगती है।'
उपर्युक्त कथन किस आलोचक का है?
(a) हजारी प्रसाद द्विवेदी (b) रामचंद्र शुक्ल
(c) नंददुलारे वाजपेयी (d) हरवंशलाल शर्मा

UGC NET II^nd Paper June. 2016

Ans. (a) "सूरदास जब अपने प्रिय विषय का वर्णन शुरू करते हैं तो मानो अलंकारशास्त्र हाथ जोड़कर उसके पीछे-पीछे दौड़ा करता है। उपमाओं की बाढ़ आ जाती है, रूपकों की वर्षा होने लगती है।"
- आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी
"वात्सल्य और शृंगार के क्षेत्र का जितना अधिक उद्‌घाटन सूर ने बन्द आँखो से किया, उतना किसी और कवि ने नहीं। इन क्षेत्रों का कोना-कोना वे झाँक आए।" **- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल**
स्थिति विशेष का पूरा दिग्दर्शन भी करे, घटना क्रम का अभ्यास भी दें और साथ ही समुन्नत कोटि के रूप सौन्दर्य और भाव सौन्दर्य की परिपूर्ण झलक भी दिखलाते जाय। यह विशेषता हमें कवि सूरदास में ही मिलती है- **नंददुलारे वाजपेयी**

750. सूरदास को 'पुष्टिमार्ग का जहाज' किसने कहा है?
(a) वल्लभाचार्य (b) हितहरिवंश
(c) गोकुलनाथ (d) विट्ठलनाथ

Uttarakhand Assi. Pro. 2017

Ans. (d) सूरदास को 'पुष्टिमार्ग का जहाज' विट्ठलनाथ ने कहा है। सूरदास की मृत्यु पर विट्ठलनाथ का कथन द्रष्टव्य है-
"पुष्टिमार्ग कौ जहाज जात है।
जाय कछू लैनों होये सो लेउ।।"

751. इनमें से कौन सी रचना नन्ददास की नहीं है?
(a) मान मंजरी (b) दानलीला
(c) अनेकार्थ मंजरी (d) रूप मंजरी

Uttarakhand Assi. Pro. 2017

Ans. (b) 'दानलीला' नन्ददास की रचना नहीं है। 'दानलीला' चतुर्भुजदास व रसखान की रचना है। नन्ददास की रचनाएँ हैं- रास पंचाध्यायी, सिद्धान्त पंचाध्यायी, अनेकार्थ मंजरी, रूप मंजरी, विरह मंजरी, भँवर गीत, गोवर्धन लीला, स्याम सगाई, रूक्मिणी मंगल, सुदामा चरित, भाषा दशमस्कन्ध, पदावली आदि।

752. विट्ठलनाथ ने वल्लभ संप्रदाय में किस तरह की पूजा-पद्धति का समावेश किया?
(a) बालकृष्ण की उपासना (b) युगलोपासना
(c) राधा-स्तुति (d) कांताभाव की उपासना
UGC NET III[rd] Paper Nov. 2017

Ans. (b) स्वामी वल्लभाचार्य के पुत्र गोसाई विट्ठलनाथ ने वल्लभ सम्प्रदाय में 'युगलोपासना' अर्थात् राधा-कृष्ण के युगल रूप की उपासना का समावेश किया। विट्ठलनाथ ने वल्लभाचार्य के चार शिष्यों तथा चार अपने शिष्यों को मिलाकर 'अष्टछाप' की स्थापना की।

753. 'सूरसागर' में जगह-जगह दृष्टिकूट वाले पद मिलते हैं। यह भी विद्यापति का अनुकरण है।'' सूरदास से संबंधित उक्त विचार किस आलोचक का है?
(a) हजारीप्रसाद द्विवेदी (b) बृजेश्वर वर्मा
(c) रामचंद्र शुक्ल (d) हरवंशलाल शर्मा
UGC NET II[nd] Paper Nov. 2017

Ans. (c) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने अपने साहित्येतिहास ग्रंथ में सूरदास से सम्बन्धित विचार लिखा है कि– 'सूरसागर' में जगह-जगह दृष्टिकूट वाले पद मिलते हैं। यह भी विद्यापति का अनुकरण है।''
आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने सूर के साहित्य से संबंधित 'सूर-साहित्य' नामक ग्रंथ लिखा है।

754. निम्नलिखित पुस्तकों में सूरदास की श्रेष्ठ कृति के रूप में कौन सी कृति विख्यात है?
(a) सूरसागर (b) सूरसाठी
(c) सूरपचीसी (d) राधारसकेलि
Jharkhand PGT Hindi, 2018

Ans : (a) कृष्णभक्ति शाखा के प्रतिनिधि कवि सूरदास की श्रेष्ठ कृति का नाम 'सूरसागर' है। सूरदास के अन्य प्रमुख ग्रंथ- 'सूर सरावली' और 'साहित्य लहरी' हैं। सूरसागर के दशम् स्कन्ध में वर्णित 'भ्रमरगीत' न केवल हिन्दी साहित्य बल्कि विश्व साहित्य में विशिष्ट स्थान रखता है। विकल्प में अन्य नाम सूरसाठी, सूरपचीसी तथा राधारसकेलि असंगत हैं।

755. निम्नलिखित में से सूरदास के 'भ्रमरगीत' में किसकी प्रतिष्ठापना है?
(a) सगुण की नीरसता की
(b) सगुण की आलोचना
(c) संत मार्ग की प्रतिष्ठापना
(d) सगुण की सरसता की
Jharkhand PGT Hindi, 2018

Ans : (d) सूरदास के 'भ्रमरगीत' में सगुण की सरसता की प्रतिष्ठापना हुई हैं। सूरदास की गोपियाँ अपनी वाक्यपटुता से निर्गुण ब्रह्म की भक्ति का उपदेश करने वाले उद्धव को निरुत्तर कर दिया। अन्त में उद्धव स्वयं कृष्ण भक्त व प्रेमी बन कर लौटे।

756. सूरकाव्य के विषय में कौन सा तथ्य गलत है?
(a) सूर का वात्सल्य वर्णन अद्भुत है।
(b) सगुण भक्ति का प्रतिपादन है।
(c) भाषा अवधी है।
(d) सूरकाव्य का मुख्य विषय कृष्ण भक्ति है।
Jharkhand PGT Hindi, 2018

Ans : (c) सूरकाव्य के संबंध में गलत तथ्य है-कि 'भाषा अवधी है।' क्योंकि सम्पूर्ण सूर काव्य की भाषा 'ब्रज' है। 'सूरदास' कृष्ण भक्ति शाखा के प्रतिनिधि कवि व आठ कृष्ण भक्तों के समूह अष्टछाप के प्रमुख कवि थे। प्रायः राम काव्य की भाषा अवधी व कृष्ण काव्य की भाषा ब्रज मानी जाती है।

757. भ्रमरगीत में गोपियों के समक्ष उद्धव किस भूमिका में हैं?
(a) संदेश-वाहक
(b) सिद्ध पुरुष के रूप में
(c) मथुरा वासी के रूप में
(d) कृष्ण के साधक
Jharkhand PGT Hindi, 2018

Ans : (a) 'भ्रमरगीत' में गोपियों के समक्ष उद्धव संदेश - वाहक की भूमिका में हैं। 'भ्रमरगीत प्रसंग' सूरसागर का बड़ा ही मर्मस्पर्शी प्रसंग है जिसमें गोपियों द्वारा निर्गुण पर सगुण भक्ति और प्रेम को आरोपित किया गया है।

758. सूर के 'भ्रमरगीत' के संदर्भ में संवेदना और शिल्प की दृष्टि से कौन सा तथ्य सही नहीं है?
(a) भावुकता (b) क्रूरता
(c) वक्रता (d) वाग्विदग्धता
Jharkhand PGT Hindi, 2018

Ans : (b) सूर के भ्रमरगीत में वक्रता, भावुकता तथा वाग्विदग्धता मौजूद है किन्तु क्रूरता कहीं भी नहीं वर्णित है। अतः क्रूरता सूर के भ्रमरगीत के सम्बन्ध में सही नहीं है।

759. भ्रमरगीत का वैशिष्ट्य क्या है?
(a) कृष्ण का लीला वर्णन
(b) उपालम्भ काव्य में उद्धव-गोपी संवाद
(c) राधा-कृष्ण का प्रेम
(d) संयोग शृंगार
Jharkhand PGT Hindi, 2018

Ans : (b) भ्रमरगीत का वैशिष्ट्य उपालम्भ काव्य और उद्धव-गोपी संवाद है। जिसमें सूरदास ने गोपियों के माध्यम से निराकार ब्रह्म पर साकार ब्रह्म की तथा संयोग शृंगार पर वियोग शृंगार की तथा निर्गुण भक्ति पर सगुण भक्ति की पराकाष्ठा को प्रस्तुत किया है।

760. निम्नलिखित काव्य-पंक्तियों के आशय हैं:
उर में माखन चोर गड़े।
अब कैसहु निकसत नहिं, ऊधों! तिरछे ह्वै जो अड़े।
(A) गोपी के दिल में कृष्ण बस गए हैं।
(B) वह उन्हें दिल से निकालना चाहती है, लेकिन निकलते ही नहीं।
(C) वह उन्हें दिल में बसाए रखना चाहती हैं।
(D) कृष्ण को दिल से निकालना गोपी के लिए असंभव है।
कोड :
(a) (A), (B) और (D) सही
(b) (B) और (D) सही
(c) (B) और (C) सही
(d) (A), (C) और (D) सही

Ans : (d) सूरदास द्वारा रचित सूरसागर महाकाव्य के मर्मस्पर्शी प्रसंग 'भ्रमरगीत' की प्रस्तुत पंक्तियों-
''उर में माखर चोर गड़े।

अब कैसहु निकसत नहिं ऊधो तिरछे ह्वै जो अड़े।।"
का आशय है- गोपी के दिल में कृष्ण बस गये हैं वे उन्हें दिल में बसाए रखना चाहती हैं तथा कृष्ण को दिल से निकालना गोपी के लिए संभव नही है।

761. **मीरा बाई के पदों में मुख्य है:**
(A) **अपूर्व भाव विह्वलता**
(B) **रहस्यानुभूति**
(C) **आत्म-समर्पण**
(D) **भगवद्विरह की पीड़ा की उत्कट अभिव्यक्ति**
कोड:
(a) (A), (B) और (c) सही
(b) (A), (C) और (D) सही
(c) (B) और (C) सही
(d) (B), (C) और (D) सही

Ans : (b) मीराबाई के पदों में "अपूर्व भाव विह्वलता, आत्म समर्पण तथा भगवद् विरह की पीड़ा की उत्कट अभिव्यक्ति" मुख्य हैं। जबकि मीरा के पदों में रहस्यानुभूति को स्थान नहीं मिला है।

762. **निम्नलिखित में से 'अष्टछाप' के एक कवि हैं:**
(a) श्री वल्लभाचार्य (b) स्वामी विट्ठलनाथ
(c) विद्यापति (d) कृष्णदास
NVS TGT Hindi, 2016

Ans. (d) : वल्लभाचार्य के पुत्र विट्ठलनाथ में 'अष्टछाप' की स्थापना किया। 'अष्टछाप' में आठ (8) कवि हैं जिसमें कि चार वल्लभाचार्य के और चार विट्ठल नाथ के शिष्य हैं। वल्लभाचार्य के शिष्य- कुंभनदास, सूरदास, परमानन्ददास, कृष्णदास। विट्ठलनाथ के शिष्य नन्ददास, छीतस्वामी, चतुर्भुजदास, गोविन्दस्वामी।

763. **कृष्णकाव्य का अधिकांश साहित्य मुख्यतः किस भाषा में है?**
(a) ब्रजभाषा (b) अवधी
(c) खड़ीबोली (d) भोजपुरी
NVS TGT Hindi, 2016

Ans. (a) : कृष्ण काव्य का अधिकांश साहित्य मुख्यतः ब्रजभाषा में है। जबकि अवधी का अधिकांश प्रयोग रामभक्ति शाखा के कवियों ने किया और खड़ी बोली का प्रयोग आधुनिक में हुआ। खड़ीबोली को प्रतिष्ठित करने का श्रेय द्विवेदी जी (महावीर प्रसाद द्विवेदी) को है।

764. **मनुष्य होने पर रसखान ने कहाँ बसने की इच्छा व्यक्ति की है?**
(a) गोकुल के गाँव में। (b) मथुरा नगर में
(c) घने जंगल में। (d) नदी के किनारे।
NVS TGT Hindi, 2016

Ans. (a) : मनुष्य होने पर रसखान ने गोकुल के गाँव में बसने की इच्छा व्यक्त की है। यथाः- मानुष हौं तो वहीं रसखानि बसौं ब्रज गोकुल गाँव के ग्वारन। जो पसु हौं तो कहा बस मेरो, चरौं नित नंद की धेनु मझारन।। रसखान कृष्ण के अनन्य भक्त हैं।

765. **सूरदास की अधिकतर रचनाएँ किस भाषा में हैं?**
(a) अवधी (b) अपभ्रंश
(c) ब्रजभाषा (d) भोजपुरी
NVS TGT Hindi, 2016

Ans. (c) : सूरदास की अधिकतर रचनाएँ (लगभग सम्पूर्ण काव्य) ब्रजभाषा में है। सूरदास के प्रमुख ग्रंथ हैं- सूरसागर, सूरसारावली तथा साहित्य लहरी।

766. **सूरसागर किस भाषा में लिखा गया है ?**
(a) ब्रज (b) अवधी
(c) बुन्देली (d) भोजपुरी
MP Asst. Prof. Hindi, 2017

Ans. (a) : 'सूरसागर' की रचना ब्रजभाषा में हुई है। सूरसागर के रचनाकार सूरदास हैं। सूरदास वल्लभाचार्य के शिष्य थे। इनकी प्रमुख रचनाएं सूरसारावली और साहित्य लहरी भी हैं।

767. **'नंद ब्रज लीजै ठोंकि बजाय' पंक्ति किस कवि की है ?**
(a) सूरदास (b) नंददास
(c) कृष्ण दास (d) परमानंद दास
MP Asst. Prof. Hindi, 2017

Ans. (a) : 'नंद ब्रज लीजै ठोंकि बजाय' पंक्ति के रचनाकार सूरदास जी हैं। सूरदास की प्रमुख तीन रचनाएं हैं- (1) सूरसागर (2) सूरसारावली (3) साहित्य-लहरी।

768. **सुदामाचरित किसकी रचना है ?**
(a) घनानंद (b) कृष्णदास
(c) रसखान (d) नरोत्तमदास
MP Asst. Prof. Hindi, 2017
KVS P.G.T. Hindi 2017

Ans. (d) : 'सुदामाचरित' के रचनाकार नरोत्तमदास जी है। जबकि कृष्णदास ने 'जुगलमानचरित' की तथा रसखान ने 'सुजानरसखान' की तथा घनानन्द ने 'सुजानसार' की रचना की है।

769. **राधाकृष्ण के प्रेम को लेकर कृष्ण भक्ति की जो काव्य धारा चली उसमें लीलापक्ष अर्थात् बाह्यार्थ विधान की प्रधानता रही है। यह कथन हिन्दी साहित्य के किस इतिहासकार का है?**
(a) आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी
(b) डॉ. गणपति चन्द गुप्त
(c) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
(d) आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र
MP Asst. Prof. Hindi, 2017

Ans. (c) : 'आचार्य रामचन्द्र शुक्ल' कृष्णभक्ति के संदर्भ में लिखे हैं कि –"राधाकृष्ण के प्रेम को लेकर कृष्ण भक्ति की जो धारा चली उसमें लीलापक्ष अर्थात् बाह्यार्थ विधान की प्रधानता रही है।"

770. **सूरदास कृष्णभक्ति के किस सम्प्रदाय में दीक्षित थे?**
(a) चैतन्य सम्प्रदाय (b) राधावल्लभ सम्प्रदाय
(c) वल्लभ सम्प्रदाय (d) सखी सम्प्रदाय
MP Asst. Prof. Hindi, 2017

Ans. (c) : सूरदास कृष्णभक्ति के बल्लभ सम्प्रदाय में दीक्षित हुए थे। सूरदास के गुरू वल्लभाचार्य थे उन्होंने ही इस सम्प्रदाय का प्रवर्तन किया था। पुष्टिमार्ग का दार्शनिक सिद्धान्त शुद्धाद्वैत है।

771. **सूरदास ने अपनी किस कृति के अंत के पद में अपनी वंश परंपरा का परिचय दिया हैं?**
(a) सूरसागर (b) सूरसारावली
(c) साहित्यलहरी (d) इनमें से कोई नहीं
MP Asst. Prof. Hindi, 2017

Ans. (c) : कृष्णभक्ति शाखा के प्रतिनिधि कवि सूरदास ने अपने ग्रंथ साहित्य-लहरी में अपनी वंश परम्परा का परिचय दिया है। इसके अनुसार सूरदास चन्दवरदाई की वंश परम्परा में आते हैं। सूरदास के प्रमुख ग्रंथ सूरसागर सूरसारावली तथा साहित्य-लहरी हैं।